केलि कुञ्ज

चित्रमें श्रीप्रियाप्रियतमौ

KELI KUNJ KI LEELA

।। विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ।।

निवेदन

इस संग्रहमें संकलित लीलाएँ एक परमरसिक संतका कृपा-प्रसाद है। किन्हीं महासिद्ध संतके अनुरोधपर व्रजभावके एक भावुक भक्तके लिये इन रसिक संतने स्वानुभूत लीलाओंको लिपिबद्ध किया था। सत्त्व-रज-तमकी छायासे विरहित निर्ग्रन्थ संतके मानसपटलपर ही दिव्य वृन्दावन अवतरित हुआ करता है। भोगकी स्पृहासे, यहाँतक कि मोक्षकी कामनासे सर्वथा शून्य संतके त्रिगुणातीत महाशुद्ध सत्त्वमय मानसकी ही परिणति हो जाती है दिव्य वृन्दावनके रूपमें, जो बन जाता है लीलाधाम अद्‌भुत-से-अद्‌भुत उत्तम-से-उत्तम मधुर-से-मधुर भगवल्लीलाओंका। महाभावमयी श्रीराधा एवं परमरसस्वरूप श्रीकृष्णकी जो-जो, जैसी-जैसी लीलाएँ संतकी उस मानस-लीलाभूमिपर आविर्भूत होती हैं, उन परम गहन, परम पवित्र एवं परम सरस लीलाओंकी ओर वाणीसे भी संकेत कर पाना सम्भव नहीं होता। वास्तविकता भी यही है कि स्वानुभूत गहन लीलाओंकी वह रहस्यमयता वाणीका विषय है भी नहीं। यह रहस्यमयता वाणीसे सदा ही परे रही है और भविष्यमें सदा रहेगी भी।

परंतु लीलाओंके ऐसे अंश, जो वाणी द्वारा व्यक्त किये जा सकते थे, वे भी सम्पूर्ण रूपसे लिपिबद्ध नहीं हो पाये। महासिद्ध संतके अनुरोधपर जिनके लिये ये लीलाएँ लिखी गयी थीं, उनके मानसके स्तरको देखकर ही वर्णनपर अंकुश लगाये हुए शब्दाभिव्यक्तिको सीमाके भीतर रखना पड़ा था। अतः श्रीराधाकृष्णकी परम रसमय लोकोत्तर लीलाओंके जो-जो दृश्य दृष्टि-पथपर आये अथवा जो-जो संवाद श्रुति-पथपर आये; उन सबका पर्याप्त अंश इन रसिक संतने लिपिबद्ध किया ही नहीं। वस्तुतः वैसे-वैसे गम्भीर रहस्यमय अंशके पठन-श्रवणके हम अधिकारी ही कहाँ हैं? जिन्होंने गङ्गाजलसे धोकर अपनी दृष्टिको मलरहित सत्त्वसम्पन्न तथा स्नेहस्निग्ध नहीं बना लिया है, ऐसे व्यक्तियोंके द्वारा निज-निज दृष्टिदोषके कारण यह सम्भव ही नहीं है कि वे इन दिव्य

लीलाओंकी निर्दोषता-निर्मलता-अनिन्द्यता-अलौकिकताकी परिधिका स्पर्श भी कर सकें। यही हेतु है कि उन लीलाओंकी दिव्यता-पवित्रताको अक्षुण्ण बनाये रखनेके लिये बहुत-से हृदयस्पर्शी प्रसंग अवर्णित ही रह गये ।

कुछ प्रसंग तो इस प्रकार अभिव्यक्त होनेसे रह गये और कुछ लीलाओंकी अभिव्यक्ति चाह करके भी हो नहीं पायी। मूलतः योजना थी अड़तीस (३८) लीलाओंके लेखनकी। लीला-लेखनकी मूल योजना सम्पूर्ण रूपसे आगे दी जा रही है। इन अड़तीस लीलाओंमेंसे केवल उन्तीस (२९) लीलाएँ ही लिखी जा सकीं, जो इस संग्रहमें संकलित हैं। इन रसिक संतने लीला-चिन्तनकी दृष्टिसे कहीं-कहीं कुछ सांकेतिक निर्देश भी दिये हैं कि किस लीलाका चिन्तन किस तिथिको किस समय करना चाहिये। ये सांकेतिक निर्देश भी आगे लिखे जा रहे हैं, जिससे लीला-चिन्तनमें सहायता मिल सके ।

मूल योजना तथा लिखित लीलाओंका विवरण

* प्रथम दिवसका ध्यान *

१– श्रीललिताजीके निकुञ्जमें श्रीप्रिया-प्रियतमकी जागरण लीला

  १– लीला-शीर्षक — जागरण लीला
  २– लीला-क्रमाङ्क — १
  ३– पृष्ठ-संख्या — १

२– श्रीप्रिया-प्रियतमका अपने-अपने घर आकर शय्यापर सो जाना

३– श्रीराधारानीका शय्यासे उठकर अपने महलमें सखियोंद्वारा उबटन, स्नान, ललिताका राधारानीको चित्राका स्वप्न सुनाना

  १– लीला-शीर्षक — स्नान लीला
  २– लीला-क्रमाङ्क — २
  ३– पृष्ठ-संख्या — १०

४– श्रीप्रियाका सखियोंद्वारा शृङ्गार, तुलसी-पूजन एवं नन्दभवनकी ओर प्रस्थान

५– नन्दभवनमें प्रियतम श्यामसुन्दरके लिये श्रीप्रियाका भोजन बनाना, श्यामसुन्दरका भोजन, श्रीप्रिया एवं सखियोंका श्यामसुन्दरके

* द्वितीय दिवसका ध्यान *

* तृतीय दिवसका ध्यान *

१– लीला-शीर्षक — आँखमिचौनी लीला
२– लीला-क्रमाङ्क — १७
३– पृष्ठ-संख्या — १८३
४– चिन्तन-निर्देश — यह लीला तृतीया एवं [illegible] तिथियोंको पढ़नी चाहिये ।

२७– श्रीयमुना-पुलिनपर श्रीप्रियाके द्वारा श्रीश्यामसुन्दरको [illegible] श्रीप्रियाका भावावेशमें अपना हृदय खोलकर सुनाना

१– लीला-शीर्षक — प्रस्तुसिका लीला
२– लीला-क्रमाङ्क — १८
३– पृष्ठ-संख्या — १८७
४– चिन्तन-निर्देश — यह लीला प्रतिपदा, चतुर्थी, [illegible] दशमी एवं त्रयोदशी तिथियोंको [illegible] पहले यानमें पढ़नी चाहिये ।

* चतुर्थ दिवसका ध्यान *

२८– श्रीइन्दुलेखाजीके कुञ्जमें मान लीला

१– लीला-शीर्षक — मान लीला
२– लीला-क्रमाङ्क — १९
३– पृष्ठ-संख्या — २१२
४– चिन्तन-निर्देश — यह लीला चतुर्थी एवं द्वादशी तिथियोंको दोपहरके समय पढ़नी चाहिये ।

* पञ्चम दिवसका ध्यान *

२९– श्रीचम्पकलता-कुञ्जमें श्रीप्रियाके द्वारा श्रीश्यामसुन्दरकी प्रतीक्षा

१– लीला-शीर्षक — मिलनोत्कण्ठा लीला
२– लीला-क्रमाङ्क — २०
३– पृष्ठ-संख्या — २२३
४– चिन्तन-निर्देश — यह लीला पञ्चमी एवं त्रयोदशी तिथियोंको दोपहरके समय पढ़नी चाहिये ।

* अमावस्या दिवसका ध्यान *

* ऋतु लीलाएँ *

१– लीला-शीर्षक — नौकाविहार लीला
२– लीला-क्रमाङ्क — २७
३– पृष्ठ-संख्या — २८५
४– चिन्तन-निर्देश — यह लीला द्वितीया, चतुर्थी, षष्ठी, अष्टमी, दशमी, द्वादशी एवं चतुर्दशी तिथियोंको दोपहरके समय पढ़नी चाहिये। यदि सम्भव हो तो एक-एक लीला पढ़ लेनेके बाद इस नौकाविहार लीलाको भी पढ़ लेना चाहिये।

२७– दीपावली लीला

१– लीला-शीर्षक — दीपावली लीला
२– लीला-क्रमाङ्क — २८
३– पृष्ठ-संख्या — २९२

२८– योगिनी लीला

१– लीला-शीर्षक — योगिनी लीला
२– लीला-क्रमाङ्क — २९
३– पृष्ठ-संख्या — ३०२

इन लीलाओंके साथ इन्हीं रसिक संतद्वारा संकलित पचपन पदोंको भी 'मधुपर्क' शीर्षकके अन्तर्गत अर्थसहित प्रकाशित किया जा रहा है, जो लीला-चिन्तनमें बड़े सहायक सिद्ध हो सकते हैं। इस सारी सामग्रीको प्रकाशित करते समय प्रयास यही रहा है कि कहीं कोई त्रुटि न रह जाये, इसपर भी भूल हो जाना स्वाभाविक है। इस प्रकारकी सभी न्यूनताओंके लिये विनम्र क्षमा-याचना है।

—प्रकाशक

लीला मालिका

पद तालिका

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

जागरण लीला

लटकत आवत कुंज भवन तें।
ढुरि ढुरि परत राधिका ऊपर आलस सिथिल गवन तें॥
चौंक परत कबहूँ मारग बिच चलत सुगंध पवन तें।
भर उसाँस राधा बियोग भय सकुचे दिवस रवन तें॥
आलस मिस न्यारे न होत हैं नेकहु प्यारी तन तें।
'रसिक' टरौ जिन दसा स्याम की कबहूँ मेरे मन तें॥

विश्राम-निकुञ्जमें श्रीप्रिया-प्रियतम अत्यन्त सुन्दर शय्यापर लेटे हुए हैं। विश्राम-निकुञ्जकी सजावट अत्यन्त मनोहर है। मणियोंका हलका धीमा नीला प्रकाश फैल रहा है। खिड़कियोंपर पीले मखमलके पर्दे लगे हुए हैं, जो यमुना-पुलिनपर प्रवाहित होते हुए मन्द समीरके झोंकोंसे थोड़े-थोड़े हिल रहे हैं। समस्त निकुञ्ज दिव्यतम सुगन्धिसे भरा है।

निकुञ्जके पूर्व एवं दक्षिणके कोनेमें सुन्दर मणिजटित सोनेकी चौकी है, जिसपर सुन्दर जलसे भरी हुई दो सुन्दर झारियाँ रखी हुई हैं। कुछ सुन्दर-सुन्दर गिलास रखे हैं। उसी चौकीके बगलमें एक और भी चौकी है, जिसपर चौड़े मुँहके सोनेके दो गमजे (प्रक्षालन-पात्र) हैं। निकुञ्जके पश्चिम एवं दक्षिणके कोनेमें भी अत्यन्त सुन्दर चौकी है, जिसपर तरह-तरहके शृंगारके सामान रखे हैं। उसीकी बगलमें एक अन्य चौकीपर बहुत बड़ा दर्पण रखा हुआ है।

निकुञ्जकी समस्त दीवालपर पीले रंगकी मखमली चादर इस ढंगसे लगायी गयी है मानो पीले मखमली वस्त्रोंका ही निकुञ्ज बना हुआ हो। उस वस्त्रपर अत्यन्त सुन्दर ढंगसे श्रीप्रिया-प्रियतमकी निशाकालीन विहार-लीलाके सुन्दर चित्र इस ढंगसे बने हुए हैं कि जिन्हें देखकर

ऐसा प्रतीत होता है मानो ये चित्र नहीं, सजीव मूर्ति हों। निकुञ्जके पूर्व हिस्सेमें सोनेका पिंजरा है, जिसमें श्रीराधारानीकी प्रिय सारी (मैना) बैठी है।

ऊषाकाल उपस्थित हो गया है। वृन्दा हाथमें सोनेका एक पिंजरा लिये हुए निकुञ्जके दरवाजेके पास बहुत धीरे-धीरे आकर खड़ी हो जाती है। मञ्जरियाँ पहलेसे ही उठकर अपनी-अपनी शय्यापर बैठी हैं। वृन्दा इशारेसे धीरे-धीरे उन्हींसे कुछ पूछती है। मञ्जरियाँ इशारेसे ही उन्हें मन्द मुस्कानके साथ जवाब देती हैं। वृन्दा निकुञ्जके पूर्वकी तरफ चली जाती हैं तथा जहाँपर भीतर सारी पिंजरेमें बैठी थी, उसी जगह खिड़कीके छिद्रसे भीतर दृष्टि डालकर सारीको कुछ इशारा करती हैं। सारी भी इशारेमें आँख घुमाती है। वृन्दाके हाथमें जो पिंजरा था, उसमें एक तोता एवं एक सारी बैठी थी। वृन्दा उस पिंजरेके दरवाजेको खोल देती हैं। सारी एवं तोता धीरेसे उड़कर उस खिड़कीकी राहसे भीतर चले जाते हैं तथा जिस पिंजरेमें राधारानीकी प्रिय सारिका बैठी थी, उसपर जाकर बैठ जाते हैं।

निकुञ्ज-महलके चारों ओर सघन कदम्ब-वृक्षावली लगी हुई है। उसपर तरह-तरहके पक्षी बैठे हैं, पर सभी बिल्कुल शान्त हैं। सभी एकटक तथा कान लगाकर वृन्दाके इशारेकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। वृन्दा सारी और तोतेको भीतर भेजकर पासके कदम्बके वृक्षपर बैठे हुए एक कुक्कुट पक्षीसे कुछ इशारा करती हैं। उनके ऐसा इशारा करते ही वह कुक्कुट जोरसे बोल उठता है। उसके बोलते ही समस्त पक्षी यह जान जाते हैं कि श्रीवृन्दादेवीका आदेश हो गया है और अब हमलोग मधुर स्वरमें गान करते हुए श्रीप्रिया-प्रियतमकी निद्रा भङ्ग करें। अतः धीरे-धीरे समस्त वन पक्षियोंके मधुर कलरवसे गुञ्जरित होने लग जाता है।

इधर वृन्दादेवीके हाथसे उड़कर सारी एवं तोता जैसे ही भीतर पहुँचकर रानीकी सारीके पिंजरेपर बैठते हैं, वैसे ही रानीकी सारी अत्यन्त मधुर स्वरमें बोल उठती है—आओ बहिन! बिराजो! मेरे जीवनसर्वस्व प्रिया-प्रियतमकी अनुपम रूप-सुधाका पानकर नयनोंको कृतार्थ करो! अहा! किंचित् दृष्टि डालकर देखो तो सही, आज ये दोनों कितने सुन्दर दीख रहे हैं। मेरी प्यारी रानी, मेरे प्यारे श्याम-

सुन्दर—दोनोंकी रूप-सुधाका मैं सारी रात निर्निमेष नयनोंसे पान करती रहती हूँ, पर आँखें तृप्त नहीं होतीं। बहिन! ये आँखें तृप्त हो भी नहीं सकतीं। इस असीम रूप-सागरकी एक बूँद भी तो मेरी दो आँखोंमें नहीं समा पाती, फिर तृप्त हो तो कैसे ?

सारीकी यह आवाज श्रीप्रिया-प्रियतमके कानोंमें भी जा पहुँचती है। उनकी निद्रा टूट जाती है, परंतु वे एक-दूसरेको हृदयसे लगाये हुए उसी तरह लेटे रहते हैं। कोई भी आँखें नहीं खोलता। पर दोनोंके शरीर किंचित् हिल जानेके कारण सारी समझ जाती है कि दोनों ही जग गये हैं। इसी समय वृन्दाकी सारी कहने लगती है—बहिन! तुम्हारे सौभाग्यकी सीमा नहीं है। अहा! सचमुच इन दोनों मुख-चन्द्रोंपर आँखें पड़ते ही उनसे आँखें चिपट जाती हैं, फिर हटना चाहती नहीं। बहिन! मैं अभी बाहरसे उड़कर आयी हूँ। मैंने देखा कि पश्चिम गगनमें चन्द्र तेजीसे बढ़ते जा रहे थे। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ बहिन! मानो चन्द्रदेव श्रीप्रिया-प्रियतमके मुख-चन्द्रकी शोभा देखकर अतिशय लज्जाके कारण अपना मुँह छिपानेके लिये शीघ्रतासे भागे जा रहे हैं।

सारीकी इस बातको सुनकर श्रीप्रिया-प्रियतम समझ जाते हैं कि चन्द्रमा अस्त होने जा रहे हैं और प्रभात होनेवाला है। पर दोनोंके ही हृदय प्यारसे इतने भरे हैं, दोनों एक-दूसरेसे ऐसे मिले हुए हैं मानो उन्होंने एक-दूसरेसे कभी अलग न होनेकी प्रतिज्ञा कर ली हो।

अब तोता बोल उठता है—सारी! तू बता, मेरे प्यारे श्यामसुन्दर रातमें सुखकी नींद सोये हैं न ? इस वनके चकवा-चकवियोंके आनन्द-कलरवसे मेरे प्यारे श्यामसुन्दरकी नींद तो नहीं टूट गयी है ? मैं देखकर आया हूँ कि चकवा-चकवी पुलिनपर बैठे शोर मचा रहे हैं। सारी रात ये आनन्दमें भरकर शोर मचाते रहे हैं। अब पूर्व-मुख बैठकर वे प्रिया-प्रियतमकी गुणावली गाते हुए अस्तोन्मुख चन्द्रमासे बातें कर रहे थे।

चकवी कहती थी—चन्द्रदेव! जाओ, सुखसे जाओ, फिर आना, मैं तुझे गाली नहीं दूँगी। इस वनमें मेरी प्यारी राधारानी एवं मेरे प्यारे श्यामसुन्दरका राज्य है। यह राज्य अनन्त कालतक रहेगा एवं अनन्त कालतक ही यहाँके सभी नियम पलटे रहेंगे। चन्द्र! ऐसा सुना है कि तुम्हारे दर्शन होते ही प्यारे चकवेसे चकवी अलग हो जाया करती है;

पर मैं तो कभी भी अलग नहीं हुई। देखो चन्द्रदेव ! मेरी आँखोंमें, पता नहीं, क्या हो गया है कि मुझे चकवेमें, तुममें, यमुनाकी प्रत्येक तरंगमें प्यारे श्यामसुन्दरकी ही झाँकी दीख पड़ती है। मुझे कभी-कभी भ्रम हो जाता है कि उज्ज्वल गगनमें तुम्हारा प्रकाश नहीं, मेरे प्यारे श्यामसुन्दरके ही मुख-चन्द्रका प्रकाश है; इसलिये मैं उड़कर उधर ही दौड़ने लग जाती हूँ। पर चकवा भी साथ-साथ उड़ने लग जाता है। वह मुझसे आगे बढ़ जाता है। मैं देखती हूँ, अहा ! श्यामसुन्दर इस चकवेके अन्तरालमें भी छिपे हैं; अतः विचारमें पड़कर फिर मैं आकाशसे नीचे उतर आती हूँ और सोचती हूँ—ना, मुझे भ्रम हो गया था; मेरी आँखोंमें ही प्यारे श्यामसुन्दरकी छवि बस गयी है। बहुत सोचती रही कि ऐसा क्यों हो गया है ? फिर कुछ-कुछ समझ पायी कि हम सभी वनवासियोंपर रानीकी छाया पड़ती है, रानीकी दृष्टि पड़ती है। रानीकी दृष्टिमें, रानीके अणु-अणुमें श्यामसुन्दर भरे हैं, इसलिये हम सभी वनवासियोंकी भी यही दशा हो गयी है। अतः चन्द्रदेव ! रानीपर बलिहार जाती हुई तुमसे प्रार्थना कर रही हूँ कि शीघ्र-से-शीघ्र पूर्व गगनमें लौट आना। तुम्हारे आनेपर मेरी प्यारी रानी मेरे प्यारे श्यामसुन्दरके साथ मिलेगी। देर मत करना भला ! हम वनवासी रानीकी इस अनन्त करुणाके चिर ऋणी हैं। रानीकी छाया पड़कर ही हम इस अनन्त असीम सौभाग्यकी अधिकारिणी बनी हैं। मैं भला रानीकी क्या सेवा कर सकती हूँ ? हाँ, तुमसे हृदय खोलकर प्रार्थना कर सकती हूँ। मेरी ओरसे शङ्का मत करना कि चकवी हमें गाली देगी। शीघ्र-से-शीघ्र पूर्व गगनमें उदित होना। मैं हृदयसे तुम्हारा स्वागत करूँगी।

तोता बोलता ही जा रहा था—सारी ! चकवेने भी ठीक इसी प्रकारकी प्रार्थना चन्द्रसे की। मैं सुनकर यहाँ आया हूँ। इसलिये चित्तमें आया कि इस आनन्द-कलरवसे मेरे प्यारे श्यामसुन्दरकी नींदमें तो कहीं बाधा नहीं आती ?

तोतेकी बात सुनकर श्रीप्रिया-प्रियतमके मुखारविन्दपर मुस्कान छा जाती है। तोता एवं दोनों सारी इस मुस्कानको देख लेती हैं।

रानीकी सारी बोलती है—अहा ! देख तोता ! मेरी रानीके मुखपर मन्द मुस्कानकी शोभा देख ! इस मुस्कानको देखनेके लिये समस्त वनवासी आँख फाड़े प्रतीक्षा कर रहे हैं।

सारीकी बात सुनकर श्यामसुन्दरकी आँखें एक बार खुल जाती हैं। सारी फिर कहती है—तोता! प्यारे श्यामसुन्दरके मुखारविन्दकी ओर देख! इन अलसभरे नयनोंकी ओर देख! बिखरी हुई अलकावलीकी ओर देख! ताम्बूल-रञ्जित अधरोंकी ओर देख............!

अपनी प्यारी सारीकी बात सुनकर रानी भी मुस्कुराती हुई एक बार आँखें खोलकर देखती हैं। दोनों सारिकाएँ एवं तोता देख लेते हैं। अतः तीनों ही एक साथ बोल उठते हैं—जय हो वृन्दावनेश्वरीकी! जय हो वृन्दावनेश्वरकी!!

तोता कहता है—व्रजजीवन घनश्यामकी जय!

दोनों सारी कहती हैं—घनश्याम-अभिरामिनी राधारानीकी जय!

तोता कहता है—वृन्दावन-चन्द्र श्यामसुन्दरकी जय!

सारिकाएँ कहती हैं—वृन्दावन-चन्द्रिका श्यामारानीकी जय!

तोता कहता है—विश्वविमोहन नन्दनन्दनकी जय!

सारिकाएँ कहती हैं—नन्दनन्दन-विमोहिनी राधारानीकी जय!

इस जय-जयकारसे रानी एवं श्यामसुन्दरके मुखारविन्दपर जोरसे हँसी आने लगती है, पर वे उसे रोकते हैं। सखियाँ उधर खिड़कीके छिद्रोंसे दृष्टि डाल-डालकर श्रीप्रिया-प्रियतमकी शोभा निहार-निहारकर आनन्दमें डूब रही हैं।

फिर सारी कहती है—मेरी प्यारी रानी! मेरे प्यारे श्यामसुन्दर!! चन्द्रदेवकी किरणें मलिन हो गयी हैं। तारिका-पंक्ति भी आकाशमें विलीन होती जा रही है। पूर्व गगनमें अरुणिमाकी झलक दीख पड़ने लग गयी है। अतः मेरे जीवनसर्वस्व! उठो, हम वनवासी तुम्हें आँखें भरकर देखें।

श्रीश्यामसुन्दर एवं प्रिया, दोनों ही सारीकी सब बात सुन रहे हैं, पर उनमें एक-दूसरेके आनन्दको भङ्ग करनेका साहस नहीं हो रहा है। अतः दोनों उसी प्रकार एक-दूसरेसे लिपटे हुए मन्द-मन्द मुस्कुराते सोये हुए हैं।

वृन्दाकी सारी कहती है—बहिन सारिके ! देख, यह प्रभात होना हमें अच्छा नहीं लगता। यह मेरे प्राणाधार प्रिया-प्रियतमको प्रतिदिन अलग कर देता है! तू कोई उपाय जानती है कि जिससे प्रभात हो ही नहीं।

रानीकी सारी कहती है—बहिन! उपाय क्यों नहीं है; पर रानीकी आज्ञाके बिना मैं किसीको यह उपाय बतला नहीं सकती। देख, यह प्रभात हमें भी बड़ा अखरता है। मेरी रानीके प्राणोंको तो व्याकुल कर देता है। फिर भी रानी इसका प्रतिदिन स्वागत ही करती हैं।

सारीकी बात सुनकर रानी कुछ लज्जित-सी होकर श्रीश्यामसुन्दरके बाहुपाशमें अपना सिर छिपा लेती हैं। इसी समय मन्द समीरका झोंका लगनेसे खिड़कीका पर्दा जोरसे हिल जाता है। उसी समय श्यामसुन्दरकी आँखें खुल जाती हैं। श्यामसुन्दर देखते हैं कि सचमुच प्रभात हो गया है। इसलिये अत्यन्त प्यारभरी दृष्टिसे श्रीप्रियाके मुखारविन्दको देखते हुए धीरेसे कहते हैं—प्रिये! प्रभात हो गया है।

श्यामसुन्दरकी बात सुनकर श्रीप्रियाका मुख दुःखमिश्रित गम्भीरताकी मुद्रा धारण कर लेता है। वे धीरे-धीरे उठकर शय्यापर बैठ जाती हैं। उनके उठते ही श्यामसुन्दर भी उठकर शय्यापर बैठ जाते हैं। दोनोंके ही मुखारविन्दपर अलकावलियाँ बिखरी हुई हैं। दोनोंके नयनोंमें प्रेम एवं आलस्य भरा हुआ है। श्रीश्यामसुन्दर अपने दोनों हाथोंसे एक बारमें ही अपने मुखारविन्दसे अलकावलीको हटा लेते हैं तथा बायें हाथकी मुट्ठी बाँधकर, उसी मुट्ठीपर श्रीप्रियाकी ठोढ़ीको टिकाकर दाहिने हाथसे श्रीप्रियाकी अलकावलीको ठीक करने लगते हैं। श्रीप्रियाका मुख इस समय पश्चिमकी ओर है तथा श्यामसुन्दरका मुख पूर्वकी ओर। श्रीप्रिया अपने दोनों हाथोंसे अपने अङ्गोंके वस्त्रोंको ठीक कर रही हैं।

इसी समय दासियोंकी, मञ्जरियोंकी एवं सखियोंकी टोली हँसती हुई, मुस्कुराती हुई किवाड़ोंको धक्का दे देती है। किवाड़ खुल जाते हैं तथा ललिता सबसे आगे मुस्कुराती हुई भीतर प्रवेश करती हैं। उनके पीछे बगलमें सभी सखियाँ चल रही हैं। ललिता तेजीसे चलकर शय्याके पास पहुँच जाती हैं। सखियोंको आयी देखकर श्रीप्रिया लज्जित-सी होकर जल्दीसे शय्यासे उठती हैं, पर ललिता उनके हाथोंको पकड़कर, जहाँ वे

बैठी थीं, वहीं बैठा देती हैं। रूपमञ्जरी आ करके शय्यापर पड़ा हुआ रानीका मोतियोंका हार उठा लेती है तथा उसे अपने अञ्चलमें बाँधकर गाँठ लगाती है। गुणमञ्जरी शय्याके पास पड़ी हुई पीकदानीको उठाकर सिरसे लगाती तथा मुस्कुराती हुई उसे बगलमें लिये हुए खड़ी रहती है।

ललिता-विशाखा आदि सखियाँ रानीसे अत्यन्त प्रेमका विनोद प्रारम्भ करती हैं। रानी आलस्यभरी आँखोंसे ताकती हुई बीच-बीचमें ललिताके मुँहको अपने हाथसे बंद कर देती हैं। श्यामसुन्दर बीच-बीचमें मुस्कुराकर श्रीप्रियाके कंधोंको पकड़कर हिला देते हैं तथा ललिताके बहुत विनोद करनेपर रानीके कानमें कुछ धीरेसे कह देते हैं। रानी सुनकर मुस्कुराने लगती हैं। ललिता भी मुस्कुरा देती हैं; पर फिर लज्जित-सी होकर चुप रह जाती हैं।

लवङ्गमञ्जरी हाथमें जलकी झारी लिये हुए खड़ी है। विमलामञ्जरीके हाथमें कुल्ला करनेका चौड़े मुँहका गमला (प्रक्षालन-पात्र) है। श्रीप्रिया-प्रियतम उसी गमलेमें बारी-बारीसे हाथ एवं आँखें धोते हैं। फिर कुल्ला करते हैं। चित्रा शीतल जलसे भरा हुआ अत्यन्त सुन्दर गिलास रानीके हाथमें पकड़ा देती है। रानी गिलासको श्यामसुन्दरके होठोंसे लगा देती हैं। श्यामसुन्दर श्रीप्रियाके मुखपर दृष्टि जमाये हुए धीरे-धीरे आधा गिलास जल पी लेते हैं। फिर गिलासको पकड़कर श्यामसुन्दर श्रीप्रियाके होठोंसे लगा देते हैं। श्रीप्रिया शर्मायी-सी होकर पीना नहीं चाहतीं; पर श्यामसुन्दर बायें हाथसे प्रियाका दाहिना कंधा पकड़कर दबा देते हैं एवं गिलासको प्यारभरी जबर्दस्तीसे प्रियाके होठोंके पास रखे रहते हैं। आँखोंसे प्रेम झर रहा है। आखिर श्रीप्रिया भी कुछ घूँट शीतल जल धीरे-धीरे पी लेती हैं। फिर सखियाँ दोनोंका शृङ्गार करती हैं।

वृन्दादेवी निर्निमेष नयनोंसे श्रीप्रिया-प्रियतमकी झाँकीकी शोभा निहार रही हैं। वृन्दाकी दासियोंने खिड़कीके पर्दोंको उठा दिया है। शीतल-मन्द-सुगन्ध पवन खिड़कीकी राहसे प्रवाहित होता हुआ श्रीप्रिया-प्रियतमके अङ्गोंको स्पर्श करके कृतार्थ हो रहा है।

सूर्योदयमें तो अभी भी कुछ विलम्ब है। वनश्रेणीपर ऊषाकालीन सौन्दर्य छाया हुआ है। निकुञ्जके इधर-उधर हरिण-हरिणी चौकड़ी भर

रहे हैं। कदम्बपर बैठी हुई कोयलें कुहू-कुहूकी मधुर तान अलाप रही हैं। मालती-जूही आदि नाना प्रकारके पुष्प-वृक्षोंकी पंक्तियाँ निकुञ्जके चारों ओर लगी हुई हैं। सबमें फूल खिले हुए हैं। उनपर भ्रमर गुञ्जार कर रहे हैं।

अब वृन्दाकी भाव-समाधि टूटती-सी है। वे कहती हैं-प्यारे श्यामसुन्दर! मेरी वनवासिनी बहिनोंने वनको तुम्हारे लिये ही आज अद्भुत साजसे सजाया है। अपनी दृष्टि डालकर उनकी प्यारभरी सेवा स्वीकार करो!

वृन्दाकी बात सुनकर सभी सखियोंमें आनन्द छा जाता है। सखियोंमें कोई श्यामसुन्दरकी शय्यापर, कोई नीचे बैठी हुई थीं तथा कुछ घेरे हुए खड़ी थीं। उन सबके बीचमें प्रिया-प्रियतमकी अनिर्वचनीय शोभा समस्त निकुञ्जको आनन्दसे प्लावित कर रही थी।

वृन्दाकी प्रार्थना सुनकर दुपट्टा सँभालते हुए श्यामसुन्दर एवं चम्पई रंगकी साड़ी सँभालती हुई श्रीप्रिया उठ पड़ती हैं। सखी-मण्डलीके सहित दोनों ही निकुञ्जके बरामदेमें आकर खड़े हो जाते हैं। पुष्पोंसे लदी हुई सघन लताएँ बरामदेको चारों ओरसे घेरकर शोभा पा रही हैं। रानी एवं श्यामसुन्दर उसी बरामदेसे होते हुए निकुञ्जके बाहरी सहनमें आकर खड़े हो जाते हैं।

मन्द समीरके झोंकेसे हिलती हुई लताएँ मानो प्रिया-प्रियतमसे प्रार्थना कर रही हों—मेरे जीवनाधार! रातभर तुम्हें हृदयमें छिपाये रही हूँ। क्या अब जा रहे हो? ना, ना, मत जाओ!

आगे सहनमें बड़ी-बड़ी क्यारियोंमें सुन्दर-सुन्दर गुलाबकी बेलें फैली हुई हैं, जिनपर बड़े-बड़े गुलाब खिले हुए हैं। श्रीप्रिया-प्रियतम उन्हीं गुलाबोंके बीचसे होकर बढ़ रहे हैं। अभी भी श्यामसुन्दरके शरीरपर आलस्यके चिह्न बने हुए हैं। वे रह-रहकर श्रीप्रियाकी ओर झुक जाते हैं तथा अत्यन्त प्यारसे श्रीप्रियाके कंधेको दबाकर उनके मुखारविन्दको ओर देखने लग जाते हैं। कभी-कभी चौंके हुए-से इधर-उधर देखने लग जाते हैं। श्रीप्रियाजी इस समय घबरायी-सी मुद्रामें उधर ही देखने लग जाती हैं।

श्रीप्रिया-प्रियतम अब एक-दूसरेके गलेमें बाँह डाल देते हैं तथा क्षण एक-दूसरेके मुखारविन्दको अतृप्त नयनोंसे देखते रहते हैं। फिर वियोगकी बात स्मरण करके दोनों ही एक बार अतिशय गम्भीर श्वास लेते हैं। दोनोंके मुखपर उदासी छा जाती है। कुछ क्षणोंके लिये सखियाँ भी अतिशय गम्भीर हो जाती हैं।

ललिता इसी समय दोनोंको प्रसन्न करनेके उद्देश्यसे रानीसे कहती हैं—री ! याद है कि भूल गयी ? आज प्रतिदिनकी अपेक्षा सूर्य-पूजाके लिये शीघ्र ही वन जाना है। तीन दिनकी सूर्य-पूजाका व्रत आज ही प्रारम्भ करना है, पर तू तो बिल्कुल चींटीकी चाल चल रही है !

ललिताकी इस बातको सुनकर रानी एवं श्यामसुन्दर दोनों ही शीघ्र पुनर्मिलनकी कल्पनासे आनन्दमें भर जाते हैं। दोनोंके मुखपर उल्लास छा जाता है। सखियाँ भी उल्लसित हो जाती हैं। श्यामसुन्दर अतिशय कृतज्ञताभरी दृष्टिसे ललिताकी ओर ताकने लगते हैं एवं कुछ शीघ्र गतिसे बढ़ने लग जाते हैं।

मन्द समीरका स्पर्श पाकर यद्यपि श्यामसुन्दर एवं रानीमें आलस्य बिल्कुल नहीं रह गया है, पर दोनों ही चतुराईसे आलस्यका बहाना लेकर बीच-बीचमें अँगड़ाई लेते समय इतनी ललकसे एक-दूसरेके साथ सट जाते हैं मानो एक-दूसरेमें सर्वथा मिल जाना चाहते हैं।

गुलाबकी क्यारियोंसे होते हुए सखी-मण्डलीके सहित श्रीप्रिया-प्रियतम कदली-वनमें प्रवेश करते हैं। इसके बाद तरह-तरहके अत्यन्त सुगन्धित पुष्पोंकी क्यारियोंमेंसे होते हुए विश्राम-कुञ्जके फाटकपर पहुँच जाते हैं। फाटकसे कुछ ही कदम हटकर यमुनाका निर्मल प्रवाह प्रवाहित हो रहा है। श्रीप्रिया-प्रियतम फाटकसे निकलकर सड़कके किनारे एक सुन्दर वटवृक्षके नीचे खड़े होकर यमुनाकी शोभा निहारने लग जाते हैं।

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

स्नान लीला

निकुञ्जसे लौटकर श्रीप्रिया अपने महलके कमरेमें सुन्दर पलंगपर लेटी हुई हैं। श्रीप्रियाका सिर दक्षिणकी तरफ है एवं पैर उत्तरकी ओर। आँखें बंद हैं। हल्की नीली चादरसे श्रीप्रियाको गर्दनके नीचेके अङ्ग ढके हुए हैं। देखनेसे प्रतीत हो रहा है कि श्रीप्रियाजी सो रही हैं; पर वस्तुतः प्रिया जगी हुई हैं। एक मञ्जरी श्रीप्रियाके तलुएके पास पलंगपर बैठी है। मञ्जरीके पैर नीचेकी ओर लटक रहे हैं, मञ्जरीकी दृष्टि श्रीप्रियाजीकी ओर लगी हुई है।

मञ्जरियाँ एवं सखियाँ विभिन्न कार्योंमें व्यस्त हैं। कोई उबटन तैयार कर रही है, कोई चन्दन घिस रही है, कोई झारियोंमें जल भर रही है, कोई छोटी-छोटी कटोरियोंमें विभिन्न तेल-फुलेल डाल रही है, कोई दन्तमञ्जन निकालकर छोटी-सी कटोरीमें रख रही है, कोई श्रीप्रियाके पहननेके वस्त्रोंको निकाल-निकालकर सजा रही है, कोई स्नान करने जा रही है और कोई स्नान करके लौट रही है तथा इस प्रक्रियामें रानीके महलसे लेकर यमुनाके घाटतक आने-जानेका ताँता लग रहा है। कोई सुन्दर चमचम करती हुई अलगनीपर कपड़े फैला रही है, कोई अपने केशोंमें कंघी कर रही है,कोई शीघ्रतासे केशोंको गूँथ रही है,कोई आँखोंमें अञ्जन लगा रही है। कुछ मञ्जरियाँ बिलोये हुए दूधमेंसे अभी-अभी निकले मक्खनको सुन्दर-सुन्दर बड़े-बड़े बर्तनोंमें सजा रही हैं,कोई दूधके बर्तनोंको चूल्हेपर गर्म करनेके लिये चढ़ा रही है, कोई भिन्न-भिन्न चीजोंको यथास्थान सजा-सजाकर रख रही है। दो-तीन मञ्जरियाँ प्रियाके पहननेके लिये पुष्पमाला शीघ्रतासे तैयार करनेमें लगी हैं, कोई प्रियाके तुलसी-पूजनकी सामग्री इकट्ठी कर रही है। इस तरह सम्पूर्ण महलमें चहल-पहल-सी है। अवश्य ही सारे कार्य अतिशय शान्तिके साथ हो रहे हैं। सभी इस चेष्टामें हैं कि शब्द न हो, नहीं तो यदि प्रियाकी

आँखें कदाचित् लगी भी हों तो खुल जायँगी। बीच-बीचमें कुछ ठन् शब्द एवं सखियों-मञ्जरियोंके कङ्कण-करधनीके झन्-झन् शब्द सुन पड़ते हैं। नूपुरका रुनझुन-रुनझुन शब्द भी रह-रहकर सुन पड़ता है। सखियोंको-मञ्जरियोंको स्वयं अपना ही रुनझुन-रुनझुन शब्द भ्रममें डालने लगता है कि कहीं प्यारे श्यामसुन्दर तो नहीं आ रहे हैं।

श्रीप्रिया जिस कमरेमें लेट रही हैं, उसी कमरेमें उत्तरके हिस्सेमें खड़ी होकर ललिता शीघ्रतासे अपना शृङ्गार कर रही हैं। एक मञ्जरी चाहती है कि मैं सहायता करूँ, पर मुसकुराती हुई वे धीरे-से हाथके इशारेसे कहती हैं— तू ठहर जा! मैं शीघ्र ही अपना शृङ्गार स्वयं कर ले रही हूँ।

शीघ्रतासे ललिता अपने हाथोंसे ही अपने केशोंको गूँथ लेती हैं तथा सिरपर अञ्चल डाल लेती हैं। मञ्जरी थालमें शृङ्गारका बहुत-सा सामान लिये खड़ी है। ललिता उसमेंसे किसी भी वस्तुको नहीं लेतीं। हाँ, केवल घिसी हुई कस्तूरीकी छोटी कटोरीमें अपने दाहिने हाथकी अनामिका अँगुली डाल देती हैं तथा अपने ललाटपर सुन्दर गोल बिंदी लगा लेती हैं। बिंदी लगाकर मुस्कुरा पड़ती हैं। फिर उसी अँगुलीसे उस मञ्जरीके ललाटपर भी वैसी ही बिंदी बना देती हैं। ललिता उसी मञ्जरीके कानमें कुछ धीरेसे कहती हैं। मञ्जरी थालको वहीं दीवालके सहारे एक किनारे रखकर शीघ्रतासे कमरेके बाहर चली जाती है तथा ललिता, जिस पलंगपर रानी लेटी हुई हैं, उसके पास जा पहुँचती हैं।

ललिता धीरेसे रानीके कंधेके पास बैठ जाती हैं तथा उनके मुखारविन्दकी ओर देखने लग जाती हैं। कुछ क्षण देखती रहकर अतिशय प्यारसे रानीके ललाटको सहलाने लगती हैं। रानी आँखें खोल देती हैं। ललिता अतिशय प्यारसे रानीके मुँहके पास झुक जाती हैं तथा धीरेसे कहती हैं—नींद आयी थी कि नहीं, ठीक-ठीक बता!

रानीके मुखपर गम्भीर मुस्कान छा जाती है। वे कुछ नहीं बोलतीं, केवल एक क्षणके लिये पुनः आँखें मूँद लेती हैं। फिर आँखें खोलकर ललिताके बायें कंधेको अपने दाहिने हाथसे पकड़ लेती हैं। ललिता फिर पूछती हैं —क्यों! नहीं बतायेगी?

रानी कुछ गम्भीरताकी मुद्रामें कहती हैं—नींद नहीं आती तो क्या करूँ ?

रानीकी बात सुनकर ललिताकी आँखें प्रेमसे भर जाती हैं, पर अपनी इस दशाको छिपाती हुई वे कहती हैं—सूर्योदय हो गया है। कुन्द या धनिष्ठा शीघ्र आ पहुँचेगी। तू तैयार हो जा।

यह सुनते ही रानी शीघ्रतासे कपड़ा समेटती हुई तथा बायें हाथसे ललिताके कंधेका सहारा लेकर उठकर पलंगपर बैठ जाती हैं। उठकर बैठते ही श्यामसुन्दरकी वह मोहिनी सूरत आँखोंके सामने नाचने लगती है मानो सचमुच श्यामसुन्दर प्रत्यक्ष खड़े हों। कलसे रानीकी दशा विचित्र-सी हो गयी है। वे श्यामसुन्दरके प्रति रह-रहकर जोरसे सम्बोधन करने लग जाती हैं। ललिता कई प्रकारकी युक्तियाँ रच-रचकर रानीकी यह दशा बड़ी कठिनाईसे रानीके गुरुजनोंसे छिपाती रही हैं। अवश्य ही बीच-बीचमें रानीको यह होश भी आ जाता है कि मैं अनाप-शनाप बक जाती हूँ तथा उस समय ललिताकी कठिनता-दिक्कतें समझकर ललितासे चिपटकर रोने लग जाती हैं; पर फिर भूल जाती हैं। ललिता प्रातःकालसे ही सावधान हैं कि श्यामसुन्दरके पास हम-सब जबतक नहीं पहुँच जायें, तबतक जिस-किस प्रकारसे भी यह बावली राधा शान्त बनी रहे; इसलिये ही रानीके पलंगपर बैठते ही ललिता शीघ्रतासे उठ खड़ी होती हैं तथा धीरेसे रानीके हाथको पकड़कर कहती हैं—तू हाथ-मुँह धोती रह और मैं तुझे एक बड़ा सुन्दर समाचार सुनाऊँगी।

रानीका मन उत्कण्ठासे भर जाता है तथा चित्तवृत्ति बँट जाती है। यद्यपि श्यामसुन्दरकी ध्यान-छवि उन्हें दीख रही है, पर ललिताकी बात सुननेकी लालसाने उन्हें तल्लीन होने नहीं दिया। रानी चटपट उठ खड़ी होती हैं। शीघ्रतासे चलकर हाथ-मुँह धोनेके लिये वे सुन्दर सजी हुई एक चौकीके पास जा पहुँचती हैं। उत्तरकी ओर मुँह करके उस पाटेपर बैठ जाती हैं। एक मञ्जरी हाथोंपर जल देने लग जाती है। श्रीप्रिया हाथोंको धोकर कुल्ला करती हैं। फिर लाल रंगका अतिशय सुगन्धित मञ्जन अपने दाँतोंपर लगाती हैं। श्रीप्रियाके निज मुखसे ही इतनी दिव्य एवं इतनी मनोहर सुगन्ध निकल रही है कि

मञ्जनकी सुगन्धि उसके सामने फीकी पड़ गयी। पुनः कुल्ला करके श्रीप्रिया सुवर्ण-तारकी चमकती हुई चिपटी-पतली जीभीसे जीभ साफ करने चलती हैं; पर उसे हाथमें लेकर चुपचाप बैठ जाती हैं मानो बिल्कुल यह बात भूल गयी हों कि मैं मुँह साफ करने बैठी थी।

ललिता कुछ मुस्कुराती हुई रानीके पास आकर खड़ी हो जाती हैं तथा झुककर रानीके हाथको हिलाकर कहती हैं—तो अब सुनाने जा रही हूँ। तू ध्यानसे सुनना भला!

रानी कुछ अकचकायी-सी होकर कहती हैं—हाँ, हाँ, मैं तो भूल ही गयी थी, सुना। — यह कहकर रानी शीघ्रतासे जीभ साफ करके कुल्ला कर लेती हैं तथा अपने अञ्चलसे हाथ पोंछती हुई कहती हैं—अब बता, क्या समाचार बताना चाहती है?

ललिता रानीका हाथ पकड़कर उठा लेती हैं और पकड़े हुए उत्तर-पश्चिमकी ओर कुछ दूर ले जाती हैं, जहाँ एक अतिशय सुन्दर लम्बी चौकी है। चौकीपर गद्दा है तथा गद्देपर उज्ज्वल रंगकी झालरदार सुन्दर रेशमी चादर बिछी है। रानीको ललिता उसीपर बैठा देती हैं। रानी उत्तरकी ओर मुँह करके बैठ जाती हैं तथा अपने दोनों पैर फैला देती हैं। ललिता राधारानीके शरीरसे कञ्चुकी उतार देती हैं तथा चारों ओरसे सखियाँ एवं मञ्जरियाँ यथास्थान बैठकर रानीके शरीरमें उबटन एवं तेल लगाने लगती हैं। विशाखा रानीके केशोंका बन्धन खोलकर उसकी प्रत्येक सुन्दर लटमें तेल लगा रही हैं। ललिता रानीकी ओर मुँह किये हुए बैठी हैं तथा बहुत धीमे स्वरमें कहना प्रारम्भ करती हैं। आवाज इतनी धीमी है कि पासमें बैठी मञ्जरियोंको भी ध्यान देनेसे सुनायी पड़ रहा है। ललिता बोलीं—रात चित्राने एक स्वप्न देखा है। बड़ा ही विचित्र स्वप्न है। उसे सुनकर तू खूब हँसेगी।

रानीकी उत्कण्ठा बढ़ जाती है। वे बड़ी सरलतासे भोली बालिकाकी तरह ललिताके मुखकी ओर झुक पड़ती हैं एवं कहती हैं—शीघ्र सुना, कैसा स्वप्न था?

ललिता कहती हैं—चित्राने मुझसे कहा कि बहिन! ठीक प्रातःकालके

समय मैं स्वप्न देखने लगी। देखा कि मैं किसी सर्वथा अपरिचित देशमें आ गयी हूँ। अवश्य ही वह देश यमुनाके किनारेपर हो बसा है। मैं सोचने लगी कि यहाँ मुझे कौन लाया? प्यारे श्यामसुन्दर कहाँ हैं? सखियाँ कहाँ हैं?— सोचते-सोचते मैं अधीर हो उठी। पास ही यमुना प्रवाहित हो रही थी। मैं वहाँसे चलकर उसके किनारे जा पहुँची। आश्चर्य तो यह था कि वहाँ सुन्दर-सुन्दर महल थे, रमणीय उद्यान थे; पर मुझे कोई भी मनुष्य नहीं दीखता था। मैं इसी उधेड़-बुनमें पड़ी हुई विकल होकर सोचने लगी कि किससे पूछूँ? मुझे यहाँ कौन लाया है? ऐसा कौन है, जो मुझे प्यारे श्यामसुन्दरका पता बता सके?

उसी समय मनमें आया कि पृथ्वी तो व्यापक तत्त्व है। यदि यह बोलती होती तो बता सकती थी कि मेरे प्रियतम कहाँ हैं? हाँ, जल भी बता सकता है; क्योंकि सुना है, यह भी सर्वत्र है; पर यह भी नहीं बोलता। हाय! मेरे प्यारे श्यामसुन्दर! तुम्हारा पता कहाँ पाऊँ?········ अच्छा ठीक! ठीक!! तेज-तत्त्व अतिशय निर्मल है। यह अवश्य ही यहीं रहकर मेरे प्यारे श्यामसुन्दरको देख रहा होगा; पर हाय रे दुर्भाग्य! यह भी बोलना नहीं जानता।········ तो क्या मैं यों ही तड़प-तड़पकर मर जाऊँगी? प्यारे श्यामसुन्दरके पास मेरा संदेश भी नहीं पहुँचेगा?

इसी समय पत्तेके खड़-खड़ करनेकी आवाज मेरे कानमें आयी। मैं सोचने लगी कि निश्चय ही मेरे प्यारे श्यामसुन्दर मुझे ढूँढ़ते हुए आ पहुँचे हैं। उत्कण्ठावश उधर देखने लगी, पर कोई नहीं दीखा। फिर विचारने लगी कि कोई तो नहीं आया; पर जिसने यह खड़खड़ाहट मेरे कानोंमें पहुँचा दी, वह भी तो नहीं दीखा। अयँ! यह खड़खड़ाहट मेरे कानोंमें जैसे आ पहुँची, वैसे ही मेरा संदेश भी तो प्यारे श्यामसुन्दरके कानोंमें पहुँच सकता है। अवश्य-अवश्य पहुँच सकता है।·········· किसने यह आवाज मेरे पास पहुँचायी? पवनने! बस, बस, पवन बोल नहीं सकता; पर इसने करुणावश इशारा कर दिया कि मैं मूक सेवा कर सकता हूँ; तुम्हारा संदेश प्रियतमके पास पहुँचा सकता हूँ।······ तो यही सही। पर ना, यह तो उचित नहीं। क्या पता, प्यारे श्यामसुन्दरने मुझे अलग रखना चाहा हो, इसीलिये मुझे कहीं दूर भेज दिया हो। फिर मेरा संदेश पाकर तो वे निश्चय ही व्याकुल हो जायँगे; मुझे बुला ही लेंगे या स्वयं पवनके

साथ उड़कर मेरे पास आ जायँगे। ना, ना, यह मैं नहीं सह सकती कि अपने सुखके लिये उनके सुखमें बाधा हो। पर..........आह! यह निर्णय कैसे हो कि वास्तवमें मैं क्यों अलग हुई? यदि मैं प्यारे श्यामसुन्दरके हृदयकी इच्छा जान जाती, यदि मैं जान पाती कि वे मेरे लिये व्याकुल हैं तो पवनके द्वारा संदेश भेज देती।

अहा! एक उपाय तो है। यह आकाश शब्दात्मक है। यह बोल सकता है, सर्वत्र है भी। ठीक! ठीक!!..........अरे आकाश! बता, मेरे प्यारे श्यामसुन्दर कहाँ हैं? मेरी सखियाँ कहाँ हैं?— इस प्रकार बार-बार मैं स्वप्नमें ही पुकारने लगी—अरे आकाश! मेरे प्यारे श्यामसुन्दर कहाँ हैं? जल्दी बता!

कुछ ही क्षण बाद देखती हूँ कि यमुनाके घाटपर पाँच देवता प्रकट हुए। वे पाँचों मेरे पास आये। दूरसे ही पाँचोंने सिर टेककर मुझे प्रणाम किया। मैं सकुचा गयी। मेरी-जैसी साधारण गोप-बालिकाको ये देवता प्रणाम क्यों कर रहे हैं? मैं कुछ बोली नहीं। इसी समय उनमेंसे एकने कहा—देवि! हम पाँचों तत्त्व (पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश) के अधिष्ठातृ देवता आपके सम्मुख उपस्थित हैं। आप आज्ञा करें, आपकी कौन-सी सेवा करके हम अपना जीवन कृतार्थ करें।

उनकी बात सुनकर मैं और भी शर्मा गयी; पर प्यारे श्यामसुन्दरका संदेश पानेकी उत्कण्ठासे मैंने हाथ जोड़कर कहा—देवताओ! मैं प्यारे श्यामसुन्दरके विषयमें जानना चाहती हूँ कि वे इस समय कहाँ हैं? मैं उनकी दासी हूँ।

मेरी बात सुनकर मुझे ऐसा अनुमान हुआ कि पाँचों ही उदास हो गये। कुछ क्षणतक वे सभी चुप रहे। मैं कुछ घबराकर बोली—क्यों; आप जानते हों तो बता देनेकी कृपा करें।

देवताओंने कहा—देवि! आपकी यह सेवा हमारी सामर्थ्यके बाहर है। श्यामसुन्दरके विषयमें हमलोग कुछ भी नहीं जानते। आपने हम पाँचोंका संकल्प किया, इसी कारण हम पाँचोंमें यह योग्यता आ गयी कि हम सब आपके प्रत्यक्ष दर्शनके अधिकारी हुए; नहीं तो आप-जैसी

बड़भागिनी गोपसुन्दरियोंकी छायाके दर्शन भी हमलोगोंके लिये असम्भव है।

उन देवताओंकी बात सुनकर मैं विचारमें पड़ गयी। कुछ देर बाद बोली—देव! आप लोग जायें। मुझे और किसी प्रकारकी सेवा नहीं चाहिये।

देवताओंने कुछ सोचकर कहा—देवि! एक उपाय हो सकता है।

मैं—क्या उपाय है?

देवता—यदि आप अपने चरणोंकी धूलि हमें प्रदान करें तो हम पाँचों उस पवित्रतम धूलिको अपनी आँखोंमें आँज लें, फिर हमलोग देख सकते हैं कि प्यारे श्यामसुन्दर कहाँ हैं?

देवताओंकी बात सुनकर मैं तो विस्मयमें पड़ गयी और बोली—आपलोग तो बहुत आश्चर्यकी बात कह रहे हैं। भला, मैं तो प्यारे श्यामसुन्दरको नहीं देख रही हूँ और मेरी धूलि आँखमें आँजनेपर आप प्यारे श्यामसुन्दरको देखने लगेंगे? यह तो अजब-सी बात है।

देवताओंने पुनः घुटने टेक दिये और बोले—हाँ, देवि! सर्वथा यही बात है।

अब मैं कुछ विचारमें पड़ गयी। अन्यमनस्का-सी होकर जहाँ खड़ी थी, वहाँसे कुछ दूर हटकर खड़ी हो गयी। मैंने देखा कि पाँचों देवता, जहाँ मैं पहले खड़ी थी, वहाँ लोटने लगे तथा वहाँकी धूलि उठा-उठाकर अपनी आँखोंमें मलने लगे। मैं जोरसे बोल उठी—कृष्ण! कृष्ण!! क्या कर रहे हैं? आपलोग पागल तो नहीं हो गये हैं, जो इस प्रकार धूलिमें लोट रहे हैं?

कुछ देरके बाद देवता खड़े होकर बोलने लगे—जय हो देवि! तुम्हारी जय हो!! प्यारे श्यामसुन्दर यहाँ आने ही वाले हैं। अब हम-लोगोंको आज्ञा हो।—यह कहते-कहते वे पाँचों अन्तर्धान हो गये।

फिर मैं देखती हूँ कि मन्द-मन्द मुस्कुराते हुए प्यारे श्यामसुन्दर

चले आ रहे हैं। मैं शीघ्रतासे उनकी ओर बढ़ गयी। उनके हाथोंको पकड़कर बोली— मैं यहाँ कैसे आ गयी ? तुम कहाँ चले गये थे ?

श्यामसुन्दरने मुस्कुराते हुए कहा………, यह कहते-कहते ललिता हठात् चुप हो गयीं।

ललिता चित्राके स्वप्नकी बात सुना रही थीं तथा रानी अतिशय शान्त मुद्रामें सुनती जा रही थीं। तभी एक मञ्जरीने ललिताको कुछ इशारा किया, इससे ललिता चुप हो गयीं। इसी समय एक मञ्जरी पूर्व एवं दक्षिणके कोनेकी तरफसे आती है तथा ललिताको दूरसे ही पुकारकर कहती है— ललिता रानी ! तुम्हें माँ बुला रही हैं।

मञ्जरीकी बात सुनकर ललिता चित्राके कानमें धीरेसे कहती हैं— शेष तू सुना दे, मैं जा रही हूँ। —यह कहती हुई वे पूर्व एवं दक्षिणके कोनेकी तरफ चली जाती हैं तथा उसी मञ्जरीके पीछे दक्षिणकी तरफ ढलानकी ओर बढ़ती हुई आँखोंसे ओझल हो जाती हैं।

अब चित्रा स्वप्नका शेष अंश स्वयं सुनाती हैं।

चित्रा बोलीं— हाँ, तब श्यामसुन्दर आये और मैंने उनसे पूछा कि मैं यहाँ कैसे आ गयी ? तुम कहाँ चले गये थे ?

प्यारे श्यामसुन्दरने मुस्कुराकर कहा— मैं तो देवीकी पूजा करने गया था।

मैं— किस देवीकी पूजा ?

श्यामसुन्दर— भगवती त्रिपुरसुन्दरीकी।

मैं— क्यों ?

श्यामसुन्दर— यों ही।

मैं— नहीं, ठीक बताओ। पूजा करने क्यों गये थे ?

श्यामसुन्दर— भगवतीसे शक्ति माँगने गया था।

मैं--किसलिये ?

श्यामसुन्दर- तू जानकर क्या करेगी ?

मैं श्यामसुन्दरसे इस बार चिढ़ी-सी होकर बोली--ठीक है, जाओ ! मत बताओ !! --यह कहती हुई मैं वहीं मुँह फेरकर बैठ गयी।

प्यारे श्यामसुन्दर हँसने लगे ! फिर कुछ क्षणके बाद बोले--अच्छा, देख ! बता देता हूँ; पर तू किसीसे बताना मत !--यह कहकर प्यारे श्यामसुन्दर मेरे सामने चले आये एवं बैठ गये।

मैंने टेढ़ी चितवनसे प्यारेकी ओर देखा; पर देखते ही मेरी रुखाई दूर हो गयी और मैं हँस पड़ी। प्यारे श्यामसुन्दर भी पुनः हँसने लगे। मैं प्यारेके कंधेपर हाथ रखकर बोली--बताओ !

श्यामसुन्दरने कहा--चित्रे ! जिस समय मैं प्रियाको देखता हूँ, उस समय नेत्र स्थिर हो जाते हैं। कल तुम सब मेरे आनेके पहले प्रियाको माला पहना रही थीं। मैं छिपकर देख रहा था और सोचने लगा कि ओह ! मेरी प्रियाके अङ्ग कितने सुकोमल हैं। हाय, पुष्पोंके भारको प्रिया किस प्रकार सहती होगी ! पुष्पोंकी पँखुड़ी प्रियाके कोमल हृदयको बींधती तो नहीं होगी !--यह सोचते-सोचते मेरी आँखें बंद हो गयीं। अब तो विचारोंका ताँता लग गया--आह ! अञ्जन मेरी प्रियाकी आँखोंको अवश्य कष्ट देता होगा। हाय ! हाय !! आभूषण तो बड़े ही कठोर हैं; ये मेरी प्रियाके अङ्गमें गड़ जाते होंगे। यह साड़ी भी बहुत खुरदरी है, प्रियाके अङ्गमें निश्चय ही चुभती होगी। ओह ! प्रिया तो मेरे कारण अपने आपको भूल गयी है, पर मुझसे यह सहा नहीं जाता। नहीं, नहीं, मैं मना कर दूँगा कि मेरी हृदयेश्वरि ! तू माला मत पहन, अञ्जन लगाना छोड़ दे, आभूषण मत धारण कर। फिर मेरी प्रिया कभी भी इन्हें स्पर्शतक नहीं करेगी ! मैं ठीक जानता हूँ, उसके हृदयको जानता हूँ। वह पुष्पमाला मेरे लिये पहनती है, आभूषणसे अपने आपको मेरे लिये ही सजाती है, अञ्जन आँखोंमें मेरे लिये ही आँजती है। उसका सारा साज-शृङ्गार इसीलिये है कि मैं चाहता हूँ कि मेरी प्रिया अपने अङ्गोंको सजाये। आह ! वह तो मेरे प्रेममें विवेक खो बैठी है और सोचती है कि अञ्जन, आभूषण, मालाएँ उसे सुन्दर बना

देंगी और प्यारे श्यामसुन्दर उसे देखकर और भी प्रसन्न होंगे; पर सच्ची बात कुछ और ही है। अञ्जन प्रियाकी आँखोंको सुन्दर नहीं बनाता, बल्कि प्रियाकी आँखोंमें पड़कर वह अञ्जन सुन्दर बन जाता है; आभूषणोंसे प्रियाके शरीरकी सुन्दरता नहीं बढ़ती, बल्कि प्रियाके अङ्गोंसे जुड़कर ये आभूषण अनन्त गुना सुन्दर बन जाते हैं; पुष्पमालासे प्रियाके वक्षःस्थलकी शोभा नहीं बढ़ती, बल्कि प्रियाके सुन्दर वक्षःस्थलपर झूलकर पुष्पमालाकी शोभा अनन्त-असीम हो जाती है। मैं प्रियाको इन्हें इसीलिये धारण करने देता हूँ कि इनका सृजन सफल हो जाये प्रियाके अङ्गका स्पर्श पाकर ये कृतार्थ हो जायें, निहाल हो जायें; पर अब सहा नहीं जाता! बस, बस, बहुत हो गया। आज मना कर दूँगा कि मेरी प्राणेश्वरि! तू शृङ्गार करना छोड़ दे। इतनी ही बातसे सब ठीक हो जायेगा। पर साड़ीका क्या करूँ? हाय! मेरी प्रिया तो मेरे इशारे मात्रसे साड़ीतक फेंक देगी। उसे लोक, वेद, कुल, धर्म, देह, लज्जा आदि किसीकी भी रत्ती मात्र परवाह ही नहीं है। वह जानती है केवल एक बात; उसे केवल इतनी स्मृति है कि प्यारे श्यामसुन्दरके सुखके लिये सब-कुछ हँसते हुए स्वाहा कर देना। इसलिये उसके मनमें तो इस विचारकी छाया भी नहीं पहुँच सकेगी कि मैं विवस्त्र रहकर कैसे जीवन बिताऊँगी। वह तो तत्क्षण मेरी इच्छाके साँचेमें ढल जायेगी; पर लोग तो उसे बावली-विक्षिप्त समझने लगेंगे। उसे घरमें बंद कर देंगे तथा वह मेरे विरहमें तड़प-तड़पकर प्राण दे देगी। ओह! कठिन उलझन है, इसे कैसे सुलझाऊँ?—चित्रे! मैं कल दिन-रात यही सोचता रहा। फिर भगवतीकी कृपाका स्मरण करने लगा। प्रातःकाल कुञ्जसे लौटते ही भगवतीके मन्दिरमें गया। देवीके चरणोंमें प्रणाम करके प्रार्थना करने लगा। देवीने प्रसन्न होकर कहा—प्यारे श्यामसुन्दर! बोलो, क्या चाहते हो?

मैंने कहा—देवि! यह बताओ, समस्त विश्वमें सबसे सुकोमल वस्तु क्या है?

देवीने हँसकर कहा—सच्ची बात बता दूँ?

मैंने कहा—हाँ, देवि! सर्वथा सच्ची बात बताओ।

देवी—प्यारे श्यामसुन्दर! सबसे सुकोमल तुम्हारी प्रिया एवं तुम

हो। तुम दोनोंसे अधिक सुकोमल वस्तु न पहले कभी थी, न है और न होगी।

चित्रे! मैं देवीकी बात सुनकर कुछ आश्चर्यमें पड़ गया। सोचने लगा कि मेरी प्रियाकी सुकोमलतमता तो प्रत्यक्ष है; पर मैं सुकोमलतमकी गणनामें कैसे आ गया? मुझे तो यह भान नहीं होता; पर देवी तो झूठ नहीं कहेंगी। इनके वचन त्रिकाल सत्य हैं। भले ही मुझे अनुभव न हो कि मैं सुकोमलतम हूँ; पर जब देवी कहती हैं तो फिर एक काम करूँ। अब देवीसे एक भिक्षा माँग लूँ।

मुझे सोचते देखकर देवीने पुनः हँसकर कहा—हाँ, प्यारे श्यामसुन्दर! जो चाहिये, वह मुझे निःसंकोच बता दो; मैं अवश्य दूँगी।

देवीकी बात सुनकर मैं प्रसन्न हो गया और बोला—देवि! तुम अन्तर्हृदयकी बात जानती हो, इसलिये तुमसे निःसंकोच एक भिक्षा माँग रहा हूँ। तुम कृपा करके मुझमें ऐसी सामर्थ्य दे दो कि मैं जहाँ चाहूँ, वहीं समा जाऊँ। मुझमें ऐसी शक्ति आ जाय कि मेरी प्रिया जिस अञ्जनसे अपनी आँखें आँजती है, उस अञ्जनमें समा जाऊँ। प्रिया जिस कुंकुमसे तिलक लगाती है, उस कुंकुममें समा जाऊँ। जिस मृगमदसे प्रिया अपने वक्षःस्थलका शृङ्गार करती है, उस मृगमदमें समा जाऊँ। सखियाँ जो अङ्गराग मेरी प्रियाके शरीरपर लगाती हैं, उस अङ्गरागमें समा जाऊँ। मेरी प्रियाके कपोलपर जिस चन्दन-पङ्कसे चित्र बनता है, उस चन्दन-पङ्कमें समा जाऊँ। प्रियाके चरणोंमें जिस महावर (आलता) का रंग लगता है, उस रंगमें समा जाऊँ। प्रिया जिन आभूषणोंको धारण करती है, उन आभूषणोंमें समा जाऊँ। प्रिया जो साड़ी पहनती है, जो कञ्चुकी बाँधती है, उसके अणु-अणुमें समा जाऊँ। प्रिया जिस ताम्बूलके बीड़ेको अपने मुखमें रखे, उस ताम्बूल-पत्रमें, उसके चूनेमें, उसकी सुपारीके कण-कणमें मैं समा जा सकूँ। जिन फूलोंसे प्रियाकी माला बनती है, जिन फूलोंको प्रिया अपनी वेणीमें खोंसती है, उन फूलोंमें समा जाऊँ। प्रिया जिस दर्पणमें अपना मुख देखती है, उस दर्पणमें समा जाऊँ। जिस कंघीसे केश सँवारती है, उस कंघीमें; जिस रूमालसे मुख पोंछती है, उस रूमालमें; जिस पीकदानमें पीक फेंकती है, उस पीकदानीके अणु-अणुमें मैं समा जाऊँ।

जिस पलंगपर, जिस सौड़पर, जिस चादरपर, जिस तकियेपर प्रिया विश्राम करती हैं, उसके अणु-अणुमें समा जाऊँ। जिस जलसे, जिस जल-पात्रसे मेरी प्रिया स्नान करती हैं, उस जलमें, उस पात्रमें मैं समा जाऊँ। मेरी प्रिया भोजन करनेके लिये जिस आसनपर बैठती हैं, उसके लिये जिस परातमें भोजन परोसा जाता है और परातमें जो-जो भोज्य-पदार्थ हैं, उस आसन, उस परात एवं उस भोज्य-पदार्थके अणु-अणुमें मैं प्रवेश कर जा सकूँ। जिस गिलाससे प्रिया जल पीती हैं और जिस जलका पान करती हैं, उस गिलास एवं उस जलके अणु-अणुमें समा जाऊँ। जिस पंखेसे सखियाँ प्रियाको हवा करती हैं, उस पंखे तथा हवाके अणु-अणुमें मैं प्रवेश कर जाऊँ। जिस आकाशमें प्रियाके अङ्ग हिलते हैं, उस आकाशके अणु-अणुमें मैं समा जाऊँ। जिस पृथ्वी-तलसे प्रियाके चरणोंका स्पर्श होता है, उस पृथ्वीके कण-कणमें समा जाऊँ। घरकी ओर अथवा वनकी ओर चलती हुई प्रिया जिस पथपर पैर रखती हैं, उस पथकी धूलिके कण-कणमें मैं समा जाऊँ। देवि! अधिक कहाँतक गिनाऊँ, मैं जिस-जिस वस्तुमें चाहूँ, उसीके अणु-अणुमें समा जाऊँ, ऐसी शक्ति मुझे देनेकी कृपा करो। देवि! मेरा हृदय कलसे अत्यन्त दुःखी था। अपनी प्रियाके सुकोमल अङ्गोंको कष्ट पहुँचते देखकर मेरा मन अतिशय उद्विग्न हो गया। रातभर सोचता रहा कि किसी प्रकारसे सबसे सुकोमलतम वस्तुको प्राप्त करूँ तथा देवीकी कृपासे उस वस्तुमें यह शक्ति उत्पन्न करवा लूँ कि मेरी प्रियाकी समस्त वस्तुओंमें वह प्रवेश कर जा सके। यह इसलिये कि जिस समय प्रियाके अङ्गोंको कठोर वस्तु स्पर्श करे, उस समय वह उस आघातको अपने हृदयपर सहकर मेरी प्रियाकी रक्षा करे। तुमने सबसे सुकोमल वस्तु मुझे बतलाया, अतः मेरे अंदर ही यह शक्ति उत्पन्न कर दो।

चित्राने इतना कहा ही था कि ललिता पुनः वहाँ आकर बैठ जाती हैं। कुछ क्षण चित्रा चुप रहती हैं, पर रानी इतनी उत्कण्ठित हो गयी हैं कि तीन बार कह चुकी—हाँ, हाँ, फिर क्या बात हुई, बता!

चित्रा बोलती हैं—प्यारे श्यामसुन्दरकी यह बात सुनकर मैं चटपट बोल उठी कि तुम्हारी बात सुनकर देवीने क्या कहा?

श्यामसुन्दर अतिशय प्रसन्नताकी मुद्रामें बोले—मेरी प्यारी चित्रे!

देवीने अतिशय कृपा करके कह दिया— 'एवमस्तु'।

श्यामसुन्दरकी यह बात सुनकर मेरा हृदय बड़े जोरसे उछलने लगा। मेरा कण्ठ भर आया और बड़ी कठिनतासे मैं पूछ बैठी—सच बताओ, विनोद तो नहीं कर रहे हो? देवीने 'एवमस्तु' कह दिया?

श्यामसुन्दरने बड़ी दृढ़ता एवं सरलताके साथ कहा— हाँ चित्रे! मैं सच कह रहा हूँ, देवीने मुझे ऐसी शक्ति दे दी!

श्यामसुन्दरकी इस बातसे अब मैं आनन्दमें इतनी अधीर हो उठी कि मेरा सारा शरीर थर-थर काँपने लगा। मन-ही-मन सोच रही थी कि मौका पाकर प्यारे श्यामसुन्दरसे मैं एक बात कहूँगी— प्यारे! मैं भी तुमसे एक वस्तु माँग रही हूँ। मैं जानती हूँ कि तुम मेरी सखी राधाके साथ ही हम सबोंको भी प्राणोंसे अधिक प्यार करते हो। तुम्हारा हृदय अतिशय कोमल है ही! कदाचित् हम सबके प्रति भी तुम्हारा कोमल हृदय इसी भावसे भावित हो जाये और इसी प्रकार तुम हमारे आभूषण, अङ्गराग आदिमें समा जाओ तो फिर एक बातकी दया करना। हमें इशारा कर देना, जिससे हम-सब उन आभूषण आदिको सावधानीसे धीरे-धीरे धारण करें एवं निकालें। तुम्हारी बात सुनकर मनमें एक भय हो गया है। सखी राधाकी तो सारी सँभाल हम-सब कर लेंगी, पर यदि तुम कहीं हमारी पुष्पमालामें, हमारे अञ्जनमें, हमारे दर्पणमें आ बैठे और अनजानमें हम-सबने फेंक-फाँक की तो तुम्हें कितनी चोट लगेगी? और फिर 'तुम्हें चोट पहुँची है'— यह बात कभी हमारे जाननेमें आयी तो हम सबका हृदय ही फट जायेगा। इसलिये जब कभी भी ऐसा करना तो बता देना!

मैं मन-ही-मन सोच रही थी और प्यारे श्यामसुन्दर मेरी ओर एकटक देख रहे थे। उन्हें इस प्रकार देखते हुए देखकर मैं हँसने लगी और बोली— क्या देख रहे हो? अब तुम्हें देखकर स्वस्थ हुई हूँ, नहीं तो घबराकर प्राण निकले-से जा रहे थे।— यह कहकर मैंने पञ्च देवताओंकी बात प्यारे श्यामसुन्दरको सुनायी। फिर प्यारे श्यामसुन्दर हँसने लगे। मैं बोली— सचमुच यह बताओ, यह कौन-सा देश है? मैं यहाँ कैसे आ गयी? मेरी प्यारी सखी राधा कहाँ है? हठात् तुम यहाँ कैसे आ गये? तुम्हें यहाँ मेरे होनेकी खबर कैसे लग गयी?

मैं यह कह ही रही थी कि श्यामसुन्दरने हँसकर मुझे हृदयसे लगा लिया; हृदयसे लगाते ही मेरी आँखें खुल गयीं। मैं देखती हूँ कि प्रभात होने जा रहा है। मैं तो आश्चर्यमें डूब गयी और सोचने लगी कि विचित्र स्वप्न देख रही थी। मैंने मन-ही-मन भगवती त्रिपुरसुन्दरीको नमस्कार किया और उनसे प्रार्थना करने लगी-- देवि! मैं जानती नहीं, इस स्वप्नका क्या फल होगा? मेरा कुछ भी हो, पर मेरे प्यारे श्यामसुन्दरका अनन्त मङ्गल हो।

इसी विचारमें मैं पड़ी हुई थी कि बहिन ललिता उठकर मेरे पास आ गयीं। उनसे मैंने स्वप्न सुना दिया। वे हँसने लगीं और बोलीं—बड़ा ही शुभ स्वप्न है; स्नान करते समय सखीको सुनाऊँगी।

चित्राके स्वप्नको रानी चुपचाप गम्भीर बैठी सुन रही थीं। स्वप्न सुनकर एक बार वे भी जोरसे हँस पड़ती हैं, पर तुरंत ही अकचकाकर इधर-उधर देखने लगती हैं। बात यह हुई कि रानीका प्रेम बढ़कर ज्ञान-शक्तिको ढक देता है। रानी यह तथ्य तत्क्षण भूल जाती हैं कि चित्राने यह सब स्वप्नकी बात कही है। वे समझती हैं कि प्यारे श्यामसुन्दरने सचमुच देवीसे यह वर माँगा है। वे मुझे प्राणोंसे बढ़कर प्यार करते हैं, मुझे सर्वथा अपने हृदयमें छिपाकर रखनेकी युक्ति उन्होंने की है,- यह भावना आते ही रानीको अणु-अणुमें श्यामसुन्दर दीखने लगते हैं; इसीलिये ही रानी अकचकाकर इधर-उधर देखने लगती हैं। सामने रसोई-घरका दालान है। रानीको श्यामसुन्दर वहाँ खड़े दीखते हैं।

इधर इसी बीचमें उबटनका कार्य समाप्त हो चुका है। ललिता रानीका हाथ पकड़कर उन्हें स्नान-वेदीकी ओर चलनेके लिये कहती हैं। रानी अञ्चल सँभालती हुई उठ पड़ती हैं, पर सीधे रसोई-घरकी ओर दौड़ पड़ती हैं। रानीने इतनी जोरसे झटका दिया कि ललिताके हाथसे रानीका हाथ छूट गया और रानी उधर दौड़ पड़ीं। परंतु ललिता बड़ी शीघ्रतासे पीछे दौड़कर पुनः रानीको पकड़ लेती हैं तथा कुछ रूठी हुई मुद्रा बनाकर कड़ी आवाजमें कहती हैं— जा, अब मैं तुम्हें कोई बात नहीं सुनाऊँगी; तू इस प्रकार स्वप्नकी बात सत्य मानकर बावली हो जाती है। इधर तेरी

यह दशा है कि तूने स्नानतक नहीं किया है। और यह देख, धनिष्ठा आ गयी; मैया (यशोदा) तुम्हारी बाट देख रही हैं।

ललिताकी आवाजसे रानीका भाव-प्रवाह बहुत-कुछ शिथिल हो जाता है। वे स्वप्नसे जागी हुईकी तरह ललिताका कण्ठ पकड़कर धीरे-धीरे रोने लग जाती हैं तथा कहती हैं— मैं तुम्हें बहुत तंग करती हूँ; पर मेरी प्यारी ललिते ! मैं क्या करूँ, मैं होशमें नहीं रहती।

ललिताने देखा कि दवा काम कर गयी है। अब मेरे खीझनेके भयसे यह थोड़ी देर शान्त रह जायेगी। अतः प्यारकी मुद्रामें कहती हैं— देख बहिन ! अब बहुत देर हो गयी है। अब जल्दीसे स्नान कर ले।

रानी चटपट स्नान-वेदीकी ओर चल पड़ती हैं तथा एक अबोध बालिकाकी तरह चौकीपर बैठकर कहती हैं— जल्दीसे जल डाल दे।

रानीकी यह मधुर सरल कण्ठ-ध्वनि सभी सखियोंके हृदयमें गूँज जाती है। सभीकी आँखें प्रेमसे भर जाती हैं। इन्दुलेखा जलसे भरे कलसेको उठाकर रानीके सिरपर डालती हैं। विशाखा हाथोंसे रानीके केशोंको बिखेरती जा रही हैं। जलकी मोटी धारा रानीके सिरपरसे होकर पीठ-कंधेपर गिर रही है। रानीके सुन्दरतम काले-काले केश जलके वेगसे पीठपर नाच रहे हैं। अब दोनों तरफसे रानीके कंधोंपर रङ्गदेवी एवं सुदेवी दो झारियोंसे जल डालने लगती हैं। विशाखा पीठ, वक्षःस्थल एवं हाथ-पैर आदिपर अपने हाथ फेरती हुई रानीके शरीरको मल रही हैं। जलकी सुवाससे एवं रानीके अङ्गकी दिव्य सुगन्धिसे समस्त आँगन अत्यधिक सुवासित हो उठता है। विशाखा जैसे-जैसे रानीके शरीरको मलती हैं, वैसे-वैसे प्रतीत होता है मानो कोई अतिशय सुगन्धित वनद्रव्यको घिस रहा हो और घिसनेके फलस्वरूप उससे अधिकाधिक सुगन्धि निकल रही हो।

इस प्रकार खूब अच्छी तरह स्नान कराकर रानीके अङ्गको विशाखा चम्पई रंगकी साड़ीसे लपेटकर गीले वस्त्रको अलग कर देती हैं। उसी चम्पई वस्त्रसे सिरके केशोंको भी पोंछती हैं तथा अन्यान्य अङ्गोंको भी। रानी उस वेदीसे उठकर दो-तीन हाथ पश्चिमकी ओर अलग हटकर

खड़ी हो जाती हैं। फिर तुङ्गविद्या बड़ी ही सुन्दर नीली साड़ी रानीको अब पहनाने लगती हैं तथा चम्पई रंगवाली साड़ीको विशाखा उतारती जाती हैं। उसके उतर जानेपर विशाखा ठीकसे नीली साड़ीकी गाँठ लगा देती हैं एवं तुङ्गविद्या ऊपर अञ्चल ठीक कर देती हैं। रानी पश्चिमकी तरफ चलकर शृङ्गार-भवनमें जा पहुँचती हैं। वहाँ बड़ी सुन्दर सजी हुई नीले मखमलकी गद्दी लगी हुई एक चौकी है, जो डेढ़ हाथ ऊँची है, उस चौकीपर रानी पूर्वकी ओर मुख करके बैठ जाती हैं।
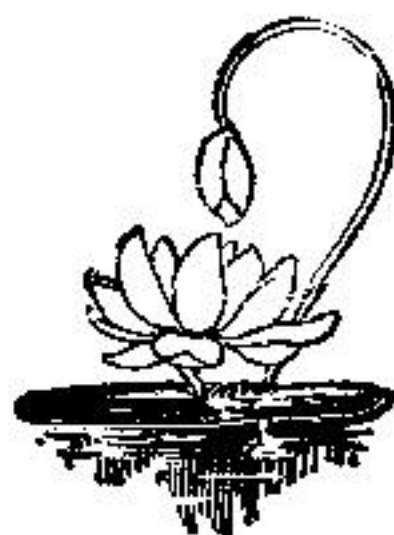
॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

असीमानुराग लीला

पुष्पचयन करनेके लिये श्रीप्रिया वनमें पधार रही हैं। आगे-आगे रूपमञ्जरी है। उनके हाथमें एक डलिया है, जिसमें भीतरके हिस्सेमें केलेके पीले-पीले पत्ते बिछाये हुए हैं। श्रीप्रियाकी बाँयी ओर ललिता है, दाहिनी ओर विशाखा। चित्रा आदि सखियाँ कोई आगे, कोई पीछे चल रही हैं। यमुनाके किनारे-किनारे जो पगडंडी दक्षिणकी तरफ गयी है, उसीपर वे सब चल रही हैं। पगडंडीके पूर्वके हिस्सेमें मेंहदीकी झाड़ियोंकी कतार लग रही है तथा पश्चिमकी ओर तटके किनारे-किनारे, पर तटसे कुछ हटकर वन्य-पुष्पोंकी झाड़ियाँ हैं।

श्रीप्रिया रह-रहकर पीछेकी ओर ताक लेती हैं। यमुनाके निर्मल प्रवाहमें किनारे-किनारे लाल-नीले-उजले कमल खिल रहे हैं। हंस एवं अन्यान्य जल-जातीय पक्षी ऊपरसे उड़कर आते हैं तथा पानीपर छपसे कूद जाते हैं। पानी उनके पंख-संचालित वायुसे तथा वेग पूर्वक कूदनेसे हिलोरें खाने लग जाता है, जिससे डंठीसहित कमल तेजीसे हिलने लग जाते हैं। श्रीप्रिया कभी हिलते हुए कमलोंकी ओर भी दृष्टि डाल लेती हैं।

पगडंडीपर चलती हुई श्रीप्रिया वहाँ आ पहुँचती हैं, जहाँ पगडंडी राजमार्गको पार करती है। वहाँ पहुँचकर श्रीप्रिया कुछ ठिठक जाती हैं तथा पश्चिमकी तरफ ताकने लग जाती हैं। इसी समय पूर्वकी तरफसे एक ग्वालिन दौड़ती हुई आती है। ग्वालिनके सिरके बाल बिखरे हुए हैं, मुख लाल-लाल हो रहा है, आँखें बिलकुल चढ़ी हुई हैं मानो मद पीकर मतवाली-सी हो रही हो। ग्वालिन आकर रानीसे चिपट जाती है और उसकी आँखोंसे आँसुओंकी धारा बहने लगती है। रानीकी भी आँखें भर आती हैं। रानी अतिशय प्यार भरे स्वरमें पूछती है— क्यों, बोल !

रानी उसेको ओरसे हृदयसे चिपका लेती हैं। ग्वालिन सिर उठाती है और देखती है कि यहाँ कौन-कौन हैं। फिर कुछ देरतक पगली-सी

खिलखिलाकर हँसती रहती है। फिर कुछ क्षण चुप रहकर हठात् अतिशय मधुर स्वरमें गाती है—काहे मारे नयना बान साँवरो !

एक कड़ी गाकर ही, बस, उसीको बार-बार बावलीकी तरह दुहराती हुई ताली पीटती हुई पश्चिम एवं दक्षिणकी ओरके सघन वनमें जा घुसती है। रानी जोरसे बोल उठती हैं— रूप ! रूप !! उसे सँभाल।

रानीकी आज्ञासे रूपमञ्जरी उसके पीछे दौड़ जाती है तथा वृक्षोंकी ओटमें हो जानेसे दोनोंका ही दीखना बंद हो जाता है।

रानी अब किनारा छोड़कर पगडंडीकी राहसे सघन वनमें प्रवेश करती हैं; पर वे मन-ही-मन गुनगुनाती जा रही हैं—काहे मारे नयना बान साँवरो। रानीका हृदय ज्यों-ज्यों उस कड़ीकी आवृत्ति करता है, त्यों-त्यों ठीक तदनुरूप झाँकी उन्हें अपने पूर्व-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण, चारों ओर दीखने लगती है। रानी देखती हैं कि प्यारे श्यामसुन्दर कदम्बकी छायामें खड़े हुए वंशीमें फूँक भर रहे हैं। मुखपर मन्द-मन्द मुस्कान है तथा अतिशय प्यार भरी तिरछी चितवनसे मेरी ओर देख रहे हैं। रानीका हृदय अब बेकाबू-सा होने लगता है। मनकी गुनगुनाहट होठोंसे बाहर निकल पड़ती है। रानी बड़ी सुरीली तानसे वनको एक क्षणके लिये निनादित कर देती हैं। सुरीली तानसे सारा वन गुञ्जित हो रहा है— काहे मारे नयना बान साँवरो !

रानीकी आवाज सुनकर ललिता रानीके मुखारविन्दके सामने चली जाती हैं। रानी बड़ी उतावलीसे कहती हैं— ललिते ! इधर देख ! जामुनके पत्ते-पत्तेमें वे खड़े हैं।

ललिता जामुनकी ओर दृष्टि डालती हैं तथा रानीसे कहती हैं— देख ! तू अभी घरके पास है। थोड़ी सावधानीसे चल !

ललिताकी बात सुनकर रानीके मुखपर कुछ घबराहट-सी आ जाती है। वे सँभल जाती हैं तथा जल्दीसे पैर बढ़ाकर चलती हुई मञ्जरियोंसे लदे हुए एक आम्रवृक्षकी जड़के पास पहुँचकर उससे तीन-चार हाथ पूर्वकी ओर दक्षिणकी तरफ मुँह करके बैठ जाती हैं।

आम्रकी मञ्जरियोंपर मधुमक्खियोंकी भीड़ भन-भन करती हुई उड़

रही है। भौंरे भी गुनगुनाते हुए मँडरा रहे हैं। आम्रकी डालीपर कोयलकी तरहकी, पर कोयलसे बड़े आकारकी एक चिड़िया बड़े ही मधुर स्वरमें धीमे-धीमे बोल रही है। चिड़ियाके पंख लाल एवं हलके काले रंगके हैं एवं आँखें बिलकुल लाल रंगकी हैं। वह अपनी लाल पुतलियोंको कोयोंमें नचाती हुई रानीकी ओर देखने लगती है। रानी भी दृष्टि उठाकर उसकी ओर देखती हैं। पहली दृष्टिमें तो वह चिड़िया छाया-सी दीखती है; पर फिर तुरंत दूसरे क्षण रानीको उसकी आँखोंकी पुतलियोंमें, उसके पंखके प्रत्येक भागमें तिरछी चितवन किये हुए श्यामसुन्दरकी झाँकी दीखती है। उनका हृदय फिर तेजीसे आवृत्ति करता है—काहे मारे नयना बान साँवरो।

इस बार उस चिड़ियाकी कण्ठ-ध्वनि भी रानीको यही गाती हुई प्रतीत होती है—काहे मारे नयना बान साँवरो।

रानीका हृदय इतना अधिक भावोंसे भर जाता है कि वे फिर एक बार बड़े ही मधुर स्वरमें जोरसे गाने लगती हैं—काहे मारे नयना बान साँवरो।

यह गाते-गाते रानी उठ पड़ती हैं तथा आम्र-वृक्षकी एक डाली झुकाकर उसमेंसे दो-एक मञ्जरियाँ तोड़ती हैं। तोड़ते-तोड़ते पुनः आम्र-मञ्जरीके स्थानपर उन्हें श्यामसुन्दरकी झाँकी होने लगती है। आम्र-मञ्जरी हाथसे गिर पड़ती है। ललिता उसे उठाकर, लवङ्गमञ्जरीके हाथमें जो डलिया थी, उसमें रख देती हैं।

रानी बैठ जाती हैं तथा दोनों कानोंपर अपना हाथ रखकर ऐसी मुद्रा बनाती हैं मानो बड़े ध्यानसे कुछ सुन रही हों। फिर बड़ी तेजीसे आगे दक्षिणकी ओरके तमाल वृक्षपर दृष्टि जमाकर कहती हैं—ललिते! वह सुन, वे मेरा नाम लेकर मुझे बुला रहे हैं। आह! कितनी मधुर कण्ठ-ध्वनि है!

ललिता कुछ उत्सुकताभरी दृष्टिसे रानीकी ओर देखती हैं। कुछ क्षण देखते रहकर फिर धीरेसे कहती हैं—पर मैं तो कुछ भी सुन नहीं रही हूँ। देख, पहलेकी तरह आज भी भ्रम हो रहा है। श्यामसुन्दर तो

चम्पा-काननमें मिलनेका इशारा कर चुके हैं। वे वहीं होंगे।

रानी बड़ी तेजीसे दक्षिणकी ओर दौड़ पड़ती हैं तथा उसी तमालके पास जाकर खड़ी हो जाती हैं एवं अतिशय प्यारसे बोलने लगती हैं मानो सामने श्यामसुन्दर खड़े हों और वे उनसे बातें कर रही हों। श्रीप्रिया कहती हैं—प्यारे श्यामसुन्दर! ललिता विश्वास नहीं करती। तुम एक बार जोरसे हँस दो।

रानी ऐसा अनुभव करती हैं कि प्यारे श्यामसुन्दर मेरे कहनेसे जोरसे हँस रहे हैं। उनकी प्रसन्नताकी कोई सीमा नहीं रहती। वे बड़ी प्रसन्न मुद्रामें ललितासे कहती हैं—देख ललिते! अब बोल, तू भ्रम बतला रही थी न?

ललिता कुछ आश्चर्यभरी मुद्रामें कहती हैं—पता नहीं बहिन! तुझे क्या हो गया है? सच, श्यामसुन्दर यहाँ नहीं हैं। तू स्वयं हँसती है और मान बैठती है कि प्यारे श्यामसुन्दर हँस रहे हैं।

ललिताकी बात सुनकर रानी कुछ दुःखी-सी हो जाती हैं तथा तमालसे जाकर चिपट जाती हैं और करुणामिश्रित स्वरमें कहती हैं—प्रियतम! क्या करूँ? यह ललिता विश्वास नहीं करती। इसे कैसे समझाऊँ?

एक-दो क्षणके बाद श्रीप्रिया ऐसी मुद्रा बनाती हैं मानो श्यामसुन्दर उनके कानमें कुछ कह रहे हैं और वे अतिशय ध्यानसे सुन रही हों। कुछ देरतक उस मुद्रामें रहकर श्रीप्रिया मन्द-मन्द मुस्कुराने लगती हैं, फिर बड़े उल्लाससे कहती हैं—ललिते! प्यारे श्यामसुन्दरने उपाय बतला दिया है। देख, मैं अभी-अभी तुझे विश्वास कराये देती हूँ.........।

ललिता बीचमें ही बोल उठती है—क्या उपाय बतलाया है?

ललिताकी बात सुनकर रानी कुछ झेंप-सी जाती हैं। कुछ देर ठहरकर कहती हैं—रूप कहाँ गयी? आह! वह अभीतक वापस नहीं आयी?

रानी यह कह ही रही थी कि रूपमञ्जरी उसी ग्वालिनका हाथ पकड़े

हुए वहाँ आ जाती है। रूपमञ्जरीको देखकर रानी प्रसन्न होकर कहती हैं—री! इधर आ।

रानीकी आज्ञा सुनते ही रूपमञ्जरी पासमें आकर खड़ी हो जाती है। रानी उसे हृदयसे लगाकर कहती हैं—रूप! उधर देख! देखकर बता, क्या वहाँ प्रियतम श्यामसुन्दर खड़े नहीं हैं?

रानी रूपमञ्जरीको अँगुलीसे उसी तमालकी ओर देखनेका संकेत कर रही हैं। वह उधर ही ताकने लगती है। दृष्टि उधर फिरते ही रूपमञ्जरीको ठीक वहाँ श्यामसुन्दर दिखायी पड़ते हैं। वह प्रेममें डूबने लगती है। उसकी दशा देखकर ललिता कुछ आश्चर्यमें पूछती हैं—रूप! तू इस तरह एकाएक विह्वल क्यों हो गयी?

रूपमञ्जरी कहती है—आह! ललिता रानी! उधर देखो! प्यारे श्यामसुन्दर कितनी प्रेमभरी दृष्टिसे मेरी ओर ताक रहे हैं।

रूपमञ्जरीकी बात सुनकर ललिताके आश्चर्यका ठिकाना नहीं रहता। उनका गला भर आता है और वे अतिशय उतावलेपनकी मुद्रामें कहती हैं—मेरी प्यारी रूप! मुझे नहीं दीख रहे हैं।

रानी ललिताकी बात सुनकर खिलखिलाकर हँस देती हैं तथा कहती हैं—ललिते! अब बता, मैं तो तुम्हारी दृष्टिमें बावली हूँ, पर रूप तो बावली नहीं। उसे क्यों श्यामसुन्दर दीख रहे हैं?

ललिता अतिशय प्यारसे रूपमञ्जरीके पास जाकर उससे शीघ्रतासे कहती हैं—रूप! क्या सचमुच श्यामसुन्दर यहाँ खड़े हैं?

रूपमञ्जरी—हाँ ललिता रानी! वह देखो, वे मुस्कुराकर तुम्हारी ओर देख रहे हैं।

रूपमञ्जरीकी बात सुनकर ललिता अतिशय आश्चर्यभरी मुद्रामें बहुत शीघ्रतासे उससे कहती हैं—रूप! मुझे फिर क्यों नहीं दीखते?

रूपमञ्जरी प्रेममें अधिकाधिक अधीर होती जा रही है। ललिता उसे जाकर पकड़ लेती हैं। रूपमञ्जरी ललिताके सहारेसे धीरे-धीरे उनके चरणोंमें बैठ जाती है। ललिता कुछ क्षणतक कुछ सोचती रहती हैं। फिर

कहती हैं-- अच्छा रूप ! तू श्यामसुन्दरसे पूछ तो सही, तुम्हें क्यों दीख रहे हैं।

रूपमञ्जरी उस तमालके वृक्षकी ओर कुछ देरतक देखकर कहती हैं—ललिता रानी ! प्यारे श्यामसुन्दर कहते हैं········।

रूपमञ्जरीका कण्ठ भर जाता है। कहते-कहते वाणी रुक जाती है। ललिता बड़े प्यारसे पूछती हैं-- हाँ, हाँ, क्या कहते हैं ? बोल !

रूपमञ्जरी कुछ सँभलकर कहती है— प्यारे श्यामसुन्दरने कहा कि अभी-अभी तुम्हें मेरी प्यारी राधाने अपने हृदयसे लगाया था, इसीलिये तुम मुझे देख रही हो !

रानी रूपमञ्जरीकी बात सुनकर खिलखिलाकर हँस पड़ती हैं; पर ललिताकी मुद्रा कुछ ऐसी अस्त-व्यस्त-सी है कि उन्हें देखकर ऐसा प्रतीत होता है मानो वे किसी बातपर गम्भीरतासे विचार कर रही हों। अब रूपमञ्जरी रानीके पास जाकर खड़ी हो जाती है। रानी कुछ गम्भीरताके स्वरमें ललितासे पूछती हैं-- क्यों ! अब विश्वास हुआ ? मुझे बावली बता रही थी न ?

ललिता अतिशय व्याकुलता-मिश्रित स्वरमें कहती हैं— रूप ! अच्छा, एकबार श्यामसुन्दरसे पूछ, फिर वे मुझे क्यों ठग रहे हैं ? मैं तो उन्हें नहीं देख पा रही हूँ। ऐसा क्यों ?

रूपमञ्जरी कुछ देर पुनः तमालकी ओर देखकर कहती है—ललिता रानी ! आह ! वह देखो, तुम्हारे बिलकुल दाहिने कंधेके पास खड़े होकर वे कह रहे हैं कि रूप ! यदि ललिता आदिको ठगूँ नहीं, तब तो फिर यहाँ बावलियोंका समुदाय इकट्ठा हो जाये। मेरी प्यारी राधा बावली है ही, ललिता भी बावली हो जाये, फिर मेरी प्राणेश्वरी राधाको कौन सँभाले ?

ललितासे कहते-कहते रूपमञ्जरी प्रेममें मूर्छित-सी होने लगती है। ललिताका भी चेहरा प्रेमावेशकी अतिशयताके कारण बिलकुल लाल-सा हो जाता है। उनका मन भावोंके समुद्रमें डूबने-उतराने लगता है। वे कुछ बोलना चाहती थीं कि इसी समय रानी बिलकुल बावली-सी होकर

बड़ी तेजीसे दक्षिणकी ओर दौड़ने लग जाती हैं। ओढ़नी शरीरसे नीचे गिर जाती है तथा अञ्चल भी सिरसे अब गिरा तब गिरा होने लग जाता है। रानी तेज स्वरमें बोलती जा रही हैं—देखो! अभी पकड़ लेती हूँ; मैं भी दौड़ना जानती हूँ।

रानीकी यह दशा देखकर ललिताका भाव बदल जाता है। वे रानीको सँभालनेके लिये तेजीसे उधर ही दौड़ने लगती हैं तथा जाकर उन्हें पकड़ लेती हैं। रानी बड़ी तेजीसे दौड़ रही थीं, इसलिये उनका सारा शरीर पसीनेसे लथपथ हो रहा था। ललिताके पकड़ते ही वे बोलीं—छोड़, छोड़! नहीं तो वे बहुत आगे निकल जायेंगे।

रानी बड़ी फुर्तीसे छुड़ानेकी चेष्टा करती हैं, पर छुड़ा नहीं पातीं। इसलिये लाचार होकर करुणाभरी दृष्टिसे ललिताकी ओर देखने लग जाती हैं। रानी ऐसा अनुभव कर रही हैं कि श्यामसुन्दर पगडंडीपर दक्षिणकी ओर दौड़ते हुए जा रहे हैं; उन्हींको पकड़नेके लिये मैं भी दौड़ रही हूँ। अब जब ललिताने पकड़ लिया तथा उनसे छुड़ा नहीं पायीं तो जोरसे बोल उठीं कि प्यारे! ठहर जाओ! रानीके ऐसा कहते ही उन्हें अनुभव होने लगता है कि श्यामसुन्दर करीब डेढ़-सौ गज दक्षिणकी तरफ हटकर उन्हींकी ओर मुँह किये हुए खड़े हैं। रानीको कुछ ढाढ़स हो जाता है कि वे खड़े हो गये। वे फिर ललितासे कहती हैं—वह देख, आह! मेरे प्राणेश्वर मेरी बात मानकर मुझे थकी देखकर खड़े हो गये हैं।

ललिता उधर देखती हैं, पर पीले पुष्पोंसे लदी हुई झाड़ियोंके सिवा और कुछ भी नहीं देख पातीं। हठात् रानी देखती हैं कि वहाँ श्यामसुन्दर नहीं हैं। यह अनुभव होते ही प्राणोंकी व्याकुलता-मिश्रित एक चीख मारकर रानी माथेको दोनों हाथोंसे पकड़कर बैठ जाती हैं। ललिता कुछ विचारमें पड़ जाती हैं तथा उपाय सोचने लग जाती हैं कि किसी प्रकार इस बावली सखीको यह जँचा दूँ कि श्यामसुन्दर तुम्हारी प्रतीक्षामें मेरे कुञ्जमें बैठे हैं। इसीके लिये वे विशाखाको कुछ इशारा करती हैं। रानी सिर नीचा किये हुए बिलकुल निश्चेष्ट-सी बैठी हैं। विशाखा धीरेसे रानीके कंधेको हिलाकर कहती हैं—बावली! तू तो यहाँ पत्थरकी मूर्ति बनी बैठी है और प्यारे श्यामसुन्दर चम्पा-काननमें तेरी बाट देख रहे हैं।

विशाखाकी बात सुनकर रानी कुछ घबरायी-सी होकर इधर-उधर देखने लग जाती है तथा कुछ क्षणके बाद पूछती है— तो क्या सचमुच मुझे भ्रम हो गया था ? मेरे प्यारे श्यामसुन्दर यहाँ नहीं हैं ?

विशाखा बड़ी तेजीसे कहती है— हाँ बहिन ! तुझे भ्रम हो गया है।

विशाखाकी बात सुनकर रानी कुछ गम्भीर-सी होकर खड़ी हो जाती है तथा चुपचाप शान्त भावसे धीरे-धीरे पगडंडीपर दक्षिण दिशाकी ओर चलने लगती है।

ललिता चाहती है कि यह बावली सखी बातोंमें किसी प्रकार उलझी हुई रास्ता चलती रहे, तब तो जल्दी पहुँचना सम्भव है; नहीं तो पता नहीं, कुञ्जतक पहुँचते-पहुँचते फिर किस भावावेशमें जा पहुँचे। और नहीं तो कम-से-कम गिरिवर-स्रोततक तो शान्तिसे चली चले, फिर कोई भय नहीं। इसी विचारसे ललिता रानीसे कहती है— हाँ, तुमने स्वप्न सुनानेकी बात कही थी, अब सुना।

रानी ललिताकी बात सुनकर मानो सोकर जगी हो, इस मुद्रामें पूछती है— कैसा स्वप्न ?

ललिता— क्यों, भूल गयी ? तुमने कहा था कि ठीक उषाकालके समय मैं आज अतिशय सुन्दर स्वप्न देख रही थी।

रानीके मुखपर इस बातको सुनकर प्रसन्नता छा जाती है। वे कहती हैं— हाँ! कहा था, सचमुच ललिते! बड़ा सुन्दर स्वप्न था।

ललिता बड़ी उत्कण्ठाकी मुद्रामें कहती है— फिर जल्दी सुना।

रानी कुछ बोलना चाहती है, पर रुक जाती है। फिर मुस्कुराकर कहती है— देख! प्यारेके हृदयसे लगी हुई मैं आनन्दमें बेसुध हो रही थी। नींद आज रातमें एक क्षणके लिये भी आयी ही नहीं; पर प्रभात होनेके अन्तिम क्षण पहले आँखें लग गयी। मैं देखती हूँ कि संध्याका समय है। मैं गौरी-पूजन करनेके लिये केशीतीर्थवाले घाटपर स्नान करने आयी हूँ। आकाशमें बादल छाये हुए हैं। घाटपर पैर रखा ही था कि प्यारे श्याम-सुन्दर उत्तर-पूर्वके कोनेकी एक झाड़ीके पास खड़े दीख पड़े। प्यारे

एकटक मुझे एवं मैं प्यारेको एकटक देख रही थी। उसी समय बड़े जोरकी आँधी चली। चारों ओर अन्धकार छा गया। बिजली जोरसे रह-रहकर चमक जाती थी। बिजलीके प्रकाशमें मैंने देखा, वे मुझे अपने पास आनेके लिये हाथोंसे इशारा कर रहे हैं। मैं बावली-सी होकर दौड़ पड़ी। पानीकी बूँदें टप-टप करती हुई मेरी साड़ीपर गिर रही थीं। ललिता! मैं ऐसा अनुभव करने लगी कि साड़ी बिल्कुल भीग गयी है। मैं उसी भीगी साड़ीको लपेटती हुई प्यारे श्यामसुन्दरकी ओर तेजीसे बढ़ने लगी; पर पैर उठते नहीं थे। हृदय चाहता था, दौड़कर प्रियतमके पास जा पहुँचूँ, पर दौड़ पाती नहीं थी। मन व्याकुल होने लग गया। उसी समय देखती हूँ कि वे स्वयं मेरे पास आ गये हैं। उनकी आँखोंसे प्रेम झर रहा था। आते ही वे प्यारसे बोले— प्रिये! तू बिल्कुल भीग गयी है। आ, उस आम्र-निकुञ्जमें चले चलें। वर्षाका वेग थोड़ा रुकनेपर चली जाना।

ललिता! प्रियतमकी बात सुनकर मेरा हृदय बिल्कुल भर आया। आँखें भी भर आयीं मानो हृदय पानी बनकर प्रियतमकी ओर बहने लग गया। फिर प्यारे श्यामसुन्दरने अतिशय प्यारसे मुझे उठाया। मेरे पैर मात्र जमीनपर थे, बाकी शरीरका सम्पूर्ण भार प्यारे श्यामसुन्दरके ऊपर देकर चल पड़ी। सघन आम्रके वृक्षोंका निकुञ्ज पासमें ही था। उसकी आड़में हम दोनों जा छिपे। वायुका वेग वहाँ अत्यन्त धीमा था। वहाँ प्यारे श्यामसुन्दरने अपने प्यारभरे हाथोंसे मेरी कमरके ऊपरके गीले वस्त्रोंको उतार दिया। मेरे उन अङ्गोंको अपने पीताम्बरसे ढक दिया। फिर कमरके नीचे भी पीताम्बर बाँधकर मेरी गीली चुनरीको अपने हाथोंमें लेकर निचोड़ने लग गये। आह, ललिता! जिस समय प्यारे श्यामसुन्दर उसे निचोड़ रहे थे, पानीकी धारा उनके पैरोंपर गिर रही थी। उस समय मेरा हृदय असीम अनुरागसे अधिकाधिक भरता जा रहा था।

रानी स्वप्नकी बात ललितासे कहती जा रही थीं तथा प्रेमसे उनका हृदय भरता जा रहा था। रानीकी बात सुनकर ललिता बीचमें ही बोल उठती है— बावली! क्या भूल गयी? अनन्तचतुर्दशीके दिन ठीक यही घटना घटी थी। तूने ही तो मुझसे कहा था।

अब ललिताकी बात सुनकर रानी कुछ चौंक-सी जाती हैं। रानीका सुन्दर मुखारविन्द कुछ ऐसी मुद्रा धारण कर लेता है मानो वे कुछ याद कर रही हों। कुछ क्षण चुप खड़ी रहकर बोल उठती हैं—हाँ, री! ठीक है। सचमुच अब याद आयी। देख, सम्भवतः आज बिल्कुल सोयी ही नहीं, प्यारेके हृदयमें मुँह छिपाये लेटी हुई थी। अनन्त-पूजाके दिन तुमने कौस्तुभमणिके ध्यानका वर्णन करते हुए यह कहा था कि भगवान् अनन्तके हृदयपर कौस्तुभ रहता है। तू तो कौस्तुभका वर्णन करने लग गयी, पर मेरा मन प्यारे श्यामसुन्दरके विशाल वक्षःस्थलकी शोभाके ध्यानमें इतना तल्लीन हो गया था कि मैं तुम्हारी बात फिर आगे सुन नहीं सकी। मैं सोचने लगी कि आह! प्यारे श्यामसुन्दर जिस समय मेरे गलेमें बाँह डालकर हृदयसे लगाते हैं, उस समय मेरा सिर उनके वक्षःस्थलपर जा टिकता है। ऐसा करके मेरे प्यारे आनन्दमें विभोर हो जाते हैं; पर मेरा कठोर सिर कहीं प्यारेके वक्षःस्थलपर चोट तो नहीं लगा देता है?* प्यारेके वक्षःस्थलमें सिर छिपाये हठात् इसी भावसे पुनः भावित हो गयी थी। मैं ऐसा सोच ही रही थी कि प्यारेने उसे जोरसे अपने भुजपाशमें दबा दिया। अपने हृदयकी उमंगसे प्यारेने मेरे मस्तिष्कको भर दिया। पूजाके बाद उस दिन संध्या-स्नानका दृश्य सामने नाचने लग गया। मैं उस चिन्तनमें बिल्कुल विभोर हो गयी थी। बिल्कुल उसी तरह अनुभव करने लग गयी थी। सारीके बोलनेपर मेरी आँखें खुलीं। मैंने सोचा कि स्वप्न देखा है। सचमुच मुझे भ्रम हो गया था।

रानी यह कहते-कहते रुक जाती हैं तथा कान देकर कुछ सुनने लग जाती हैं। कुछ क्षण रुककर फिर कहती हैं—अरी! सुन तो सही। मेरा नाम लेकर वे पुकार रहे हैं क्या?

---

*अद्भुत प्रेम-पुत्तलिका व्रज-सुन्दरियोंका हृदय श्याम-प्रेमसे वस्तुतः इतना पूर्ण रहता है कि मानवी जगत्‌की बुद्धि उस सरस हृदयकी रूपरेखाकी कल्पना भी नहीं कर सकती। भागवतमें ऐसा वर्णन मिलता है, व्रज-सुन्दरियाँ अपने वक्षःस्थलपर श्यामसुन्दरके चरणकमलोंको धरती हुई रखती हैं। कि कहीं मेरा कर्कश हृदय प्यारेके कोमल चरणोंको चोट नहीं लग

यत्ते सुजातचरणाम्बुरुहं स्तनेषु भीताः शनैः प्रिय दधी

—श्रीमद्भ

आजु गई हुती कुंजन लौं, बरसैं उत बूँद घने घन घोरत ।
'देव' कहै हरि भीजत देखि, अचानक आय गए चित चोरत ॥
पौढि भई तट ओट कुटी के लपेटि पटी सौं कटी पट छोरत ।
चौगुनौ रंग बढ़्यौ चित में, चुनरी के चुचात लला के निचोरत ।

रानीकी मधुर कण्ठध्वनि वनको गुञ्जित करने लग जाती है। ललितादि कुछ निश्चिन्त-सी हो गयी हैं; क्योंकि वे अब घोषसे दूर एवं सघन वन-श्रेणीको पीछे छोड़कर अपने कुञ्जोंकी सीमामें आ गयी हैं। रानी बार-बार उस अन्तिम चरणको दुहराती हैं-- चुनरी के चुचात लला के निचोरत।

इसी समय रानीको दीखता है कि रङ्गदेवी एवं चम्पकलताकी कुञ्जके बीचकी जो सड़क गिरिवर-सोतको पार करती है, उसी सड़कके ऊपर पुलके पास प्यारे श्यामसुन्दर खड़े हैं। रानी बड़ी तेजीसे उन्हें पकड़नेके लिये उधर दौड़ पड़ती हैं। साथमें कहती जा रही हैं— वह देख, वह देख, फिर आ गये, वहाँ खड़े हैं।

रानीके पीछे सभी सखियाँ दौड़ने लग जाती हैं। रानी वहाँ पहुँचकर शीघ्रतासे पुल पार कर जाती हैं, पर वहाँ पहुँचते ही श्यामसुन्दर दीखने बंद हो जाते हैं। रानी बड़ी आकुलता एवं आश्चर्यभरी दृष्टिसे इधर-उधर देखने लगती हैं। सोच रही हैं कि कहीं इसी जगह छिप गये हैं। एक बार चम्पकलताकी कुञ्जकी चहारदीवारीपर हाथ रखकर देखती हैं कि इधर गये होंगे। फिर रङ्गदेवीकी कुञ्जकी चहारदीवारीके पास आकर देखती हैं कि शायद उस कुञ्जमें जाकर छिपे हों। फिर पुलके पास सोतकी सीढ़ियोंपर जाकर देखती हैं कि पुलके भीतर तो नहीं छिप गये हैं। वहाँसे लौटकर निराश-सी होकर उत्तरकी तरफ सीधे सड़कपर देखती हैं। इसी समय श्यामसुन्दर उन्हें वहाँसे उत्तर सड़कपर राधाकुण्डके पास खड़े दीख पड़ते हैं। रानीके आनन्दकी सीमा नहीं। वे बड़ी तेजीसे उधर ही दौड़ती हैं तथा कहती जा रही हैं— वाहजी, वाह! बलिहार है, इतनी फुर्तीसे वहाँ जा पहुँचे।

रानी यह कहती हुई दौड़ती चली जा रही हैं और कुछ ही क्षणमें विद्युत् गतिसे वहाँ पहुँच जाती हैं; पर वहाँ पहुँचते ही फिर श्यामसुन्दर

आजु गई हुती कुंजन लौं, बरसैं उत बूँद घने घन घोरत।
'देव' कहै हरि भीजत देखि, अचानक आय गए चित चोरत॥
भेंटि भट्ट तट ओट कुटी के लपेटि पटी सौं कटी पट छोरत।
चौगुनी रंग बढ्यौ चित में, चुनरी के चुचात लला के निचोरत।

रानीकी मधुर कण्ठध्वनि वनको गुञ्जित करने लग जाती है। ललितादि कुछ निश्चिन्त-सी हो गयी हैं; क्योंकि वे अब घोषसे दूर एवं सघन वन-श्रेणीको पीछे छोड़कर अपने कुञ्जोंकी सीमामें आ गयी हैं। रानी बार-बार उस अन्तिम चरणको दुहराती हैं--चुनरी के चुचात लला के निचोरत।

इसी समय रानीको दीखता है कि रङ्गदेवी एवं चम्पकलताकी कुञ्जके बीचकी जो सड़क गिरिवर-स्रोतको पार करती है, उसी सड़कके ऊपर पुलके पास प्यारे श्यामसुन्दर खड़े हैं। रानी बड़ी तेजीसे उन्हें पकड़नेके लिये उधर दौड़ पड़ती हैं। साथमें कहती जा रही हैं— वह देख, वह देख, फिर आ गये, वहाँ खड़े हैं।

रानीके पीछे सभी सखियाँ दौड़ने लग जाती हैं। रानी वहाँ पहुँचकर शीघ्रतासे पुल पार कर जाती हैं, पर वहाँ पहुँचते ही श्यामसुन्दर दीखने बंद हो जाते हैं। रानी बड़ी आकुलता एवं आश्चर्यभरी दृष्टिसे इधर-उधर देखने लगती हैं। सोच रही हैं कि कहीं इसी जगह छिप गये हैं। एक बार चम्पकलताकी कुञ्जकी चहारदीवारीपर हाथ रखकर देखती हैं कि इधर गये होंगे। फिर रङ्गदेवीकी कुञ्जकी चहारदीवारीके पास आकर देखती हैं कि शायद उस कुञ्जमें जाकर छिपे हों। फिर पुलके पास स्रोतकी सीढ़ियोंपर जाकर देखती हैं कि पुलके भीतर तो नहीं छिप गये हैं। वहाँसे लौटकर निराशा-सी होकर उत्तरकी तरफ सीधे सड़कपर देखती हैं। इसी समय श्यामसुन्दर उन्हें वहाँसे उत्तर सड़कपर राधाकुण्डके पास खड़े दीख पड़ते हैं। रानीके आनन्दकी सीमा नहीं। वे बड़ी तेजीसे उधर ही दौड़ती हैं तथा कहती जा रही हैं— वाहजी, वाह! बलिहार है, इतनी फुर्तीसे वहाँ जा पहुँचे।

रानी यह कहती हुई दौड़ती चली जा रही हैं और कुछ ही क्षणमें विद्युत् गतिसे वहाँ पहुँच जाती हैं; पर वहाँ पहुँचते ही फिर श्यामसुन्दर

नहीं दीखते। रानी इधर-उधर देखने लगती हैं। फिर श्यामसुन्दर राधाकुण्ड एवं कृष्णकुण्डकी सड़कपर बीचके हिस्सेके पुलके नीचे खड़े दीखते हैं। रानी इस बार बैठ जाती हैं तथा रूठनेकी मुद्रामें होकर कहती हैं— जा, अब मैं तुम्हें नहीं देखूँगी! तुम मुझे छोड़कर भागते चले जा रहे हो।

रानी कुछ क्षण आँखें मूँदी रखकर फिर उधर ही देखने लग जाती हैं। इस बार श्यामसुन्दरकी बाँकी झाँकी, मनमोहनी चितवन उन्हें बेसुध बना देती हैं। वे फिर दौड़ पड़ती हैं। कुण्डकी पूर्वी सीमाके पास पहुँचते-पहुँचते उनका पैर लड़खड़ा जाता है। रानी [illegible] विक्षिप्तकी-सी दशामें गिरती हुई-सी धमसे जमीनपर गिर पड़ती हैं तथा वहीं घासपर मूर्च्छित हो जाती हैं। ललिता आदि दौड़ती हुई आती हैं। देखती हैं, रानीके मुँहसे उजला फेन निकल रहा है। देखते ही सबका चेहरा सूख जाता है। ललिता उन्हें चटसे गोदमें उठा लेती हैं, अपने अञ्चलसे मुख पोंछती हैं; पर रानीको होश नहीं आ रहा है।

वृन्दा इसी समय वहाँ इन्दुलेखाकी कुञ्जसे निकलकर चली आती है। सबमें गम्भीरता छा जाती है। आखिर मधुमती विशाखाकी आज्ञासे मधुर कण्ठसे गाना प्रारम्भ करती है। संगीत प्रारम्भ होते ही रानीकी दशा सुधरती-सी दीखती है। अतः मधुमती और भी उत्कण्ठासे गाने लगती है—

कोई एक साँवरो री इत ह्वै आवै जाई।
ज्यों-ज्यों नयनन देखिये री! त्यों-त्यों मन ललचाई॥
बदन मदन मन मोहना घुंघर बारे केस।
मोहन मूरति माधुरी निरतत मनोहर बेष॥
स्याम बरन हियो बेधियो जोबन मद छके नैन।
रूप ठगौरी मोहि लगी री! बिन देखे नहिं चैन॥
धीर हरन बहुरी भुजा री! मद गजराज की चाल।
उर देखे मन आवही ह्वै रहिये, बनमाल॥
समुझाये समुझत नहीं, रही छकि मन रह्यो भोय।
'रामराय' प्रभु सौं रमी कहि भगवान सखि सोय॥

गीत समाप्त होते ही सन्नाटा छा जाता है। रानी आँखें खोल देती हैं। उनके चेहरेपर अतिशय गम्भीरता छायी हुई है। वे धीरे-धीरे उठ बैठती हैं। फिर ललिताका सहारा लेकर खड़ी हो जाती हैं। ललिता रानीको पकड़े हुए अपनी कुञ्जकी ओर बढ़ने लगती हैं। राधाकुण्डकी पूर्वी सड़कको पार करके कुञ्जमें प्रवेश करती हैं तथा सीधे उत्तरकी ओर चलती हुई चम्पा-काननमें आ पहुँचती हैं। एक सखी कुछ इशारा करती है। रानी पूर्वकी ओर देखने लग जाती हैं। उधरसे वृन्दाकी एक दासी आती है। ललिताके कानमें कुछ धीरेसे कहती है। रानी उस दासीसे अतिशय प्रेमकी मुद्रामें इशारेसे ही कुछ पूछती हैं। दासी ललिताकी ओर इशारा कर देती है। ललिता कुछ क्षण कुछ सोचती हैं, फिर चम्पा-काननमें आगेकी ओर सबके साथ बढ़ने लग जाती हैं। फिर उत्तर एवं पश्चिमके कोनेकी ओर मुड़ जाती हैं। थोड़ी देरमें ही चम्पा-काननकी सीमाके पास पहुँच जाती हैं। फिर कुछ रुककर पुन: सीधे उत्तरकी ओर बढ़ने लगती हैं तथा शरीफेके वनमें प्रवेश करती हैं। कुछ देरके बाद एक सुन्दर शहतूतका वृक्ष दीखने लगता है। ललिता प्रसन्नताभरी दृष्टिसे, अभी कुछ देर पहले वृन्दाकी जो दासी आयी थी, उसकी ओर देखती हैं। दासी सिर हिलाती है। ललिता रानीकी बाँह पकड़े उसी वृक्षके पास जा पहुँचती हैं तथा खड़ी हो जाती हैं।

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

भावावेश लीला

श्रीललिताके कुञ्जमें राधारानी शहतूतके वृक्षकी छायामें विराजमान हैं। शहतूतका वृक्ष अत्यन्त हरा है, उसमें हरे-हरे एवं लाल-लाल शहतूतके फल लगे हैं। उसकी जड़के पास अत्यन्त सुन्दर नीले रंगकी मखमली कालीन बिछी हुई है। उसीपर श्रीप्रिया बैठी हैं। कालीनपर मखमली मसनद है। श्रीप्रिया उसीपर आधी लेटी हुई अवस्थामें बैठी हैं। श्रीप्रियाका मुख पूर्वकी ओर है।

मसनदके उत्तरकी तरफ एक सुन्दर छोटी तिपाई, जो मसनदसे थोड़ी कम ऊँची है, पड़ी है। उसी तिपाईपर रखकर चित्रारानी पश्चिम एवं दक्षिणकी ओर मुख किये हुए एक चित्र बना रही हैं। श्रीप्रिया उसी चित्रपर दृष्टि डाले हुए देख रही हैं।

चित्रा कूँची लेकर बड़ी चतुराईसे, पर बहुत शीघ्रतासे चित्रमें रंग भर रही हैं। अब प्रिया मसनदपर अपने बायें हाथकी केहुनीको ऊँचा उठाकर तथा उसी हाथकी हथेलीपर अपने बायें कपोलको रखकर पैर फैलाकर लेट जाती हैं तथा बड़ी गम्भीरतासे चित्रको देखने लगती हैं। चित्राङ्कन प्रायः समाप्त हो चला है। श्रीप्रिया उसे देखकर अतिशय आश्चर्यमें भर जाती हैं, पर बिल्कुल चुप हैं। चित्रा कभी कुछ जोरसे, कभी धीरे-धीरे हँसती जा रही हैं तथा चित्रमें रंग भरनेका काम शीघ्रतासे समाप्त कर रही हैं।

श्रीप्रियाके पीछे पीठके पास विशाखा बैठी हैं तथा ललिता वहाँसे कुछ दूरपर हटकर पूर्वकी ओर मुख किये रूपमञ्जरीसे बहुत गम्भीरतासे कुछ बातें कर रही हैं। ललिता कभी-कभी पीछे रानीकी ओर देखकर मुस्कुरा देती हैं तथा फिर मञ्जरीसे बातें करने लग जाती हैं। रूपमञ्जरी पैरोंके पास बैठी हुई धीरे-धीरे श्रीप्रियाके पैरोंको दबा रही हैं एवं मुस्कुरा-मुस्कुराकर उधर ही देखती जा रही हैं, जिधर चित्र बन रहा है।

चित्रमें रंग भरना समाप्त हो जाता है। चित्रके तीन भाग हैं। चित्र सुनहला है। चित्रवाले पन्नेके नीचेवाले आधे हिस्सेमें एक चित्र है तथा ऊपरवाले आधे हिस्सेको दो बराबर भागोंमें बाँटकर दो चित्र बनाये गये हैं। इस प्रकार एक ही पन्नेपर तीन चित्र हैं। पहले चित्रमें यह दिखलाया गया है कि यमुनाका सुन्दर किनारा है। घाटपर श्रीप्रिया गगरी भर रही हैं। कुछ दूरपर घाटके ऊपर श्रीश्यामसुन्दर कदम्बकी एक टहनीको झुकाकर उससे फूल तोड़ रहे हैं। श्रीप्रिया कनखीसे उन्हें देख रही हैं। दूसरे चित्रमें यह अङ्कित हुआ है कि उसी घाटके पास ही एक कुञ्ज है। उसके दरवाजेपर श्रीप्रिया भौंहें टेढ़ी किये हुए खड़ी हैं। आँखोंसे तो प्रेम झर रहा है, पर कपट-क्रोधका ढंग मुँहपर बनाये हुए खड़ी हैं। श्रीश्यामसुन्दर प्रियाके चरणोंमें झुके हुए हाथोंसे उनके चरणोंको छू रहे हैं। तीसरे चित्रमें यह दिखलाया गया है कि श्रीप्रियाका बायाँ हाथ श्यामसुन्दरके दाहिने हाथमें है तथा एक-दूसरेको निर्निमेष नेत्रोंसे देख रहे हैं। श्रीप्रियाकी गगरी वहीं टेढ़ी होकर पड़ी है। उससे जल गिर रहा है तथा दूरपर श्यामसुन्दरकी गायें मूँजके वनमें दूर चली गयी हैं।

चित्रारानी रंग भरनेकी कूँचीको नीचे रख देती हैं तथा एक दूसरी कूँचीमें सुनहला रंग भरकर बड़े सुन्दर अक्षरोंमें चित्रके नीचे यह पद लिख देती हैं—

ऐरी आज काल्ह सब लोक लाज त्याग दोउ,
सीखे हैं सबै बिधि सनेह सरसाइबो।
यह 'रसखान' दिन द्वै में बात फैलि जैहै,
कहाँ लौं सयानी चंद हाथन छिपाइबो॥

आज हौं निहार्यो बीर! निपट कलिंदी तीर,
दोउन को दोउन सौं मुख मुसकाइबो।
दोउ परैं पैयाँ, दोउ लेत हैं बलैयाँ,
उन्हें भूल गयी गैयाँ इन्हें गागर उठाइबो॥

राधारानी पदको पूरा पढ़कर चित्राके हाथसे चित्र छीन लेती हैं तथा प्यारसे चित्राके कपोलपर एक हलकी चपत लगाकर कहती हैं—चंद

कहींकी ! तू यह कैसे जान गयी ? मैंने तो तुझे कुछ भी नहीं कहा था ।

चित्रा हँसती हुई कहती है— मुझे तो कुछ मालूम ही नहीं है ! मुझे तो आज ललिताने कहा था कि बहिन ! मुझको आज समय नहीं मिलेगा, तू आज श्यामसुन्दरके आनेके पहले-पहले ऐसे तीन चित्र बना दे; इसलिये प्रातःकालसे ही इनमें लगी थी ।

रानी चित्रको लेकर बड़ी प्यारभरी दृष्टिसे उसे देखने लग जाती हैं। फिर आँखें मूँदकर कुछ सोचने लग जाती हैं। चित्रा उनके हाथसे चित्रको ले लेना चाहती है, इसलिये धीरेसे उसे खींचती है; पर रानीकी आँखें खुल जाती हैं। वे कहती हैं— वाह, वाह ! तू भी आजकल मुझे ठगना सीख गयी है।

चित्रा हँसने लगती है तथा कहती है— नहीं, देखनेके लिये ले रही थी कि इसमें कहीं कोई भूल तो नहीं रह गयी है।

श्रीप्रिया चित्राकी बात सुनकर मुस्कुराती हुई पुनः आँखें बंद कर लेती हैं। आँखें बंद रखकर उसी पदको धीरे-धीरे गुनगुनाने लग जाती हैं। शहतूत-वृक्षके चारों ओर शरीफेका वन है। सुन्दर-सुन्दर, बड़े-बड़े शरीफेके वृक्ष लगे हैं, जिनमें पके हुए फल लटक रहे हैं। कई फलोंपर तोते बैठे हुए चोंचसे उसमें छेद बना रहे हैं। शरीफेकी सघन वृक्षावलीसे यह शहतूतका स्थान इतना घिरा हुआ है कि बाहरकी कोई भी चीज किसी तरफसे बिलकुल नहीं दीखती।

श्रीप्रिया कुछ देर बाद आँखें खोलकर इधर-उधर देखती हैं। फिर दृष्टि ऊपर उठाकर नीले गगनकी ओर देखने लग जाती हैं। नीले गगनकी नीलिमाकी ओर ध्यान जाते ही श्रीप्रियाको आकाशमें श्यामसुन्दरकी छवि दीखने लग जाती है। श्रीप्रिया देखती हैं कि एक श्यामसुन्दर ठीक ऊपर खड़े हैं, फिर कुछ दूरपर दूसरे श्यामसुन्दर खड़े हैं, फिर तीसरे, फिर चौथे श्यामसुन्दर। इस प्रकार समूचे गगनमें ही श्रीप्रियाको श्यामसुन्दर-ही-श्यामसुन्दर दीखने लग जाते हैं। श्रीप्रिया बोल उठती हैं— एक, दो, पाँच, दस, बीस, पचास, हजार, लाख, करोड़, असंख्य ! वाह, प्रियतम ! वाह, तुम्हें अच्छी ठिठोली सूझी है।

प्रियाकी बात सुनकर सखियाँ प्रेममें डूब जाती हैं; पर ललिता श्रीप्रियाकी बात सुनकर उनके पास चली आती है तथा जोरसे हँसकर कहती है—एक श्यामसुन्दरके कारण तो मैं तुम्हें सँभालते-सँभालते परेशान हो गयी हूँ, अब असंख्य श्यामसुन्दर आये हैं, तब तो मेरी क्या दशा होगी ? पता नहीं।

ललिताकी बात सुनकर रानी कुछ लजा-सी जाती हैं तथा कुछ सँभलकर, गम्भीर होकर चुपचाप बैठ जाती हैं। इसी समय दबे पाँव श्यामसुन्दर दक्षिणकी ओरसे आकर शरीफेके वृक्षकी ओटमें खड़े हो जाते हैं। श्रीप्रियाकी दृष्टि उनपर नहीं पड़ती, सखियाँ भी उन्हें नहीं देखतीं, पर श्यामसुन्दर सबको अच्छी तरह देख रहे हैं।

श्रीप्रिया ललितासे कहती हैं—ललिते! तू जानती है, आसमान नीला क्यों है ?

ललिता मुस्कुराकर कहती है—ना, मैं तो नहीं जानती।

रानी कुछ चिढ़ी-सी होकर चुप हो जाती हैं; पर कुछ देर बाद कहती हैं—देख, श्यामसुन्दर अभीतक नहीं आये। कल मुझे पतंग उड़ाना सिखा देनेके लिये कह गये थे। आसमानको देखकर श्यामसुन्दरकी बात याद आ गयी।

रानीकी बात सुनकर ललिता मुस्कुराकर फिर गम्भीर बन जाती है। श्यामसुन्दर धीरे-से अपनी चादरको हवामें उड़ा देते हैं। पीताम्बर एक बार हवामें उड़कर फिर शरीफेकी डालियोंपर गिर जाता है। सखियोंकी दृष्टि उधर हो चली जाती है; पर प्रिया उसे नहीं देख पातीं।

श्रीप्रिया कुछ देर बाद कहती हैं—री! वह चित्र कहाँ गया ?

चित्र श्रीप्रियाके हाथमें ही था; पर श्रीप्रियाका प्रेमपूर्ण मस्तिष्क अब ठीक-ठीक काम नहीं कर रहा है, इसलिये अपने हाथमें रखे हुए चित्रको भी श्रीप्रिया भूल जाती हैं। ललिता बड़ी तेजीसे कहती है—वह देखो, चित्राने उस शरीफेके वृक्षमें उसे छिपा दिया है।

उसी समय ललिता उसी वृक्षकी ओर इशारा कर देती है कि जिसके पीछे श्यामसुन्दर खड़े थे।

श्रीप्रिया उधर ताकने लग जाती हैं; पर उनकी आँखोंमें तो श्यामसुन्दर भर गये थे। प्रत्येक वृक्षकी जगह, प्रत्येक लताकी जगह उन्हें श्यामसुन्दर-ही-श्यामसुन्दर दीख रहे थे। अतः प्रिया यह सोचने लगती हैं कि मेरा मस्तिष्क तो ठीक है नहीं; मैं श्यामसुन्दरके सिवा कुछ भी नहीं देख पा रही हूँ। चित्रकी बात याद आ गयी थी, पूछ बैठी; पर अब इन सबके कहनेके अनुसार उधर नहीं जाती हूँ तो ये सब हँसेंगी। अतः श्रीप्रिया यन्त्रकी तरह, आधी बावली-सी होकर, जिधर ललिताने इशारा किया था, उधर ही बढ़ने लग जाती हैं। चित्र उनके हाथसे मसनदपर गिर जाता है।

श्रीप्रिया आगे दक्षिणकी ओर बढ़कर ठिठकी-सी होकर खड़ी रह जाती हैं और सोचती हैं कि मुझे क्या हो गया है? श्यामसुन्दर तो एक हैं, फिर इतने श्यामसुन्दर कहाँसे आ गये? मेरे प्रियतम मुझसे कोई खेल खेल रहे हैं या मेरी आँखोंमें ही कोई दोष हो गया है?— यह सोचती हुई श्रीप्रिया इधर-उधर देखने लगती हैं, पर दाहिने-बायें-सामने उन्हें बिलकुल प्रियतम श्यामसुन्दर दीख पड़ते हैं। रानी सोचती हैं— अच्छा, एक काम करूँ। मैं जाँच लेती हूँ, बात क्या है?

जाँच करनेकी दृष्टिसे श्रीप्रिया एक प्यारभरी हलकी चपत बायीं ओर लगाने चलती हैं; पर हाथ आकाशमें तैरने लग जाता है। श्रीप्रिया कुछ गम्भीर-सी हो जाती हैं। वे निश्चय करती हैं कि ना, मेरी आँखोंमें ही कोई दोष है। यदि श्यामसुन्दर होते तो उनसे मेरा हाथ टकरा जाता। ऐसा सोचकर प्रिया निधड़क दक्षिणकी तरफ उसी झाड़ीकी ओर बढ़ने लगती हैं, जिसके पीछे श्यामसुन्दर छिपे हुए हैं। श्रीप्रिया जैसे आगे बढ़ती हैं, वैसे ही उन्हें दीखता है कि मेरे आगे-पीछे, दाहिने-बायें, सैकड़ों-हजारों श्यामसुन्दर चल रहे हैं। अब प्रियाजीने मनमें यह निश्चय कर लिया है कि मेरी आँखोंमें यह कोई रोग है। इसलिये वे उस झाड़ीमें छिपे हुए श्यामसुन्दरको भी, असली श्यामसुन्दरको भी नकली समझती हैं।

श्रीप्रिया उस झाड़ीके पास पहुँच जाती हैं। श्रीश्यामसुन्दर श्रीप्रियाकी यह प्रेम-दशा देखकर स्वयं प्रेममें विभोर होने लग जाते हैं तथा उनका

सारा शरीर काँपने लगता है। वे चाहते हैं कि श्रीप्रियाको हृदयसे लगा लें, पर हाथ-पैर सब-के-सब बिलकुल जड़-से हो जाते हैं। अतः श्रीप्रियाके बिलकुल पास आ जानेपर भी असली श्यामसुन्दर चुपचाप खड़े हैं। श्रीश्यामसुन्दरने पीताम्बरको शरीफेकी एक टहनीपर रख दिया था। इसलिये कमरसे ऊपरका हिस्सा बिलकुल खुला है। सिरपर मोर-मुकुट है और हाथमें मुरली है।

अब प्रियाकी दृष्टि उनपर पड़ती है। अबतक श्रीप्रियाके मस्तिष्कमें बिलकुल वही यमुना-तटवाली झाँकी भरी हुई थी। दुपट्टा ओढ़े हुए लाखों श्यामसुन्दर उन्हें दीख रहे थे। पर जब वस्तुतः श्यामसुन्दरके पास पहुँची तो देखती हैं कि एक श्यामसुन्दरके कंधेपर दुपट्टा नहीं है। दुपट्टा शरीफेकी टहनियोंपर है तथा श्यामसुन्दरकी छवि जड़पुतलीकी तरह दीख पड़ रही है।

श्रीप्रिया सोचती हैं—यह क्या बात है? अबतक तो मेरी आँखें प्रियतमके कंधेपर दुपट्टा देख रही थीं, पर यह सामनेकी छवि तो कुछ और भी निराली है। आह! मेरे श्यामसुन्दर कितने सुन्दर हैं? आह! दुपट्टेसे रहित श्रीअङ्गको मैं आज ही देख पायी हूँ।

प्रिया सोचती हैं कि यह भी मेरी आँखोंका ही दोष है; पर चित्त बरबस उस छविपर जाकर टिक गया है। प्रिया फिर सोचती हैं कि इस दुपट्टेके भीतर ही शायद वह चित्र चित्राने छिपाया होगा। यही वह दुपट्टा है तथा मैं जो श्यामसुन्दरको देख रही हूँ यह तो मेरी आँखोंका ही दोष है। पहलेकी तरह ही एक दूसरी झाँकी अब मुझे दीख रही है। यह सब सोचकर श्रीप्रिया दुपट्टेकी ओर झुकती हैं।

दुपट्टेका एक छोर श्यामसुन्दरके हाथमें था और दूसरा शरीफेकी टहनीपर। श्रीप्रिया उसी छोरके पास हाथ बढ़ाती हैं कि जिस छोरके पास श्यामसुन्दरका हाथ था। दोनोंके हाथ छू जाते हैं। छूते ही दोनों प्रेममें इतने अधीर हो जाते हैं कि एक-दूसरेकी तरफ गिरकर मूर्च्छित होने लग जाते हैं। सखियाँ दौड़ पड़ती हैं; पर सखियोंके पहुँचनेके पहले ही एक-दूसरेके हृदयसे लगकर मूर्च्छित हो जाते हैं। भाग्यसे शरीफेकी एक मोटी डाल पीछे आ जाती है, नहीं तो दोनों धमसे जमीनपर ही गिर

पड़ते। सखियाँ जल्दीसे पहुँचकर दोनोंको पकड़ लेती हैं। ललिता श्रीश्यामसुन्दरको पकड़कर कुछ धीरेसे हिलाती हैं। श्यामसुन्दर आँखें खोल देते हैं तथा कमरसे रूमाल निकालकर श्रीप्रियाके मुखपर पंखा झलने लग जाते हैं; पर श्रीप्रियाकी मूर्च्छा अत्यन्त गहरी हो गयी है, इसलिये उनकी आँखें नहीं खुलतीं।

श्यामसुन्दर श्रीप्रियाको उठाकर गोदमें लेकर धीरेसे बैठ जाते हैं। सखियाँ चारों ओरसे अतिशय उत्कण्ठाके साथ देख रही हैं कि आज तो दोनोंका ही ढंग विचित्र है। श्यामसुन्दरका मुख पश्चिमकी ओर है। श्रीप्रिया उनकी गोदमें सिर रखकर गहरी मूर्च्छामें पड़ी हुई हैं। श्यामसुन्दर एकटक श्रीप्रियाके मुखकी ओर देख रहे हैं। कुछ देर बीतनेपर भी जब प्रियाकी आँखें नहीं खुलतीं तो श्यामसुन्दर कुछ भराई हुई आवाजमें ललितासे धीरेसे पूछते हैं—मेरे आनेके पहले क्या बातें हो रही थीं?

श्यामसुन्दरके सामने ललिता वही चित्र, जो शहतूतकी जड़के पास पड़ा था, मँगवाकर रख देती हैं तथा शुरूसे अबतक किस प्रकार चित्र बनाया जा रहा था, सभी घटना श्यामसुन्दरको सुना देती हैं। श्रीश्यामसुन्दर चित्र देखते हैं। देखकर वे भी पुनः काँप जाते हैं। उनका शरीर भी पसीनेसे भर जाता है। ललिता उनके हाथसे चित्र ले लेती हैं।

इधर मूर्च्छाकी अवस्थामें श्रीप्रिया ऐसा अनुभव कर रही हैं कि मैं यमुना-तटपर हूँ। श्यामसुन्दर बाँसुरी बजाते हुए आगे गौओंको हाँकते उधर ही आ रहे हैं। मैं उन्हें एकटक देख रही हूँ। वे भी मुझे देख रहे हैं। मैं अकेली हूँ, प्रियतम श्यामसुन्दर भी अकेले हैं। मुझे देखकर वे मेरे पास दौड़ आये हैं तथा मुझे हृदयसे लगाकर प्यार करने लग गये हैं। फिर हम दोनों निकुञ्जकी ओर चल रहे हैं। निकुञ्जमें पहुँचकर मैं पुष्पशय्यापर प्यारे श्यामसुन्दरकी गोदमें लेटी हुई हूँ। श्यामसुन्दर अपने हाथोंसे मेरी अलकावलीको सहलाते हुए मुझसे बातें कर रहे हैं। मैं जवाब दे रही हूँ। श्रीप्रिया इसी भावावेशकी दशामें अब जोरसे बोल उठती हैं—क्यों, तुम्हें स्वीकार है।

सखियाँ श्रीप्रियाकी यह बात सुनकर कुछ भी नहीं समझ पातीं; पर श्यामसुन्दर समझ जाते हैं। श्यामसुन्दरको उस दिनकी प्रियाकी

प्यारभरी चर्चा याद हो जाती है। वे प्रेममें डूब जाते हैं, पर तुरंत ही सँभलकर श्रीप्रियाको बड़ी चतुराईसे धीरेसे जवाब देना शुरू करते हैं।

श्रीप्रिया मूर्च्छाकी अवस्थामें यही अनुभव कर रही हैं कि मैं यमुनाके तटके निकुञ्जमें हो प्यारेकी गोदमें पड़ी हुई प्यारे श्यामसुन्दरसे बातें कर रही हूँ। श्रीप्रियाने भावावेशमें जब यह कहा कि क्यों, स्वीकार है? तो कुछ देरतक तो वहाँ सन्नाटा छाया रहा। प्रिया फिर बोलीं—क्यों, बोलते नहीं, स्वीकार है या नहीं?

अब श्यामसुन्दर कहते हैं—प्रिये! स्वीकार करना हमारे वशकी बात नहीं है।

श्रीराधारानी—फिर इस तरह कैसे निभेगा?

श्यामसुन्दर—प्रिये! मैं क्या करूँ? मेरे हृदयको तुमने चारों ओरसे छा लिया है। अब तो यह असम्भव है।

रानी—मेरे जीवनधन! फिर मैं तो अभागिनी तुम्हारे सुखमें काँटा बननेके लिये ही आयी।

श्यामसुन्दर—प्रिये! तुम्हें देखकर मेरा हृदय शीतल हो जाता है। तू यदि अपनेको काँटा मानती है तो फिर जगत्‌में भला कौन-सी वस्तु हमें सुख देगी?

रानी—मेरे प्राणेश्वर! मैं आपके हृदयको देखती हूँ, पर·········।

श्यामसुन्दर—हाँ, बोल, फिर इस प्रकारकी प्रार्थना करके मुझे क्यों रुलाती हो?

रानी—इसीलिये नाथ! कि मैं मेरे कारणसे होनेवाली आपकी बदनामी नहीं सह सकती।

श्यामसुन्दर—पर प्रिये! यह बदनामी तो हमारे जीवनकी धाराको थोड़े पलट सकेगी?

रानी—देखो, मेरे नाथ! हठ नहीं करो; सचमुच कहती हूँ, तुम मुझे भूल जाओ। मेरे कारण ही तुम बदनाम हो रहे हो। मैं तुम्हारे विरहमें जल-जलकर मर जाऊँगी, पर तुमसे मिलकर तुम्हें बदनाम नहीं करूँगी। मेरे जीवनाधार! तुम्हें न देखकर मेरा हृदय फटने लगता है; पर मैं इसे रोककर रखूँगी, अनन्त कालतक इसे तुम्हारे लिये बचाकर रखे रहूँगी।

श्यामसुन्दर—पर प्रिये! तुम्हें देखे बिना मैं जीवित नहीं रह सकता।

रानी श्यामसुन्दरकी बात सुनकर बिलकुल गम्भीर हो जाती हैं, रोने लग जाती हैं। श्यामसुन्दर रूमालसे आँखें पोंछकर कहते हैं—प्रिये! तू मेरी चिन्ता बिलकुल मत कर। मैं अपनी व्यवस्था सब ठीक कर लूँगा। प्रिये! सब सह लूँगा; पर तुम्हें भूल जाऊँ, तुमसे मिलने न आऊँ, यह तो असम्भव, असम्भव है।

रानी—फिर, कम-से-कम एक काम करो। कम-से-कम बहिन चन्द्रावलीको मेरे लिये कष्ट न पहुँचाओ।

श्यामसुन्दर—मेरी प्राणेश्वरि! मैं तुम्हारे हृदयको जानता हूँ। मेरे हृदयकी रानी! तू दिन-रात मेरे सुखकी ही चिन्ता करती है। चन्द्रावली ही नहीं, चन्द्रावलीके सहित मैं अपने-आपको तुम्हारे हाथ बेच चुका हूँ। तू जैसा कहेगी, वैसा ही कर लूँगा।

श्रीप्रियाके मुखपर प्रसन्नता छा जाती है। श्रीप्रिया कहती हैं—एक बात और है। आज रूप नन्दरानीकी दशा देख आयी है। मैया बहुत जोरसे रो रही थीं कि हाय! मेरे लल्लाको क्या हो गया है? न खाता है, न पीता है। आँखें भर-भर आती हैं। चित्त उड़ा हुआ-सा रहता है। मैं पूछती हूँ कुछ, जवाब देता है कुछ, ······।

श्यामसुन्दर श्रीप्रियाकी बात सुनकर मुस्कुराने लगते हैं तथा फिर चतुराईसे कहते हैं—तो फिर?

रानी—मेरे प्राणेश्वर! रूपकी बात सुनकर मैं समझ गयी हूँ कि तेरी यह दशा मेरे कारण ही हुई है। इसलिये कहती हूँ कि इस प्रकार

खाना-पीना छोड़ दोगे तो मुझे कितना कष्ट होगा ! ऐसा मत करो, नाथ !

श्यामसुन्दर—प्रिये ! क्या मैं जानकर ऐसा करता हूँ ? देख, मैं खाने बैठता हूँ, उस समय थाली मुझे आँखोंसे नहीं दीखती। थालीकी जगह मुझे तू दीखने लग जाती है। हाथमें पीनेके लिये जलका गिलास मैया पकड़ा देती है, मुझे गिलास नहीं सूझता, गिलासकी जगह तू दीखती है। सोनेके लिये मैया मुझे कोमल शय्यापर प्यारसे लिटा देती है, पर मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि तू रो-रोकर, मेरा नाम ले-लेकर मुझे बुला रही है। तेरी मधुर आवाज सुनते ही मेरी आँखोंमें आँसू भर आते हैं। मैं पागलकी तरह हो जाता हूँ। तू ही बता, मैं आखिर करूँ तो क्या करूँ ?

रानी—मेरे नाथ ! पर तुम्हारे नहीं खानेसे मैया भी नहीं खाती ...... ना, ... ना, कुछ धीरज धरकर खा लिया करो।

श्यामसुन्दर—अच्छा, मैं तो, मान ले, आज चेष्टा करूँगा कि तुम्हारी बात मान लूँ, पर तू क्या करती है, तू ही सोच।

रानी कुछ शर्मायी-सी होकर कहती है—क्यों, मैं क्या करती हूँ ?

श्यामसुन्दर—वाह, तू समझती है कि मुझे कुछ मालूम ही नहीं है। ललिताने आज तेरी दशा मुझे बता दी है। उसने जो-जो तुम्हारी दशाका वर्णन किया, उसे सुनकर मैं चकित रह गया। ललिता बोली कि प्यारे श्यामसुन्दर ! तुमसे मिलकर मेरी सखी राधाकी क्या दशा हुई है, सुनो ! उसकी आँखोंसे निरन्तर आँसूकी धारा बहती रहती है। वह ज्ञान खो बैठी है कि मैं कहाँ हूँ, किस जगह हूँ। बड़ी मुश्किलसे मैं धीरज बँधाकर बिछौनेसे उठाती हूँ। उठते ही लड़खड़ाकर गिर पड़ती है। फिर उठाती हूँ, मुश्किलसे उठकर आगे बढ़ती है। जाना चाहिये स्नान-वेदीकी ओर, चली जाती है रसोईघरकी ओर। पकड़कर लाती हूँ। दोपहरके समय ही दीपक जलाकर कहने लगती है कि ललिते ! साँझ हो गयी। तू मुझे जल्दीसे कपड़े पहना दे। मैं प्यारे श्यामसुन्दरसे मिलने जाऊँगी। तनिक भी हमलोग हटे कि वह धूपमें इधर-उधर दौड़ने लगती है। दिन-रात हमलोगोंको पहरा रखना पड़ता है कि कहीं दीवालसे टकरा न जाये, यमुनामें जाकर कूद

न पड़े। मैं समझाती हूँ, पर एक नहीं सुनती। लोकलज्जाका भय दिखलाती हूँ तो खिलखिलाकर हँस देती है और कहती है कि सबको गठरी बाँधकर यमुनामें डुबा चुकी हूँ। लोक-वेद—सब बह गये। अब तो प्यारे श्यामसुन्दरके साथ जो होना होगा, हो जायेगा।

श्यामसुन्दरकी बात सुनकर रानी कुछ शर्मा-सी जाती हैं। रानी कुछ बोलना चाहती हैं, पर श्यामसुन्दर चाहते हैं कि आगेकी बात मेरी प्यारी राधा किसीको न बता दें। बात यह हुई थी कि ठीक इसी तरहका प्रश्नोत्तर निकुञ्जमें बैठकर श्रीप्रिया-प्रियतमके बीचमें कुछ दिन पहले हुआ था। यमुना-तटपर मिलन होनेका चित्र देखकर श्रीप्रिया उसी भावसे आविष्ट हो गयी थीं तथा निकुञ्जमें श्यामसुन्दरके साथ उसी प्रेममयी लीलाको अनुभव कर रही थीं। उन्हें यह बिलकुल पता नहीं था कि मैं भावावेशमें ललिताके कुञ्जमें शरीफेके पेड़के नीचे प्यारेकी गोदमें लेटी हुई बक रही हूँ। श्यामसुन्दरको सब बातें याद थीं ही, अतः प्रियाके उत्तरमें उस दिन उन्होंने जैसे-जैसे, जो-जो कहा था, आज भी वे उसे चतुराईसे कहते चले गये। पर जब उन्होंने देखा कि यदि मैं रोकूँगा नहीं तो आगेकी बात भी यह कह देगी, इसलिये श्रीप्रियाके भावावेशको तोड़नेके लिये श्यामसुन्दर जोरसे कह उठते हैं—देख! सामने ललिता है, इससे पूछ ले, इसने ये बातें मुझसे कही हैं या नहीं।

इस बार यह सुनकर रानी चौंक पड़ती हैं। वह तो समझ रही थी कि मैं अकेले प्यारे श्यामसुन्दरके साथ हूँ; ललिताके सामने होनेकी बात सुनकर वे घबराकर आँखें खोल देती हैं। आँखें खोलते ही देखती हैं कि सखियाँ मुस्कुरा रही हैं। प्यारे श्यामसुन्दर भी मुस्कुरा रहे हैं। रानी कुछ देरतक तो समझ ही नहीं पातीं कि क्या बात है? पर धीरे-धीरे सब बातें याद आनेसे वे समझ जाती हैं कि मैं भावावेशमें उस दिनके मिलनकी बात कह गयी हूँ। ललिताने रानीसे सब बातें पूछी थीं, पर रानीने प्रेमसे टाल दिया था कि आज नहीं बताऊँगी, कल बता दूँगी। पर ललिताने अतिशय उत्कण्ठाके कारण रानीके हृदयकी बात जान लेनी चाही। इसीलिये इसने यह चित्र बनवाया था। ललिताका उपाय सफल हो गया था, इसलिये वह जोरसे हँस रही थी। रानी जल्दीसे श्यामसुन्दरकी गोदसे उठ जाती हैं। श्यामसुन्दर भी हँसते हुए उठ जाते हैं। रानीको

शर्मायी देखकर बात बदलनेके लिये श्यामसुन्दर कहते हैं—प्रिये! पतंग उड़ाना सिखानेकी बात मैंने कल कही थी। चल, मैं तुझे सिखा दूँ।

फिर श्यामसुन्दर श्रीप्रियाका हाथ पकड़े हुए वहीं शहतूतके पेड़की जड़के पास पहुँचकर कालीनपर प्रियाके साथ बैठ जाते हैं। सखियाँ सेवामें लग जाती हैं। मधुमती वीणापर गाने लग जाती है—

हौं बलि जाउँ नागरि-स्याम।
ऐसिये रँग करौ निसि बासर वृंदा बिपिन कुटी अभिराम॥
हास बिलास सुरत रस सींचत पसुपति दग्ध जिवावत काम।
हित हरिवंस लोल लोचन अलि करहु न सफल सकल सुखधाम॥

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ।

जलकेलि लीला

निकुञ्जसे निकलकर सखियों एवं श्रीराधारानीके सहित श्रीकृष्ण राधाकुण्डके घाटपर स्नान करनेके उद्‌देश्यसे आये हैं तथा चमचम करते हुए संगमरमरके घाटपर खड़े हैं। श्रीप्रियाजी पश्चिमकी ओर मुँह किये मन्द-मन्द मुस्कुरा रही हैं तथा श्रीकृष्ण पूर्वकी ओर मुख किये मुस्कुरा रहे हैं। रूपमञ्जरी श्रीप्रियाजीके मस्तकसे मणियोंका चूड़ा उतार लेती है। श्रीकृष्णका मुकुट उतारने ललिता जाती है, पर श्रीकृष्ण पीछे हट जाते हैं तथा कहते हैं—धूर्त ! चल, हट, मैं मुकुट सहित ही नहाऊँगा !

ललिता चाहती है कि किसी प्रकार मुकुट छीन लूँ; पर श्रीकृष्ण उसे बायें हाथसे पकड़ लेते हैं। इसी बीचमें गुणमञ्जरी श्रीप्रियाजीके गलेमेंसे मणियों एवं मोतियोंका हार निकालकर और एक पीले रूमालमें बाँधकर पास ही पड़ी हुई सोनेकी परातमें रख देती है।

श्रीप्रियाजीकी आँखोंसे प्रेम झर रहा है। वे इशारेसे श्रीकृष्णको कहती हैं—सावधान रहना, ललिता मुकुट छीननेके लिये पीछेसे टूट पड़ेगी।

बात यह थी कि श्रीकृष्ण बायें हाथसे मुकुट पकड़े हुए श्रीप्रियाजीके शरीरकी शोभा देखने लग गये थे और ललिता यह सोच रही थीं कि राधाका चूड़ा उतार लिया है तो फिर श्यामसुन्दरका मुकुट उतार लेंगे, तभी पानीमें उतरेंगे।

श्रीराधाके इशारेसे श्रीकृष्ण झटपट पीछेकी ओर मुड़कर ललिताका चूड़ा छीन लेते हैं तथा पानीमें धड़ामसे घाटसे पाँच हाथ दूर कूद पड़ते हैं। उनके पानीमें कूदते ही ललिता पीछेसे धड़ामसे कूद पड़ती है तथा जाकर अपना चूड़ा पकड़ लेती है। श्रीकृष्णने तबतक चूड़ेको पानीमें डुबा दिया था, जिससे उसपरसे मोतीकी तरह पानीकी बूँदें झर रही थीं। जब

ललिताने चूड़ा पकड़ लिया, तब उसके लिये छीना-झपटी होने लग गयी। श्रीकृष्ण कहते—मैं तो नहीं छोड़ता।

ललिता कहती—मैं लेकर छोड़ूँगी।

श्रीकृष्ण छातीभर पानीमें उत्तरकी तरफ मुख किये हुए खड़े हैं एवं ललिता उनके सामने दक्षिणकी ओर मुख किये हुए उससे थोड़े कम पानीमें खड़ी हैं। श्रीराधा मन्द-मन्द मुस्कुराती हुई एक, दो, तीन सीढ़ियोंपर पैर रखती हुई धीरे-धीरे पानीमें उतर आती हैं तथा ललिताकी बायीं ओर जाकर खड़ी हो जाती हैं। ललिताके कंधेको अपने दाहिने हाथसे पकड़कर और श्रीकृष्णकी ठोड़ीको अपने बायें हाथसे छूकर कहती हैं – लो! मैं फैसला किये देती हूँ। ललिता भी मान लेगी, तुम भी मान लो।

श्रीकृष्ण कहते हैं—क्या फैसला? बताओ पहले, तब पीछे चूड़ा छोड़ूँगा।

श्रीराधाने कहा—चूड़ा मेरे हाथमें दे दो।

श्रीकृष्ण—तू ललिताको तो नहीं देगी न?

श्रीराधा—नहीं दूँगी।

श्रीकृष्ण चूड़ा श्रीराधाके हाथमें दे देते हैं। गुणमञ्जरी श्रीराधाके पीछे-पीछे आयी थी। श्रीराधाने उससे कुछ इशारेसे कहा। वह छप-छप करती हुई पानीको हाथोंसे चीरती हुई घाटके ऊपर चढ़ जाती है तथा श्रीराधाका चूड़ा उठाकर पानीमें ले आती है। श्रीराधा अपने चूड़ेको अपने सिरपर रख लेती हैं तथा कहती हैं—ललिताका कहना था कि मैंने चूड़ा उतार दिया तो मुकुट श्यामसुन्दर उतार दें। अब मैंने चूड़ा पहन लिया। अब दोनोंका बराबर दाँव है। किंतु तुमने जो ललिताका चूड़ा छीन लिया है, उसका यह दण्ड है कि तुम अपने हाथोंसे ललिताको चूड़ा पहना दो तथा उसके हाथमें अपनी वंशी दे दो। आज दिनभर वंशी उसके पास रहेगी।

श्रीकृष्ण एक बार तो झिझके, पर फिर सोचा कि अभी तो स्नान करना है। अभी वंशी दे दूँ। फिर पानीसे निकलनेके बाद किसी उपायसे

ले लूँगा। अभी तो बजाना है नहीं। श्रीकृष्ण यह सोचकर मुस्कुराते हुए चूड़ा ललिताके सिरपर बाँधने लग गये। चूड़ा बाँधकर वंशीसे ललिताकी ठोड़ीको छूकर कहा—यह लो।

ललिता वंशी लेकर अपनी दासी लवङ्गमञ्जरीको दे देती है। लवङ्गमञ्जरी उसे कञ्चुकीमें रख लेती है। अब श्रीकृष्ण पानीका एक चुल्लू लेकर ललिताके मुँहपर झोंक देते हैं तथा एक मन्त्र पढ़ते हैं, जिसका यह भाव है कि हे देवि! आजका जो स्नान-यज्ञ है, वह सफल हो, इसके लिये मैं आपकी प्रार्थना करता हुआ आपका अभिषेक कर रहा हूँ।

ललिता दोनों हाथोंसे चुल्लू भरकर चाहती है कि श्रीकृष्णके मुखपर दे मारूँ कि उसी समय हंस-हंसिनीका एक जोड़ा ऊपरसे उड़ता हुआ आता है तथा ललिता, श्रीराधा एवं श्रीकृष्णके बीचमें कूद पड़ता है। हंसिनी अपना सिर श्रीराधाकी ओर कर देती है एवं हंस श्रीकृष्णकी ओर मानो वे आकर उन्हें प्रणाम कर रहे हों। श्रीकृष्ण दोनों हाथोंसे हंसको पकड़कर अपनी बायीं ओर रखकर दाहिने हाथसे पानी लेकर हंसके सिरपर डालने लगते हैं तथा श्रीराधा उसी तरह हंसिनीको रखकर उसके सिरपर पानी डालती हैं। ललिता इसी बीचमें श्रीराधाके पीछेसे आकर उनको धक्का दे देती है, जिससे राधारानीका पैर जमीनपरसे हट जाता है तथा वे धक्का लगनेके कारण श्रीकृष्णकी ओर बढ़ जाती हैं। श्रीकृष्ण हंसकी पीठपरसे अपना हाथ उठाकर राधारानीको सँभाल लेते हैं। ललिता घाटकी ओर मुँह करके भागने लगती है, पर श्रीकृष्ण बायें हाथसे राधारानीको सँभाले रखकर ललिताको पकड़नेके लिये हाथ बढ़ाते हैं तथा उसकी वेणी श्रीकृष्णके हाथमें आ जाती है। ललिता हँसने लग जाती है। श्रीकृष्ण भी हँसने लगते हैं तथा कहते हैं—सीधे मनसे अब यहाँ, जो-जो कहूँ, वैसे कर। नहीं तो पानीमें, मैं देखता हूँ, हारकर तू रोती है या मैं रोता हूँ।

ललिता मुस्कुराकर वेणी छुड़ाकर फिर दक्षिणकी ओर मुँह करके खड़ी हो जाती है तथा आँखें तरेरकर श्रीराधासे कहती है—री! तुम दोनों मिलकर मुझे तंग करना चाहते हो। क्यों ठीक है न?

राधारानी मुस्कुराती हैं तथा श्रीकृष्णसे कहती हैं—अच्छा, अब दल बाँट लो, कौन-कौन, किस-किस तरफ, कैसे खड़ा हो ?

श्रीकृष्ण कहते हैं—अच्छा, ठीक है । मैं यहाँ खड़ा होता हूँ तथा तुम यहाँ खड़ी रहो और कलकी तरह आज जलमें नृत्य होगा ।

श्रीकृष्ण पश्चिमकी ओर मुँह करके खड़े हो जाते हैं । श्रीराधाके दोनों हाथोंको पकड़कर अपने सामने खड़ा कर लेते हैं, जिससे श्रीराधाका मुँह पूर्वकी ओर हो जाता है । सखियाँ आठ गोल बनाकर चारों ओरसे गोलाकार कमलके दलकी तरह घेरकर खड़ी हो जाती हैं । उसी समय घाटपर पानीमें अपना आधा पैर रखकर मधुमती वीणाके तारको झनझन करती हुई बजाती है तथा विमलामञ्जरी मृदङ्ग बजाती है और उसी सुरमें नृत्य प्रारम्भ होता है । केदारा रागमें वीणा बजती है तथा पानीके अंदर ही अपने पैरोंको उसी तालसे उठाती-गिराती हुई सखियाँ, राधा एवं श्यामसुन्दर नृत्य करते हैं । सखियाँ अपने दोनों हाथोंसे भी भाव बता रही हैं; पर श्रीकृष्ण एवं श्रीराधा, दोनों अपने दोनों हाथोंको पकड़े हुए ही भाव बता रहे हैं तथा सखियोंकी मण्डली और श्रीकृष्ण एवं श्रीराधा घूम रहे हैं । बहुत देरतक यह नृत्य चलता रहता है । नृत्य करते-करते हठात् जितनी सखियाँ थीं, उतने श्रीकृष्ण बन गये । अब प्रत्येक सखी यह अनुभव कर रही है कि श्रीकृष्ण मेरे पास, मेरे बगलमें, मेरा हाथ पकड़कर नृत्य कर रहे हैं । इसके पश्चात् नृत्यकी गति धीरे-धीरे मन्द होकर, सब एक साथ ही, मधुमतीकी वीणा बंद होते ही खड़े हो जाते हैं । उस समय श्रीकृष्णका मुँह उत्तरकी ओर तथा प्रियाजीका मुँह दक्षिणकी ओर है ।

अब तैरनेकी होड़ लगती है कि कौन, कितना अधिक तैर सकता है । पासमें ही हंसके आकारकी तीन-चार नौकाएँ खड़ी हैं । उनमें चार-चार सखियाँ सवार हो जाती हैं । नावमें एक बड़ी परातमें फूलोंसे निर्मित बहुत-सी गेंदें हैं तथा नावमें चमचम करती हुई चार इस तरफ और चार उस तरफ सोनेकी कड़ियाँ लगी हुई हैं । एक नाव सखी लाती है । श्रीकृष्ण नावके पास पहुँचते ही बायें हाथसे कड़ी पकड़कर दाहिने हाथसे अपनी कमरमें कंधेपरकी भीगी हुई चादर बाँध लेते हैं । उनके कड़ी पकड़ते ही सखी नाव खेने लग जाती है । नावका मुँह दक्षिणकी ओर

होते ही श्रीराधा श्रीकृष्णके बगलवाली कड़ी बायें हाथसे पकड़ लेती हैं तथा दाहिने हाथसे अपने अञ्चलको उसी प्रकार कसती हुई चली जा रही हैं। छातीके नीचेका अङ्ग पानीके भीतर है। श्रीराधाके ······· इसी प्रकार ललिता एवं विशाखा एक-एक कड़ी पकड़ लेती हैं। इस प्रकार पहली नावके वहाँसे हटते ही दूसरी नाव आ जाती है तथा उसी प्रकार चार सखियोंके द्वारा चार कड़ियोंके पकड़ लिये जानेपर नाव दक्षिणकी ओर चलती है।

इसी प्रकार चार नावोंमें, जो हंसके आकारकी बिल्कुल उजली-उजली हैं, श्रीकृष्णके सहित सोलह व्यक्ति कड़ी पकड़कर नावके साथ तैर रहे हैं। जब नाव कुण्डके बीचमें पहुँचती है, तब चक्कर काटकर श्रीकृष्णकी नाव तो कुण्डके पश्चिम एवं उत्तरके कोनेपर खड़ी होती है एवं बाकी नावें भी तीनों कोनोंपर खड़ी हो जाती हैं। चारोंमें आठ-आठ गजकी दूरी है। अब वह सखी, जो खे रही थी, परातमेंसे लेकर एक-एक गेंद सबको पकड़ा देती है। अब एक हाथसे कड़ी पकड़े हुए तथा दूसरे हाथमें गेंद लेकर सभी पैरोंसे तैर रही हैं।

गेंदका खेल आरम्भ होता है। इस प्रकार बहुत देरतक आपसमें फूलोंकी बनी हुई गेंदोंको फेंकते और पकड़ते हैं। गेंदका खेल समाप्त होनेपर श्रीकृष्ण जिस नावपर हैं, वह ठीक उत्तरकी ओर मुँह करके चल पड़ती है। उसके पीछे-पीछे वे तीनों नावें भी चल पड़ती हैं। राधाकुण्डमें लाल, उजले, नीले एवं सफेद—चारों प्रकारके कमल खिले हुए हैं। उनके बहुत ही चौड़े-चौड़े पत्ते पानीपर फैले हुए हैं। नावें उन्हें बचा-बचाकर कभी पूर्व, कभी पश्चिम, कभी उत्तरकी ओर मुड़ती हुई चल रही हैं तथा उसी प्रकार कड़ी पकड़े हुए श्रीकृष्ण एवं सखियाँ पानीमें बढ़ती हुई चल रही हैं। कमलके पास पहुँचते ही फूले हुए कमल इस प्रकार हवाके झोंकेसे हिलने लगते हैं मानो प्रार्थना करते हैं कि हमें तोड़कर अपने हाथमें रख लो। श्रीकृष्ण एवं श्रीराधा किसी कमलको छू देते हैं, किसी एक-दोको तोड़कर नावमें रख लेते हैं, कभी उनके पास पहुँचकर अपने दाहिने हाथसे उनपर जलके छींटे देते हैं। कमलोंपर भौंरोंकी भीड़ गुन-गुनाती हुई उड़ रही है। श्रीप्रियाजी एक कमलके पास पहुँचकर दाहिने हाथसे उसपर छींटा देती हैं। इसी समय एक भौंरा उड़कर आता है तथा

श्रीप्रियाजीके कपोलोंपर बैठना चाहता है। श्रीप्रियाजी बार-बार उसे उड़ाना चाहती हैं। जब वह नहीं उड़ता, तब श्रीकृष्णकी कमरमें खोंसे हुए पीताम्बरका जो छोर पानीके ऊपर तैर रहा था, उसीको उठाकर उससे अपना मुँह ढक लेती हैं। श्रीकृष्ण हँसने लगते हैं। उसीसे मुँह ढके हुए श्रीप्रियाजी देखती हैं कि भौंरा चला गया या नहीं। पीताम्बरके भीतरसे श्रीराधारानीकी शोभा झलमल-झलमल करती हुई दीख पड़ रही है तथा श्रीकृष्ण उसे ही देख रहे हैं। श्रीप्रियाजीने हँसकर एक कमल तोड़ लिया तथा श्रीकृष्णके मुँहके सामने करके बोलीं—इधर मत देखो!

श्यामसुन्दर कहते हैं—अच्छी बात है।

श्रीकृष्ण अपना मुँह उत्तरकी तरफ कर लेते हैं। उस समय नाव उत्तरकी ओर मन्द गतिसे बह रही थी। श्रीकृष्णके मुख उधर करते ही श्रीप्रियाजी व्याकुल हो जाती हैं तथा दाहिने हाथसे उनका कंधा पकड़कर हिलाती हुई कहती हैं—श्यामसुन्दर! इधर देखो; यह हंस किस प्रकार पंख फुलाये हुए नहा रहा है।

श्रीकृष्ण श्रीप्रियाजीकी चतुराई समझ जाते हैं तथा हँसते हुए उधर ही ताकने लग जाते हैं। अब श्रीकृष्णका मुँह श्रीप्रियाको ठीकसे दीखने लग जाता है। नाव घाटसे करीब दस हाथकी दूरीपर आकर रुक जाती है। छातीभर पानीमें श्रीकृष्ण एवं श्रीप्रियाजी तथा और सखियाँ उतर-उतरकर खड़ी हो जाती हैं। अब स्नान प्रारम्भ होता है। श्रीकृष्णका हाथ पकड़कर श्रीप्रियाजी कहती हैं—पहले मैं डुबकी लगाऊँगी।

श्रीकृष्ण कहते हैं—बहुत ठीक।

श्रीप्रियाजी श्रीकृष्णके हाथको पकड़े हुए सिरको पानीमें डुबा देती हैं। श्रीप्रियाजीके अत्यन्त सुन्दर केश पानीके ऊपर तैरने लगते हैं। कुछ क्षणतक पानीमें सिर रखकर हँसती हुई श्रीप्रियाजी उसे बाहर निकाल लेती हैं। भीगे हुए केश आँखोंपर आ जाते हैं। श्रीकृष्ण अत्यन्त प्यारसे केशोंको ठीक करके मुखपरसे किनारे हटा देते हैं। अब श्रीकृष्ण डुबकी लगाते हैं। श्रीकृष्णकी अलकावली पानीपर तैरने लगती है। उसी प्रकार श्रीकृष्ण भी हँसते हुए सिर बाहर निकाल लेते हैं तथा निकालकर इस

प्रकार झटका देते हैं, जिससे मोतीकी तरह पानीकी बूँदें चारों ओर फैल जाती हैं। इस समय विचित्रता यह है कि सभी सखियोंको ऐसा अनुभव हो रहा है कि श्रीकृष्ण हमारे हाथ पकड़े नहा रहे हैं तथा हमारे भीगे हुए केशोंको अपने प्यारभरे हाथोंसे ठीक कर दे रहे हैं।

इस प्रकार बारी-बारीसे डुबकी लगाते हुए जब कुछ देर हो जाती है, तब घाटपर खड़ी हुई रूपमञ्जरी श्रीकृष्णको कुछ इशारा करती है। श्रीकृष्ण 'बहुत ठीक'—कहकर श्रीप्रियाजीके बायें हाथको पकड़े हुए घाटपर आ जाते हैं तथा पश्चिमकी ओर मुँह किये बैठ जाते हैं। श्रीकृष्णके पैर पानीमें हैं तथा कमरसे ऊपरका हिस्सा घाटकी सूखी हुई सीढ़ीपर। सखियाँ सुन्दर-सुन्दर कटोरोंमें तरह-तरहके उबटनका सामान लाती हैं तथा कोई श्रीकृष्णके हाथोंमें, कोई पैरोंमें, कोई मुँहमें, कोई पीठमें उबटन लगाती हैं। श्रीराधारानी अत्यन्त चमचम करते हुए एक छोटे-से तौलियेको ले लेती हैं तथा श्रीकृष्णके सिरको उसीसे पोंछती हैं। पासमें ही खड़ी हुई गुणमञ्जरीके हाथमें सोनेकी छोटी कटोरी है, जिसमें अत्यन्त सुगन्धित तेल है। रानी अपनी हथेलीके बीचमें गड्ढा-सा बनाकर उस गड्ढेमें कटोरीसे तेल ढाल लेती हैं तथा मन्द-मन्द मुस्कुराती हुई उसे श्यामसुन्दरके सिरपर धीरेसे डालकर फिर दोनों हाथोंसे उसे दबाने लगती हैं। फिर घुँघराली लटोंको लेकर उनमें तेल मलने लगती हैं। श्रीकृष्णकी छवि घाटपर एवं पानीमें मणियोंमें प्रतिबिम्बित हो रही है। श्रीराधाकी दृष्टि नीचे घाटमें प्रतिबिम्बित परछाईंपर पड़ती है। वे देखती हैं कि श्रीकृष्णकी छातीपर हमारा पैर है। इसे देखकर वे एक बार तो चौंक-सी जाती हैं। फिर हँसने लगती हैं। श्रीकृष्ण भी मुस्कुराने लगते हैं। उबटन समाप्त होते ही श्रीकृष्ण पानीमें छपाकसे कूद पड़ते हैं।

अब श्रीप्रियाजीके अङ्गोंमें सखियाँ उबटन लगाती हैं। श्रीकृष्ण पानीमें तैरते हैं तथा तिरछी चितवनसे श्रीप्रियाजीके मधुर मुखकी शोभा निहारते जाते हैं। श्रीप्रियाजीके अङ्गोंमें उबटन लग लेनेके बाद श्रीप्रियाजी स्वयं उठकर सखियोंके सिरमें तेल डालने लगती हैं। इसी समय श्रीकृष्ण दौड़कर आते हैं तथा घाटपर खड़े हो जाते हैं। वे श्रीराधारानीके हाथसे सुगन्धित तेलकी कटोरी लेकर उसे ललिताके सिरपर उँडेल देते हैं। तेल ज्यादा था। वह ललिताके ललाटसे होकर बहने लग जाता है। ललिता

श्रीकृष्णका हाथ पकड़ लेती हैं। श्रीकृष्ण कहते हैं—देखो! तुमने सिर हिला दिया, इसीसे कटोरी हमारे हाथसे हिल गयी। तुमने तेल गिराया है। इसमें अपराध हमारा नहीं है।

फिर श्रीकृष्ण अपना दाहिना हाथ छुड़ा लेते हैं। इसके बाद वे घाटपर गिरे हुए तेलको हाथसे पोंछकर अपने मुँहपर थोड़ा लगाते हैं और कहते हैं—ज्यादा है, क्या करूँ? अच्छा, लो, थोड़ा तुम ले लो।

श्रीकृष्ण इतना कहकर हाथमें लगा हुआ तेल श्रीराधाके सिरपर पोंछ देते हैं। श्रीराधा कहती हैं—बस, बस, चालाकी रहने दो।

श्रीराधा श्रीकृष्णका दाहिना हाथ पकड़ लेती हैं, पर श्रीकृष्ण पीछेकी ओर पानीमें राधा एवं ललिताका हाथ पकड़े हुए ही कूद पड़ते हैं। कुछ देरतक पानीमें खड़े रहकर एक-दूसरेपर हाथोंसे जल उलीचते हैं। फिर घाटपर आकर बैठ जाते हैं।

गेंदके खेलमें सोलह घड़ा जल डालनेका दाँव श्रीकृष्ण हार चुके थे तथा बारह घड़ेसे श्रीप्रियाजी हार चुकी थीं। अतः दोनोंको पास-पास बिठाकर सखियाँ उनपर कलसेसे जल डालने लगीं। सोलह घड़ोंसे दो घड़े अधिक डाल देनेके कारण श्रीकृष्ण विशाखासे लड़ पड़े—तुमने अठारह क्यों डाले? दाँव तो सोलहका ही था। अब दोके बदलेमें मैं आठ घड़े तुमपर डालूँगा।

विशाखाने कहा—मैंने तो एक डाला है, एक ललिताने डाला है। इसलिये चार घड़े उसपर एवं चार घड़े मुझपर। मैं अकेले क्यों सहूँगी?

ललिताने कहा—मुझसे तो राधाने कह दिया कि अभी एक और बाकी है। यह गिन रही थी। मैंने तो इसकी बातमें आकर तुमपर एक घड़ा ज्यादा डाल दिया। इसलिये तीन घड़े इसपर डालो और एक मुझपर।

विशाखाने कहा—बस, बस; ठीक है, मैंने भी जो तुमपर एक घड़ा अधिक डाला है, वह भी इसी राधाके इशारेसे ही डाला है। इसीने कहा कि गर्मी है, क्या हर्ज है, एक और डाल दे। इसलिये मेरे ऊपरके तीन घड़े भी इसीपर डालो।

श्रीप्रियाजी मुस्कुराती हुई बैठ गयीं तथा श्रीकृष्ण कुण्डसे कलसेको भर-भरकर डालने लगे। खेलके नियमके अनुसार श्रीप्रियाजी हाथोंकी अञ्जलि बाँधे बैठी थीं। इस बार ललिता एवं विशाखा भी बैठीं। श्रीकृष्णने जब पहला घड़ा सिरपर डाला तो इस ढंगसे डाला कि श्रीप्रियाजीका अञ्चल खिसककर पीठपर आ गया। पहले तो ललिता एवं विशाखा जल डाल रही थीं, जिससे अञ्चल ठीक प्रकारसे यथास्थान ही रहा। वे धीरे-धीरे डाल रही थीं। पर इस बार श्रीकृष्णने तेजीसे डाला। श्रीप्रियाजीने अपना हाथ उठा लिया तथा अञ्चल सँभालने लगीं।

श्रीकृष्णने कहा—देखो! इसने तो नियम तोड़ दिये हैं।

श्रीराधाने कहा—तुम ठीकसे जल नहीं डालते। तुम स्वयं बेईमानी करते हो तो मैं क्यों छोड़ दूँ?

आखिर बहुत देरतक इस प्रकार तरह-तरहके प्रेम-विनोदके पश्चात् घाटपर श्रीराधा एवं श्रीकृष्ण खड़े हो जाते हैं। सखियाँ सूखे अंगोछेसे उनका शरीर पोंछकर श्रीकृष्णको पीताम्बर एवं श्रीराधारानीको हरी साड़ी पहनाती हैं। कपड़े पहनकर वे लोग एक-दूसरेको देखते हैं। इसी बीचमें कुछ सखियाँ भी जल्दी-जल्दी कपड़े पहन लेती हैं, कुछ पहन रही हैं, कुछ गीले कपड़ोंको जल्दी-जल्दी धो रही हैं। इस प्रकार जल्दीसे काम समाप्तकर सखियोंकी मण्डलीके साथ श्रीराधा-कृष्ण उत्तरकी तरफ मुँह करके ललिताके कुञ्जकी ओर बढ़ते हैं।
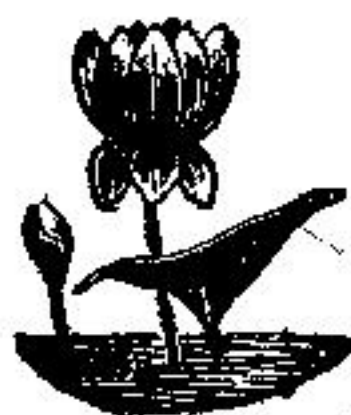
॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

वेणीगूँथन लीला

राग केदारा

बेनी गूँथि कहा कोऊ जानै, मेरी सी तेरी सौं।
बिच बिच फूल सेत पीत राते को करि सकिहै एरी सौं॥
बैठे रसिक सँवारन बारन कोमल कर ककहीं सौं।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा नख सिख लौं बनाई दै काजर नखही सौं॥

निकुञ्जमें पूर्वकी ओर मुख किये श्रीश्यामसुन्दर पीले रंगकी मखमली गद्दीसे जड़े हुए पलंगपर बैठे हैं। श्रीश्यामसुन्दरके पैर नीचे लटक रहे हैं। उनके सामने श्रीप्रिया पश्चिमकी ओर मुख किये हुए खड़ी है। श्रीप्रियाका बायाँ हाथ श्यामसुन्दरके दाहिने कंधेपर है और उनके दाहिने हाथमें पीले रंगकी अत्यन्त चमकती हुई किसी तैजस् धातुकी कंघी है। श्यामसुन्दर अपने बायें हाथसे उनके दाहिने हाथको पकड़े हुए हैं। श्रीप्रिया मन्द-मन्द मुस्कुराती हुई उस हाथको छुड़ानेकी चेष्टा कर रही हैं। श्यामसुन्दर तिरछी चितवनसे ताकते हुए एवं मन्द-मन्द मुस्कुराते हुए अपना सिर हिलाते हुए यह प्रकट कर रहे हैं—ना, नहीं छोड़ता।

सखियाँ खड़ी-खड़ी लीला देख रही हैं। श्रीप्रियाके वदनकी शोभा निहारते हुए श्यामसुन्दर कहते हैं—तो न सही। जैसे प्रतिदिन होता था, वैसे ही होने दे।

बात यह है कि प्रतिदिन मध्याह्न-स्नानके बाद श्रीप्रिया-प्रियतमको पास-पास बिठाकर सखियाँ दोनोंका शृङ्गार करती थीं, पर आज श्रीप्रियाने रतिमञ्जरीके हाथसे कंघी ले ली तथा प्यारे श्यामसुन्दरका केश सँवारनेके लिये उठ खड़ी हुईं। श्यामसुन्दरने कहा—अच्छी बात है; पर फिर बदलेमें मैं तेरे केश सँवारूँ। यदि यह शर्त मंजूर है तो भले ही केश सँवारने दूँगा, नहीं तो नहीं।

श्रीप्रियाने मुस्कुराते हुए सिर हिलाकर संकेत कर दिया--ना, यह स्वीकार नहीं है।

अस्वीकृतिका संकेत देनेके बाद भी श्रीप्रिया कंघी लेकर प्यारे श्यामसुन्दरके केश सँवारनेको बढ़ीं। श्यामसुन्दरने उनका हाथ पकड़ लिया। श्रीप्रियाने हाथ छुड़ाना चाहा, किंतु श्यामसुन्दरने नहीं छोड़ा। श्यामसुन्दरने कहा—तू शर्त मंजूर करले तो हाथ छोड़ देता हूँ।

श्रीप्रियाने मुस्कुराकर फिर कह दिया—नहीं।

इसीपर श्यामसुन्दरने कहा था कि तो न सही, जैसे प्रतिदिन होता था, वैसे ही होने दे। श्यामसुन्दरकी यह बात सुनकर श्रीप्रिया कुछ असमञ्जसमें पड़ जाती हैं। हृदयका प्यार तरंगित होकर जिस-किस प्रकारसे भी श्यामसुन्दरके स्पर्शके लिये प्रियाको व्याकुल कर रहा है, पर साथ ही लज्जा अपनी सखियोंके बीचमें प्रियतमके द्वारा अपने केश सँवारे जाना स्वीकार नहीं करने दे रही थी।

श्रीप्रिया मुस्कुराती हुई कुछ क्षण सोचती रहती हैं। फिर कहती हैं—देखो! स्त्रियोंकी वेणी स्त्रियाँ ही ठीक गूँथ सकती हैं।

श्रीप्रियाकी बात सुनकर श्यामसुन्दर बड़ी गम्भीरतासे बोल उठते हैं—तू एक बार देख ले, फिर स्वयं समझ जायेगी। मैं सच कहता हूँ कि मेरी तरह वेणी गूँथना किसीको आ ही नहीं सकता। प्रिये! तेरी शपथ! मैं इतनी सुन्दर वेणी गूंथ सकता हूँ कि स्वयं ललिता भी देखकर लजा जायेगी। देख, फूलोंको यथास्थान पिरो देना बड़ी भारी कला है। लाल-पीले-उजले फूलोंको मैं ऐसे सुन्दर ढंगसे पिरोना जानता हूँ कि वैसा तुम्हारी सखियोंमेंसे कोई भी नहीं कर सकता।

श्यामसुन्दरकी इस बातको सुनकर श्रीप्रिया और भी फँस जाती हैं। कुछ देरतक मन्द-मन्द मुस्कुराती हुई सोचती रहती हैं। फिर जल्दीसे हाथ छुड़ाकर और कुछ अलग खड़ी होकर हँसने लग जाती हैं। इस समय श्रीप्रियाका मुख ठीक उत्तरकी ओर है। श्यामसुन्दर हँसने लग जाते हैं। श्रीप्रिया अपनी दृष्टि प्यारे श्यामसुन्दरके मुखारविन्दपर जमाये रखकर पीछेकी ओर हटने लगती हैं तथा निकुञ्जके दक्षिणकी ओरकी

खिड़कीके पास जाकर खड़ी हो जाती हैं। श्रीप्रियाके अङ्गकी हरी साड़ीपर मध्याह्नके सूर्यकी रश्मियाँ पड़ने लग जाती हैं तथा उनके वदनकी शोभा झलमल करती हुई दीख रही है।

निकुञ्जकी खिड़कीपर गिलोय-लताकी तरहकी एक लता इस ढंगसे फैली हुई है कि जिससे खिड़कीपर स्वाभाविक जाल बन गया है। श्रीप्रिया अपने बायें हाथको ऊपर उठाकर बेलोंके उसी जालको पकड़ लेती हैं तथा दाहिने हाथसे दीवालकी एक बेलको पकड़ लेती हैं और तिरछी चितवनसे श्यामसुन्दरकी ओर देखने लग जाती हैं।

श्रीप्रिया जाते समय कंघी श्यामसुन्दरकी जाँघके पास पलंगपर ही छोड़ गयी थीं। श्यामसुन्दर उस कंघीको उठा लेते हैं तथा उससे अपने दाहिने हाथमें लेकर अतिशय मधुर कण्ठसे कहते हैं—प्रिये! एक बार परीक्षाके लिये ही देख ले।

श्रीप्रियाके हृदयका प्रेम-सागर उफनने लगता है। उसकी तरंग रोम-रोमसे प्रस्वेदके रूपमें बाहर आने लगती है। श्रीप्रिया सोचती हैं—मेरे प्रियतमको मेरे केश सँवारनेसे सुख है तो फिर मैं संकोच क्यों कर रही हूँ? आह! मेरे इस अङ्गके अणु-अणुपर तो प्यारे श्यामसुन्दरका ही अधिकार है।

श्रीप्रियाके हृदयके भाव तो आँखोंमें आ जाते हैं। पुतलियाँ प्रेममें अधीर होकर कोयोंमें ऊपर-नीचे नाचने लगती हैं। श्रीप्रिया अपना सिर किंचित् नीचा करके वहीं पूर्वकी ओर मुँह करके बैठ जाती हैं। प्यारे श्यामसुन्दर समझ जाते हैं कि प्रियाकी मौन सम्मति मिल गयी है। अतिशय उमङ्गके साथ वे कंघी लिये हुए उधर ही बढ़ने लगते हैं। श्यामसुन्दरकी घुँघराली अलकें कंधोंपर जोरसे झूलती जा रही हैं मानो वे भी आनन्दमें थिरक-थिरककर नाच रही हों।

श्यामसुन्दर श्रीप्रियाके पास आकर खड़े हो जाते हैं। तीन मञ्जरियाँ छोटे-छोटे फूलोंसे भरी हुई तीन डलिया लेकर श्यामसुन्दरके पास खड़ी हो जाती हैं। विशाखा राधारानीके सामने खड़ी हैं एवं ललिता रानीकी पीठके पास। ललिता बड़े सहारेसे रानीके सिरसे अञ्चल हटाकर

उनकी सुन्दरतम केश-राशिको साड़ीके अन्तरालसे निकालकर पीठपर धीरेसे बिखेर देती है। श्रीप्रियाके लम्बे-लम्बे केश कमरके पास झूलते हुए निकुञ्जके फर्शको छू रहे हैं। केशोंको बिखेरकर ललिता मुस्कुराती हुई तिरछी चितवनसे श्यामसुन्दरकी ओर देखकर कहती है—लो, सँवारो! मैं भी देख लूँगी कि नटखट-शिरोमणि श्यामसुन्दर किस तरहकी कला जानते हैं।

प्यारे श्यामसुन्दरके अङ्गसे अनुराग एवं उल्लास झर रहा है। वे श्रीप्रियाकी पीठके पास पूर्वकी ओर मुख किये हुए बैठ जाते हैं। दाहिने हाथमें कंघी लेकर और बायें हाथपर केशोंको टिकाकर सँवारना प्रारम्भ करते हैं। सखियों-मञ्जरियोंमें आनन्दका प्रवाह बहने लग जाता है।

कंघीसे केशोंको सँवारकर श्यामसुन्दर गूँथना आरम्भ करते हैं। वे तीन डलियोंमेंसे लाल, पीले एवं उजले रंगके फूलोंको बारी-बारीसे निकालकर पिरोते जा रहे हैं। ऐसे सुन्दर ढंगसे पिरो रहे हैं कि लाल, उजले एवं पीले फूलोंसे 'कृष्ण', 'कृष्ण', 'कृष्ण' लिखा जा रहा है। श्रीप्रिया पहलेसे ही प्रेममें डूबती जा रही थीं, अब जब विशाखाके हाथके दर्पणके प्रतिबिम्बपर दृष्टि गयी तथा गूँथे हुए केशोंमें एक स्थानपर 'कृष्ण' लिखा हुआ देख लिया, तब तो वे बिलकुल मूर्च्छित-सी होने लग गयीं। यद्यपि श्यामसुन्दर बड़ी सावधानीसे एवं चतुराईसे केशोंको श्रीप्रियाकी पीठके ठीक बीचमें रखकर गूँथ रहे थे कि जिससे गूँथना समाप्त होनेके पहले मेरी प्रिया देख नहीं सके, पर श्रीप्रियाने अपना सिर इधर-उधर हिलाकर जरा-सा देख ही लिया। देखना था कि प्रेम उमड़ा और प्रिया अर्द्ध-मूर्च्छित होकर श्यामसुन्दरकी ओर लुढ़क पड़ीं। श्यामसुन्दर भी प्रेममें अधीर होते जा रहे थे; पर प्रियाकी इस दशाको देखकर उन्होंने अपनेको सँभाला। कुछ क्षण गूँथना स्थगित रहता है, फिर प्रिया पहलेकीसी अवस्थामें आ जाती हैं तथा लज्जित होकर पहलेकी तरह शान्त बैठ जाती हैं। प्यारे श्यामसुन्दर फूल गूँथ करके वेणी-रचनाका कार्य समाप्त करते हैं। समाप्त करके वे एक बार प्यारभरी दृष्टिसे सुन्दर वेणीकी शोभा निहारते हैं। फिर खड़े होकर प्रियाके सामने आ जाते हैं। श्रीप्रिया जल्दीसे अपना सिर अञ्चलसे ढककर प्यारे श्यामसुन्दरकी ओर देखकर हँसने लग जाती हैं।

इसी समय रूपमञ्जरी आनन्दमें डूबकर कहती है—सो प्यारे श्यामसुन्दर ! बाकीका शृङ्गार भी तुम्हीं पूर्ण करो।

रूपमञ्जरीकी बात सुनकर श्रीप्रियाका हृदय तो पुनः आनन्दसे नाच उठता है; पर आँखोंमें प्यारभरा क्रोध लाकर कहती हैं—री ! बिना बूझे तू तो अच्छी पञ्च बन बैठी !

रूपमञ्जरी मुँह फेरकर हँसने लग जाती है। श्यामसुन्दर कहते हैं—हाँ, हाँ, अभी लो।

जब श्रीश्यामसुन्दर शेष शृङ्गार करने चलते हैं, तभी ललिता कहती है—ना, तुम बहुत देर लगाओगे। जल्दीसे एक-दो और भले कर लो, बाकी हम सब करेंगी।

श्यामसुन्दर मुस्कुराकर कहते हैं—अच्छी बात है।

बड़ी फुर्तीसे श्यामसुन्दर कुछ दूरपर पड़ी हुई डलियोंमेंसे तरह-तरहके पुष्पोंकी बनी हुई तीन-चार लड़ियाँ उठा लेते हैं तथा आपसमें एक-दूसरेको उलझाकर पायजेबके आकारके दो आभूषण निर्माण करते हैं। उन आभूषणोंको जहाँसे देखा जाये, वहींसे उनमें 'कृष्ण' लिखा हुआ दीख रहा है। श्यामसुन्दर उसे बड़ी फुर्तीसे श्रीप्रियाकी एड़ीके पास बाँधने लग जाते हैं। श्रीप्रिया एक बार तो चकित-सी होकर पैर समेटने लगती हैं; पर प्रियतमकी ओर देखकर और यह सोचकर कि मेरे प्रियतमको सुख मिल रहा है, इस भावनासे उस आभूषणको बँधवा लेती हैं। सखियाँ श्यामसुन्दरकी इस कारीगरीको देखकर आश्चर्यमें डूब जाती हैं। आभूषण बाँधकर श्यामसुन्दर एक मञ्जरीके हाथसे काजल-पात्र ले लेते हैं। काजल-पात्र ऐसा बना हुआ है कि उसे देखनेवालेको भ्रम हो जाता है मानो सचमुच ही यह एक नवजात मयूर-शावक हो। श्यामसुन्दर अपने दाहिने हाथकी अनामिका अँगुलीमें किंचित् काजल लगा लेते हैं तथा श्रीप्रियाके सामने बैठकर बायें हाथपर श्रीप्रियाके दाहिने कपोलको टेककर बारी-बारीसे दोनों आँखोंमें काजल लगाते हैं। श्रीप्रियाकी आँखें काजल लगाते समय बंद-सी हो जाती हैं। श्यामसुन्दर प्रतीक्षा करते हैं। खुलनेपर धीरे-धीरे लगा देते हैं। श्रीप्रियाके सारे मुखमण्डलपर लालिमा दौड़ने लगती है। पुतलियाँ बड़ी तेजीसे ऊपर-नीचे, दाहिने-बायें घूमने लग जाती हैं।

श्यामसुन्दर उठकर खड़े हो जाते हैं। श्रीप्रिया भी हँसती हुई, अञ्चल सँभालती हुई उठकर श्यामसुन्दरका हाथ पकड़ लेती हैं तथा खींचती हुई-सी ले जाकर पलंगपर बैठा देती हैं। मञ्जरीके हाथसे श्रीप्रिया कंघी ले लेती हैं तथा अतिशय प्यारके साथ प्यारे श्यामसुन्दरके केशोंको सँवारने लग जाती हैं। उन सुन्दरतम घुँघराली लटोंमें कंघी देकर बड़े सुन्दर ढंगसे पीछेकी ओर उन्हें ले जाती हैं तथा बायें हाथसे उन्हें धीरे-धीरे दबा-दबाकर यथास्थान स्थिर करती जा रही हैं। केशोंको सँवारकर पीछेकी ओर दाहिने हाथसे कुछ इशारा करती हैं। विलासमञ्जरी अत्यन्त सुन्दर पुष्पोंका बना हुआ मुकुट, जिसके बीचमें एक छोटा-सा मयूर-पिच्छ लगा है, रानीके हाथमें दे देती है। प्रेममें दीवानी-सी बनी हुई रानी मुकुटकी ओर देखती हैं। मुकुटके पुष्पोंके प्रत्येक दलमें उन्हें प्यारे श्यामसुन्दरकी छवि दीखती है। वे कुछ चकित-सी होकर जोरसे बोल उठती हैं— अयँ! यह तो अजब बात है।

रानीकी बात सुनकर श्यामसुन्दर एवं ललिता आदि सखियाँ जोरसे हँसने लगती हैं। उन्हें हँसती देखकर रानीका भाव कुछ शिथिल पड़ जाता है और वे कुछ शर्मा-सी जाती हैं। ललिता अतिशय प्यारसे कहती हैं— मुकुट बाँध दे। हाथमें लिये रहकर न जाने, फिर और क्या-क्या देखने लगेगी।

विलासमञ्जरीने आज इस चतुराईसे मुकुट बनाया था कि उसपर सर्वत्र 'राधा-राधा' लिखा हुआ दीख रहा था, पर रानीकी आँखें इस बातको लक्ष्य नहीं कर सकीं। रानीने धीरे-धीरे मुकुट बाँध दिया। फिर रानी एक कुन्द-पुष्पको उठाती हैं। केसर-कस्तूरी-चन्दन आदि घिस-घिसकर छोटी-छोटी कटोरियोंमें रखे हुए हैं; उन कटोरियोंमें कुन्द-पुष्पकी डंठीको डुबा-डुबाकर रानी प्यारे श्यामसुन्दरके कपोलोंपर अत्यन्त सुन्दर तरह-तरहके चित्र बनाती हैं। इधर सखियाँ तरह-तरहके पुष्पोंके आभूषण बनाकर श्यामसुन्दरके अङ्गोंको सजाती जा रही हैं। श्यामसुन्दर श्रीप्रियाकी ओर एकटक देख रहे हैं। चित्र बनाकर श्रीप्रिया आनन्दमें भरकर जोरसे हँस पड़ती हैं। अब ललिता श्रीप्रियाको श्यामसुन्दरके बगलमें बैठा देती हैं तथा ठीक उसी तरहके चित्र श्रीप्रियाके कपोलोंपर बनाती हैं एवं सखियाँ श्रीप्रियाको पुष्पोंके आभूषणोंसे सजाती हैं। श्रीप्रिया-प्रियतमको

सजाकर सभी सखियाँ आनन्द एवं प्रेममें डूबने लग जाती हैं।

अब सभी सखियाँ एवं मञ्जरियाँ एक-एक कंघी लेकर बड़ी शीघ्रतासे अपने-अपने केश सँवारने लगती हैं। प्रत्येक सखी एवं मञ्जरी यह अनुभव कर रही है कि श्यामसुन्दर मेरे पास आये हैं तथा यह कह रहे हैं—अच्छी बात है, केश तू अपने हाथसे ही सँवार ले, पर आँखोंमें काजल मैं लगाऊँगा।

सखी अस्वीकार करती है, पर श्यामसुन्दर बहुत आग्रहसे कंघेको पकड़कर प्रार्थना करते हैं। आखिर सखी प्रेममें विवश होकर अञ्जन लगानेकी सम्मति दे देती है। श्यामसुन्दर अतिशय प्यारसे अञ्जन लगाते हैं। अञ्जन लगाकर श्यामसुन्दर प्रार्थना करते हैं—अच्छा, वेणी तो अपने हाथसे तुमने बना ही ली, पर मुझे इसमें एक फूल खोंस लेने दो।

श्यामसुन्दरकी यह प्रार्थना भी सखीको हरा देती है। श्यामसुन्दर अतिशय प्यारसे सबकी वेणीमें एक-दो फूल खोंस देते हैं। यह लीला श्यामसुन्दरने प्रत्येक सखी एवं मञ्जरीके साथ की।

इस प्रकार सज-धजकर सखी-मण्डलीके सहित श्रीप्रिया-प्रियतम तैयार हो जाते हैं। श्रीश्यामसुन्दर अब श्रीप्रिया, सखियों एवं मञ्जरियोंकी ओर देख-देखकर हँस रहे हैं एवं श्रीप्रिया, सखियाँ तथा मञ्जरियाँ श्रीश्यामसुन्दरके मुखारविन्दकी शोभा देखकर विह्वल हो रही हैं। इसी समय निकुञ्जसे सम्बद्ध बगलवाले रत्न-महलके दक्षिणी दरवाजेसे वृन्दादेवी निकुञ्जमें प्रवेश करती हैं। यहाँकी शोभा देखकर एक बार तो बिल्कुल पत्थरकी मूर्ति-सी स्थिर हो जाती हैं, फिर कुछ क्षण बाद आनन्दमें भरकर ललितासे कहती हैं—बहिन! सब तैयार है। मैं तुम्हारी बाट देख रही थी। देर होते देखकर मैं किवाड़ खोलकर आ गयी।

ललिता वृन्दादेवीकी बात सुनकर उनका हाथ पकड़ लेती हैं तथा निकुञ्जके उत्तर तरफके दरवाजेकी ओर चलने लगती हैं। सखी-मण्डलीके सहित श्रीप्रिया-प्रियतम भी ललिताके पीछे-पीछे चलते हैं। निकुञ्जके दरवाजेसे लेकर रत्न-महलतक हरी-हरी बेलों एवं लताओंकी टहनियोंके

आपसमें गुँथ जानेसे एक सुन्दर पुल अपने-आप बन गया है। पुल तीन गज लम्बा एवं एक गज चौड़ा है। पुलके फर्शपर एक पीली रेशमी चादर बिछी है; उसीपर पैर रखते हुए सखियोंके सहित प्रिया-प्रियतम रत्नमहलमें पहुँच जाते हैं। रत्नमहलकी शोभा तो सर्वथा अवर्णनीय है। उसका आकार इस ढंगका है—
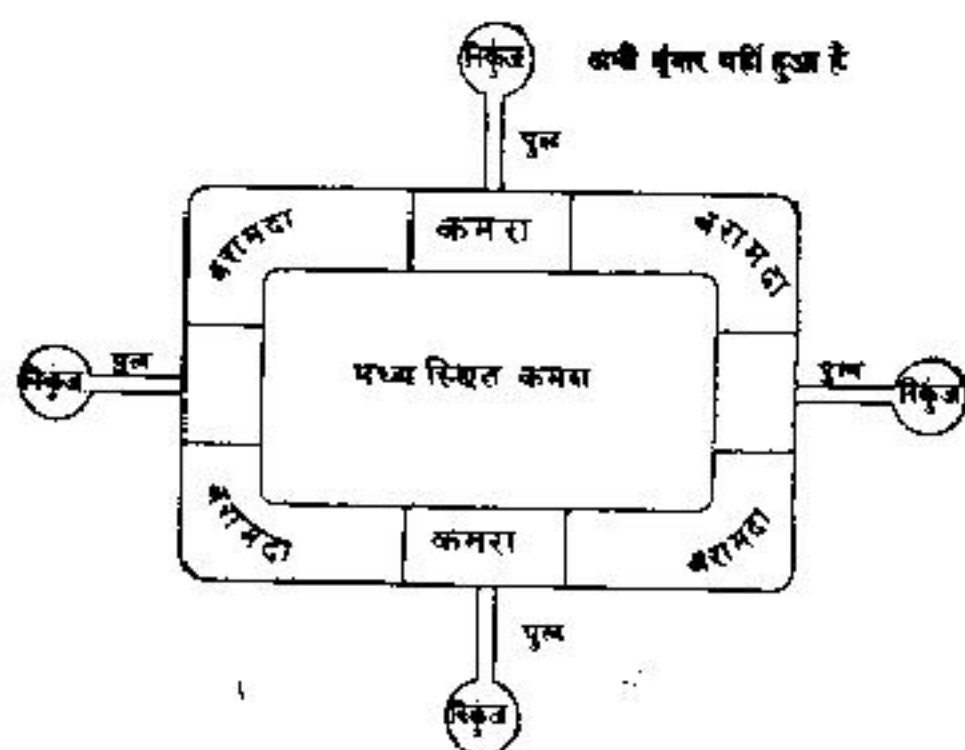
प्रिया-प्रियतम महलके पहले कमरेको पार करके मध्य स्थित आलीशान कमरेमें जा पहुँचते हैं। कमरा अनिर्वचनीय सुन्दर ढंगसे सजा है। कमरेके पूर्वी हिस्सेमें सोनेकी परात, सोनेकी तश्तरियाँ, जलसे भरी झारियाँ, गिलास, पत्तोंके बने हुए दोने एवं तराशे हुए फल सजा-सजाकर रखे हुए हैं। वृन्दादेवीकी बहुत-सी दासियाँ अभी भी तरह-तरहके फल तराशनेमें लगी हैं, कुछ सजा रही हैं। कमरेके बीचमें सुन्दर मखमली आसन नीचे बिछा हुआ है। आसनके आगे सोनेकी तीन चौकियाँ एक कतारमें रखी हुई हैं। वे चौकियाँ एक बित्ता ऊँची, डेढ़ हाथ चौड़ी तथा डेढ़ हाथ लम्बी हैं। कमरेकी दक्षिणी दिवालके पास मखमलका गद्दा बिछा हुआ है। उसीपर सखियोंके सहित श्रीप्रिया-प्रियतम आकर खड़े हो जाते हैं।

फलभोजन लीला

श्रीश्यामसुन्दर आसनपर बैठे हुए फल भोजन कर रहे हैं। श्रीश्यामसुन्दरका मुख इस समय दक्षिणकी तरफ है एवं श्रीराधारानी ठीक उनके सामने उत्तरकी ओर मुख किये हुए बैठी हैं। श्रीप्रियाजीकी दक्षिणकी तरफ कुछ दूरपर ललिता खड़ी रहकर मञ्जरियोंके हाथसे फलोंसे भरी हुई तश्तरियाँ ले-लेकर श्रीप्रियाको पकड़ाती जा रही हैं। विशाखा श्रीप्रियाकी बायीं तरफ खड़ी हैं। उनके हाथमें फूलोंका अत्यन्त सुन्दर बना हुआ पंखा है। फलोंकी तश्तरियोंसे भरी हुई जो परात है, उसमें फलकी तश्तरीकी ओर देखकर, जो फल प्यारे प्रियतमको खिलानेकी इच्छा होती है, वही फल श्रीप्रिया मन्द-मन्द मुस्कुराती हुई श्यामसुन्दरके सामने रख देती हैं।

इस समय श्यामसुन्दरके हाथमें प्यालेके आकारका, पर प्यालेसे कुछ बड़ा अत्यन्त सुन्दर गिलास है, जिसमें किसी फलका पीले रंगका रस है। श्यामसुन्दर गिलासको पकड़े हुए होठोंसे कुछ दूरपर ही गिलासको रखकर श्रीप्रियाकी मुख-शोभा निहार रहे हैं तथा मन्द-मन्द मुस्कुरा रहे हैं। श्रीप्रिया कभी तो श्यामसुन्दरके मुखकी ओर देखती हैं और कभी सामनेकी तश्तरियोंकी ओर। श्रीप्रिया बायें हाथसे समय-समयपर ललिताकी पकड़ायी हुई तश्तरियोंको पकड़ लेती हैं तथा उसमेंसे फलका जो खण्ड बड़ा ही सरस प्रतीत होता है, उसे निकालकर परातकी किसी तश्तरीमें रख देती हैं।

श्रीप्रियाको देखते हुए कुछ देर लगा देनेपर प्रायः सभी सखियाँ एवं दासियाँ श्यामसुन्दरको ओर ताकती हुई हँसने लग ~~जाती~~ जाती हैं। श्यामसुन्दर भी हँस पड़ते हैं। श्रीप्रिया कुछ चकित-सी होकर पीछे देखने लग जाती हैं कि ये सब हँस क्यों रही हैं? प्रियाको हँसनेका कोई भी कारण समझमें नहीं आता है, अतः पुनः श्यामसुन्दरकी ओर देखने

लग जाती हैं। अभी भी श्यामसुन्दर उसी तरह गिलासको होठोंसे कुछ दूरपर ही रखे रहते हैं।

श्रीप्रिया रूपमञ्जरीको कुछ इशारा करती हैं। रूपमञ्जरी बायें हाथमें सुवर्णका कटोरा एवं दाहिने हाथमें जलसे भरी हुई छोटी झारी लेकर आ पहुँचती है। श्रीप्रियाके पास दाहिनी तरफ कटोरा रख देती है। श्रीप्रिया उसीमें हाथ धोती हैं। रूपमञ्जरी पानी देती जाती है। हाथ धोकर श्यामसुन्दरके हाथका गिलास पकड़ लेती हैं तथा उसे धीरे-धीरे प्रियतमके होठोंसे हटा देती हैं।

श्यामसुन्दर एक साथ जल्दी-जल्दी चार-पाँच घूँट फलका रस पीकर सिर ऊपर उठा लेते हैं। श्रीप्रिया अब बड़ी तेजीसे परातमेंसे संतरेका एक खण्ड उठा लेती हैं तथा बायें हाथमें उस प्यालेको थामे हुए दाहिने हाथसे वह खण्ड श्यामसुन्दरके मुँहमें रख देती हैं। श्यामसुन्दर उस खण्डको शान्तिसे मुँहमें रख लेते हैं। अब प्रिया चित्राको पुनः इशारा करती हैं। चित्रा कुछ दूरपर बैठी हुई फलोंको तश्तरियोंमें भर रही थीं। वह उठकर कटोरेमें एक विशेष-पेय लाती हैं और रानीके हाथमें पकड़ा देती हैं। यह विशेष-पेय कटहलका रस निकालकर एवं अन्यान्य मसाले-मिश्री मिलाकर बनाया गया है। रानी कहती हैं—लो, यह मेरी प्यारी चित्राकी बनायी हुई बिल्कुल नये नमूनेकी चीज है। इसे कम-से कम आधा अवश्य पी जाना।

श्यामसुन्दर कटोरा पकड़ लेते हैं। चित्रा कुछ शर्मा जाती हैं, पर राधारानी बड़ी उत्कण्ठासे प्यारेके मुखारविन्दकी ओर देखने लग जाती हैं। मनमें यह लालसा है कि प्यारे श्यामसुन्दर समूचे कटोरेका रस पी जाते तो फिर तुरंत उस कटोरेको भर देती। इसलिये रानीका स्नेहभरा हृदय उफनने लगता है। श्यामसुन्दरने अभी उस पनस-रसको पीना शुरू भी नहीं किया है कि रानी एक और दूसरा कटोरा लानेकी आज्ञा दे देती हैं। आज्ञाकी देर थी कि विलासमञ्जरी एक और कटोरा तुरंत रानीके हाथमें पकड़ा देती है।

श्रीप्रियाके इस आन्तरिक प्रेमभावको लक्ष्य करके श्यामसुन्दर प्रेममें डूबने लग जाते हैं; पर उन्हें एक विनोद सूझ पड़ता है।

श्यामसुन्दर कहते हैं—हाँ, तब पहले तू पीना शुरू कर। तू जितना-जितना पीती जायेगी, मैं भी उतना-ही-उतना पीता जाऊँगा। अच्छा हुआ, मेरी इच्छा जानकर तुमने अपने आप कटोरा मँगवा लिया।

श्रीप्रिया अब तो विचारमें पड़ जाती हैं; पर तुरंत अपना आन्तरिक भाव सँभालकर कहती हैं—कटोरा तो इसलिये मँगवाया था कि कहीं मधुमङ्गल अचानक आ गया तो फिर वह तुमसे लड़ेगा कि वाह! अकेले-अकेले उड़ाते हो? उस समय मैं तुम्हें यह कहकर बचा दूँगी कि नहीं, देख! श्यामसुन्दरने एक कटोरा बहुत पहलेसे ही तुम्हारे लिये रख छोड़ा है।

श्यामसुन्दर कहते हैं—नहीं, मधुमङ्गल आज नहीं आयेगा। उसे मैंने दूसरे कामसे भेजा है। चित्राकी बनायी हुई चीजको मैं तुम्हारे बिना लूँ, यह कैसे हो सकता है?

रानीने बहुत टाल-मटोल की; पर श्यामसुन्दरने बड़ी चतुराईसे रानीकी प्रत्येक बातको हँसीमें उड़ा दिया। रानी सिर नीचा करके सोचने लगती हैं कि क्या करूँ? वे श्यामसुन्दरको आँखोंसे कुछ इशारा करती हैं, पर श्यामसुन्दर सिर हिलाकर 'ना' का भाव प्रकट करते हैं। फिर रानी विनयके स्वरमें कुछ कहती हैं—अच्छा, तुम पहले रस पी लो एवं अन्यान्य फल खा लो, फिर मैं रस पी लूँगी।

रानीकी बात सुनकर श्यामसुन्दर एक बार तो आँखें मूँदकर कुछ क्षणतक सोचते रहते हैं, फिर कहते हैं—अच्छा, यही सही, पर देखना भला, पलट मत जाना।

रानी जल्दीसे कहती हैं—ना, नहीं पलटूँगी।

अब श्यामसुन्दर उस कटोरेसे रस पीते हैं। आधा पीकर परातमें रख देते हैं। अब रानी परातकी प्रत्येक तश्तरीमें हाथ डालती हैं तथा एक-एक खण्ड प्यारे श्यामसुन्दरके मुखमें देती चली जाती हैं। श्यामसुन्दर अपनी प्रियाका प्रेमसे भरा हुआ वह प्रसाद पाते हैं। आम, जामुन, सेब, लीची, अनन्नास, कदली, अमरूद, बेर, मकोय, पोल्हू, अँगूर, सिंघाड़ा, शहतूत आदि क्रमशः प्रिया श्यामसुन्दरके मुखमें देती जाती हैं और

श्यामसुन्दर खाते जाते हैं। कुछ ऐसे विचित्र-विचित्र फल हैं, जिनसे अत्यन्त मधुर अनिर्वचनीय सुगन्धि निकल रही है। सारा कमरा उस सुगन्धिसे सुवासित हो रहा है। श्रीप्रिया एक-एक करके सब नमूनोंमेंसे थोड़ा-थोड़ा उठाती हैं और प्यारेके मुखमें देकर प्रेममें डूब जाती हैं। श्यामसुन्दर खाते हुए स्वयं भी प्रेममें इतने विवश हैं कि उन्हें यह ज्ञान नहीं कि मैं क्या खा रहा हूँ और कितना खा रहा हूँ? श्रीप्रिया भी प्यारेके मुखमण्डलपर दृष्टि टिकाये यन्त्रकी भाँति तश्तरीसे फलका खण्ड उठाती चली जाती हैं। अवश्य ही तनिक भी भूल अबतक नहीं हुई है, अर्थात् श्रीप्रियाने बराबर नयी-नयी तश्तरीमें ही हाथ डाला है।

पर इतनी देरतक प्यारेके मुखमण्डलपर दृष्टि टिकाये रहनेके कारण महाभावस्वरूपा श्रीप्रिया अब यह ज्ञान खो बैठती हैं कि मैं राधा हूँ। श्रीप्रियाका मन प्यारे श्यामसुन्दरमें इतना तल्लीन हो जाता है कि वे स्वयं अपनेको श्यामसुन्दर मान बैठती हैं। श्रीप्रिया सोचती हैं कि मैं श्यामसुन्दर हूँ। इसलिये ही इस बार हाथ श्यामसुन्दरके होठोंके पास नहीं ले जाकर फलका टुकड़ा अपने होठोंके पास ले जाती हैं। श्रीप्रियाकी यह प्रेमावस्था देखकर सखियाँ एक बार तो प्रेमसे मूर्च्छित-सी होने लगती हैं; पर बड़ी मुश्किलसे अपनेको सँभाल लेती हैं। इधर प्यारे श्यामसुन्दर श्रीप्रियाके मुखपर लगातार दृष्टि जमाये रखनेके कारण यह ज्ञान खो बैठते हैं कि मैं श्यामसुन्दर हूँ; वे समझने लग जाते हैं कि मैं राधा हूँ, सामने श्यामसुन्दर हैं। हाथमें फलका टुकड़ा लिये हुए मेरे हाथकी प्रतीक्षा कर रहे हैं कि प्रिया मुझे खिला दे। इसी भावसे उधर हाथ बढ़ाते हैं। बड़ी सुन्दर झाँकी है। भावावेशमें श्रीप्रिया फलका खण्ड हाथमें लेकर अपने होठोंके पास रखे हुए पत्थरकी मूर्तिकी तरह श्यामसुन्दरकी ओर ताक रही हैं और श्यामसुन्दर श्रीप्रियाकी दाहिनी कलाईके पास अपने दाहिने हाथकी अँगुली रखे हुए पत्थरकी मूर्ति बने बैठे हैं।

श्रीप्रिया-प्रियतमकी इस दशाकी ओर लक्ष्य करके अब सखियाँ कुछ चिन्तित-सी भी हो जाती हैं। ललिता एवं विशाखा आपसमें विचार करती हैं कि भावावेशको शिथिल कर देना अच्छा रहेगा, नहीं तो पता नहीं, कोई अनिष्ट घटना न हो जाये। इस विचारसे ही विशाखा मधुमती मञ्जरीको कुछ इशारा करती हैं। मधुमती मञ्जरी बड़ी फुर्तीसे वीणा उठा

लेती है तथा मधुर कण्ठसे गाना आरम्भ करती है—

रीझि रीझि रहसि रहसि हँसि हँसि उठें
साँसें भरि आँसू भरि कहत दई दई।
चौंकि चौंकि चकि चकि औचकि उचकि 'देव'
छकि छकि बकि बकि परत बई बई॥
दोउन को रूप गुन दोऊ बरनत फिरें
घर न थिरात रीति नेह की नई नई।
मोहि मोहि मोहन को मन भयो राधामय
राधा मन मोहि मोहि मोहन मई मई॥

संगीत प्रारम्भ होनेपर उसकी मधुर स्वरलहरी निकुञ्जमें गूँजने लग जाती है। मधुमती मञ्जरीका कण्ठ आज असीम रूपसे मधुर हो गया है। दो कड़ी गाते ही श्रीप्रिया-प्रियतमकी पुतलियाँ, जो बिल्कुल स्थिर दीख रही थीं, वे एक-दो बार ऊपर-नीचे घूम जाती हैं तथा पलक गिरकर आँखें बंद हो जाती हैं। उसी भावावेशमें संगीतके अनुरूप भावसे श्रीप्रिया-प्रियतम अब अभिभावित होने लगते हैं।

श्रीप्रिया देख रही हैं—मैं किसी ग्वालिनके घरपर छाछका बायना देने गयी हूँ। ग्वालिन श्यामसुन्दरके पीताम्बरकी तरह ओढ़नीको लपेटे हुए है। उसे देखकर मैं बिल्कुल श्यामसुन्दरके ध्यानमें तल्लीन होकर हँस रही हूँ, बड़बड़ा रही हूँ। कभी छाती पीटकर रोने लग जाती हूँ। बावलीकी तरह दौड़कर अपने हाथके छाछका बर्तन वो मैं पटक देती हूँ तथा उसके घरका एक मटका उठाकर ले भागती हूँ। ग्वालिन मेरी दशा देखकर मुझे दुलरा रही है और पूछ रही है कि बहिन! तुझे क्या हो गया है? अयँ! तू तो बिल्कुल बावली-सी दीख रही है। मैं उसे जवाब दे रही हूँ कि ओह! क्या ही रूप है! बहिन! तू बता सकेगी, श्यामसुन्दर इतने सुन्दर क्यों हैं? आह! उन्हें इतना मधुर बोलना किसने सिखाया? बता दे बहिन! मेरी बात सुनकर ग्वालिन मेरा हाथ पकड़कर कह रही है कि चल, मैं तुझे घर पहुँचा आऊँ। तू होशमें नहीं है। इतना कहकर वह ग्वालिन मेरा हाथ पकड़े हुए चल रही है; पर मेरे शरीरका आकार बिल्कुल बदल गया है। मैं बिल्कुल श्यामसुन्दरकी-सी दीख गई

साड़ीके बदले मेरे ऊपर पीताम्बर है, चूड़ाके बदले मोर-मुकुट है। मैं गोरीसे बिल्कुल साँवली बन गयी हूँ।

इधर श्यामसुन्दर संगीतके भावसे आविष्ट होकर यह अनुभव कर रहे हैं—गायें चरानेके लिये मैं वनमें जा रहा हूँ। गोष्ठके बाहर निकलते ही मेरी प्रिया मुझे मिल गयी है। प्रिया अञ्चलमें फूल बीन-बीनकर रख रही है। सिरसे अञ्चल खिसककर पीठपर आ गया है। नागिन-सी वेणी पीछे नाच रही है। मैंने ताली बजाकर प्रियाको इशारा किया है। इशारा करते ही प्रियाने मेरी ओर तिरछी चितवनसे देखा है। देखते ही मेरा हृदय बिंध-सा गया है। मैं जोरसे कह रहा हूँ कि आह! आ!··· । तुरंत मेरी प्रिया झाड़ीमें छिप जाती है, मेरी आँखें भर आयी हैं। मैं कलेजा थामकर वहीं बैठ गया हूँ। मधुमङ्गल, सुबल, अंश, स्तोक आदि सखा घबराये हुए-से पूछ रहे हैं कि क्यों भैया कान्हूँ! क्या हुआ है? क्यूँ! ऐसा हमने तुम्हें कभी नहीं देखा। मैं उनसे कह रहा हूँ कि अंश! तुमने कभी करोड़ों चन्द्रमाओंको एक साथ उदय होते देखा है? अंश उत्तर देता है कि नहीं। मैं कह रहा हूँ कि अच्छा देख, करोड़ ही नहीं, असंख्य चन्द्र-बिम्बोंमें जो शोभा है, वह भी फीकी पड़ जाये, ऐसी शोभा मैंने अभी-अभी उस झाड़ीके पास देखी है। अंश आश्चर्यमें भरा हुआ पूछता है कि किसकी शोभा? मैं कह रहा हूँ कि 'रा······रा······रा······रा'। मैं चाहता हूँ कि प्रियाका नाम उच्चारण करूँ, पर बोली बंद-सी हो गयी है। इसी समय मेरी प्रियाकी मधुर कण्ठ ध्वनि हमें सुन पड़ती है। मेरा हृदय नाचने लगता है। मैं चाहता हूँ कि ठीकसे बोलकर सखाओंको समझाऊँ, पर कुछ-का-कुछ बोल जाता हूँ। मैं पागलकी तरह रटने लग जाता हूँ कि 'मृग मन करत सिकार! मृग मन करत सिकार'। मेरे शरीरका आकार बदल गया है। मैं बिल्कुल प्रियाके आकारका हो गया हूँ।

इस तरह प्रिया-प्रियतम मधुमती मञ्जरीके संगीतकी धारामें बह रहे हैं। मधुमती कोकिल कण्ठसे अन्तिम कड़ीकी बार-बार आवृत्ति कर रही है। 'मोहि मोहि मोहनको मन भयो राधामय, राधा मन मोहि मोहि मोहन मई मई' —इस चरणकी आवृत्ति सुनकर दोनों ही सोचने लगते हैं कि मानो कोई मुझे जगा रहा है। श्यामसुन्दर सोचते हैं कि ठीक बात

है, बिल्कुल ठीक। प्रियाके ध्यानके कारण मैं मोहित हो गया हूँ, इसीलिये मेरी आँखें अपने शरीरको नहीं देख पा रही हैं। श्रीप्रिया भी यही सोच रही हैं कि सच है। बिल्कुल सच, प्यारे श्यामसुन्दरने आँखोंको छा लिया है, इसीलिये ही भ्रमवश मुझे अपना आकार श्यामसुन्दरकी तरह दीख रहा है।

मधुमतीको चित्राखा इशारा करती हैं। इशारा पाते ही तत्क्षण मधुमती संगीत बंद कर देती है। संगीत बंद होते ही निकुञ्जमें एक गम्भीर सन्नाटा छा जाता है। प्रिया-प्रियतम, दोनों एक साथ ही आँखें खोल देते हैं। आँखें खोलकर अकचकाये हुए दोनों इधर-उधर देखने लग जाते हैं। अब सखियाँ हँस पड़ती हैं। प्रिया-प्रियतम दोनों अपनी आवेशपूर्ण दशाका स्मरण करके कुछ झेंप-से जाते हैं। पर श्यामसुन्दर तुरंत ही खिलखिलाकर हँस भी पड़ते हैं तथा कहते हैं—वाह! तुमने तो मुझे खूब छकाया। फल खिलाते-खिलाते मुझपर जादू कर बैठी। ठीक बात है, इसीलिये ही शास्त्रोंमें नीची दृष्टि करके मौन रहकर भोजन करनेका विधान है।

श्यामसुन्दरकी बात सुनकर सखियाँ हँसने लगती हैं। श्रीप्रिया भी हँसने लगती हैं। अब श्यामसुन्दर पनस-रसका वह कटोरा उठा लेते हैं। उसे श्रीप्रियाके ओठोंके पास ले जाकर कहते हैं—देख, अब बात स्थिर हो चुकी है। मैं फल खा चुका। अब तुझे किंचित् पीना ही पड़ेगा।

श्रीप्रिया शर्मायी हुई दृष्टिसे प्रियतमकी ओर ताकती हुई एक घूँट रस पी लेती हैं तथा धीरेसे कहती हैं—मैं पीछे पी लूँगी, मान जाओ।

श्यामसुन्दरका मुख प्रसन्नतासे भर जाता है। वे मधुर कण्ठसे बहुत धीरेसे प्रियाके मुखके पास झुककर कहते हैं—अस्तु!

श्रीश्यामसुन्दर फिर जोरसे हँसने लग जाते हैं। कटोरा परातमें रखकर उठ पड़ते हैं। श्रीप्रिया भी उठ पड़ती हैं। वहाँसे उठकर पूर्वकी ओर चार-पाँच कदम चलकर एक चौकीपर बैठ जाते हैं, जो सुन्दर ढंगसे सजायी हुई रखी है। रूपमञ्जरी झारी लेकर आ पहुँचती है। रतिमञ्जरीके हाथमें चौड़े मुँहका सुन्दर गमला है,

उसमें रानी प्यारे श्यामसुन्दरके हाथ धुलाती हैं। फिर कुल्ले कराकर अपने अञ्चलसे हाथ पोंछती हैं। श्यामसुन्दर प्रेममें भरे रहकर रानी जैसे-जैसे करती जा रही है, वैसे-वैसे करने दे रहे हैं। हाथ पोंछकर रानीमें एक गम्भीर उल्लास हिलोरे मारने लगता है। वे प्यारे श्यामसुन्दरका हाथ पकड़कर उत्तरी दिशावाले दरवाजेकी ओर चल पड़ती हैं। वहाँसे रत्न-महलके उत्तरी कमरेमें आती है, फिर उत्तरी निकुञ्जमें। फिर उसे भी पारकर उत्तरकी तरफ सुन्दर रविश (छोटी सड़क) पर चलने लगती हैं।

सड़कके किनारे दोनों ओर बेला-फूलके सुन्दर वृक्ष लगे हैं, जिनमें बड़े-बड़े बेलेके फूल खिल रहे हैं। बेलेकी क्यारीकी एक कतारके बाद दूसरी कतार मेंहदीकी है, जिसमें बड़ी सुन्दर मञ्जरियाँ एवं पुष्प लग रहे हैं। उसी सड़कसे चलती हुई ललिता-कुञ्जके उत्तर-पश्चिम कोनेवाले रत्न-महलमें जा पहुँचती हैं।

इस महलका भी आकार तो वैसा ही है, पर लता-गुल्मोंकी सजावट कमरोंकी सजावट और भी मनोहर दीख पड़ रही है। श्रीप्रिया-प्रियतम बीचवाले आलीशान कमरेमें पहुँच जाते हैं। कमलके पुष्पोंका बना हुआ बड़ा ही सुन्दर पलंग यहाँ शोभा पा रहा है। श्रीप्रिया प्यारे श्यामसुन्दरको उसीपर ले जाकर बैठा देती हैं। बैठाकर उनकी ओर देखने लग जाती हैं। श्यामसुन्दर मुस्कराते हुए दक्षिणकी तरफ सिर करके उस पलंगपर लेट जाते हैं। श्रीप्रिया पैर लटकाकर उसी पलंगके बीचके हिस्सेमें प्यारे श्यामसुन्दरकी ओर मुँह करके बैठ जाती हैं। पनबट्टा लेकर विलासमञ्जरी श्रीप्रियाके सामने खड़ी है। श्रीप्रिया पनबट्टेको लेकर पलंगपर रख लेती हैं तथा उसमेंसे दो बीड़े पान ले लेती हैं। पानपर सोनेका सुन्दर वरक चढ़ा हुआ है। पान लेकर पनबट्टा श्रीप्रिया विलासमञ्जरीके हाथमें पकड़ा देती हैं तथा श्यामसुन्दरके सिरकी ओर खिसक जाती हैं। खिसककर बायाँ हाथ श्यामसुन्दरके दाहिने कंधेपर रख करके दाहिने हाथसे पान श्यामसुन्दरके मुखमें रख देती हैं। श्यामसुन्दर मुँहमें पान लेकर मुँह बंद कर लेते हैं। उल्लासमें भरी हुई श्रीप्रिया श्यामसुन्दरके मुखकी ओर देखती रहती हैं।

ललिता सिरकी तरफसे आकर श्यामसुन्दरके बायीं ओर पलंगपर बैठ जाती हैं। विशाखा श्यामसुन्दरके चरणोंके पास पलंगपर बैठ जाती हैं तथा उनके चरणोंको अपनी गोदमें ले लेती हैं। चित्रा सिरके पास पंखा लिये हुए खड़ी है; पर गर्मी नहीं रहनेके कारण झल नहीं रही हैं। कुछ सखियाँ घुटना टेके तथा हाथसे पलंगको पकड़े रहकर बैठी हैं। कुछ मञ्जरियाँ खड़ी हैं। श्यामसुन्दर अपना पीताम्बर पैरसे लेकर ग्रीवातक तान लेते हैं; इससे श्यामसुन्दरका शरीर ढक जाता है, केवल मुखारविन्द दीखता है।

सामने उत्तरकी तरफकी दीवालपर एक अत्यन्त सुन्दर चित्र है। उसपर श्यामसुन्दरकी दृष्टि जाती है। चित्रमें यह चित्रित है कि रानी श्यामसुन्दरकी वंशी होठोंपर रखे हुए हैं। श्यामसुन्दर बगलमें बैठे हुए बजाना सिखला रहे हैं। अब श्यामसुन्दरको वंशीकी याद आती है। मध्याह्न जल-विहारके समय वंशी ललिताको दे चुके थे, उसे किसी प्रकार ले लेनेकी इच्छा श्यामसुन्दरके मनमें जाग्रत् होती है। इस इच्छासे श्यामसुन्दर श्रीप्रियासे कहते हैं—तू तो भूल गयी होगी।

श्रीप्रिया अपने प्रियतमकी रूप-सुधाके पान करनेमें इतनी तल्लीन थीं कि मानो उनके कानोंमें ये शब्द पहुँचे नहीं। प्रियाने कुछ जवाब नहीं दिया। श्यामसुन्दर धीरेसे हँसते हुए प्रियाकी ठोढ़ीको हिलाकर कहते हैं—क्यों, बोल, याद है क्या ?

इस बार रानी मानो समाधिसे जगकर कहती हैं—क्या ?

श्यामसुन्दर कहते हैं—उस दिन मैंने जो तुम्हें रागिनी सिखलायी थी, वह भूल गयी कि याद है ?

रानी एक सरल बालिका-सी चटपट कहती हैं—हाँ, हाँ, बिल्कुल याद है।

श्यामसुन्दर—अच्छा, सुना भला !

रानी—लाओ, दो वंशी, अभी सुना देती हूँ।

श्यामसुन्दर—ललिताके पास है, उससे ले ले।

रानी ललितासे कहती हैं—ललिते! वंशी थोड़ी देरके लिये मुझे दे दे, मैं फिर तुझे वापस कर दूँगी।

ललिता कुछ क्षण मुस्कुराती हुई सोचती हैं, फिर एक मञ्जरीको कुछ इशारा करती हैं। वह वंशी ले आती है। रानी उसे होठोंपर रखकर बजाने लगती हैं, पर फूँक भरते ही प्रेममें विवश होने लगती हैं। अतः लज्जित होकर हाथमें वंशी लेकर कहती हैं—सबके सामने नहीं बजा सकूँगी।

श्यामसुन्दर हँसते हुए कहते हैं—समझ गया, तू भूल गयी है।

रानी प्रेममें अधिकाधिक विवश होती आ रही हैं, इसलिये वंशी ललिताके हाथमें दे देती हैं। ललिता ज्यों-ही वंशी पकड़ती हैं, वैसे ही श्यामसुन्दर हाथ बढ़ाकर उसे पकड़ लेते हैं एवं कहते हैं—देख मैं, फिरसे सिखला देता हूँ।

श्यामसुन्दर पड़े-पड़े ही उसमें एक फूँक भरते हैं। फूँक भरते ही इतनी मोहक स्वर-लहरी निकलती है कि प्रेममें बेसुध होकर ललिता सामनेकी ओर एवं राधारानी पीछेकी ओर झुक जाती हैं। श्यामसुन्दर दोनों हाथ बढ़ाकर बड़ी फुर्तीसे दोनोंको सँभाल लेते हैं तथा हँसते हुए कहते हैं—ललिता रानी! वंशीको फिर दिनभर अपने पास किस तरह रख सकोगी?

ललिता शर्मा-सी जाती हैं, कुछ बोलती नहीं। इसी समय वृन्दा देवी एक अत्यन्त सुन्दर तोता एवं एक सारी पिंजरेमें लिये हुए आ पहुँचती हैं। तोता आते ही बोलने लगता है—मेरे प्यारे श्यामसुन्दर! मेरे प्राणाधार! किंचित् विश्राम कर लो, तुम्हारी आयु बढ़ेगी।

फिर तोता एक श्लोक पढ़ता है, जिसका भाव यह है कि भोजन करके बायीं करवट सोनेसे कोई रोग नहीं होता, अन्नका परिपाक ठीकसे होता है और आयु बढ़ती है। तोतेका श्लोक-पाठ सुनकर सभी सखियाँ हँस पड़ती हैं। तोता अपनी आँखकी पुतलियोंको कोयोंमें नचाता हुआ ऐसी गम्भीरताकी मुद्रा बना रहा है मानो उसे आयुर्वेद शास्त्रका पूरा ज्ञान है। भक्तवत्सल श्यामसुन्दर तोतेकी अभिलाषा पूर्ण करते हुए कहते हैं—हाँ भाई! तुम बहुत ठीक कह रहे हो, मुझे नींद भी आ रही है।

श्यामसुन्दर बायीं करवट होकर आँखें बंद कर लेते हैं। तोतेकी आँखोंमें प्रसन्नता आ जाती है। आँखके कोये आनन्दाश्रु ओंसे भर जाते हैं। श्रीप्रिया श्यामसुन्दरकी ओर एकटक देख रही हैं। वृन्दा ललिताको कुछ इशारा करती हैं। ललिता धीरेसे पलंगसे नीचे उतर पड़ती हैं तथा राधारानीके पास आकर हाथ पकड़ लेती हैं। रानी उठना चाहती नहीं, पर ललिता जबर्दस्तीसे धीरे-धीरे उन्हें पलंगसे नीचे उतार देती हैं तथा कुछ उन्हें भी खिलानेके उद्देश्यसे कमरेके बाहर खींचती हुई-सी ले चलती हैं। रानी प्यारे श्यामसुन्दरकी ओर मुख किये हुए बहुत धीरे-धीरे बढ़ रही हैं। ललिता धीरेसे रानीके कानमें कहती हैं—देख, कुछ खा ले! नहीं तो मैं श्यामसुन्दरसे कह दूँगी कि यह नहीं खाती। फिर वे तुम्हें पहले खिलाकर तब खाया करेंगे।

ललिताकी बात सुनकर रानी सिर नीचा किये हुए जिधर ललिता ले चलती हैं, उधर ही धीरे-धीरे चलने लग जाती हैं। ललिता वहाँसे चलकर उत्तरी कमरे एवं निकुञ्जको पारकर सड़ककी दाहिनी ओरकी कदम्ब-वेदीके पास जा पहुँचती हैं।

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

शुक-सारी विवाद लीला

कदम्ब-वेदीपर सुन्दर आसन लगा है। उसपर गोलाकार पंक्तिमें बैठी हुई श्रीप्रिया प्यारे श्यामसुन्दरके अधरामृतसे सिक्त फलोंका प्रसाद पा रही हैं। श्रीप्रियाकी दाहिनी ओर ललिता बैठी हुई हैं एवं बायीं ओर विशाखा। फिर ललिताकी दाहिनी ओर क्रमशः गोलाकार चित्रा इन्दुलेखा चम्पकलता रङ्गदेवी तुङ्गविद्या एवं सुदेवी बैठी हुई हैं। पंक्तिके दक्षिणी हिस्सेमें थोड़ी-सी जगह छोड़ी हुई है, जिसकी राहसे मञ्जरियाँ जल एवं अन्यान्य वस्तुएँ बीच-बीचमें परोसने जाती हैं। अनङ्गमञ्जरी पालिकामञ्जरी धन्यामञ्जरी एवं श्यामलामञ्जरी पंक्तिकी चारों दिशाओंमें खड़ी हैं। चारोंके हाथमें एक-एक थाल है, जिसमें तश्तरियाँ सजी हुई हैं। उसीमेंसे निकालकर वे बीच-बीचमें सखियोंको थालीमें डाल दिया करती हैं।

श्रीप्रियाने प्रारम्भमें तो एक प्यालेसे चार-पाँच घूँट रस एवं किंचित् पनसरस पी लिया; पर अब फलका टुकड़ा हाथमें लिये हुये मुस्कुरा रही हैं तथा कभी चम्पकलता और कभी रङ्गदेवीकी ओर ताककर इशारेसे कहती हैं—देख ! तू तो थाली लिये बैठी है, मैं कितना खा चुकी।

श्रीप्रियाकी आँखें तो सखी-मण्डलीकी पंक्तिमें हैं;पर मन वहाँ है,जहाँ प्यारे श्यामसुन्दर विश्राम कर रहे हैं। इसलिये दृष्टि बीच-बीचमें स्थिर-सी हो जाती है। ललिता अब धीरे-धीरे संतरे एवं अंगूरके कुछ खण्डोंको प्रियाके मुखमें देने लगी है तथा श्रीप्रिया खाती चली जा रही हैं। ललिताको जब यह संतोष हो जाता है कि मैं कुछ इसके पेटमें डाल चुकी हूँ और यदि यह अपने हाथसे बिल्कुल भी नहीं खायेगी तो भी विशेष आपत्तिकी बात नहीं रही है, तब अपने मुँहमें फलके एक-दो खण्ड डालकर रानीसे कहती है—देख, हम सब बैठी हैं, तू कुछ खा ले।

रानीका मन तो यहाँ था नहीं। हाँ, एक क्षणके हजारवें हिस्सेमें यहाँ आता था, फिर प्यारे श्यामसुन्दरके सौन्दर्य-सागरमें गोता लगाने लगता था। रानीने ललिताकी बात मानो सुनी ही नहीं। वे तो सोच रही थीं कि आह! मुझे यदि करोड़ आँखें होतीं, रोम-रोममें एक-एक आँख होती और कभी पलक नहीं गिरती तो कुछ-कुछ प्यारे श्यामसुन्दरकी रूप-सुधाका आनन्द ले पाती! क्या करूँ, किससे कहूँ? अच्छा, एक काम करूँ। प्रार्थना करूँ कि हे विधाता.........।

रानीकी चिन्तन-धारा पलटी और सोचने लगी कि ओह! कृष्ण! कृष्ण!! मैं क्या सोच रही हूँ! नहीं, नहीं, कभी नहीं। विधाता! मैं भूल गयी। शपथ करके कहती हूँ कि मैं होशमें नहीं थी, इसीलिये तुमसे प्रार्थना करने जा रही थी। अब कभी ऐसा नहीं करूँगी। हाय, हाय, फिर मेरे प्यारे श्यामसुन्दरको कितना कष्ट होगा! मेरे प्यारे श्यामसुन्दरको मेरा वह रूप देखकर कितना संताप होगा! मेरे हृदयधन मुझे हृदयसे लगाकर मेरे कपोलोंका चुम्बनकर आनन्दमें डूबने लग जाते हैं। अभी मेरे केशोंको सँवारकर, वेणी गूँथकर पैरोंमें पायजेब बाँधकर वे कितने उत्फुल्ल हो रहे थे; पर मैं इतनी अधमा हूँ कि अपने सुखके लिये उनके आनन्दको नष्ट करनेकी बात सोचने लग गयी। भला, रोम-रोममें आँखें हो जानेपर तो मैं विकृत हो जाऊँगी। मेरे प्यारे श्यामसुन्दरको फिर हमसे क्या सुख मिलेगा! ना, ना, कभी नहीं। बस, दो ही आँखें रखूँगी। हाँ, हाँ, मुझे दो ही आँखें चाहिये।

रानीके आन्तरिक भाव-प्रवाहकी किसी सखीको कल्पना भी नहीं है। ललिता मुस्कुराती हुई अपनी बावली सखीकी ओर देखती है और रह-रहकर कह उठती है—क्यों, कुछ खा ले; यों ही चुपचाप बैठी रहेगी?

रानीकी ओरसे कुछ भी जवाब नहीं मिलता, पर कभी-कभी किसी फलसे दो-तीन चावलभर तोड़कर वे धीरेसे मुखमें रख लिया करती हैं। अब ललिता चित्राको धीरेसे कहती है—कलकी तरह तू ही कोई उपाय कर।

ललिताकी बात सुनकर चित्रा मुस्कुराती हुई उठ पड़ती है तथा जल्दीसे हाथ धोकर, मुँह धोकर, रूमालसे हाथ पोंछकर रानीकी पीठके

पास आकर बैठ जाती हैं तथा धीरेसे उनके कानके पास मुँह ले जाकर कहती हैं—बहिन ! परसोंकी व्यवस्था आज ही करनी पड़ेगी और सो भी प्यारे श्यामसुन्दर सोकर उठ नहीं जाते, उसके पहले-पहले। इसलिये तू जल्दीसे कुछ खा ले।

चित्राके ये शब्द कानमें प्रवेश करते ही रानीका मन दूसरे भाव-प्रवाहमें बहने लग जाता है। कल प्रिया एवं सखियोंने प्यारे श्यामसुन्दरके साथ एक लीला करनेकी बात स्थिर की थी। यह स्थिर हुआ था कि चित्रा तो रानीका स्वांग धारण करेंगी एवं रानी चित्राका। रानी-बनी-हुई चित्रा श्यामसुन्दरसे मान करेंगी। श्यामसुन्दर वेश-भूषाका कपट पहचान पाते हैं या नहीं,— यह बात रानी निकुञ्जके छिद्रसे देखेंगी। यदि पहचान लिया तो कोई बात ही नहीं, पर नहीं पहचान पाये तो देखें, रानीको मनानेकी कैसी चेष्टा श्यामसुन्दर करते हैं तथा चित्रा कहाँ तक अपना स्वांग निभा पाती हैं। रानी जब-जब मान करती हैं तो उनका मान विशेष देरतक नहीं टिकता। अतः चित्राका मान देखकर मान करना मैं भी सीखूँगी,— इस विचारसे भी रानीने इस लीलाके लिये अपनी स्वीकृति दे दी है।

चित्राके शब्द कानमें जाते ही रानीकी चित्तधारा इस आयोजनकी ओर मुड़ पड़ती है। रानी जल्दीसे फलका एक खण्ड मुँहमें रखकर उठ पड़ती हैं। सखियाँ भी उठ पड़ती हैं। झारीसे हाथ स्वयं धोनेके लिये बायें हाथसे रूपमञ्जरीके हाथकी झारी रानी स्वयं पकड़ लेती हैं। रानीकी यह शीघ्रता देखकर ललिता आदि मुस्कुराने लगती हैं। रूपमञ्जरी मुस्कुराती हुई हाथपर पानी देने लग जाती है। रानी चटपट हाथ धोकर ललिता आदिके हाथ धुलाने चलती हैं, पर ललिता आदि सखियोंने हाथ धो लिये थे। रानीकी यह प्रेमभरी चेष्टा देखकर एक बार अतिशय ललकसे ललिता रानीको हृदयसे लगा लेती हैं। फिर रूमालसे हाथ-मुँह पोंछकर, जिस कमरेमें श्यामसुन्दर थे, वहींके लिये पुनः चल पड़ती हैं।

वहाँ पहुँचकर सखियाँ देखती हैं कि प्यारे श्यामसुन्दर गाढ़ निद्रामें हैं। रानी कुछ दूरसे ही प्रियतमके मुखारविन्दको ओर देखने लगती हैं। पर इस आशङ्कासे कि कहीं प्यारेकी नींद टूट न जाये, दबे पाँव पीछे

हटकर पलंगसे सात-आठ हाथ पश्चिम-उत्तरकी ओर स्थित अत्यन्त सुन्दर सजे हुए पाटेपर जाकर बैठ जाती हैं। पाटा चार गज चौड़ा, चार गज लम्बा और डेढ़ हाथ ऊँचा है। बीचमें तो मखमली नीली गद्दी है, पर पाटेके चारों ओर बड़े सुन्दर ढंगसे कमलके फूल पिरोये हुए हैं। रानी मसनदके सहारे प्यारे श्यामसुन्दरकी ओर मुख करके बैठ जाती हैं। सखियाँ भी उसी पाटेपर बैठ जाती हैं। एक मञ्जरी श्यामसुन्दरके पलंगके पासकी पीकदानी उठा लाती है। रानी अतिशय प्यारसे स्वयं पीकदानी ले लेती हैं। उस पाटेपर पनबट्टा रखा हुआ है, उसमें-से पानके बीड़े निकालती हैं। आठ बीड़ोंको खोलकर उनमें प्रियतम श्यामसुन्दरके अधरामृतसे सने हुए पीकके दो-दो बूँद डालती हैं, फिर बीड़ेको सजाकर अतिशय प्यारसे बारी-बारीसे सभी सखियोंके मुँहमें अपने हाथसे देती हैं। इसी बीचमें चित्रा ठीक दो बीड़े उसी प्रकार अधरामृत-पीक मिलाकर तैयार कर लेती है तथा रानीके मुँहमें रख देती हैं। रानी पनबट्टेसे एक-एक पान और निकालकर पुनः सखियोंके मुँहमें दे देती हैं। फिर उस पनबट्टेको चम्पकलताके हाथमें देकर हाथ धोती हैं तथा एक मञ्जरीसे दूसरा पनबट्टा लेकर उसके ऊपर पान रखकर प्यारे श्यामसुन्दरके लिये बीड़े तैयार करने लगती हैं। दृष्टि क्षण-क्षणमें प्यारेके मुखारविन्दकी ओर जाती है।

अब सखियोंमें अतिशय प्रेमभरी चर्चा चलने लगती है। श्यामसुन्दरको नींद बिल्कुल नहीं आयी है; पर इस प्रेमभरी चर्चाको सुननेके लिये नींदका बहाना किये हुए पड़े हैं। सखियोंमें धीरे-धीरे जो बात हो रही है, उसीकी ओर श्यामसुन्दर कान लगाये हुए हैं; पर किसीको यह कल्पना भी नहीं है कि ये जगे हुए हैं। इन्दुलेखा दोनों मञ्जरियोंको, जो प्यारे श्यामसुन्दरके पलंगके दोनों ओर खड़ी हैं, इशारेसे पूछती है। मञ्जरियाँ इशारा कर देती हैं कि गाढ़ी नींदमें सो रहे हैं। रानी एवं सखियाँ अब निस्संकोच बातें शुरू करती हैं, अवश्य ही धीमी-धीमी आवाजसे। कुछ देर उस प्रेममय आयोजनकी सलाह होती है।

अब रानी कहती हैं—चित्रे! तू सुन रही है न!

चित्रा कहती है—हाँ, सुन रही हूँ।

ललिता— जब वे पहुँच जायँ, तब तुम निकुञ्जको बंद कर देना, समझी!

चित्रा— बहुत ठीक!

ललिता— उस समय मैं राधाके साथ मदनकुञ्जमें रहूँगी। तुम श्यामसुन्दरको बंद करके मेरे पास चम्पकलताको सूचनाके लिये भेज देना।

चम्पकलता— ललिते! पर सुबलका क्या करेगी?

विशाखा— मैं उसे मधुमङ्गलके द्वारा जालमें कल ही फाँस लूँगी। कल ही मैं मधुमङ्गलको सुन्दर-सुन्दर केले खिलाकर परसों शरीफा खानेका निमन्त्रण दे दूँगी। यद्यपि सुबलका लालचमें आना है कठिन, पर एक बार यह उपाय कर तो लूँ। न होगा तो, उसे और किसी उपायसे अपने निकुञ्जमें रोके रहूँगी।

इसी समय श्यामसुन्दर करवट लेते हैं। मञ्जरी कुछ इशारा करती है। राधारानी एवं ललिताकी तीक्ष्ण दृष्टि प्यारे श्यामसुन्दरपर पड़ती है। उनकी कपट-निद्राकी पोल खुल जाती है। रानी धीरेसे ललिताके कानमें कहती हैं—सब गुड़ मिट्टी हो गया।

ललिता— कोई बात नहीं, फिर दूसरा उपाय सोच लूँगी, पर कपटी-शिरोमणिने तो हद कर दी। अभी-अभी कैसे खर्राटे भर रहे थे।

रानी वहाँसे उठकर श्यामसुन्दरकी पुष्प-शय्याके पास आकर खड़ी हो जाती हैं। श्यामसुन्दरने चादरसे अपना मुँह ढक लिया था, फिर भी चादरके अंदरसे मुखारविन्द दीख पड़ रहा है। मुद्रितनेत्रकी छवि झीनी चादरको चीरती हुई रानीके हृदयको बेध-सी रही है। अलकावलीके दो गुच्छे प्यारे श्यामसुन्दरके कपोलोंपर बिखरे हुए हैं। रानी अपने पद्म-सदृश हाथोंसे अलकावलीके गुच्छोंको यथास्थान रख देनेके लिये चादर हटाती हैं। श्यामसुन्दर हँसी रोकना चाहते हैं, पर होठोंपर उस अन्तर्हृदयकी हँसीकी झलक कुछ आ ही जाती है। रानी हँस पड़ती हैं। श्यामसुन्दर मानो अभी-अभी घोर निद्रासे जागे हों, ऐसी मुद्रामें अपनी आँखें खोलकर निहारने लग जाते हैं। रानी एवं सखियाँ जोरसे खिल-खिलाकर हँसने लग जाती हैं।

रानी झुककर प्यारे श्यामसुन्दरके गलेमें अपनी दोनों बाँहें डाल देती हैं तथा ललकभरी दृष्टिसे प्यारेके मुखारविन्दको कुछ क्षणतक देखती रहती हैं। फिर कहती हैं— बड़ी अच्छी नींदमें तुम सो रहे थे, जग कैसे गये ?

कहते-कहते रानी फिर खिलखिलाकर हँस पड़ती हैं।

प्यारे श्यामसुन्दरके वक्षःस्थलपर रानीकी वनमाला झूल रही है। प्रेमावेशके कारण अञ्चल खिसककर पीठपर आ गया है। अपनी प्रियाकी यह दशा देखकर श्यामसुन्दरके शरीरमें प्रेमके विकार उत्पन्न होने लगते हैं। प्यारे श्यामसुन्दरके मुखारविन्दपर छोटे-छोटे प्रस्वेद-कण मोतीकी तरह झलमल करने लगते हैं। रानी अतिशय प्यारसे अपने अञ्चलसे पसीना पोंछ देती हैं तथा धीरे-धीरे श्यामसुन्दरको उठाकर पलंगपर बैठा देती हैं। रानी भी पलंगपर बैठ जाती हैं तथा हँसकर कहती हैं— अच्छा, यह बताओ, तुमने हमलोगोंकी कौन-कौन-सी बातें सुनी हैं ?

श्यामसुन्दर कुछ आश्चर्यकी मुद्रामें कहते हैं— कैसी बातें ?

ललिता हँसकर कहती हैं— चालाकी रहने दो। तुमने झूठ ही नींदका बहाना बनाया था, अच्छी बात है। सावधान रहना, सूदके सहित बदला लूँगी।

श्यामसुन्दर हँस पड़ते हैं तथा कहते हैं— अच्छी बात है।

इसी समय वृन्दा बहुत-सी मञ्जरियोंको आगे किये हुए निकुञ्जमें प्रवेश करती हैं। रानी जब प्यारे श्यामसुन्दरका प्रसाद लेने कदम्बवेदीपर गयी थीं तो पीछे-पीछे वृन्दा भी गयी थीं। वहाँ रानी एवं सखियोंके प्रसाद ले लेनेपर उन्होंने मञ्जरियों एवं दासियोंको अतिशय प्रेमसे प्रसाद खिलाया, फिर सबके अन्तमें किंचित् प्रसाद लेकर सब काम समाप्त करके यहाँ आ पहुँची हैं। वृन्दाके आते ही, निकुञ्जमें बहुत पहले जो वे पिंजरा रख गयी थीं, उसमेंके तोता एवं मैना, दोनों एक साथ ही बोल उठते हैं— देवि ! आज्ञा हो तो एक बार बाहर जाकर पक्षियोंको शान्त बैठनेके लिये कह दूँ। वे बहुत कोलाहल कर रहे हैं।

तोता एवं मैनाकी बात सुनकर वृन्दा कहती है— तू बैठ, मैं स्वयं जा रही हूँ।

वृन्दा पूर्वकी तरफसे निकुञ्जमें चली जाती है। जाकर बाहरकी ओर छिद्रमें-से देखती है। सखियाँ एवं रानी तथा श्यामसुन्दर आश्चर्यमें भरे कभी वृन्दाकी ओर देखते हैं, तो कभी तोता एवं मैनाकी ओर। वृन्दा निकुञ्जमें जाकर चुपचाप खड़ी है। कुछ क्षण खड़ी रहकर मुस्कराने लगती है तथा फिर दबे पाँव शीघ्रतासे जहाँ श्यामसुन्दर आदि हैं, आकर खड़ी हो जाती है। पहले तो जोरसे हँस पड़ती है, फिर हँसी सँभालकर कहती है—प्यारे श्यामसुन्दर ! एक तमाशा देखोगे ?

श्यामसुन्दर कहते हैं— हाँ, हाँ, अवश्य देखूँगा, दिखाओ।

वृन्दा— अच्छा, देखो ! बिल्कुल दबे पाँव मेरे पीछे-पीछे सभी चले चलो ! सावधान ! तनिक भी शब्द न हो, नहीं तो फिर खेल बिगड़ जायेगा।

वृन्दाकी बात सुनकर सखियाँ,रानी एवं श्यामसुन्दर,सभी आश्चर्यमें भरे हुए वृन्दाके पीछे-पीछे चल पड़ते हैं। चलकर पूर्वी निकुञ्जमें जा पहुँचते हैं। निकुञ्जमें अतिशय कोमल हरी-हरी पत्तियोंका बेंचके आकारका एक आसन है, उसीपर वृन्दादेवी प्रिया-प्रियतमको उत्तरकी ओर मुख करके बैठ जानेका इशारा करती है। प्रिया-प्रियतम उसी प्रकार आसनपर बैठ जाते हैं। कुछ सखियाँ आसनको पकड़े खड़ी रहती हैं, कुछ बैठ जाती हैं। निकुञ्ज सखियों एवं दासियोंसे ठसाठस भर जाता है; पर पूर्ण नीरवता छायी हुई है। वृन्दा फिर बहुत धीरेसे कहती है— सभी उस वृक्षकी ओर देखो।

लताओंके छिद्रमें-से एक वृक्षकी ओर वृन्दा अँगुलीसे इशारा करती है। सभी उस तरफ देखने लग जाते हैं। निकुञ्जसे आठ हाथ उत्तर हटकर बड़ा ही सुन्दर वृक्ष है। वृक्ष झाऊ-वृक्षके समान है, पर झाऊकी अपेक्षा अत्यधिक हरा-भरा है। पत्तियाँ तो झाऊ-वृक्षकी-सी हैं, पर इतनी अधिक हरी-भरी एवं इतनी घनी हैं कि बस, कुछ कहते नहीं बनता। मोटी-मोटी डाल हैं, पर डालमें कहीं भी रूखेपन नहीं है। डालका रंग भी बड़ा

सुन्दर है। हल्के-पीले रंगके कपड़ेपर हरे रंगका छींटा हो, वह कपड़ा जैसा दीखता है, वैसा-सा रंग डालका है। उस डालपर एवं वृक्षकी टहनियोंपर समूह-के-समूह पक्षी बैठे हैं। रंग-बिरंगके पक्षी हैं। कभी-कभी तो बहुतसे एक साथ बोल उठते हैं 'ठीक! ठीक!' तथा कभी बिल्कुल शान्त बैठ जाते हैं। अधिकांश पक्षी इस मुद्रामें बैठे हैं मानो किसी पंचायतीमें पंच बनाये गये हों और गम्भीर विचारमें लगे हों। वृक्षकी एक मोटी डालपर, जो पश्चिमी ओर फैली है, एक तोता पूर्वकी ओर मुख किये हुए बैठा है तथा एक सारी पश्चिमकी ओर मुख किये हुए बैठी है।

वृन्दादेवी धीरेसे सबसे कहती हैं— देखो, इन दो पक्षियोंमें झगड़ा हो रहा है। अन्यान्य पक्षी इन दोनोंकी बात बैठे-बैठे सुन रहे हैं। इनका झगड़ा कैसा विचित्र है, यही दिखानेके लिये तुमलोगोंको ले आयी हूँ।

वृन्दाकी बात सुनकर सबकी दृष्टि उस तोते एवं मैनापर जा टिकती है। सभी अतिशय उत्सुकतासे प्रतीक्षा करते हैं कि देखें, क्या झगड़ा है। इसी समय सारी बोल उठती है— अच्छी बात है; पर आजसे मैं तुमसे कभी नहीं बोलूँगी।

तोता कहता है— बोलना या न बोलना तो तुम्हारी मर्जीपर है, किंतु तुम्हीं बताओ कि मैं तेरे लिये झूठ कैसे कह दूँ।

सारी— नहीं, नहीं, तुम झूठ मत बोलो, सत्यधर्मका पालन करो; पर अब मुझसे तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं है।

तोता—देख सारी! इस तरह नाराज होनेमें क्या लाभ है? सत्यका निर्णय तो हुआ नहीं।

सारी— भाई! मैं तो कई बार तुमसे कह चुकी कि मैं सत्य नहीं जानती, फिर बार-बार तंग करनेसे क्या लाभ है?

तोता— नहीं जी! मैं भी तुम्हें तंग करना थोड़े चाहता हूँ। हाँ, तेरे मुखसे बार-बार 'श्यामसुन्दर बड़े निठुर हैं, बड़े निठुर हैं' सुनकर बात करने लग गया। मैं जानता होता कि तू खीझ जायेगी तो इस प्रसंगको छेड़ता ही नहीं।

सारी—अच्छा, अब भूल हो गयी, क्षमा करो। एक बार नहीं हजार बार यह दे रही हूँ, श्यामसुन्दर बड़े रसिक हैं, बड़े रसिक हैं, बड़े करुण हैं, बड़े करुण हैं। बस, अब मुझसे मत बोलना।

यह कहकर सारी पूर्वकी ओर मुख फिराकर बैठ जाती है। तोता कुछ देर चुपचाप बैठे रहकर फिर उड़कर सारीके सामने चला आता है तथा कहता है—सारी! तू गम्भीरतासे विचार कर। सच, तेरी शपथ, मेरा कोई आग्रह थोड़े है कि मैं तेरी बात मानूँगा ही नहीं! हाँ, वह बात मेरी समझमें नहीं आती कि तू मेरे प्यारे श्यामसुन्दरको निठुर क्यों समझने लग गयी है? मेरा तो यह दृढ़ विश्वास है कि एक बार कुछ क्षणके लिये भी तू दृष्टि स्थिर करके उनके नयनोंकी ओर देखती तो फिर कभी इस तरह नहीं कहती।

सारी कुछ नहीं बोलती; पर प्रिया-प्रियतम एवं सखियाँ, सबके मुखपर हँसी छा जाती है। वृन्दा फिर सावधान करती हैं कि किंचित् भी शब्द नहीं होने पाये, नहीं तो खेल बिगड़ जायेगा।

सारी फिर बोलती है—भाई! कह चुकी, बार-बार कह चुकी। मेरी भूल थी, तुम ठीक हो। अब व्यर्थमें बातें क्यों बढ़ा रहे हो?

तोता कुछ गम्भीर-सा बनकर आँखें बंद कर लेता है तथा कुछ क्षण बाद अपने-आप बोलने लगता है—प्राणप्यारे श्यामसुन्दर! प्राणप्यारे श्यामसुन्दर!! प्राणप्यारे श्यामसुन्दर ········!!!

तोतेकी यह मधुर कण्ठध्वनि सारीके मनमें प्रेमका संचार करने लगती है। सारी श्यामसुन्दरके नामके माधुर्यमें खींच ली जाती है। तोतेके प्रति रोषको भूल जाती है और तोतेकी ओर देखने लग जाती है।

तोता फिर कहता है—सच, सारी, तू मेरे हृदयको देख ले! मैं कृत्रिम नहीं कहता। मेरे हृदयमें यह बात कभी भी नहीं आयी कि श्यामसुन्दर निठुर हैं, बल्कि कभी-कभी यही दीखता है, तुम्हारी रानी ही कुछ निठुर बन बैठती हैं। देख, उस दिनकी बात है, तुम्हारी रानी रूठी हुई थीं। चन्द्रमाकी शुभ्र ज्योत्स्नासे यमुना-पुलिनका अणु-अणु उज्ज्वल हो रहा था। एक जामुनके वृक्षके नीचे हाथपर कपोल टेके, आँखें मूँदी

रखकर तुम्हारी रानी बैठी थीं। अद्भुत शोभा थी। सारी, देख! सच कहता हूँ, तुम्हें प्रसन्न करनेके उद्देश्यसे नहीं, रानीका सौन्दर्य तो हमें कई बार भ्रममें डाल चुका है। अहा! क्या बताऊँ, जब मैं हाथकी ओर देखता था तो प्रतीत होता था, अनन्त नव-विकसित कमलोंकी शोभा इसके सामने फीकी है। मुखारविन्दकी ओर देखता था तो यह अनुभव करता कि अनन्त चन्द्रमण्डलकी शोभा रानीकी मुखकी शोभाके एक कणके बराबर भी नहीं। कविकी भाषामें यह शक्ति नहीं कि उस शोभाका वर्णन कर सके। हाँ, कुछ नीचे उतरकर कहूँ तो सचमुच उस दिन मुझे यह प्रतीत हो रहा था कि रानी हाथपर कपोल टेके हुए क्या बैठी हैं मानो पूर्णचन्द्र कमलके आसनपर सो रहा है। और भौंहोंकी शोभा तो निराली ही थी। रोषके कारण कुछ ऊपरकी ओर उठ गयी थीं, कुछ विरोष रूपसे टेढ़ी हो गयी थीं। सचमुच उस मुखकी एवं भौंहोंकी शोभा देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो रानीके मुखको मकरन्दसे भरा हुआ कमल समझकर भौंरोंके समूह आये हों और मुख-कमलका मकरन्द पान करनेकी प्रतीक्षामें मँडरा रहे हों। वह शोभा देखकर मेरा रोम-रोम आनन्दसे भर गया।* सारी! मैं तो दंग रह गया। आँखें हटती नहीं थीं। उसी समय ललिता प्यारे श्यामसुन्दरकी बाँह पकड़े हुए वहाँ आयी। मेरे प्यारे श्यामसुन्दर चरणोंके पास बैठ गये। सारी! बहुत कहकर क्या होगा, मेरे श्यामसुन्दरने हृदयके समस्त प्यारसे प्रार्थना की; पर तुम्हारी रानीने आँखतक नहीं खोली। मेरे प्यारे श्यामसुन्दरका मुख उदास हो गया; पर रानी टस-से-मस नहीं हुई। मेरे प्यारे श्यामसुन्दर कुछ दूर जाकर बैठ गये......। सारी! सचमुच तू भी तो वहाँ थी ही, दोनोंमें कौन अधिक निष्ठुर तुम्हें दीखा, मैं यह तुम्हारे मुँहसे ही सुनना चाहता हूँ।

---

* पहिले तो देखो आय मानिनी की सोभा लाल
तापाछे लीजिये मनाय प्यारे हो गोबिंद।
कैर पैं दिए कपोल रही है नयन मूँदि
कमल बिछाय मानो सोयो अहै पूरन चंद॥
रिस भरी भौंहैं मानो भौंर बैठे अरबरात
चंदु तरें आयो मकरंद भर्यो अरबिंद।
'नंददास' प्रभु ऐसी प्यारी को रुसैये बलि
जाके मुख देखे ते मिटत सबै दुख-दंद॥

तोतेके मुखसे रानीके रूपका वर्णन सुनकर सारी प्रसन्न हो गयी थी तथा कुछ और सोचकर बड़ी प्रसन्नताकी मुद्रामें बोलती है—तोता! तुम्हें भीतरी बातका बिल्कुल पता ही नहीं है। ऊपरकी बात देखकर ही तुमने रानीको निठुर मान लिया है। देख, मैं उस दिनके उस गम्भीर मानका रहस्य रानीकी प्यारी सारीसे सब पूछ चुकी हूँ, पर तुझे बता नहीं सकूँगी, तुम उसे समझ भी नहीं सकोगे, उसे समझनेके लिये रमणी-सुलभ हृदय चाहिये। तेरा हृदय पुरुषका है, रानीके प्रेममय हृदयकी रूप-रेखा तुम्हारी कल्पनामें आ ही नहीं सकती! और.........।

सारी यह कहकर रुक जाती है। तोता शीघ्रतासे बोल उठता है—हाँ, हाँ, पूरी बात जो-जो कहना चाहती है, सब कह!

सारी कुछ क्षण चुप रहकर कहती है—मैं यही कहने जा रही थी कि तुम जिस घटनासे मेरी रानीको निष्ठुर समझ रहे हो, वह तो तुम्हारी नासमझीके कारण है। हाँ, यदि मैं तुम्हें अपने मनका घाव खोलकर दिखला दूँ तो तेरी बोली बंद हो जायेगी, कुछ भी जवाब नहीं दे सकोगे। बिना किसी संशयके समझ जाओगे कि ये श्यामसुन्दर कितने निष्ठुर हैं।

तोता कुछ गम्भीरताकी मुद्रामें कहता है—अच्छा! सुना सही, तूने ऐसी कौन-सी निष्ठुरता मेरे प्यारे श्यामसुन्दरमें देखी है?

सारी गम्भीर होकर करुणाकी मुद्रामें कहती है—तोता! सचमुच कलसे मेरे प्राण छटपट कर रहे हैं! कल दोपहरकी बात है! सूर्य-मन्दिरमें मेरी रानी बैठी थीं, बिल्कुल अकेली थीं। ललिता आदि सभी उपवनमें गयी हुई थीं! मैं एक लताकी टहनीपर बैठी हुई एकटक रानीकी ओर देख रही थी। रानीके हाथमें एक माला थी, पर यों ही अँगुलियोंपर पड़ी थी। आँखें बंद थीं; पर अविराम अश्रुधारा बहती हुई कपोलोंको भिगो रही थी! बीच-बीचमें रानी बोल उठती थीं कि मेरे जीवनसर्वस्व! सभी अवस्थाओंमें मैं तुम्हारी हूँ। तोता! रानीकी वह प्रेमावस्था देख-देखकर मैं गद्गद हो रही थी; पर आगे जो देखा, उसे देखकर तो दंग रह गयी। देखती हूँ कि रानी हठात् उठ खड़ी हुई। बड़बड़ करती हुई मन्दिरमें इधर-उधर घूमने लग गयीं। पहले तो आवाज अस्पष्ट थी, पर पीछे कुछ

जोरसे बोलनेके कारण मुझे ठीक-ठीक सुनने लग गया। रानी बोल रही थी—

ओठ जीवबंधु वारौं, हाँसी सुधाकंद वारौं,
कोटि कोटि चंद वारौं राधे मुख चंद पै।

रानीके मुखसे बार-बार इसकी आवृत्ति हो रही थी। मैं चकित होकर सोचने लग गयी कि अजब बात है! अपने मुखसे आज मेरी रानी अपनी शोभा-वर्णन कर रही हैं; पर तुरंत समझ गयी कि रानी प्यारे श्यामसुन्दरके भावसे आविष्ट होकर अपने-आपको ही श्यामसुन्दर मान रही हैं। फिर देखती हूँ कि रानी हाथोंको ठोडीपर रखकर कह रही हैं—ओह! व्रजका प्रत्येक कुञ्ज छान डाला, घरका कोना-कोना देख लिया, पर प्रिया नहीं मिली! ओह! मुझे छोड़कर चली गयी! पर कहाँ गयी? हाय, हाय, उसने प्राण तो नहीं दे दिये? वह यमुनामें तो नहीं कूद पड़ी? बस, बस, अब चलो, मैं भी यमुनामें कूदकर अपना जीवन समाप्त कर दूँ। पर कहीं वह जीती हो तो! आह! फिर तो मेरे बिना उसके प्राण निकल जायँगे! न········ नहीं, नहीं, उसने प्राण नहीं दिये हैं! कहीं छिप गयी है। आह! बरसाने तो नहीं चली गयी? बस, बस, वहीं गयी है। बिल्कुल यही बात है! पर!·········मैं वहाँ कैसे पहुँचूँ? हाय! मेरे प्राणोंकी रानी! तू मुझे छोड़कर चली गयी है, मुझसे रूठ गयी है। हाँ, हाँ, तुमने उचित ही किया है, मैं इसीके योग्य हूँ! पर, प्रिये! मेरा हृदय फट रहा है! एक क्षण भी तुम्हारे बिना जीवन नहीं रहेगा। मेरी हृदयेश्वरि! ना, ना, इतना कड़ा दण्ड मैं नहीं सह सकूँगा! मुझे क्षमा करो! ओह! क्या करूँ? किससे कहूँ? हाय, कोई मेरी प्रियाके पास मेरी बात पहुँचा दो! अच्छा, एक पत्र लिख देता हूँ, इसे ही मेरी प्रियाको दे देना। पत्रोत्तर आनेतक प्राणोंको किसी प्रकार रोके रहूँगा!

तोता! यह कहकर रानी बैठ गयीं। पासमें कमलके पत्तेपर फूल रखे हुए थे। रानीने फूलोंको बिखेर दिया। पत्तेके चार टुकड़े करके एक टुकड़ा ले लिया तथा उसपर नखसे यह लिखने लगी—

क्षम्यतामपरं कदापि तवेदृशं न करोमि।
देहि सुन्दरि दर्शनं मम मन्मथेन दुनोमि॥ (गीतगोविन्द-३।७)

इसे लिखकर रानी समाधिस्थ हो गयीं। कुछ देर बाद आँखें खोलकर उस पत्तेकी ओर देखने लगीं तथा आनन्दमें भरकर बोलीं—प्राणनाथने पत्र भेजा है? अच्छा, पढ़ूँ, क्या लिखा है?

पत्र पढ़कर हृदयसे लगाया और पुनः बड़बड़ करने लग गयीं—आह! मेरे जीवनधन! तुमने तो कोई अपराध नहीं किया है? हाय! किसने तुमसे झूठी बात कह दी है! मैं कहाँ रूठी हूँ? आह! पता नहीं, तुमने कहाँ से यह पत्र लिखा है? हाय! न जाने तुम्हारी क्या दशा हो रही होगी? ललिते! विशाखे! रूप! अरे विमले! तुम सब कहाँ चली गयीं? अरे, दौड़ो। प्यारे श्यामसुन्दरको ढूँढ लाओ; व्याकुलताकी अवस्थामें उन्होंने पत्र लिखा है। आह! मेरे प्राणनाथ। तुम्हें मेरे बिना.........।

राधिका कान्ह को ध्यान धरैं
तब कान्ह ह्वै राधिका के गुन गावैं।
त्यों अँसुआ बरसै बरसानै को
पाती लिखैं लिखि राधे को ध्यावैं॥
राधे ह्वै जाय घरीक में देव
सुप्रेम की पाती लै छाती लगावैं।
आपुने आपुही में उरझैं
सुरझैं उरझैं समुझैं समुझावैं॥

यह कहती हुई पत्रको पुनः छातीसे लगाकर समाधिस्थ हो गयीं। तोता! मैं तो किंकर्तव्यविमूढ-सी हो गयी, पर तुरंत ही श्यामसुन्दरको खबर देने दौड़ी। कुछ ही दूरपर श्यामसुन्दर मिल गये; पर जो देखा, उसे देखकर सिरसे पैरतक जल उठी। देखती हूँ—एक वृक्षके नीचे श्यामसुन्दर बैठे हैं। सामने एक अत्यन्त सुन्दर रमणी बैठी है। श्यामसुन्दर उस रमणीके कपोलोंपर चन्दनसे चित्र बना रहे हैं। तोता! मैं तो देखकर सह नहीं सकी। सोचने लगी कि अभी-अभी इनके विरहमें रानीकी कैसी दशा देखकर आयी हूँ और यहाँ इन्हें इस रूपमें देख रही हूँ। यह सोचते-सोचते मैं मूर्च्छित हो गयी। पता नहीं, कितनी देर बाद मुझे होश हुआ। होश आनेपर वहाँ श्यामसुन्दर नहीं दीख पड़े। उड़कर

पुनः सूर्य-मन्दिरमें आयो। वहाँ देखती हूँ कि चहल-पहल मच रही है। मेरी रानीके साथ श्यामसुन्दर असीम प्यार प्रदर्शित कर रहे हैं। उसी समयसे मैं बावलीकी तरह रट रही हूँ कि श्यामसुन्दर बड़े निठुर हैं, बड़े कपटी हैं।

सारी यह कहते-कहते जोशमें आ जाती है तथा बड़े जोरसे कह उठती है—तोता! चाहे मान या मत मान, पर श्यामसुन्दर सचमुच बड़े निठुर हैं, बड़े कपटी हैं, बड़े लम्पट हैं। यह हजार बार, लाख बार कह रही हूँ।

सारीकी यह बात सुनकर निकुञ्जमें बैठे हुए श्यामसुन्दर, राधारानी एवं सखियाँ, सभी जोरसे एक साथ ही हँस पड़ते हैं। उनकी हँसी सुनते ही वृक्षके सभी पक्षी चकित होकर उधर ही देखने लगते हैं। श्यामसुन्दर धक्का देकर निकुञ्जके उत्तरी दरवाजेको खोल देते हैं तथा प्रियाके कंधेपर हाथ रखे हुए बाहर निकल पड़ते हैं। सखियाँ एवं वृन्दा भी पीछे-पीछे बाहर निकल आती हैं। श्यामसुन्दर वृन्दाको उस तोता एवं सारीको बुलानेके लिये इशारा करते हैं। वृन्दा तोता एवं सारीको बुलाती है। दोनों आ जाते हैं। ललिता हँसती हुई कहती है—सारी! तू ठीक कह रही है, ये बड़े ही लम्पट हैं।

सारी शर्मा जाती है।

श्यामसुन्दर कहते हैं—सारो! आ, मैं झगड़ेका फैसला कर देता हूँ।

श्यामसुन्दर सारीको उठाकर अपने हाथपर रख लेते है तथा रानीके हाथपर तोतेको रख देते हैं। ऐसा करके वृन्दासे कहते हैं—वृन्दे! तोतेसे पूछ, तोता क्या देख रहा है।

वृन्दा कहती है—तोता! बता, तू क्या देख रहा है?

तोता अतिशय उल्लासके साथ मधुर कण्ठसे कह उठता है—आह! रानीके रोम-रोममें अणु-अणुमें मैं प्यारे श्यामसुन्दरको देख रहा हूँ।

वृन्दा आनन्दमें भरकर सारीसे पूछती है—सारी! तू क्या देख रही है?

सारी गद्‌गद कण्ठसे कहती है—जय हो ! प्यारे श्यामसुन्दरके रोम-रोममें, अणु-अणुमें मेरी राधारानी हैं ! जय हो ! जय हो !!

सारीकी कण्ठ-ध्वनिमें ध्वनि मिलाकर सभी पक्षी बोल उठते हैं—जय हो ! जय हो !! जय हो !!! जय हो !!!!

श्यामसुन्दर मेवा मँगवाकर अपने हाथसे तोता एवं सारीको खिलाते हैं। मेवा खाकर प्रिया-प्रियतमके चरणोंमें सिर नवाकर तोता एवं सारी दोनों पुनः वृक्षपर जा बैठते हैं। श्यामसुन्दर एवं रानी मेवा बिखेर देते हैं। पक्षियोंका समूह उसपर टूट पड़ता है। बीचमें 'जय हो ! जय हो !!' की ध्वनि करते हुए भी पक्षी मेवा चुगने लगते हैं तथा प्रिया-प्रियतम दस कदम उत्तरकी ओर बढ़कर एक पनस-वृक्षकी छायामें जाकर खड़े हो जाते हैं।

अक्षक्रीड़ा लीला

श्रीप्रिया-प्रियतम कटहल-वृक्षसे बने हुए अत्यन्त सुन्दर निकुञ्जमें विराजमान हैं। चार अत्यन्त सुन्दर कटहलके वृक्ष आठ-आठ गजकी दूरीसे चारों कोनोंमें स्थित हैं। उनकी मोटी-मोटी शाखाएँ आपसमें जुड़कर गुम्बदके आकारकी बन गयी हैं। कटहल-वृक्षोंको चारों ओरसे घेरकर अंगूरकी लताएँ फैली हैं, जिनमें गुच्छे-के-गुच्छे अंगूरके फल लटक रहे हैं। चारों कटहलके वृक्ष भी फलसे भरे हैं। छोटे-बड़े सब आकारके पनस-फल (कटहलके फल) वृक्षोंसे लटक रहे हैं। कुछ पके हुए भी हैं तथा उनसे अत्यन्त मीठी सुगन्धि निकल-निकलकर सम्पूर्ण वातावरणको सुवासित कर रही है।

चारों दिशाओंमें चार दरवाजे हैं। दरवाजोंके पास अंगूरकी बेलें फैली हुई हैं। इन बेलोंमें अंगूर लटक रहे हैं। अंगूर सहित फैली हुई बेलोंकी शोभा ऐसी है मानो झालर टँग रही हो। छोटे-छोटे पक्षी बेलों एवं वृक्षोंपर इधरसे उधर, उधरसे इधर फुदक रहे हैं। ये पक्षी इतनी मीठी ध्वनिसे बोल रहे हैं कि समस्त निकुञ्ज एक अनिर्वचनीय मधुर धीमी स्वर-लहरीसे गुञ्जित हो रहा है।

निकुञ्जके सहनके किनारे-किनारे एक विचित्र जातिके छोटे-छोटे तीन-तीन अंगुल ऊँचे नीले रंगके पौधे उगे हुए हैं तथा वे पौधे आपसमें इतने जुड़े हुए हैं कि केवल उनकी छोटी-छोटी पत्तियाँ ही दीख रही हैं, जड़ बिल्कुल नहीं दीखती। ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो तीन हाथ चौड़ी मखमली कालीन निकुञ्जके किनारे-किनारे बिछ रही हो। निकुञ्जका शेष अंश ठीक उसी प्रकारके नीले रंगके किसी तेजस् पत्थरसे पटा हुआ है। फर्श इतना चिकना है कि झुकते ही उसपर अपने मुखका नीला-नीला प्रतिबिम्ब दीखने लगता है।

निकुञ्जके बीचके स्थलमें पीले रंगकी चादर बिछी हुई है। इसी चादरपर श्रीप्रिया-प्रियतम एवं सखियाँ अक्षक्रीड़ा खेलनेके लिये बैठी हुई हैं। श्रीप्रिया पूर्वकी ओर मुख किये हुए तथा श्यामसुन्दर पश्चिमकी ओर मुख किये हुए बैठे हैं। श्रीप्रियाकी दाहिनी ओर ललिता बैठी हैं एवं बायीं ओर चित्रा। श्रीश्यामसुन्दरकी बायीं ओर विशाखा घुटना टेके बैठी हैं तथा दाहिनी ओर दक्षिणकी ओर मुख किये हुए इन्दुलेखा बैठी हैं। चम्पकलता विशाखाकी बायीं ओर अपने दाहिने हाथसे विशाखाके बायें कंधेको पकड़े हुए बैठी हैं। तुङ्गविद्या ललिता एवं श्रीप्रियाके बीचकी जगहमें कुछ पीछे हटकर बैठी हुई हैं। रङ्गदेवी श्रीप्रिया एवं चित्राके बीच कुछ पीछे हटकर बैठी हैं। सुदेवी इन्दुलेखा एवं चित्राके बीचकी जगहमें कुछ पीछे हटकर बैठी हैं। मञ्जरियाँ उन्हें चारों ओरसे घेरकर खड़ी हैं। खड़ी हुई मञ्जरियोंकी दृष्टि बड़ी हुई है श्रीप्रिया-प्रियतम एवं सखियोंपर, जो अक्षक्रीड़ा आरम्भ करनेवाली ही हैं। निम्न चित्रसे स्पष्ट रूपसे ज्ञात हो सकता है कि श्रीप्रिया-प्रियतमके साथ अन्य सखियाँ किस-किस दिशामें कहाँ-कहाँ बैठी हैं।
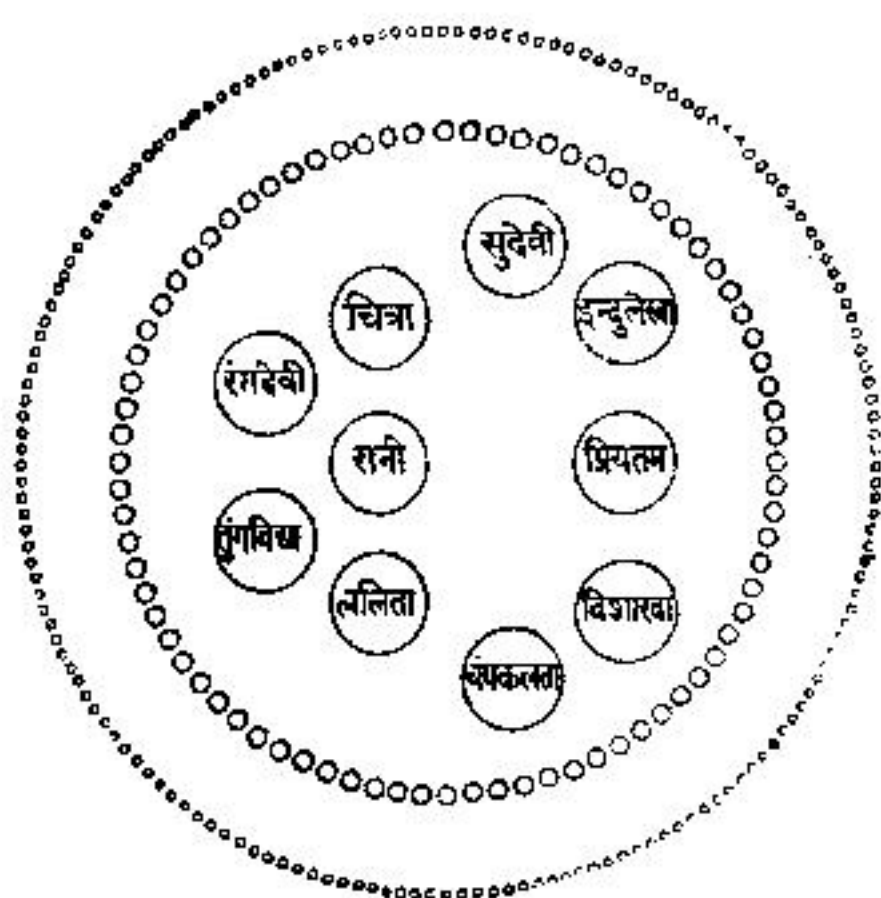
श्रीप्रिया-प्रियतमके बीचमें एक हाथ लम्बा एवं एक हाथ चौड़ा कपड़ेका टुकड़ा रक्खा हुआ है, जो अत्यन्त सुन्दर जरीकी कारीगरीके कारण चमचम कर रहा है। अक्षक्रीड़ाके दाँवकी सूचना देनेके लिये यह इस प्रकारसे चिह्नित है—

नेत्र १	नेत्र २	कपोल ३	कपोल ४
अधर ५	ललाट ६	ठोढ़ी ७	ओष्ठ ८
हाथ ९	नासिका १०	हृदय ११	हाथ १२
मुकुट १३	चरण १४	चरण १५	मुरली १६

अब अक्षक्रीड़ा आरम्भ होनेके पूर्व श्रीप्रिया कहती हैं—ना, मैं आज अपना दाँव सबसे पहले चुन लूँगी।

श्यामसुन्दर कहते हैं—वाह! यह कैसे होगा? नियमानुसार जिसका नाम आयेगा, वह पहले चुनेगा।

श्यामसुन्दरकी बात सुनकर श्रीप्रियाके मुखारविन्दपर विशुद्ध मुस्कान छा जाती है तथा वे कहती हैं—देखो, तुम प्रतिदिन कुछ-न-कुछ चालाकी अवश्य करते हो, नहीं तो प्रतिदिन पहले तुम्हारा ही दाँव कैसे आ जाता है? ना, आज वैसे नहीं, पहले मैं अपना दाँव चुन लूँगी, फिर कोई भी चुने।

रानीकी बात सुनकर श्यामसुन्दर मुस्कुराते हुए कहते हैं—अच्छा,आज

यदि पहले मेरा दाँव आया तो मैं वह दाँव तुम्हें दे दूँगा और तुम्हारा जो दाँव होगा, वह मैं ले लूँगा। क्यों, यह तो मंजूर है?

रानी हँसकर कहती हैं—हाँ, यह मंजूर है।

रानीके यह कहते ही अत्यन्त सुन्दर परातमें गुलाबके अतिशय सुन्दर दस फूलोंको लिये हुए वृन्दा दक्षिणकी ओरसे आकर खड़ी हो जाती है। गुलाबके फूल इस प्रकार रखे हुए हैं कि दल नीचेकी ओर तथा डंठी ऊपरकी ओर है। वृन्दा परात रख देती है तथा पूर्व-उत्तरकी ओर मुख करके ललिता एवं चम्पकलताके बीचमें जो जगह थी, वहीं बैठ जाती है। अपनी आँखें हाथोंसे मूँद लेती है तथा कहती है—तुमलोग अपनी इच्छानुसार स्थान परिवर्तन कर लो।

अब सबसे पहले ललिता परातमें हाथ डालती है तथा फूलोंका स्थान इधर-उधर कर देती है। उसके बाद श्यामसुन्दर फूलोंका स्थान बदल देते हैं। फिर वृन्दा पूछती है—क्यों, हो गया?

श्यामसुन्दर कहते हैं—हाँ, आँखें खोलो!

वृन्दा आँखें खोलती है तथा अपनी एक दासीको बाहरसे बुलवाती है। दासी आ जाती है। वृन्दा उसे इशारा करती है। वह पहले एक फूल रानीको देती है, इसके बाद एक फूल श्यामसुन्दरको, फिर ललिता, विशाखा, चित्रा, इन्दुलेखा, चम्पकलता, रङ्गदेवी, तुङ्गविद्या एवं सुदेवी—आठोंको क्रमशः एक-एक फूल दे देती है।

श्यामसुन्दरको जो फूल मिला, उसपर सातके अङ्कका चिह्न निकला। रानीको जो फूल मिला, उसपर तीनका चिह्न मिला। ललिता, विशाखा, चित्रा, इन्दुलेखा, चम्पकलता, रङ्गदेवी, तुङ्गविद्या एवं सुदेवीके फूलोंपर क्रमशः ५, ६, ८, ४, ९, २, १०, १ के चिह्न थे। अतः यह निर्णय हो गया कि सर्वप्रथम (१) सुदेवीको दाँव चुन लेनेका अधिकार है। इसके बाद क्रमशः (२) रङ्गदेवी, (३) राधारानी, (४) इन्दुलेखा, (५) ललिता, (६) विशाखा, (७) श्यामसुन्दर, (८) चित्रा, (९) चम्पकलता एवं (१०) तुङ्गविद्या दाँव चुनेंगी।

श्यामसुन्दर कहते हैं—हाँ, सुदेवी ! तू कौन-सा चुनती है ?

सुदेवी मुस्कुराकर ललिताकी ओर देखती हैं। फिर सोचकर कहती हैं—मैं तीन नम्बरके कोष्ठको अपना दाँव स्वीकार कर रही हूँ।

अब रङ्गदेवीकी बारी आती है। वे छः नम्बरका कोष्ठ स्वीकार करती हैं।

रानी कुछ सोचकर कहती हैं—मैं नवम कोष्ठ ले रही हूँ।

इसके बाद इन्दुलेखा आठवाँ, ललिता दूसरा, विशाखा चौदहवाँ कोष्ठ ले लेती हैं।

अब श्यामसुन्दरकी बारी आती है। श्यामसुन्दर एक तीक्ष्ण दृष्टि सभी कोष्ठोंपर डालकर धीरेसे कहते हैं—मैं बारहवाँ कोष्ठ स्वीकार करता हूँ।

श्यामसुन्दरके बाद चित्रा ग्यारहवाँ कोष्ठ, चम्पकलता चौथा एवं तुङ्गविद्या पाँचवाँ कोष्ठ स्वीकार कर लेती हैं।

अब वृन्दा बहुत सुन्दर नीले मखमलकी बनी हुई एक छोटी पोटली अपनी कञ्चुकीसे निकालती हैं और उस पोटलीको खोलती हैं। पोटलीमें अत्यन्त सुन्दर किसी पीले रंगकी तैजस् धातुकी बनी हुई सोलह कौड़ियाँ हैं। कौड़ियाँ इतनी सुन्दर हैं एवं इतनी चिकनी हैं कि देखते ही चकित हो जाना पड़ता है। प्रत्येक कौड़ीपर गलबाँही डाले प्रिया-प्रियतमकी अतिशय सुन्दर छवि अङ्कित है। छवि इतनी कारीगरीसे बनायी हुई है कि बिलकुल सजीव-सी प्रतीत हो रही है। कौड़ियोंपर प्रिया-प्रियतमकी छवि देखकर सबका मन खिल उठता है।

अब वृन्दादेवी खेल प्रारम्भ होनेकी आज्ञा देती हैं। वृन्दादेवी कहती हैं—आजके खेलमें यह स्थिर कर रही हूँ कि

(१) जिस-जिसने जो दाँव चुन लिया है, उसे अपनी बारी आनेपर १६ कौड़ियोंको उछालकर, दाँवकी जो संख्या है, उतनी कौड़ियाँ चित्त गिरानेकी चेष्टा करनी चाहिये। यदि उतनी चित्त नहीं गिरीं तो वह दाँव

हारी हुई समझी जायेगी तथा उस संख्याके दाँव-कोष्ठपर जिस अङ्गका नाम अङ्कित है, उसपर, सखी हारेगी तो सखीके उस अङ्गपर श्यामसुन्दरका एवं श्यामसुन्दर हारेंगे तो श्यामसुन्दरके उस अङ्गपर सखीका अधिकार समझा जायेगा।

(२) यदि उतनी कौड़ियाँ उसने चित्त गिरा दीं तो दाँवकी जीत समझी जायेंगी तथा उस कोष्ठपर जिस श्रीअङ्गका नाम अङ्कित है, उस अङ्गपर (यदि सखी जीतेगी तो श्यामसुन्दरके उस अङ्गपर सखीका और श्यामसुन्दर जीतेंगे तो सखीके उस अङ्गपर श्यामसुन्दरका) अधिकार समझा जायेगा।

(३) प्रत्येक सखी एवं श्यामसुन्दरका दाँव अलग-अलग समझा जायेगा, अर्थात् एक सखी एवं श्यामसुन्दर, फिर एक सखी एवं श्यामसुन्दर, इस प्रकार दो-दोका दाँव रहेगा।

(४) प्रत्येक हारी हुई सखीके बाद श्यामसुन्दरको दाँव फेंकनेका अधिकार रहेगा।

(५) यदि किसीने सोलहों कौड़ियाँ चित्त गिरायीं तो उसके दाँवकी जीत तो हो ही गयी, साथ ही कोष्ठ-संख्या एकमें जो अङ्ग है, प्रतिद्वन्द्वीके उस अङ्गपर भी उसका अधिकार हो जायेगा तथा तुरंत ही पुनः दाँव फेंकनेका (कौड़ियाँ उछालनेका) भी अधिकार होगा।

(६) लगातार कई बार सोलह कौड़ियाँ चित्त गिरानेवालेका यथायोग्य अधिकार प्रतिद्वन्द्वीके किन-किन अङ्गोंपर (अर्थात् कोष्ठ-संख्या एक-दो-तीन आदिमें निर्दिष्ट अङ्गोंपर किस क्रमसे) होगा, यह मैं उसी समय घोषित करूँगी।

अब खेल प्रारम्भ होता है। सर्वप्रथम सुदेवी कौड़ियोंको उछालती हैं। सुदेवीका दाँव तीन संख्याका था, पर कौड़ियाँ दो चित्त गिरीं एवं चौदह पट। श्यामसुन्दर खिलखिलाकर हँस पड़ते हैं। वृन्दा कहती है— यह पहला दाँव था, पर सुदेवी हार गयी हैं। हाँ, पहला दाँव होनेके कारण मैं निर्णय-कर्त्रीके विशेष अधिकारसे यह सुविधा सुदेवीको दे रही

हूँ कि श्यामसुन्दर भी अब इस बार दाँव फेंकते समय यदि हार गये तो सुदेवीको हार भी रह समझी जायेगी; पर कहीं जीत गये तो सुदेवीकी हार तो कायम ही रही, साथ ही कोष्ठ-संख्या एकपर जो अङ्क है, उसपर भी बिना दूसरी बार दाँव जीते ही श्यामसुन्दरका अधिकार समझा जायेगा। क्यों सुदेवी! स्वीकार है या नहीं?

वृन्दाकी बात सुनकर सुदेवी विचारमें पड़ जाती हैं। यद्यपि हृदय तो, हार हो या जीत हो, दोनों अवस्थाओंमें ही प्रेमसे थिरक-थिरककर नाच रहा है, पर बाहर गम्भीर-सी मुद्रामें वे कहती हैं--ललिते! क्या करूँ?

ललिता कहती हैं—तू मान ले, देखा जायेगा।

सुदेवी हाँमी भर लेती हैं। अब श्यामसुन्दर कौड़ियाँ उछालते हैं तथा इस चतुराईसे उछालते हैं कि सोलहों कौड़ियाँ चित्त गिरती हैं। यह देखकर श्यामसुन्दर तो प्रसन्नतासे भर उठते हैं। सुदेवी कुछ शर्मा जाती हैं। श्यामसुन्दर कहते हैं—वृन्दे! पहलेसे स्पष्ट घोषणा करती चली जा, नहीं तो क्या पता, ये सब पीछे-से बेईमानी करेंगी।

वृन्दा प्यारमें भरकर कुछ देर सोचकर कहती हैं—श्यामसुन्दरका सुदेवीके बायें कपोलपर, बायें नेत्रपर, बायें हाथपर एवं दाहिने नेत्रपर भी अधिकार हो गया तथा नियमके अनुसार श्यामसुन्दरको फिरसे दाँव फेंकनेका अधिकार है।

वृन्दाकी बात सुनकर श्यामसुन्दर फिर दाँव फेंकते हैं तथा इस बार तेरह कौड़ियाँ चित्त गिरती हैं। श्यामसुन्दर कुछ लजा-से जाते हैं। सुदेवी प्रसन्न हो जाती हैं। वृन्दा कहती हैं—इस बार दाँव श्यामसुन्दर हार गये हैं, इसलिये श्यामसुन्दरके बायें हाथपर सुदेवीका अधिकार हो गया। इसके बाद रङ्गदेवी दाँव फेंकेंगी।

वृन्दाकी बात सुनकर रङ्गदेवी कौड़ियाँ उछालती हैं तथा छः कौड़ियाँ चित्त गिरती हैं। वृन्दा कहती हैं--रङ्गदेवी दाँव जीत गयी हैं, इसलिये श्यामसुन्दरके ललाटपर रङ्गदेवीका अधिकार हो गया है। अब मेरी प्यारी रानी दाँव फेंकेंगी।

अब रानीकी बारी आते ही श्यामसुन्दर एवं सभी सखियाँ-मञ्जरियोंका मन उत्कण्ठासे भर जाता है। रानी अतिशय उत्कण्ठासे कौड़ियोंको हाथमें ले लेती हैं। प्यारे श्यामसुन्दरके मुखारविन्दकी ओर ताकती हुई कौड़ियाँ उछाल देती हैं। इस बार ८ कौड़ियाँ चित्त तथा शेष ८ कौड़ियोंमें एक कौड़ी दूसरी दो कौड़ियोंपर चढ़ी हुई आधी चित्त गिरी। ललिता तुरंत बोल उठती हैं—यह आधी कौड़ी भी पूरी समझी जायेगी, इसलिये मेरी प्यारी सखीकी ही जीत हुई है।

श्यामसुन्दर कहते हैं—वाह! क्या मनमानी कहनेसे बात बन जायेगी? कौड़ियाँ ८ चित्त गिरी हैं, तुम्हारी सखी हार गयी है।

श्यामसुन्दर एवं अन्य सखियोंमें बात होने लगती है। सखियाँ कहती हैं—नहीं, मेरी प्यारी राधाकी जीत हुई है।

श्यामसुन्दर रानीसे कहते हैं—नहीं, तू हार गयी है।

वृन्दापर निर्णयका भार था ही। अतः सब सखियाँ एवं श्यामसुन्दर वृन्दाकी ओर देखने लगते हैं। वृन्दा कुछ सोचकर कहती हैं—जीत तो रानीकी हुई प्रतीत होती है, पर प्यारे श्यामसुन्दरका संदेह मिटानेके लिये मैं यह आज्ञा दे रही हूँ कि रानी उन तीनों कौड़ियोंको फिरसे उछाल दें। यदि तीनोंमेंसे दो कौड़ियाँ रानी चित्त गिरा सकीं तो उनकी जीत समझी जायेगी। यदि तीनों चित्त गिरेंगी तो बिना दूसरा दाँव फेंके रानीका श्यामसुन्दरके दाहिने हाथपर भी अधिकार हो जायेगा; पर कहीं एक चित्त गिरी तो किसीको हार-जीत नहीं मानी जाकर रानीको फिरसे दाँव फेंकना पड़ेगा। क्यों श्यामसुन्दर, मंजूर है?

श्यामसुन्दर कुछ मुस्कुराते हुए श्रीप्रियाकी ओर देखकर धीरेसे कहते हैं—ठीक है, यही सही।

रानी कौड़ियाँ उछालती हैं। तीनों कौड़ियाँ चित्त गिरती हैं। सखियोंमें हँसीका प्रवाह बह जाता है। श्यामसुन्दर भी हँसने लगते हैं। वृन्दा भी कहती है—श्यामसुन्दरके दोनों हाथोंपर रानीका अधिकार हो गया।

अब क्रमशः सखियाँ दाँव फेंकती हैं। इन्दुलेखाके द्वारा दाँव फेंके जानेपर दस कौड़ियाँ चित्त गिरती हैं। वृन्दा कहती है—इन्दुलेखा दाँव हार गयी, इसलिये इन्दुलेखाके ओष्ठपर श्यामसुन्दरका अधिकार हो गया। श्यामसुन्दर! तुम दाँव फेंको।

श्यामसुन्दर दाँव फेंकते हैं। बारह कौड़ियाँ चित्त गिरती हैं। वृन्दा कहती है—इन्दुलेखाके बायें हाथपर श्यामसुन्दरका अधिकार।

अब ललिताकी बारी आती है। इस बार सभी कौड़ियाँ उठाकर श्यामसुन्दर ललिताके हाथमें दे देते हैं। ललिता हँसती हुई कौड़ियोंको पकड़ लेती है तथा कहती है—तुम्हारी स्पर्शकी हुई कौड़ी है। पता नहीं, तुमने जादू-टोना किया होगा। देवी कात्यायिनी मेरी सहायता करें, रक्षा करें।

देवीका स्मरण करके ललिता कौड़ियाँ उछाल देती है। सोलहों कौड़ियाँ चित्त गिरती हैं। सभी हँसने लगती हैं। कौड़ियाँ उठाकर पुनः ललिता उछाल देती है। इस बार भी सोलहों कौड़ियाँ चित्त गिरती हैं। सखियोंमें हँसीका मानो तूफान-सा उठने लगा। रानी प्यारमें भरकर ललिताको अपने दाहिने हाथसे खींचकर शरीरसे सटा लेती हैं। ललिता पुनः कौड़ियोंको उछालती है। इस बार तीन चित्त गिरती हैं। श्यामसुन्दर हँस पड़ते हैं। वृन्दा कहती है—दो दाँवके अनुसार श्यामसुन्दरके दोनों नेत्रोंपर, दोनों कपोलोंपर ललिताका अधिकार हुआ। तीसरा दाँव ललिता हार गयी; इसलिये ललिताके अधरपर श्यामसुन्दरका अधिकार है।

ललिता बहुत शीघ्रतासे कहती है—वाह वृन्दे! वाह, तुम्हें नियम भी याद नहीं है। मेरे स्वर्णका दाँव तो मेरा दाहिना नेत्र है।

वृन्दा कहती है—ठीक! ठीक!! भूल गयी, अधरके बदले तुम्हारे दाहिने नेत्रपर श्यामसुन्दरका अधिकार रहा।

वृन्दाकी बात सुनकर सभी हँसने लगती हैं। अब पुनः श्यामसुन्दर कौड़ियाँ उछालते हैं। बारह कौड़ियाँ चित्त गिरती हैं। वृन्दा कहती है—ललिताके बायें हाथपर श्यामसुन्दरका अधिकार।

अब विशाखा दाँव फेंकती हैं। पन्द्रह कौड़ियाँ चित्त गिरती हैं। वृन्दा कहती हैं—विशाखाके बायें चरणपर श्यामसुन्दरका अधिकार।

श्यामसुन्दर पुनः कौड़ियाँ फेंकते हैं। चौदह कौड़ियाँ चित्त गिरती हैं। वृन्दा घोषणा करती हैं—श्यामसुन्दरके बायें हाथपर विशाखा का अधिकार!

चित्राका दाँव आता है। इस बार ठीक ग्यारह कौड़ियाँ चित्त गिरती हैं; पर श्यामसुन्दर जल्दीसे गिननेका बहाना करके एक कौड़ी और भी चित्त कर देते हैं तथा कहते हैं—ना, बारह कौड़ियाँ चित्त गिरी हैं, यह तो दाँव हार गयी!

ठीक इसी समय वृन्दाकी एक दासी वृन्दाके कानमें कुछ धीरेसे कहने लग गयी थी, इसमें वृन्दाका ध्यान उधर बँट गया। श्यामसुन्दरकी इस चतुराईको देख नहीं सकीं। अब तो प्रेमका कलह होने लग गया। ललिता-चित्रा आदि कहतीं—वाह! तुमने एक कौड़ी और चित्त कर दी है, दाँव चित्राने जीता है।

श्यामसुन्दर कहते हैं—वाह, जब मैंने सबसे बेईमानी नहीं की तो चित्रासे हमारा कोई बैर है कि बेईमानी करूँगा?

वृन्दा कुछ शर्मा-सी गयीं; क्योंकि भूल उनकी थी। उन्होंने ठीकसे देखा नहीं। दूसरी बातमें लग गयीं। वृन्दाने कहा—दूसरी बार दाँव फेंको।

इस प्रस्तावको अस्वीकार करते हुए चित्रा कहने लगीं—मैं अपना जीता हुआ दाँव छोड़कर जोखिम क्यों उठाऊँ?

श्यामसुन्दर कहते हैं—यह अवश्य ही हार गयी।

वृन्दा प्रार्थनाकी मुद्रामें रानीकी ओर देखती हुई कहती हैं—मेरी रानी, किसी प्रकार चित्रा मान ले। यह मेरी भूल थी कि मैं ठीकसे नहीं देख सकी।

रानी विचारने लगती हैं तथा कहती हैं—अच्छा, देख चित्रे! वृन्दाकी भूलके कारण यह गड़बड़ी हो गयी है, इसलिये फिरसे दाँव लगा। यदि तू जीत गयी तो फिर तो कोई प्रश्न ही नहीं है, पर यदि हार

गयी तो मैं वह दाँव ले लूँगी, (अर्थात् तुम्हें कुछ नहीं कहकर श्यामसुन्दर वह दाँव मुझसे वसूल करेंगे) तथा इसके पश्चात् जब श्यामसुन्दर कौड़ियाँ उछालेंगे तो उन्हें इस बार ग्यारहवीं संख्याका दाँव लगाना पड़ेगा। यदि श्यामसुन्दर हार गये, तब तो तुम्हारा दाँव आ ही जायेगा, पर कहीं जीत गये तो उतनी जोखिम फिर तू उठा ले। और तो क्या हो सकता है?

रानीकी बात सुनकर सभी एक स्वरसे सम्मति दे देती हैं। चित्रा मुस्कुराती हुई कौड़ियाँ पुनः उछालती हैं; पर इस बार दस कौड़ियाँ चित्त आती हैं। श्यामसुन्दर हँस पड़ते हैं। वृन्दा भी कुछ मुस्कुराकर कहती है—क्या बताऊँ?

श्यामसुन्दर हँसते हुए कौड़ियाँ उठा लेते हैं तथा कहते हैं—अब देख, तेरा एक-एक अङ्ग जीत लेता हूँ। वृन्दे, तू अभीसे मेरी जीतकी साफ-साफ घोषणा भले कर दे।

श्यामसुन्दर कौड़ियाँ उछालते हैं। सोलहों कौड़ियाँ चित्त गिरती हैं। फिर उछालते हैं। फिर सोलहों चित्त गिरती हैं। फिर उछालते हैं, फिर सोलहों चित्त गिरती हैं। इसके बाद तीन बार और उछालते हैं और तीनों बार ही सोलहों चित्त गिरती हैं। चित्रा तो लजा-सी जाती हैं। रानी इस बार कौड़ियोंको श्यामसुन्दरके हाथसे हँसती हुई छीन लेती हैं। श्यामसुन्दर हँसते हुए कहते हैं—वाह, वाह! अभी मेरा दाँव है।

श्यामसुन्दर कौड़ियोंके लिये छीना-झपटी करते हैं। रानी कौड़ियोंको दोनों मुट्ठियोंमें कसकर पकड़ लेती हैं। श्यामसुन्दर कौड़ी लेना चाहते हैं। रानी छोड़ना नहीं चाहतीं। श्यामसुन्दर वृन्दासे कहते हैं—देख वृन्दे! तू चुपचाप बैठी रहेगी? क्यों?

वृन्दा कहती हैं—रानी! दाँव श्यामसुन्दरका है, कौड़ियाँ उन्हें दे दो।

ललिता कहती हैं—तुमने ही तो सब गड़बड़ मचायी है। अब श्यामसुन्दरका पक्ष करने चली है।

वृन्दा हँसने लगती हैं। रानी कौड़ियाँ पकड़े हुए उठ पड़ती हैं। श्यामसुन्दर भी चटपट उठ पड़ते हैं। श्यामसुन्दर एक चतुराई कर बैठते

है। वे रानीका अञ्चल पकड़ लेते हैं। अञ्चल पकड़ते ही कौड़ियोंको छोड़कर रानी उसे सँभालने लग जाती हैं। कौड़ियाँ झर-झर करती हुई जमीनपर गिर पड़ती हैं। श्यामसुन्दर हँसते हुए बैठ जाते हैं, कौड़ियाँ उठा लेते हैं। रानी भी हँसती हुई पुनः आसनपर पूर्ववत् बैठ जाती हैं। श्यामसुन्दर कौड़ियाँ उछालते हैं, पर इस बार पन्द्रह कौड़ियाँ चित्त गिरती हैं। वृन्दा कुछ क्षण कोष्ठको देखकर तथा अँगुलीपर दाँव गिनकर कहती है—चित्राके दाँवको रानीने लिया था। चित्रा दाँव हारी, इसलिये रानीके हृदयपर श्यामसुन्दरका अधिकार। इसके बाद श्यामसुन्दरने लगातार छः दाँव जीते हैं, इसलिये चित्राके हृदय, दोनों नेत्र, दोनों कपोल, अधर, लिलार, ठोढ़ी, ओष्ठ, दोनों हाथ एवं नासिकापर श्यामसुन्दरका अधिकार। अन्तिम दाँव श्यामसुन्दर हार गये, इसलिये श्यामसुन्दरके हृदयपर चित्राका अधिकार हुआ।

इस समय सभी हँस रहे हैं। अब चम्पकलता कौड़ियाँ उछालती हैं। चार कौड़ियाँ चित्त गिरती हैं। वृन्दा कहती है—श्यामसुन्दरके दाहिने कपोलपर चम्पकलताका अधिकार!

इसके बाद तुङ्गविद्या कौड़ियाँ उछालती हैं; पर चार कौड़ियाँ इस बार भी चित्त गिरती हैं। वृन्दा कहती है—तुङ्गविद्याके अधरपर श्यामसुन्दरका अधिकार।

अब सबसे अन्तमें पुनः श्यामसुन्दर कौड़ियाँ उठाते हैं; पर इस बार तेरह कौड़ियाँ चित्त गिरती हैं। वृन्दा कहती है—श्यामसुन्दरके बायें हाथपर तुङ्गविद्याका अधिकार!

वृन्दाके यह कहते ही चित्रा कोष्ठवाले कपड़ेको उलट देती हैं तथा उठकर भागने लगती हैं। और-और सखियाँ भी चटपट उठने लगती हैं। श्यामसुन्दर पहले दौड़कर चित्राको पकड़ लेते हैं। चित्रा हँसने लगती है। श्यामसुन्दर चित्राको लाकर वहीं पुनः बैठा देते हैं।

इसी समय उड़ता हुआ एक तोता निकुञ्जमें प्रवेश करता है तथा दरवाजेकी एक डालीपर बैठकर आँखोंको कोयोंमें घुमाकर कहता है—जय हो प्रिया-प्रियतमकी! आज्ञा हो तो कुछ निवेदन करूँ।

तोतेकी बात सुनकर शीघ्रतासे वृन्दा कहती है—हाँ, हाँ, जल्दीसे बोल !

तोता कहता है—मेरे प्यारे श्यामसुन्दर ! मेरी प्यारी रानी !! मैं वृन्दादेवीकी आज्ञासे मोहन घाटपर स्थित कदम्बके पेड़पर बैठा हुआ पहरा दे रहा था। अभी कुछ क्षण पहले तुम्हारे (राधारानीके) महलसे एक सुन्दर ब्राह्मणकुमार एवं एक वृद्धा स्त्री निकली । दोनों आपसमें बातें कर रहे थे। वृद्धा कहती थी कि ब्राह्मणकुमार ! मुझे पूर्ण आशा है कि आप मेरी प्रार्थना अवश्य-अवश्य मान लेंगे। जिस-किसी उपायसे भी आप मुझपर कृपा करके मेरी लालसा अवश्य पूर्ण करेंगे। ब्राह्मण-कुमार कहता था कि मैंने सारी परिस्थिति तुमसे बतला ही दी है। पूरी चेष्टा करूँगा, पर सफलता तो विधाताके हाथमें है। आज-आजका तो मैं वचन देता हूँ, उसे अवश्य भेज दूँगा। मैं भी आनेकी चेष्टा करूँगा तथा उसे राजी करनेकी भी हार्दिक चेष्टा तुम्हारे सामने भी करूँगा। आगे हरि-इच्छा ! फिर ब्राह्मणकुमार एवं वह वृद्धा, दोनों दक्षिणकी तरफ बढ़ने लगे। प्रथम राजपथपर आते ही वह ब्राह्मणकुमार तो पूर्वकी ओर चला गया तथा वृद्धाने वह पगडंडी पकड़ी, जो गिरिवर-स्रोतकी ओर जाती है। वृन्दादेवीका यह आदेश था कि रानीके महलसे किसी वृद्धाको इस तरफ आती देखकर तुरंत उसी क्षण मुझे खबर दे देना। इसलिये मैं पूरी शक्ति लगाकर वहाँसे उड़ा और यहाँ आकर आपको यह सूचना दे रहा हूँ। मैं इतनी तेजीसे उड़ा हूँ कि वह वृद्धा अभीतक तीन-सौ गज भी आगे नहीं बढ़ सकी होगी।

तोतेकी बात सुनकर रानीका मुख बिल्कुल उदास हो जाता है। श्यामसुन्दर भी गम्भीर बन जाते हैं; पर रानीकी दशा देखकर अपनी गम्भीरता छिपाते हुए उठ पड़ते हैं। सखियाँ भी सब गम्भीर हो जाती हैं। प्यारे श्यामसुन्दर रानीको अपने हृदयसे लगा लेते हैं। रानी हृदयसे लगकर गम्भीर श्वास लेने लगती हैं। वृन्दा ललितासे कहती है—समय कम है, शीघ्रता करनी चाहिये।"

ललिता गम्भीर मुद्रामें श्यामसुन्दरको कुछ इशारा करती हैं तथा रानीको पकड़ लेती हैं। अब धीरे-धीरे प्रिया-प्रियतम निकुञ्जके पूर्वी

फाटकसे निकलकर रविश (छोटी सड़क)पर पूर्वकी ओर चलने लगते हैं। श्यामसुन्दर श्रीप्रियाको सँभाले हुए चल रहे हैं। प्यारे श्यामसुन्दरसे अब कुछ देरके लिये अलग होना पड़ेगा, इस विचारसे प्रियाका प्राण छटपटाने लगा है। श्यामसुन्दरके प्राण भी छटपटा रहे हैं; पर वे अपनी व्याकुलता छिपाये हुए चल रहे हैं कि जिससे मेरी प्रिया कहीं मुझे व्याकुल देखकर और भी व्याकुल न हो जाये। लगातार कुछ देर पूर्वकी ओर चलकर फिर वे दक्षिणकी ओर मुड़ पड़ते हैं तथा उसी दिशामें कुछ देर चलते रहते हैं। चलते-चलते ललिताकुञ्जकी दक्षिणी सीमाकी चहारदीवारी आ जाती है। वहाँ एक छोटा फाटक है, उससे निकलकर फिर पूर्वकी ओर कुछ दूर चलते हैं। अब ललिताकुञ्ज एवं विशाखाकुञ्जके बीचसे उत्तर-दक्षिणकी ओर जो सड़क जाती है, उसपर आ पहुँचते हैं। श्यामसुन्दर पुनः श्रीप्रियाको हृदयसे लगा लेते हैं तथा कुछ क्षण वे उनके मुखारविन्दकी ओर देखते हुए गम्भीर मुद्रामें प्रियासे कुछ दूर अलग हटकर खड़े हो जाते हैं। फिर उत्तरकी ओर चलने लगते हैं। रानी एवं सखियाँ चुपचाप खड़ी रहकर निर्निमेष नयनोंसे उधर ही देखती रहती हैं। श्यामसुन्दर बार-बार गर्दन घुमा-घुमाकर रानीकी ओर प्रेमभरी दृष्टिसे देखते जा रहे हैं। करीब एक फर्लांग उत्तरकी तरफ जाकर एक फाटकसे विशाखाकी कुञ्जमें प्रवेश करके आँखोंसे ओझल हो जाते हैं। रानी कुछ क्षण एकटक उसी दिशाकी ओर देखती रहती हैं। फिर ललिताके कंधेको पकड़कर दक्षिणकी ओर सूर्य-मन्दिरमें जानेके उद्देश्यसे चल पड़ती हैं।

॥ विजयेतां श्रीप्रिय:प्रियतमौ ॥

सूर्य पूजन लीला

अतिशय रमणीय सुन्दर उद्यानमें पूर्वाभिमुख सूर्य-मन्दिर स्थित है। मन्दिर सुन्दर संगमरमर पत्थरोंका बना हुआ है। मन्दिरको बाहरी दालानकी सीढ़ियोंपर सखी-मण्डली-सहित राधारानी विराजमान हैं। रानीका मुख पूर्व एवं दक्षिणके कोनेकी ओर है। वे दालानके एक खंभेसे पीठ टेके एवं सीढ़ियोंपर पैर लटकाये बैठी हैं। रानीकी दाहिनी तरफ चित्रा खड़ी हैं। अन्यान्य सखियाँ रानीको घेरे-सी रहकर कुछ सीढ़ियोंपर एवं कुछ दालानमें बैठी हैं। सीढ़ियोंके बिल्कुल नीचे संगमरमरके बेंचके आकारका आसन है। उसीपर ललिता उत्तरकी ओर मुख किये तथा पैर लटकाये बैठी हैं।

उद्यानमें तमाल, मौलिश्री, आम्र, कदम्ब आदिके हरे-हरे, बड़े-बड़े वृक्ष जगह-जगह लगे हुए हैं। स्थान-स्थानपर क्यारियोंमें नाना प्रकारके अतिशय सुन्दर एवं सुगन्धित रंग-बिरंगे पुष्प खिल रहे हैं, जिनपर भ्रमरों एवं मधुमक्खियोंकी टोली मँडरा रही है। उद्यान पक्षियोंके सुन्दर कलरवसे गुञ्जित हो रहा है। एक पक्षी अतिशय सुरीले कण्ठसे अविराम बोल रहा है। उसकी ओर ध्यान देनेपर ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो पक्षी प्यारभरे हृदयसे अलाप लेकर पुकार रहा है—गोपीनाथ! गोपीनाथ!! गोपीनाथ!!!

मन्दिरके सामनेसे पूर्वकी ओर सीधे एक चौड़ी रविश (छोटी सड़क) उद्यानके पूर्वी फाटकतक गयी हुई है तथा उससे कुछ कम चौड़ी रविश दक्षिणी एवं उत्तरी फाटकतक भी बनी हुई है। अतिशय सुन्दर मल्लिका एवं कुन्द-पुष्पोंकी लम्बी क्यारियाँ रविशके किनारे-किनारे लगी हुई हैं। मन्दिरके सामने सूर्यमुखी पुष्पोंकी एक-एक क्यारी सड़कके दोनों किनारोंपर शोभा पा रही है। सूर्यमुखी वृक्षोंकी कद तो छोटी है, पर उनमें इतने सुन्दर-सुन्दर एवं इतने बड़े-बड़े फूल लग रहे हैं कि देखनेसे

प्रतीत होता है मानो फूलके छोटे-छोटे थाल वृक्षोंपर सजा दिये गये हों।

रानीके मुखारविन्दपर गम्भीरता छायी हुई है। छोटे-छोटे प्रस्वेदकण कपोलोंपर झलमल करते हुए दीख पड़ रहे हैं। रानीके चरणोंके पास बैठी हुई विलासमञ्जरी पुष्पोंके बने हुए पंखेसे धीरे-धीरे हवा कर रही है।

उधर उद्यानके पूर्वी फाटकपर रूपमञ्जरी खड़ी है। रूपमञ्जरीके बगलमें एक और मञ्जरी खड़ी है। रूपमञ्जरी उसीके कंधेपर हाथ रखे हुए खड़ी है तथा उत्तर-दक्षिणकी ओर जो पगडंडी वनमें जाती है, उसीकी ओर कभी उत्तरकी तरफ, कभी दक्षिणकी तरफ बार-बार देख रही है। वह इस प्रतीक्षामें खड़ी है कि इस रास्तेसे ऋषियोंके शिष्य आते-जाते रहते हैं। कोई मिल जाये तो उसे प्रार्थना करके ले जाऊँ, जिससे रानीकी सूर्य-पूजाका कार्य सम्पन्न हो सके। यदि कोई ब्राह्मणकुमार नहीं मिला, फिर तो बाध्य होकर अपने-आप पूजा करनी ही पड़ेगी, पर मिल जाये तो अच्छी बात है। साथ ही ब्राह्मणकुमारकी बाट देखनेमें यह भी एक उद्देश्य है कि इस प्रकार देरी हो जायेगी और दिनका अधिकांश समय वनमें बीत जायेगा; क्योंकि वनमें रानीको सान्त्वना देनेमें सखियोंको ज्यादा सुविधा रहती है।

इसी समय उत्तरकी ओरसे एक ऋषिकुमार आता हुआ दिखायी पड़ता है। रूपमञ्जरी उसी ओर देखती रहती है। ऋषिकुमार निकट आ जाता है। वह देखनेमें बड़ा ही सुन्दर है। रंग साँवला है। काले-काले सुन्दर केश कंधोंपर पीछे लटक रहे हैं। आँखोंसे इतनी सरलता टपक रही है मानो वह ऋषिकुमार पाँच वर्षका भोला-भाला शिशु हो। ब्रह्मतेजसे मुख दप-दप कर रहा है। उम्र पंद्रह साल प्रतीत होती है। दोनों चरण इतने सुकोमल हैं मानो गुलाबकी पंखुड़ी हो।

रूपमञ्जरी उसे देखकर एकबार तो स्तब्ध हो जाती है, पर फिर कुछ सँभलकर उसकी ओर देखने लगती है। अब ऋषिकुमार और निकट आ जाता है। निकट आकर रुक जाता है एवं मधुरतम कण्ठसे पूछता है—देवि! क्या तुम बतला सकती हो कि महर्षि शाण्डिल्यके आश्रमकी ओर कौन-सी पगडंडी जायेगी?

रूपमञ्जरीने ऐसा मधुर कण्ठ कभी सुना ही नहीं था। वह इस ध्वनिसे मंत्र-मुग्ध-सी हो गयी, बड़ी मुश्किलसे बोल सकी—क्यों, आप कौन हैं?

ऋषिकुमार—देवि! मैं महर्षि शाण्डिल्यका शिष्य हूँ। गुरुदेवने मुझे प्रातःकाल पुष्प लानेके लिये वनमें भेजा था। आज्ञा थी कि बेटा! सुन्दर-से-सुन्दर पीले रंगके पुष्प लाना। उत्तरकी तरफ वनमें आगे बढ़नेसे तुम्हें सुन्दर-से-सुन्दर पीले-पीले पुष्प मिलेंगे। मैं उनकी आज्ञासे चलकर वनमें बहुत दूर निकल गया। पुष्प तो मुझे मिल गये, पर राह भूल गया। घूम-फिरकर मैं यहीं चला आता हूँ। पता नहीं चलता, किस दिशामें जाऊँ, आश्रम किस ओर है, क्योंकि मुझे घूमते-घूमते दिग्भ्रम भी हो रहा है। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि सूर्य आज पश्चिमसे पूर्वकी ओर बढ़ रहे हैं। अबतक मैंने न तो कुछ खाया है न जल पी सका हूँ। पुष्पोंका दोना हाथमें लिये वनमें मारा-मारा फिर रहा हूँ।

ऋषिकुमारकी वाणीसे अमृत झर रहा है। रूपमञ्जरीके हृदयपर वे शब्द मानो अधिकार-से करते जा रहे हैं। रूपमञ्जरीके मनमें किसी अहैतुक अनिर्वचनीय सरसत्वका उदय होने लगता है। वह कहती है—ऋषिकुमार! आप महर्षि शाण्डिल्यके शिष्य हैं; पर मैंने आपको कभी नहीं देखा, यह कैसी बात है? महर्षि शाण्डिल्यके दर्शन तो प्रतिदिन हो जाते हैं। उनके आठ-दस शिष्योंको भी मैं बहुत अच्छी तरह पहचानती हूँ; पर आपको मैंने उनके साथ कभी नहीं देखा।

ऋषिकुमार—देवि! इसलिये ही तो मैं आज राह भूला हूँ। महर्षि मुझपर अत्यधिक स्नेह करते हैं, हृदयके समस्त प्यारको लेकर मानो दिन-रात मुझे अपने हृदयमें छिपाये रखना चाहते हों। इसीलिये मुझे कभी भी आश्रमके बाहर जानेकी आज्ञा नहीं मिली। महर्षिके आश्रमके चारों ओर एक सुन्दर रमणीय उद्यान है। बस,उस उद्यानकी प्रत्येक वस्तुको जानता हूँ, उसके अणु-अणुसे परिचित हूँ; पर बाहर कभी नहीं निकला। हाँ, यह उन्हींसे सुना है कि वे प्रतिदिन नन्दरायजीके घर जाया करते हैं। मैंने कई बार प्रार्थना भी की कि गुरुदेव! एक बार हमें भी साथ चलनेकी आज्ञा दो। पर वे कहते कि ना, ना, बेटा! मेरा यह उद्यान तुम्हारे बाहर

चले जानेपर बिल्कुल सूना हो जायेगा। पता नहीं, विधाताने मेरे किस पुण्यका फल दिया है कि तुम मेरे शिष्य बने हो! पर कल रातमें गुरुदेवको कोई स्वप्न हुआ, उसीके फलस्वरूप उन्होंने मुझे हृदयसे लगाकर प्रातःकाल पुष्प लानेकी आज्ञा दी। अब मैं तो रास्ता भूल गया हूँ और वे मेरी प्रतीक्षामें अत्यन्त व्याकुल हो रहे होंगे। अतः शीघ्र रास्ता बता दो। मैं तुम्हारा बहुत कृतज्ञ होऊँगा।

इसी समय ललिता वहाँ आ पहुँचती हैं। रूपमञ्जरीको देर होते देखकर वे रानीके पाससे फाटककी ओर चली आयी थीं। वहाँ रूपमञ्जरीको एक ऋषिकुमारसे बातें करते देखकर वे खड़ी होकर सुन रही थीं। रूपमञ्जरी तो बातोंमें इतनी संलग्न हो रही थी कि ललिताको नहीं देख सकी, पर ऋषिकुमारकी दृष्टि उनपर पड़ चुकी थी। अब जब ऋषिकुमारने अपनी बात समाप्त की तथा रूपमञ्जरीकी ओर पथ दिखलानेके उद्देश्यसे ताकने लगा तो ललिता सामने चली आयीं।

ललिता घुटने टेककर ऋषिकुमारको प्रणाम करती हैं तथा कहती हैं—ऋषिकुमार! मैं आपको प्रणाम कर रही हूँ। मैंने आपकी सारी बातें सुन ली हैं। मैं अपनी एक खास दासी आपके साथ कर दूँगी। वह आपको महर्षि शाण्डिल्यके आश्रमतक पहुँचा आयेगी; पर मैं आपको बिना कुछ खिलाये-पिलाये नहीं जाने दूँगी। आप रास्ता भूलकर आश्रमसे बहुत दूर आ गये हैं। महर्षिका आश्रम यहाँसे तीन कोससे भी अधिक दूर है। आपका मुख सूख गया है। आप किंचित् कलेवा करके जल पी लें तथा किंचित् विश्राम कर लें, फिर मैं सब व्यवस्था कर दूँगी।

ऋषिकुमार—देवि! आप तो असम्भव-सी बातें कर रही हैं। भला, गुरुदेवकी आज्ञाके बिना मैं अन्न-जल ग्रहण करूँ, यह कैसे हो सकता है?

ऋषिकुमारने इतनी दृढ़तासे यह बात कही कि ललिता बिल्कुल झेंप-सी गयीं; पर ऋषिकुमारके मुखपर कुछ इतना विचित्र आकर्षण है कि ललिताका मन बरबस उसकी ओर खिंचता जा रहा है। ललिता कुछ सोचने लगती हैं। वे सोचती हैं कि ओह! यह ऋषिकुमार सचमुच कितना दृढ़ है! पर आह! इसे बिना कुछ खिलाये-पिलाये जाने देनेकी बातसे तो मेरे प्राण छटपटा रहे हैं। फिर क्या करूँ? अच्छा! इसे

एक बार सखी राधाके पास ले चलूँ। वहाँ जैसा होगा, वैसा विचार कर लूँगी। यह सोचकर ललिता कहती है—अच्छी बात है, ऋषिकुमार! आपकी जैसी प्रसन्नता; पर वहाँ मन्दिरके पास मेरी सखियाँ हैं। कृपया आप वहाँ चल चलें। वहाँसे मैं सब व्यवस्था कर दूँगी। रास्ता उधरसे हो है।

ऋषिकुमार—पर देवि! विशेष विलम्ब नहीं हो, यह ध्यान रखना।

ललिता—बिल्कुल नहीं, शीघ्र-से-शीघ्र व्यवस्था कर दूँगी।

ललिता आगे-आगे चल पड़ती हैं, पीछे-पीछे ऋषिकुमार, रूपमञ्जरी एवं अन्य मञ्जरियाँ चल रही हैं। चलकर मन्दिरके पास जा पहुँचती हैं। ऋषिकुमारके सौन्दर्यको देखकर सभी सखियाँ उठ पड़ती हैं। यहाँतक कि रानी भी उसकी ओर देखने लग जाती हैं। इधरसे ऋषिकुमार आदि पहुँचे और तभी उद्यानके दक्षिणी फाटककी ओरसे एक वृद्धा आ पहुँचती है। वृद्धाको देखकर सभी सखियाँ एवं रानी शान्तिके साथ बड़े आदर एवं विनयकी मुद्रामें खड़ी हो जाती हैं। वृद्धाके शरीरपर उजले रंगकी बिना पाड़की साड़ी है। गलेमें तुलसीकी माला तथा दाहिने हाथमें एक लकड़ी है। उसके बाल प्रायः सफेद हो गये हैं, अवश्य ही मुखाकृतिपर केवल एक-दो झुर्रियाँ दीख पड़ रही हैं।

सीढ़ीके नीचे जिस आसनपर पहले ललिता बैठी थीं, उसीपर ऋषिकुमार बैठ जाता है। ऐसा प्रतीत होता है मानो वह बिल्कुल थक गया हो। वृद्धा आकर उसके बगलमें खड़ी हो जाती है; पर ऋषिकुमारकी दृष्टि सीधे उत्तरकी तरफ लगी हुई है, अतः वह नहीं देखता। वृद्धा सीढ़ियोंपर चढ़ती हुई ऊपर चली जाती है तथा धीरेसे ललिताको बुलाकर उनके कानमें कहती है—बेटी! यह ऋषिकुमार कौन है?

ललिता धीरेसे, अभी जो-जो बातें हुई थीं, सब वृद्धासे बतला देती हैं। वृद्धा आश्चर्यमें भरी सब सुन लेती है तथा ऋषिकुमारकी ओर देखती रहती है। फिर ललितासे कहती है—इनका नाम क्या है?

ललिता जवाब देती है—नाम तो नहीं पूछ पायी हूँ।

वृद्धा कहती है—पूछ तो सही !

ललिता बढ़कर ऋषिकुमारके पास चली जाती है तथा हाथ जोड़कर कहती है—ऋषिकुमार ! हम लोगोंकी माँ आपका नाम जानना चाहती है।

ऋषिकुमार बड़ी गम्भीरतासे कहता है—हमें लोग ब्रह्मचारी मन्मथमोहन कहते हैं।

यह सुनते ही वृद्धा अतिशय शीघ्रतासे सीढ़ियोंसे चटपट उतर पड़ती है तथा 'अहो भाग्य ! अहो भाग्य !!'—इस प्रकार चिल्लाती हुई ऋषिकुमारके चरणोंके पास जाकर गिर पड़ती है। फिर जल्दीसे ललितासे कहती है—बेटी ! ऋषिकुमारके चरणोंकी धूलि बटोर ले। मैं फिर पीछे सब बात तुम लोगोंको बता दूँगी। ओह ! धन्य हैं, धन्य हैं ! ऋषिकुमार ! विधाताने असीम कृपा की कि आपने अपने-आप दर्शन दे दिया।

वृद्धा चरणोंमें लिपट जानेके लिये आगे बढ़ती है, तभी ऋषिकुमार तुरंत उठकर कुछ पीछे हट जाता है तथा अतिशय सरलता एवं गम्भीरताके स्वरमें कहता है—माँ ! आप क्या कर रही हैं ! ब्रह्मचारीके लिये स्त्री-स्पर्श सर्वथा निषिद्ध है।

ऋषिकुमारके ये शब्द वृद्धाके हृदयमें जादूका-सा काम करते हैं। उसकी आँखोंसे आँसुओंकी धारा बहने लगती है। वृद्धा आँखें पोंछती हुई गद्गद कण्ठसे कहती है—तभी तो······तभी तो······कह रही हूँ कि आपका दर्शन बड़े भाग्यसे मुझे मिला है। अभी थोड़ी देर पहले आपके गुरुभाई मध्वानन्दजी ब्रह्मचारीसे मिलकर आपके विषयमें सब सुन चुकी हूँ।

ऋषिकुमार मध्वानन्दका नाम सुनते ही बड़े आश्चर्यकी मुद्रामें बोल उठता है—माँ ! मध्वानन्द तुम्हें कहाँ मिला ?

वृद्धा—आपके गुरुदेवने आपको खोज लानेके लिये उन्हें भेजा है। गुरुदेवने आज्ञा दी है कि जहाँ मन्मथमोहन मिले, वहीं पहले उसे कुछ खिला-पिला देना। वह भूखा-प्यासा होगा। उसे मेरी आज्ञा सुना देना कि तुरंत वह खा-पी ले, नहीं तो मैं बहुत दुःखी होऊँगा। इतना ही नहीं,

गुरुदेवने साथमें भगवत्प्रसाद एवं जल भी स्नेहवश भेजा है। मध्वानन्दजी थोड़ी देरमें स्वयं यहीं आ सकते हैं।

वृद्धाकी बात सुनकर ऋषिकुमार प्रसन्न हो जाता है एवं कहता है—माँ! उनकी तो हमपर अपार कृपा है ही। जो हो, अब तो हमें मध्वानन्दकी बाट देखनी पड़ेगी, नहीं तो वह मुझे ढूँढता हुआ भटकता रहेगा।

वृद्धा बड़ी उत्फुल्लताकी मुद्रामें कहती है—अवश्य, अवश्य, वे निश्चय ही आयेंगे। आपसे मिल गये होते तब तो शायद नहीं भी आते, पर जब अबतक वे आपसे नहीं मिले हैं तो वे अवश्य यहाँ आ ही रहे होंगे।

कुछ रुककर वृद्धा बड़ी विनयके साथ पुनः कहने लगती है—ऋषिकुमार! ब्रह्मचारी मध्वानन्दने हमपर बड़ी कृपा की है। उन्होंने मुझे आपकी बहुत-सी बातें बतायी हैं, इसीलिये आपके चरणोंमें कुछ निवेदन करना चाहती हूँ।

ऋषिकुमार सरल हँसी हँसकर कहता है—मध्वानन्द आधा पागल है। माँ! उसकी बातपर तुम विश्वास मत करना।

अब बड़े प्रेमसे वृद्धा एवं ऋषिकुमारमें बातें होने लगती हैं। वृद्धा भूमिका बाँधकर ऋषिकुमारको अपने घरमें होनेवाली द्वादशवर्षीय सूर्य-पूजामें आचार्य बननेके लिये आग्रह करना प्रारम्भ करती है। ऋषिकुमार सर्वथा असम्मति प्रकट करता है, पर वृद्धा तरह-तरहकी युक्ति रच-रचकर ऋषिकुमारको राजी करना चाहती है। ऋषिकुमार बड़ी कठिनतासे आज-आज पूजा करा देनेकी हाँमी भरता है। वृद्धा बार-बार प्रतीक्षा कर रही है कि मध्वानन्द ब्रह्मचारी आ जायें तो फिर मेरा काम बने। इसी समय एक सुन्दर बालक दक्षिणकी तरफसे आता है तथा वृद्धाको प्रणाम करके कहता है—माँ! आज हम लोगोंकी यमुना-पूजा प्रारम्भ होगी। एक मास लगातार पूजा होगी। इसीलिये मैं सीधे रायाणघाटसे आपके घर दौड़ा गया। वहीं सूचना मिली कि आप सूर्य-मन्दिरमें गयी हैं, इसलिये यहाँ आया हूँ। अब आज आपको खेत जाना हो तो तुरंत चली चलें। नौकासे पार उतार दूँगा तथा एक घड़ीमें ही खेतसे वापस भी

केलि कुञ्ज

विजयेता श्रीप्रियाप्रियतमौ

और आना होगा, क्योंकि तीन घड़ी दिन बाकी रहते ही नावका खेना आज बंद हो जायेगा।

उस बालककी बात सुनकर वृद्धा विचारमें पड़ जाती है। सोचती है कि खेत भी जाना आवश्यक है और इस ऋषिकुमारको भी जिस-किस प्रकारसे राजी करना है। मध्यानन्द ब्रह्मचारी आये नहीं, क्या करूँ? विचारते-विचारते वृद्धाका मुख कुछ उदास-सा हो जाता है। वृद्धाके मुखकीओर देखकर ऋषिकुमार अतिशय सरलताके स्वरमें कहता है—माँ! तुम्हारा मन चिन्तित हो गया है, ऐसा प्रतीत हो रहा है। अच्छा, कल एक दिन और आ जाऊँगा।

ऋषिकुमारकी बात सुनकर वृद्धा प्रसन्न हो जाती है। सोचती है कि कल तो मध्यानन्दसे मिलकर सब ठीक ही कर लूँगी। बस, काम हो गया। वृद्धा कुछ क्षण खड़ी रहकर ऋषिकुमारके चरणोंमें नमस्कार करती है तथा कहती है—ऋषिकुमार! आपने बड़ी कृपा की, पर कलके लिये आप वचन दे चुके हैं, इसे न भूलेंगे। मैं आवश्यक कामसे इस समय जा रही हूँ। आप कृपया आजकी पूजाका कार्य सम्पन्न करावें।

इसके बाद वृद्धा एक किनारे ललिताको बुलाती है तथा धीरे-धीरे कानमें समझाती है कि किसी प्रकार भी इसकी सेवामें त्रुटि न हो। पूजा यह जैसे-जैसे कराये, वैसे-वैसे करना तथा पंद्रह मुहरोंकी दक्षिणा देना। ललिताको समझा-बुझाकर वृद्धा पुनः ऋषिकुमारके चरणोंमें प्रणाम करती है और कहती है—देखें, आप कल आनेका वचन दे चुके हैं, इसी आश्वासनसे मैं आज आपको छोड़कर खेतपर चली जा रही हूँ; नहीं तो कदापि न जाती। आप यदि कल नहीं आयेंगे तो मुझे अपार दुःख होगा।

ऋषिकुमार हँसकर कहता है—कलके लिये वचन तो दे ही चुका, आप निश्चिन्त रहें।

वृद्धा शीघ्रतासे दक्षिणकी ओर चलती हुई वृक्षोंकी आड़में चली जाती है। वह बालक भी पीछे-पीछे चला जाता है। ऋषिकुमार उस बालककी ओर देखकर मुस्कुरा देता है। इधर ऋषिकुमार पूजा कराने चलता है। बड़े प्रेमसे रानी ऋषिकुमारको देखने लग जाती हैं। उनका

मन बरबस ऋषिकुमारकी ओर खिंचने लग जाता है। इतना ही नहीं, रह-रहकर रानीको ऐसा दीखने लगता है कि मानो ऋषिकुमारके स्थानपर प्रियतम श्यामसुन्दर खड़े हों। रानी उस क्षण काँप जाती हैं; पर सोचती हैं—यह तो दिन-रातकी ही बात हो गयी है। मुझे यों ही भ्रम हो जाया करता है कि प्यारे श्यामसुन्दर खड़े हैं।

रानी ऋषिकुमारके पैर धोने चलती हैं; पर ऋषिकुमार पीछे हट जाता है तथा कहता है—देवि! मैं स्त्रियोंका स्पर्श नहीं करता।

अब रानीको होश होता है। रानी हाथ जोड़ लेती हैं। ललिता हाथ जोड़कर कहती हैं—ऋषिकुमार! क्षमा करना। मेरी इस सखीको उन्मादका रोग है। यह अधिकांश समय होशमें नहीं रहती।

ऋषिकुमार मुस्कुराने लगता है। रूपमञ्जरी झारी जमीनपर रख देती है। ऋषिकुमार उसे उठाकर अपने हाथ-पैर धोता है तथा शीघ्रतासे बिना हाथ पोंछे ही मन्दिरके भीतर चल पड़ता है। उसे इतना शीघ्र जाते देखकर सभी चकित-सी हो जाती हैं; पर कोई कुछ नहीं कहतीं। रानीके पैरोंको एक मञ्जरी धो देती है तथा धोकर एवं कुल्ला करके रानी भी शीघ्र ही मन्दिरके भीतर चली जाती हैं।

सूर्य-मन्दिरके भीतर सुन्दर कोठरी-सी है, जिसमें दो गज ऊँची एक वेदी है। उसीपर भगवान् सूर्यकी अतिशय सुन्दर प्रतिमा है। प्रतिमा घोड़ेके रथपर बैठायी हुई है। रथ, घोड़े एवं प्रतिमा—तीनों ही किसी गुलाबी रंगके तैजस् धातुके बने हुए हैं। उनसे अतिशय चमक निकल रही है। प्रतिमाका मुख पूर्वकी ओर है। जिस वेदीपर प्रतिमा है, उसके दो-दो हाथ पश्चिम, उत्तर, दक्षिण एवं चार हाथ पूर्वका सारा स्थान सुन्दर संगमरमरके घेरेसे घेर दिया गया है। घेरेके भीतर जानेके लिये पूर्वकी ओर द्वार बना हुआ है। संगमरमरका घेरा तीन हाथ ऊँचा है। उसी घेरेके भीतर ऋषिकुमार खड़ा है। रानी घेरेके बाहर दक्षिण तरफ मुख करके खड़ी हैं। घेरेके बाहरका स्थान विविध पूजा-सामग्रीसे भरा हुआ-सा है।

अब पूजा आरम्भ होती है। रानी अपने हाथमें जल, अक्षत, सुपारी एवं लाल वर्णका पुष्प ले लेती हैं और ऋषिकुमारके हाथमें डाल देती हैं।

ऋषिकुमार संकल्प पाठ करता है। वह मुस्कुराता हुआ ऊटपटाँग ढंगसे संकल्प पाठ करता है तथा संकल्पके अन्तमें बड़े ढंगसे विनोदकी भाषामें यह उच्चारण करता है—श्रीराधायाः दासस्य कृष्णस्य सकलकामना-सिद्ध्यर्थं श्रीसूर्यदेवस्य पूजनमहं करिष्यामि। (श्रीराधाके दास कृष्णकी सभी कामनाओंकी पूर्तिके लिये मैं सूर्य-पूजन करूँगा।)

यह संकल्प-पाठ सुनते ही सभी आश्चर्यमें भरकर उस ऋषिकुमारकी ओर देखने लग जाती हैं। रानी एक तीक्ष्ण दृष्टिसे उस ऋषिकुमारको देखकर ललिताके कानमें धीरेसे कहती हैं—देख, मेरा सिर कुछ घूम-सा रहा है। पता नहीं, यह ऋषिकुमार कौन है? कहीं वे ही हों तो··· ।

कहते-कहते रानी रुक जाती हैं। ललिताको संदेह तो कुछ-कुछ हो रहा है कि कहीं श्यामसुन्दर तो नहीं हैं? पर ऋषिकुमारके मुखपर अत्यधिक सरलता है। साथ ही मुखाकृति देखकर यह किसीके लिये भी कल्पना करना सम्भव नहीं कि श्यामसुन्दर अपना ऐसा कृत्रिम मुख बना सकते हैं। इस कारणसे ललिताका संदेह शिथिल पड़ जाता है। ललिता धीरेसे रानीके कानमें कहती हैं—ऐसी मुखाकृति कृत्रिम हो, यह असम्भव-सा दीखता है।

रानी कुछ सोचती हैं। इसी समय चित्रा ललिताके कानमें कहती हैं—मैं ठीक कहती हूँ, ये श्यामसुन्दर हैं।

सखियोंमें कानाफूसी होते देखकर ऋषिकुमार अतिशय सरलतासे कहता है—देवि! विलम्ब हो रहा है, शीघ्र पूजाकी अन्यान्य सामग्री दो!

ऋषिकुमारकी यह बात सुनकर रानी अन्यान्य सामग्री हाथसे उठा-उठाकर घेरेके भीतर रखने लग जाती हैं। ऋषिकुमार मन्त्र पढ़-पढ़कर पूजा करवाता जा रहा है। इधर रानी विशाखा एवं अन्यान्य मञ्जरियोंकी सहायतासे सामान दे रही हैं और उधर चित्रा ललिताको मन्दिरके उत्तरी हिस्सेमें ले जाकर कहती हैं—देख! ये निश्चय ही श्यामसुन्दर हैं।

ललिता—पर मुखाकृति ऐसी कृत्रिम कैसे बन जायेगी तथा बोली बदल लेना कैसे सम्भव होगा?

चित्रा—बहिन ! मैं ठीक कहती हूँ कि ये श्यामसुन्दर इतनी चतुराईसे वेष एवं मुखाकृति बदल सकते हैं। इन्हें ऐसी कला मालूम है कि इन्हें कोई पहचान ही नहीं सकता। मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूँ। मैं स्वयं इन्हें ऐसे-ऐसे विचित्र ढंगसे बोलते हुए सुन चुकी हूँ कि यह कोई भी समझ ही नहीं सकता कि ये श्यामसुन्दर हैं।

ललिता—तो पहचान कैसे हो ?

चित्रा—एक काम कर। जब पुष्पाञ्जलि देनेका समय आवे तो हममेंसे दो-तीन पुष्प न उठाकर केवल जल उठा लें और भगवान् सूर्यपर फेंकनेके बहानेसे इस ऋषिकुमारपर जल फेंकें। यदि रंग होगा तो मुखपरसे उतर जायेगा।

ललिता 'बहुत ठीक' कहती हुई चित्राको पकड़े हुई घेरेके पास आ पहुँचती हैं। पूजा हो रही थी, ऋषिकुमार प्रत्येक पदार्थके अर्पणके पहले कुछ ऊटपटांग-सा पद पाठ करके फिर कहता है—'पाद्यं समर्पयामि, सूर्याय नमः', 'अर्घ्यं समर्पयामि, सूर्याय नमः'।

उस पदके पाठसे श्रीप्रियाका हृदय उद्वेलित होकर वे भावाविष्ट-सी होने लग जाती हैं। अब पूजा समाप्त-प्रायः हो रही है। इसी समय विशाखा एक बड़ी परात घेरेके भीतर रख देती हैं। परातमें बिना छीले हुए पीले रंगके एक प्रकारके अतिशय सुन्दर फल हैं जो देखनेमें संतरेके-से हैं, पर संतरेसे कुछ बड़े-बड़े हैं। ऋषिकुमार परात उठाकर यह गाता है—

तालफलादपि गुरुमतिसरसम्। (गीतगोविन्द)

इसे गाकर फिर ऋषिकुमार कहता है—'ऋतुफलं समर्पयामि, सूर्याय नमः'।

इस बार रानी एक अतिशय तीक्ष्ण दृष्टिसे उस ऋषिकुमारकी ओर देखती हैं तथा तुरंत खिल-खिलाकर हँस पड़ती हैं।

रानीको इस बार निश्चय हो गया है कि मेरे प्राणनाथ प्रियतम श्यामसुन्दर ही ऋषिकुमार बनकर आये हैं। वे इस बातसे प्रेममें इतनी अधीर हो जाती हैं कि उनके लिये खड़ी रहना असम्भव हो जाता है। वे वहीं धम्मसे बैठ जाती हैं। प्रेममें विह्वल होकर आँखें बंद कर लेती हैं। ऋषिकुमारके मुखपरसे इस बार सरलता एवं गम्भीरता बिल्कुल चली

जाती है। वह भी जोरसे हँस पड़ता है। उसके हँसते ही रहा-सहा संदेह भी जाता रहता है। चित्रा झारीसे एक चिल्लू पानी लेकर ऋषिकुमारके मुखपर झोंक देती हैं। ऋषिकुमारका मुख गीला हो जाता है। वह हँसता हुआ अपने उत्तरीय वस्त्रसे मुख पोंछता है। मुख पोंछते ही श्यामसुन्दरकी अनिन्द्य मुख-शोभा- स्पष्ट दीखने लग जाती है। इन्दुलेखा तो इतनी अधीर हो जाती है कि वहीं मूर्च्छित हो जाती हैं। विशाखा आदि सभी हँसते-हँसते लोट-पोट हो जाती हैं। रानी हँसती हुई उठ पड़ती हैं। वे हाथ बढ़ाकर प्यारे श्यामसुन्दरको घेरेसे बाहर खींच लेती हैं और प्यारेकी ओर देखने लगती हैं। सर्वत्र आनन्द एवं प्रेम छा जाता है। कुछ देर बाद अतिशय प्रेममय विनोद करती हुई सखी-मण्डली प्यारे श्यामसुन्दरको मन्दिरके पीछे स्थित सुन्दर कुण्डपर ले जाती है। वहाँ रानी वृक्षकी छायामें बैठाकर अपने हाथसे प्यारे श्यामसुन्दरके शरीरको अँगोछेसे पोंछती हैं। सभी सखियाँ मिलकर पुनः श्यामसुन्दरका शृङ्गार करती हैं। शृङ्गार होनेपर कुछ देर वहीं बैठे रहकर आपसमें निर्मल प्रेमसे भरा विशुद्ध विनोद चलता रहता है।

इसी समय एक सारिका वृक्षके ऊपर जोरसे बोलती है—सूर्यदेव! सचमुच तुमने प्रतिज्ञा कर ली है कि मैं जो कहूँगी, उससे ठीक उलटा करोगे? प्रातःकाल हृदयसे कह रही थी कि तुम देर से उदय होओ तो शीघ्र उदय हो गये। इस समय हृदयसे कह रही हूँ, थोड़ा ठहरो, किञ्चित् मन्थर गतिसे चलो तो पश्चिम गगनकी ओर शीघ्रतासे भागे जा रहे हो। क्या कहूँ?

सारिकाकी बातसे सबकी दृष्टि सूर्यकी ओर चली जाती है। अब सभीको होश होता है कि दिन अधिक ढल चुका है। इस स्मृतिसे रानीका मुख गम्भीर हो जाता है। वे उठकर खड़ी हो जाती हैं। प्यारे श्यामसुन्दर भी उठकर खड़े हो जाते हैं। रानीको हृदयसे लगाकर कहते हैं—मैं शीघ्र ही गायोंको लेकर आ रहा हूँ।

प्रीतिकी अतिशयतासे स्वयं श्यामसुन्दरका गला भर जाता है। अब रानीकी बायीं तरफ सँभाले हुए श्यामसुन्दर उत्तरकी तरफ बढ़ते हैं। कुछ देर चलकर उद्यानके उत्तरी छोटे फाटकपर आ पहुँचते हैं।

वहाँ रुक जाते हैं। एक बार शीघ्रतासे पुनः रानीको हृदयसे लगाकर फाटकसे बाहर होकर धीरे-धीरे पूर्वकी ओर राजपथपर चलने लगते हैं। रानी फाटकसे बाहर आकर खड़ी हो जाती है तथा निर्निमेष नयनोंसे उधर ही देखने लगती हैं। श्यामसुन्दर कुछ दूर चलकर इन्दुलेखाके कुञ्जकी पूर्वा सीमाके पास गिरिवर-स्रोतके पुलको पार करके उसरी तरफ चले जाते हैं। रानीको श्यामसुन्दर जब नहीं दीखते तो वे एक कटे वृक्षकी तरह गिरने लगती हैं; पर ललिता सँभाल लेती है। कुछ देर तक वे वहीं बैठी रहती हैं। फिर ललिता सहारेसे रानीको उठा लेती हैं। रानी ललिताके कंधेको पकड़ लेती हैं तथा धीरे-धीरे घर जानेके उद्देश्यसे पश्चिमकी ओर राजपथपर चलने लगती हैं।

आवनी लीला

संध्या होने जा रही है। नन्दबाबाके महलके आगे अब धूप बिल्कुल नहीं रह गयी है; क्योंकि महलका मुख पूर्वकी ओर है। महलके ठीक सामने बहुत सुन्दर संगमरमरकी एक चौड़ी सड़क पूर्वकी ओर जाती है। सड़कके दोनों किनारोंपर अन्यान्य गोपोंके भव्य महल एवं प्रत्येक महलसे सटा हुआ एक-एक अत्यन्त रमणीय उद्यान शोभा पा रहा है। नन्द-महलके पूर्वकी ओर एक फर्लांग (१/१६ कोस) की दूरीपर श्रीराधारानीका महल है। सड़कके दोनों किनारोंपर छोटे-छोटे अशोकके वृक्ष लगे हैं। वृक्ष दस-दस हाथोंकी दूरीपर लगे हैं। उनके हरे-हरे सुन्दर पत्ते संध्याकालीन वायुके झोंकोंसे हिल रहे हैं। आज संध्या समय वायु कुछ तेज गतिसे प्रवाहित हो रही है। नीले गगनमें एकाध छोटे-छोटे बादलके टुकड़े तैरते हुए दीख पड़ रहे हैं।

अब संध्याके समय श्यामसुन्दरके वनसे लौटनेका समय हो गया है। सड़कके दोनों किनारोंपर वृक्षोंके पास गोपियोंकी भीड़ लगी हुई है। महलोंकी अटारियोंपर, खिड़कियोंपर, जहाँ भी किसीकी दृष्टि जाती है, वहाँ केवल गोपियोंके दर्शन होते हैं। श्रीगोपीजनोंके श्रीअङ्गपर नीली, पीली, हरी एवं लाल आदि रंगोंकी अत्यन्त सुन्दर साड़ियाँ शोभा पा रही हैं। सबके मुखारविन्दसे अनुराग टपक रहा है। सभी बड़ी उत्सुकतासे पूर्वकी ओर दृष्टि लगाये हुए हैं।

श्रीराधारानी श्रीश्यामसुन्दरकी प्रतीक्षामें अपने महलकी सबसे ऊँची अटारीपर बैठी हुई हैं। बेंतके आकारका चार-पाँच हाथ लम्बा मखमली गद्देदार आसन है, उसीपर पैर लटका करके पूर्वकी ओर मुख किये हुए श्रीप्रियाजी बैठी हैं। प्रियाजीका दाहिना हाथ श्रीललिताके बायें कंधेपर है। ललिता उनकी दाहिनी तरफ उसी आसनपर बैठी हैं। आसनके पीछे कुछ सखियाँ आसनपर हाथ टेके खड़ी हैं। रूपमञ्जरी नीले रंगके रूमालसे श्रीप्रियाजीके पैरोंके तलवोंको उनके चरणोंमें बैठी हुई सहला रही है। श्रीप्रियाजीके सामने ही छतपर बैठी हुई लवङ्गमञ्जरी सोनेके पनवट्टेपर पान रखकर बीड़े तैयार कर रही है। अनङ्गमञ्जरी नीले रेशमी वस्त्रका बना हुआ पंखा हाथमें लिये हुए श्रीप्रियाजीकी बायीं ओर कुछ दूरपर खड़ी है। वह पंखा झल नहीं रही है, क्योंकि गर्मी नहीं है तथा वायु आज स्वाभाविक ही कुछ तेज चल रही है।

लवङ्गमञ्जरीके उत्तरकी तरफ दक्षिणकी ओर मुँह किये मधुमतीमञ्जरी प्रियाजीके इशारेसे गा रही है। वीणा अत्यन्त मधुर स्वरमें बज रही है। मधुमती गाती है—

> लाल ब्रज भूषन मन भावते नेक बन ते बेगे आव हो।
> जसुमति सुत करुना भरे नेक हिरदै सुख उपजाव हो॥
> डोलन बरहापीड़ की स्रुति जुग कुंडल झलकाव हो।
> नाचत तानन तोर के नेक अलक बदन अरुझाव हो॥
> देखत इत उत भाव सों नेक चपल नयन चमकाव हो।
> उठन रेख मुख चंद की सीतलता हियो सिराव हो॥
> चलन जुगल मृदु गंड की नेक चुंबन चाव बढ़ाव हो।
> अधर सुधा रस सों सबै मुरली के रंध्र पुराव हो॥

गावत गुन गोपीन के नेक स्रवनन सब्द सुनाव हो।
सुंदर ग्रीवा की डोलनी पलकन की परन भुलाव हो॥
कंठसिरी दरसाय के नेक तन की दसा बिसराव हो।
गजमुक्ता बिच लाल हो सो उर पर हार धराव हो॥
पोहोंची दोउ कर सोभनी नेक फुंदना स्याम लटकाव हो।
बाजूबंद भुज में बने मेरे मन के मोहि गडाव हो॥
कटि पीतांबर काछनी नेक नीके अंग नचाव हो।
क्षुद्र घंटिका बाजनी ता ऊपर सरस धराव हो॥
चलन सों न्यारी भाँति की नेक नूपुर सब्द सुनाव हो।
नख भूषन की ज्योति सों सकलन की ज्योति लजाव हो॥
आगे गोधन हाँक के नेक पाछे खेल कराव हो।
बेंत सु फूलन गूँथि के नेक काँधे धरे दिखाव हो॥
गोप बालकन मंडली मधि नायक नेक कहाव हो।
नाचन मिस ब्रज भूमि में नेक चरन चिह्न उपटाव हो॥
आवत बायें हाथ ले नेक लीला कमल फिराव हो।
बनमाला अलि जूथ को नेक कमल फिराय उड़ाव हो॥
ब्रज जुवतिन के वृंद में धँसि अपनो अंग परसाव हो।
आलिंगन बहु भाँति दे जुवतिन के पूरो भाव हो॥
दीस विरह व्याकुल सखी ते अपने अंग लगाव हो।
तुम बिन सूनो सांझ को अपनो ब्रज फेर बसाव हो॥
घोष द्वार चलि आय कें बल संग आरति उतराव हो।
दे सुख सिगरे घोष को नेक दिन को बिरह बहाव हो॥
इहि बिधि ब्रज जुवती कहैं सुनि नंद महर घर आव हो।
रसिकन यह बर दीजियें नित श्रीवल्लभ पद पाव हो॥

गीत समाप्त होते ही दूरपर पूर्वकी तरफ अत्यन्त मधुर स्वरमें मुरली सुनायी पड़ने लगती है। श्रीप्रियाजी आसनसे उठकर खड़ी होकर बड़ी व्याकुलता भरी दृष्टिसे उधर ही देखने लग जाती हैं। पहले कुछ गायें दीखती हैं, फिर रानीके महलसे तीन फर्लांग दूर पूर्वकी तरफ चारों ओर गायोंसे घिरे हुए श्यामसुन्दर आते हुए दीख पड़ते हैं। संगमें ग्वाल-सखाओंकी मण्डली है। उनमें कोई झिमझिमियाँ बजा रहा है। कोई खँजरी बजा रहा है तथा कोई ताली देते हुए नाचता हुआ आ रहा है।

स्वयं श्यामसुन्दर अत्यन्त मधुर स्वरमें मुरली बजा रहे हैं। गायें पूँछ उठा-उठाकर कूद रही हैं। श्यामसुन्दर बायें हाथसे मुरली बजाते रहते हैं तथा दाहिने हाथसे उन गायोंको बीच-बीचमें छू-छूकर शान्त करते हैं। मन्द-मन्द मुस्कुराते हुए पश्चिमकी तरफ सड़कपर बढ़ते हुए चले जा रहे हैं। जैसे-जैसे आगे बढ़ते हैं, वैसे-वैसे ही गोपियोंकी टोली पीछे होती जा रही है, अर्थात् जिस गोपीके सामनेसे आगे बढ़े कि वही पीछे चलने लगती है। दोनों किनारोंसे गोपियोंकी इतनी भीड़ इकट्ठी हो जाती है कि पीछेका रास्ता बिल्कुल बंद हो जाता है। अब कभी श्रीकृष्ण पीछे ताकते हैं तो कभी आगे, और मुस्कुरा देते हैं। पीछे से गोपीजनोंका इतने जोरसे धक्का आता है कि सब गायें आगे ठेल दी जाती हैं तथा श्रीकृष्णके चारों ओर गोपियाँ-ही-गोपियाँ हो जाती हैं। श्रीकृष्णका पीताम्बर हवामें फहराने लगता है। एक गोपी उस पीताम्बरको पकड़ लेती है। अब श्रीकृष्णके सखा लोग भी भीड़से इतने दब गये कि वे भी श्रीकृष्णसे चार-पाँच हाथ अलग हो गये। श्रीकृष्ण अब राधारानीके महलके सामने पहुँच जाते हैं। वे अपने दोनों हाथोंसे भीड़को हटानेकी चेष्टा करते हैं तथा खूब मुस्कुराकर आगेकी गोपियोंसे कह रहे हैं—बावली! नेक रास्ता दे।

एक गोपी हँसकर कहती है—श्यामसुन्दर! आज रास्ता बंद है।

श्रीकृष्ण धीरेसे कहते हैं—फिर देख, गाली तो नहीं देगी? रास्ता तो मैं निकाल लूँगा।

गोपी मुस्कुराकर पीताम्बर छीन लेनेकी चेष्टा करती है और श्रीकृष्ण उसे पकड़े हुए हैं। राधारानी इसी बीचमें अटारीसे नीचे उतर आयी हैं तथा एक अशोकसे सटकर द्वारपर खड़ी हैं। श्रीकृष्णकी दृष्टि उनपर जाती है। श्रीकृष्ण मानो आँखोंके इशारेसे उनसे सलाह पूछते हैं—क्या करूँ? बुरी तरह फँस गया हूँ। रास्ता बंद है।

राधारानी कुछ इशारा करती हैं मानो कह रही हैं—प्राणनाथ! सभी गोपियाँ चाहती हैं तुम्हारे पीताम्बरको छीनकर ले जायें। दे दो, तुम्हारा क्या बिगड़ेगा?

श्यामसुन्दर उसी क्षण जितनी गोपियाँ हैं, उतने बन जाते हैं।

प्रत्येक गोपीके सामने एक श्रीकृष्ण हैं। गोपी-श्रीकृष्ण, गोपी-श्रीकृष्णका क्रम बन जाता है। प्रत्येक गोपीके हाथमें श्रीकृष्णके पीताम्बरका एक छोर है तथा श्रीकृष्ण उससे पीताम्बर छुड़ानेकी चेष्टा कर रहे हैं।

दूरपर मैया यशोदा दौड़ती हुई आ रही हैं। बिल्कुल भीड़में आ जानेके कारण श्रीकृष्ण छिप गये थे। मैया सह न सकीं। वे सोचने लगीं कि मेरे लल्लाको ये गोपियाँ चोट न लगा दें, इसीलिये भीड़को चीरती हुई पश्चिमकी तरफसे दौड़ी हुई आ रही हैं।

श्रीकृष्ण धीरेसे कहते हैं—री, छोड़, मैया आ रही है।

मैया यशोदा बड़े जोरसे डाँटती हुई आ रही हैं—री गँवारिनो! मेरे लल्लाको तुम सब पीस डालोगी क्या?

श्रीकृष्णके सब सखा भी मैया यशोदाको अपनी ओर आती हुई देख करके और भी साहससे भीड़को धक्का देने लगते हैं। मैयाके आनेसे उन्हें बहुत बल मिल गया। श्रीकृष्ण पीताम्बर छुड़ा लेते हैं। गोपियाँ मैयाको आती देखकर कुछ सहम जाती हैं। मैया आ पहुँचती हैं और श्रीकृष्ण उनके चरणोंमें गिरकर प्रणाम करते हैं। मैया बड़े जोरसे चिल्ला-चिल्लाकर कह रही हैं—री, हट जा। नेक हवा तो आने दे।

गोपियाँ आँखें घुमा-घुमाकर मानो श्रीकृष्णसे कह रही हैं—अच्छा श्यामसुन्दर! आज तो मैयाने बचा लिया, फिर कभी बात।

धीरे-धीरे भीड़ हटने लगती है। श्यामसुन्दरके पाँच-सात हाथ चारों ओरका स्थान छोड़कर गोपियाँ घेरे हुए खड़ी रह जाती हैं। मैया गोदमें बैठाकर अञ्चलसे हवा करती हैं। इतनेमें नन्दरानीकी दासियाँ झारी-पंखा लेकर भीड़को चीरकर वहाँ आ जाती हैं। दाऊजी भी भीड़में अलग हो गये थे, वे भी भीड़ चीरकर आ खड़े होते हैं। श्यामसुन्दरके सखा भी आ जाते हैं, पर वे सब बहुत चिढ़े हुए गोपियोंकी ओर नाक फुला-फुलाकर तथा आँखें तरेरकर देख रहे हैं।

गोदोहन लीला

श्रीप्रिया अपने महलकी सबसे ऊँची अटारीपर पश्चिमकी ओर खड़ी हैं। अटारीके घेरेपर वे अपने दोनों हाथ टेके हुए हैं। श्रीप्रियाकी दाहिनी ओर एक मञ्जरी खड़ी है। श्रीप्रिया नन्द-गोशालाकी ओर देख रही हैं। श्यामसुन्दर मस्तानी चालसे चलते हुए गोशालामें गाय दुहनेके लिये आ रहे हैं। उनके आगे-पीछे सखा दोहनी (दूध दुहनेका पात्र) लिये हुए चल रहे हैं।

प्यारे श्यामसुन्दरके दाहिने हाथमें वंशी है। बायाँ हाथ कभी सुबलके कंधेपर रखकर चलते है, कभी कंधेसे नीचे उतार लेते हैं। कभी-कभी बायें हाथमें दुपट्टा लेकर मुँह पोंछने लगते हैं। दृष्टि बार-बार श्रीप्रियाकी ओर चली जाती है। गोशालाके बीचमें गायोंको घास एवं दाना खिलानेके लिये एक गज ऊँची, एक गज चौड़ी एवं दो सौ गज लम्बी ग्यारह वेदियाँ पूर्व एवं पश्चिम दिशामें बनी हुई हैं। वेदियाँ किसी अतिशय चमकते हुए तैजस धातुकी बनी हैं। लगभग एक-एक गजके अन्तरपर वेदीमें धँसाकर अतिशय सुन्दर बर्तन रखे हुए हैं। दोनों ओर गायें खड़ी होकर घास एवं दाना खा रही हैं।

बहुतसे गोप एवं नन्दरानीकी दासियाँ सेवामें लगी हैं। स्वयं नन्दराय भी गोशालामें पधारे हुए हैं। श्यामसुन्दरके पधारे रहनेके कारण तो सभीके हृदयमें आनन्दकी बाढ़ आ गयी है। बछड़े कुछ तो गायोंका स्तन-पान कर रहे हैं, कुछ मुँहमें फेन भरकर इधर-उधर उछल रहे हैं। कुछ गायें भी कभी-कभी घास एवं दाना खाना छोड़कर पूँछ उठाकर उछलने लगती हैं। गोप उन्हें सँभालने लगते हैं। गायें जब जोरसे उछलने लगती हैं तथा गोपोंके सँभाले नहीं सँभलतीं तो गोप कहता है—आह! देख, प्यारे श्यामसुन्दर आ रहे हैं। यदि तू घास एवं दाना नहीं खायेगी तो वे दुःखी होंगे। हमें खिलानेके लिये कह गये हैं।

तब गाय शान्त हो जाती है तथा शान्तिसे घासके बर्तनमें मुँह डालकर घास खाने लगती है। श्यामसुन्दर अब गायोंकी कतारके पास जा पहुँचते हैं। एक गोप गायको दाना खिला रहा है। श्यामसुन्दर

उसके पास जाकर खड़े हो जाते हैं तथा कहते हैं—ताऊ ! आज मैं दूध दुहूँगा !

श्यामसुन्दरकी अमृत वाणी गोपके सारे शरीरमें प्रेमका संचार कर देती है। वह प्रेममें विह्वल होकर श्यामसुन्दरसे जा चिपटता है तथा कुछ देर बिल्कुल प्राणहीन-सा होकर हृदयसे लगाये स्थिर खड़ा रह जाता है। फिर कुछ क्षण बाद सँभलकर कहता है—ना बेटा ! तू देखता रह ! मैं तेरे सामने दुह देता हूँ !

श्यामसुन्दर प्यारसे मचल जाते हैं और कहते हैं—ना, ना, ताऊ ! आज मेरी प्रार्थना मान लो।

गोपकी आँखें भर आती हैं। गला प्रेमसे रुँधने लगता है। श्यामसुन्दर उसका हाथ पकड़ लेते हैं। वह गोप गद्‌गद कण्ठसे कहता है—आह ! तेरे कोमल हाथ……………दुख जायँगे…………मेरे लाल !

श्यामसुन्दर कहते हैं—ना ताऊ ! आज देख लो, बिल्कुल नहीं दुखेंगे।

कुछ देर सोचकर गोप सम्मति दे देता है। श्यामसुन्दर वंशीको अपनी फेंटमें खोंस लेते हैं तथा सुबलके हाथसे दोहनी लेकर गाय दुहने बैठते हैं। श्यामसुन्दर ज्यों-ही थनके पास बैठते हैं, बस, उसी क्षण बछड़ा थन पीना छोड़कर श्यामसुन्दरके शरीरको सूँघने लग जाता है। गाय भी वैसे ही दाना-घास छोड़कर प्यारे श्यामसुन्दरके कंधेके पास अपना मुँह ले जाकर शरीर सूँघने लगती है। गायके थनसे दूध झरने लगता है। श्यामसुन्दर बर्तन ले जाकर अँगुलियोंसे दूध दुहने लगते हैं। अँगुलियाँ तो मानो थनको स्पर्श-मात्र कर रही हैं, दूध अपने-आप झर रहा है। इतनी तेजीसे झर रहा है कि तुरंत ही बर्तनमें दूध जमा होकर घर-घर शब्द होने लगता है। कुछ देरमें ही वह बर्तन भर जाता है। श्यामसुन्दर हँसते हुए उठ पड़ते हैं। वे उस गोपके हाथमें बर्तन पकड़ाकर गायके शरीरपर थपकी देने लगते हैं तथा कहते हैं—मेरी प्यारी श्यामली ! मेरे प्यारसे पागल होकर तू चाहती है, मैं और दुहूँ; पर मेरा मोहना* भूखा रह जायेगा। सो, ना, अब नहीं, अब फिर प्रातःकाल।

---

*गायके उस बछड़ेका नाम श्यामसुन्दरने 'मोहना' रख छोड़ा है।

इसके बाद श्यामसुन्दर बछड़ेका मुँह पकड़कर थनके पास करते हैं; पर बछड़ा प्यारमें डूबकर थनसे मुँह हटा लेता है एवं श्यामसुन्दरके हाथपर अपनी गर्दन धीरे-धीरे घिसने लग जाता है। श्यामसुन्दर उसे मधुर कण्ठसे पुचकारते हैं—ना, मेरा मोहना! थोड़ा पी ले।

मधुमङ्गल—देख कानू! तू जबतक यहाँ रहेगा, तबतक न तो तेरा मोहना दूध पियेगा, न तेरी श्यामली घास खायेगी।

फिर मधुमङ्गल श्यामसुन्दरको पूर्वकी तरफ खींच ले चलता है। श्यामली हुँकार करने लगती है। श्यामसुन्दर फिर धीरेसे लौट आते हैं तथा कहते हैं—मेरी प्यारी श्यामली! तू खा ले, मैं तबतक शेफालिकाको दुह आऊँ।

श्यामली यह सुनकर घास खाने लगती है। श्यामसुन्दर आगे बढ़ते हैं। इस प्रकार प्रत्येक दुही जानेवाली गाय यह अनुभव करती है कि श्यामसुन्दर मेरे पास आये हैं। किसीने यह अनुभव किया है कि प्यारे श्यामसुन्दरने अपने हाथोंसे मेरा दूध दुहा। किसीने यह अनुभव किया है कि दुहा तो किसी गोपने है, पर श्यामसुन्दर उतनी देरतक मुझे थपकी लगाते रहे हैं। किसीने यह अनुभव किया है कि प्यारे श्यामसुन्दरने अपने हाथसे हमें दाना खिलाया है। किसीने यह अनुभव किया है कि प्यारे श्यामसुन्दरने मेरे गलेमें माला पहनायी है। किसीने यह अनुभव किया है कि प्यारे श्यामसुन्दरने अपने हाथोंसे मेरे सींगमें घी लगाया है। सारांश यह है कि प्रत्येक गाय एवं बछड़ेने किसी-न-किसी रूपसे श्यामसुन्दरके स्पर्श-सुखका अनुभव किया है एवं वे आनन्दमें डूब गये हैं। अब श्यामसुन्दर गोशालाकी पूर्वी चहारदिवारीके पास आ पहुँचते हैं। वहाँ एक अत्यन्त सुन्दर शिला पड़ी है। शिला भूमिसे दो गज ऊँची है। उसपर चढ़नेके लिये सीढ़ियाँ बनी हैं। श्यामसुन्दर उसीपर चढ़कर ऊपर जा पहुँचते हैं तथा पैर लटकाकर दक्षिणकी ओर मुँह करके बैठ जाते हैं। यहाँसे श्रीप्रियाको श्यामसुन्दर एवं श्यामसुन्दरको श्रीप्रिया स्पष्ट दिखलायी पड़ रही हैं। सुबल मधुमङ्गल श्रीदाम आदि सखा भी शिलाके ऊपर प्यारे श्यामसुन्दरकी ओर मुख करके कोई बैठे हुए हैं, कोई खड़े हैं। प्यारे श्यामसुन्दर अब फेंटसे वंशी निकालते हैं तथा उसमें सुर भरना प्रारम्भ करते हैं। मधुरतम स्वर-लहरी समस्त गोशालाको

निनादित करने लगती है। स्वर-लहरी श्रीप्रियाके कानोंमें भी जा पहुँचती है, पर वहाँ तो और भी विलक्षण रूपमें पहुँची! श्रीप्रिया स्पष्ट यह अनुभव कर रही हैं कि मेरे प्रियतम प्राणनाथ अपने हृदयके समस्त प्यारको लेकर मधुरतम कण्ठसे यह गा रहे हैं—

त्वमसि मम भूषणं त्वमसि मम जीवनं त्वमसि मम भवजलधिरत्नम्।
भवतु भवतीह मयि सततमनुरोधिनी तत्र मम हृदयमतियत्नम्॥

(गीतगोविन्द—१०/३०)

(प्रिये! तू मेरे जीवनकी शोभा है। नहीं, नहीं, प्रिये! तू ही मेरा जीवन भी है। देख, प्राणोंके अणु-अणुके रूपमें तू मेरे अंदर छायी हुई है। शरीरके अणु-अणुमें आभूषण बनकर चिपटी हुई है। आह! मेरे-जैसे दीन व्यक्तिके लिये तू अनमोल रत्न है। मैं भव-सागरमें तेरे-जैसे अनमोल रत्नकी लालसासे ही टिका हुआ हूँ। मेरे हृदयकी रानी! मैं झूठ कह रहा हूँ या सच, यह तू स्वयं जानती है। मेरे हृदयका कोना-कोना इस चेष्टासे पूर्ण है कि तेरे कोमल हृदयका समस्त प्यार निरन्तर मेरी ओर बहता रहकर मुझे कृतार्थ करता रहे, मैं निहाल होता रहूँ।)

प्यारे श्यामसुन्दरकी इस स्वर-लहरीका प्रभाव श्रीप्रियाके ऊपर इतना गम्भीर पड़ता है कि श्रीप्रियाके लिये खड़ी रहना असम्भव हो जाता है। श्रीप्रियाके पैर लड़खड़ाने लगते हैं। समस्त अङ्गोंमें कम्पन होने लग जाता है। मञ्जरी अपनी भुजाओंसे श्रीप्रियाको पकड़ लेती है तथा वहाँसे उत्तरकी ओर स्थित बेंचपर धीरे-धीरे ले जाकर बैठा देती है। श्रीप्रिया कुछ क्षण स्थिर बैठी रहती हैं। हृदयमें भावोंकी तरंग-ही-तरंग उठ रही हैं। श्रीप्रिया कुछ गम्भीर मुद्रामें उठ खड़ी होती हैं। वे पुनः घेरेके पास खड़ी हो जाती हैं। फिर कुछ दक्षिणकी तरफ बढ़ती हैं। कुछ दूर चलकर खड़ी हो जाती हैं। एक विशाल कदम्ब-वृक्ष नीचे लग रहा है। वृक्ष घेरेसे भी पन्द्रह-बीस हाथ ऊपर उठा हुआ है। उसकी कई डालियाँ घेरेको छू रही हैं। श्रीप्रिया उसी कदम्बकी एक टहनीको पकड़कर उससे एक पत्ता तोड़ लेती हैं तथा एक पत्ता और तोड़कर ऐसी चेष्टा करती हैं मानो चाहती हैं कि दोनों पत्तोंको जोड़ दूँ। पर जोड़नेका कुछ भी साधन उपलब्ध नहीं होनेपर दूसरे पत्तेको अपनी कञ्चुकीमें रख लेती हैं। श्रीप्रियाकी आँखें भरी हुई हैं। दृष्टि निरन्तर श्यामसुन्दरकी ओर लगी

हुई है। अभी भी श्यामसुन्दरकी वंशीसे श्रीप्रियाको यह स्वर सुन पड़ रहा है—त्वमसि मम भूषणं त्वमसि मम जीवनम्...... ।

अब प्रिया ठीक उसी स्वरमें स्वर मिलाकर गुनगुनाने लगती हैं, पर स्वर अस्पष्ट है। कुछ क्षण गुनगुन करती हुई रुककर उस मञ्जरीको पनबट्टा लानेके लिये कहती हैं। मञ्जरी पनबट्टा लाती है। श्रीप्रिया संकेतमें ही मञ्जरीसे कुछ देनेके लिये कहती हैं। मञ्जरी संकेत समझ जाती है। वह पनबट्टा खोलकर सरौतेसे एक लवङ्गको अत्यन्त शीघ्रतासे पतली सींककी तरह काट-छाँटकर श्रीप्रियाके हाथमें पकड़ा देती है। श्रीप्रिया उसी लवङ्गसे कदम्बके पत्तेपर गुनगुनाती हुई लिखने लगती हैं—

रहसि संविदं हृच्छयोदयं प्रहसिताननं प्रेमवीक्षणम् ।
बृहदुरः श्रियो वीक्ष्य धाम ते मुहुरतिस्पृहा मुह्यते मनः ॥
(श्रीमद्भागवत—१०/३१/१७)

पत्तेपर यह लिखकर प्यारे श्यामसुन्दरको ओर देखती हुई कहने लगती हैं—प्राणाधार ! सब स्मरण है। आह ! वह दृश्य भी कभी भूल सकती हूँ ?

फिर श्रीप्रिया कुछ सोचने लगती हैं। फिर कुछ देर बाद कहती हैं—पवन ! जिस तरह तू मेरे प्राणनाथका अङ्ग-सौरभ अपने हृदयमें छिपाकर ले आया है, उसी तरह मेरे इस पत्रको भी हृदयमें छिपाकर प्राणनाथके पास पहुँचा दे।

यह निवेदन करनेके बाद श्रीप्रिया उस पत्तेको आकाशमें उछाल देती हैं। उछालकर अपनी आँखें कुछ क्षणके लिये मूँद लेती हैं। पत्ता वायुमें कुछ क्षण भँवराकर लताके नीचे गिर जाता है, पर रानी उसे देख नहीं पातीं। प्रेममें डूबी हुई रानी समझने लगती हैं कि पवन मेरा पत्र ले गया है। इस बातसे रानीका अणु-अणु प्रसन्नतासे भर जाता है।

कुछ ही क्षण बाद रानीकी प्रेममयी आँखें अधीर हो उठती हैं। रानी देखना चाहती हैं कि मेरे प्राणनाथ मेरा यह पत्र पढ़ लें। रानी देर होते देखकर उस मञ्जरीसे कहती हैं—अच्छा, तू देख ! श्यामसुन्दरके पास वह पत्र पहुँच गया है या नहीं। मेरी आँखें ठीकसे नहीं देख रही हैं। वह पत्र अवश्य पहुँच गया होगा।

रानीकी बात सुनकर मञ्जरी कुछ विचारमें पड़ जाती है कि क्या उत्तर दूँ। इसी समय मधुमङ्गल श्यामसुन्दरके कंधेको हिलाकर एवं हाथमें कुछ लेकर उन्हें दिखलाने लगता है। इसे देखकर रानी समझती हैं कि मेरा वह पत्तेवाला पत्र ही मधुमङ्गलने श्यामसुन्दरको दिया है। अतः रानी स्वयं कह उठती हैं—वह देख, पत्र पढ़ रहे हैं।

इतना कहते ही रानी मूर्च्छित हो जाती हैं। मञ्जरी उन्हें सँभाल लेती है। श्यामसुन्दर प्रियाका वदन छिप जानेके कारण वंशी बजाना बंद करके उठकर खड़े हो जाते हैं और उधर ही देखने लगते हैं। कुछ क्षणमें ही श्रीप्रियाको अपने-आप चेतना आ जाती है। श्रीप्रिया पुनः घेरेपर शरीरका भार देकर प्यारे श्यामसुन्दरकी ओर देखने लग जाती हैं।

इसी समय नन्दरायजी तीव्र गतिसे चलते हुए वहाँ आ जाते हैं, जहाँ श्यामसुन्दर खड़े हैं। अपने पिताको आये हुए देखकर श्यामसुन्दर कुछ झेंपते हुए-से फुर्तीसे शिलासे नीचे उतर पड़ते हैं। नन्दरायजी बड़ी शीघ्रतासे श्यामसुन्दरको चिपटा लेते हैं। कुछ क्षण बाद कहते हैं—बेटा! तेरी माँ बावली हो रही है कि कनुआ कहाँ चला गया? तू शीघ्र चल!

पिताकी बात सुनकर श्यामसुन्दर शीघ्रतासे चल पड़ते हैं। कुछ ही दूर पश्चिमकी ओर बढ़े थे कि मैया आती हुई दीखती है। दोनोंकी दृष्टि मिल जाती है। श्यामसुन्दरको देखकर मैयाको किंचित् संतोष हो जाता है। वे गायोंकी भीड़में इधर-उधर अपने लल्लाको ढूँढ़ती हुई फिर रही थीं, पर श्यामसुन्दर गोशालाके सर्वथा पूर्वी किनारेपर आ गये थे, अतः मैयाको मिले नहीं थे। इसीलिये मैया व्याकुल हो गयी थीं। श्यामसुन्दर अब मैया यशोदाके पास आ पहुँचते हैं। मैया हृदयसे लगाकर सिर सूँघने लगती हैं। फिर हाथ पकड़े हुए महलकी ओर बढ़ने लगती हैं। श्यामसुन्दर कहते हैं—मैया! थोड़ी देर और रहने दे। गायोंको यथास्थान पहुँचा दूँ।

मैया कहती हैं—ना, मेरे लाल! अब अँधेरा हो गया है। अब घर चल चलो।

माँका प्रेमभरा आग्रह श्यामसुन्दर टाल नहीं सके। मैया महलकी ओर चलने लगती हैं। अन्यान्य गोप गायोंको विश्रामस्थलकी ओर हाँक

ले चलते हैं। गायें एवं बछड़े बार-बार श्यामसुन्दरको ओर देखते हैं। श्यामसुन्दर चलते हुए अपने महलके बरामदेमें जा पहुँचते हैं। रानी एकटक देखती रहती हैं। कुछ क्षण बरामदेमें खड़े रहकर श्यामसुन्दर भी रानीके महलकी ओर देखते रहते हैं। फिर मैया आग्रह करती हुई श्यामसुन्दरको भीतर लेकर चली जाती हैं। रानीको जब श्यामसुन्दरका दिखलायी देना बंद हो जाता है तो वे आँखें मूँद लेती हैं। कुछ देर खड़ी रहकर वहीं छतपर बैठ जाती हैं। सामने मञ्जरी बैठी है। उसके बायें कंधेपर हाथ रखकर वे कुछ क्षण उसके मुखकी ओर देखती हैं। मञ्जरी कहती है—मेरी रानी! अब नीचे चली चलो।

रानी कुछ नहीं बोलतीं; पर कुछ क्षण बाद करुणाभरी मुद्रामें धीरे-धीरे यह गाने लगती हैं—

> मोहनी मूरत साँवरि सूरति नैना बने बिसाल।
> अधर सुधारस मुरली राजत उर बैजंती माल॥
> बसो मोरे नैनन में नंदलाल॥

एक-दो बार इतनी-सी कड़ीकी आवृत्ति करके रानी चुप हो जाती हैं। कुछ क्षण बाद उस मञ्जरीको अपने हृदयसे लगाकर रोने लग जाती हैं। मञ्जरी कुछ समझ नहीं पाती कि रानीको कैसे शान्त करूँ। ललितादि मैया यशोदाके घर बहुत-से पकवान आदि लेकर गयी हुई हैं। प्यारे श्यामसुन्दरके लिये रानीने बहुत-सी भोजन-सामग्री बनायी थी, वही लेकर गयी हुई हैं। नीचे एक-दो मञ्जरी और हैं, पर रानीके पास इस समय एक वही मञ्जरी है।

कुछ देरतक आँसू बहानेके बाद रानी फिर चुप हो जाती हैं तथा कहती हैं—तू जो वह पद उस दिन मधुर कण्ठसे गा रही थी, आज भी गा।

मञ्जरी गाने लग जाती है—

> ऐसो प्रिये जान न दीजै हो।
> चलो री सखी मिलि राखिये नैनन रस पीजै हो।
> स्याम सलोनो साँवरो मुख देखत जीजै हो॥
> जोइ जोइ भेष सों हरि मिलै सोइ सोइ कीजै हो।
> मीरा के प्रभु गिरिधर नागर बड़भागन रीजै हो॥

|| विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ||

प्रेमाप्लावन लीला

श्रीयमुनासे निकले हुए स्रोतके उद्गमपर तीसों रंगका पुल शोभा पा रहा है। उसी पुलके घेरेपर दक्षिणकी ओर मुख करके झुकी हुई श्रीप्रिया खड़ी हैं। प्यारे श्यामसुन्दरके आनेकी प्रतीक्षामें प्रिया उसी पुलपर बैठी थीं, पर हृदयका प्यार उद्वेलित हो जानेसे बैठी नहीं रह सकीं। घेरेपर शरीरका भार देकर खड़ी हो गयीं तथा उसी पथकी ओर देखने लगीं जिससे श्यामसुन्दरके आनेकी सम्भावना है।

रात्रि प्रहरभर व्यतीत हो चुकी है। आज कृष्णपक्षकी प्रतिपदा है, फिर भी चन्द्रदेव काफी ऊपर उठ चुके हैं। चन्द्रबिम्ब स्रोतके जलमें प्रतिबिम्बित हो रहा है तथा धाराके वेगसे हिल रहा है। उसी हिलते हुए चन्द्रबिम्बकी ओर रानीकी दृष्टि चली जाती है। रानीकी दृष्टिमें श्यामसुन्दरकी त्रिभङ्गी मोहिनी छवि बसी हुई है, इसलिये उनको उस चन्द्रबिम्बमें भी प्यारे श्यामसुन्दर ही दीख पड़ रहे हैं। वही चिर परिचित हँसता हुआ मुखारविन्द रानीको स्रोतके निर्मल जलमें नाचता हुआ दीख रहा है।

पासमें बायीं ओर विशाखा खड़ी हैं। रानी हाथ बढ़ाकर विशाखाका दाहिना हाथ पकड़ लेती हैं। हाथकी एक-एक अँगुलीको क्रमसे स्पर्श करती हैं, फिर कुछ हँसकर कहती हैं—विशाखे! तू जानती है, श्यामसुन्दरको नाचना किसने सिखाया?

विशाखा भी कुछ हँसकर उत्तर देती हैं—तुम्हारी आँखोंने।

रानी विशाखाके हाथको झकझोरती हुई कहती हैं—मैं तुमसे सची बात पूछ रही हूँ और तू विनोद कर रही है।

विशाखा बायें हाथसे रानीके दाहिने कंधेको पकड़ लेती हैं तथा मुस्कुराकर कहती हैं—विनोद नहीं, मैंने बिल्कुल सच्ची बात कही है।

यह सुनकर रानी कुछ देरतक चुप हो जाती हैं तथा एक बार गगनस्थित चन्द्रको एवं एक बार स्रोतके जलमें प्रतिबिम्बित बिम्बको

देखती हैं। पुनः दोनों जगह ही रानीको श्यामसुन्दरका मुख दीखता है। अब रानी कहती हैं—किसने नाचना सिखाया, मैं बताऊँ ?

विशाखा—बता !

रानी जलमें प्रतिबिम्बित बिम्बकी ओर अँगुलीसे संकेत करके कहती हैं—उधर देख।

विशाखा उधर ही देखती हैं। रानी भी दृष्टि गड़ाकर देखती हैं। इस बार रानीको स्रोतका जल एवं चन्द्रबिम्ब सर्वथा नहीं दीखता। उन्हें स्पष्ट प्रतीत होता है कि स्रोतकी बालुकापर अपने अङ्गोंको हिलाते हुए श्यामसुन्दर खड़े हैं। रानी झटपट बोल उठती हैं—अरे ! वे तो आ गये !

रानीकी यह बात सुनकर विशाखा खिलखिलाकर हँस पड़ती हैं। उसे हँसती देखकर रानी लजा जाती हैं तथा यह समझने लगती हैं कि मुझे भ्रम हो गया था, यह इसलिये ही हँस रही है !

यमुनाकी धारा झर-झर करती हुई स्रोतकी राहसे प्रवाहित हो रही है। रानी अब उस फेनिल (फेनसे भरी हुई) धाराकी ओर देखने लगती हैं। कुछ देर देखती रहती हैं। दृष्टि फेनपर है, पर मन भावोंकी तरंगोंमें डूबकर किसी सुदूर नीरव शान्त निकुञ्जमें प्रियतम श्यामसुन्दरके साथ विनोद करनेका अनुभव कर रहा है। विशाखा चाहती है कि यह विशेष गम्भीर चिन्तामें न डूबे। इसलिये रानीकी ठोड़ीको हिलाकर कहती हैं—क्यों, बोलती नहीं ? चुप क्यों हो गयी ?

रानी भाव-राज्यसे नीचे उतर आती हैं तथा भाव छिपानेके उद्देश्यसे हँसने लगती हैं। फिर कुछ सोचकर कहती हैं—चल, पुलके नीचे चलें।

अब रानी विशाखाका हाथ पकड़े हुए खींचती हुई-सी पश्चिमकी ओर चलने लगती हैं। पुलकी सीमा आनेपर दक्षिणकी ओर मुड़कर सुन्दर सीढ़ियोंपर पैर रखती हुई पुलके नीचे स्रोतके जलके पास पहुँच जाती हैं तथा जलको स्पर्श करती हुई सीढ़ीके ऊपरवाली सीढ़ीपर बैठ जाती हैं। विशाखा श्रीप्रियाकी बायीं ओर खड़ी रहती हैं, अवश्य ही रानीके द्वारा दाहिना हाथ पकड़े रहनेके कारण कुछ झुक-सी गयी हैं।

चन्द्रमाकी शुभ्र किरणें जलपर, जलके फेनपर, सीढ़ियोंपर एवं रानीके मुखारविन्दपर पड़ रही हैं। पुलके नीचेसे आनेके कारण धारा मँडराकर कभी-कभी भँवरका आकार धारण कर लेती है। फेनके बुलबुले नाचते हुए सीढ़ियोंसे टकराते हैं एवं विलीन हो जाते हैं। रानी हाथपर बुलबुलोंको उठा लेती हैं। हाथपर आते ही वे बुलबुले विलीन हो जाते हैं। बात यह थी कि उन बुलबुलोंमें भी रानीको प्यारे श्यामसुन्दरकी छवि दीखती है। रानीका प्यारभरा हृदय भोली बालिकाके हृदय-जैसा बन जाता है, इसलिये बुलबुलोंको उठानेके लिये बार-बार हाथ बढ़ाती है।

विशाखा हँसती हुई कहती है—क्या कर रही है?

रानी विशाखाके हाथको झटका देकर उन्हें पासमें बैठा लेती हैं तथा एक आशाभरी मुद्रामें कहती हैं—अच्छा, तू उठा तो सही। सम्भवतः तेरे हाथपर बुलबुले आ जायँ।

विशाखा राधारानीके प्रेमभरे हृदयका अनुमान लगा लेती हैं और कहती है—मैं उठा लूँगी तो क्या देगी?

रानी चटपट बोल उठती हैं—तू जो कहेगी, वही दूँगी।

विशाखा हँसती हुई अपने दोनों हाथोंकी अञ्जलिमें फेनका जल उठा लेती हैं। दोनों हाथोंमें उठानेके कारण विशाखाकी अञ्जलिमें बुलबुले कुछ क्षण बने रहते हैं। रानी उनमें प्यारे श्यामसुन्दरकी छवि स्पष्ट देख पाती हैं तथा देखकर आनन्दमें निमग्न हो जाती हैं। विशाखा हँसती हुई तुरंत अञ्जलिसे जल गिरा देती हैं और कहती है—देख, मैंने बुलबुले उठा लिये न!

रानी प्रेममें भरकर विशाखाको हृदयसे लगा लेती हैं। फिर विशाखाके अञ्चलसे अपना दाहिना हाथ पोंछती हुई रानी उठकर दो सीढ़ी ऊपर चढ़ जाती हैं तथा नीचेकी सीढ़ीपर पैर लटकाकर बैठ जाती हैं। विशाखा रानीकी दाहिनी ओर चली आती हैं तथा उनके पासमें बैठ जाती हैं। कुछ मञ्जरियाँ एवं तुङ्गविद्या, इन्दुलेखा, चम्पकलता सीढ़ियोंसे उतरती हुई इसी समय वहाँ आ जाती हैं तथा रानीको घेरकर इधर-उधर बैठ जाती हैं। चित्रा रानीकी पीठके पास बैठी हैं। वे गर्दन

घुमाकर एक बार पीछे देखती हैं तथा चित्राको बैठी देखकर कहती हैं—अच्छा, तू आ गयी। अब एक कथा सुना।

चित्रा कहती है—सायंकाल हमलोगोंके पीछेसे तू जो सुन रही थी, उसे ही पूरा होने दे।

चित्राकी बात सुनकर रानी अतिशय उल्लासमें भरकर कहती हैं—हाँ, हाँ, उसे सुना! बहुत ठीक याद दिलायी।

चित्रा एक मञ्जरीको पुकारती हैं। मञ्जरी ऊपर बैठी हुई पुष्पोंकी माला बना रही थी। पुकार सुनते ही डलिया हाथमें लिये ही दौड़ पड़ती है तथा ऊपरकी सीढ़ीपर खड़ी होकर पूछती है—क्यों चित्रारानी! मुझे पुकारा है क्या?

उसकी बोली सुनकर राधारानी अतिशय प्यारसे कहती हैं—हाँ, हाँ, इधर आ।

मञ्जरी डलिया रख देती है तथा रानीके सामने आकर खड़ी हो जाती है। रानी हाथ पकड़कर उसे बैठा लेती हैं। मञ्जरी नीचेकी सीढ़ीपर बैठ जाती है। रानी अपने दोनों हाथ उसके गलेमें डाल देती हैं। कुछ क्षण उसके मुखकी ओर देखती रहती हैं, फिर प्यारमें भरकर उसके होठोंको चूम लेती हैं। मञ्जरी प्रेममें डूब जाती है। उसकी आँखोंसे प्रेमके आँसू बहने लगते हैं। रानी अपने अञ्चलसे उसकी आँखें पोंछने लगती हैं। कुछ क्षण वहाँ एक भाव भरी नीरवता-सी छा जाती है। अब रानी अतिशय उत्कण्ठाके स्वरमें कहती हैं—हाँ, अब आगे सुना।

मञ्जरी अपना बायाँ हाथ श्रीप्रियाके दाहिने जंघेपर रख देती है तथा प्रियाके मुखारविन्दकी ओर देखती हुई कहना प्रारम्भ करती है—रानी! फिर मैं साहस करके उद्यानके भीतर प्रवेश कर गयी। कुछ दूर दक्षिणकी ओर बढ़ती चली गयी। आगे बढ़नेपर देखती हूँ कि मल्लिका पुष्पोंकी अतिशय सुन्दर क्यारियाँ लगी हैं। टहनियाँ पुष्पोंसे लद रही हैं। मैं आनन्दमें भर गयी। बायें हाथसे अञ्चलकी झोली बनाकर दाहिने हाथसे पुष्पोंको तोड़कर अञ्चलमें रखने लगी। उस समय मेरा मन किसी अनिर्वचनीय सरसतासे उत्तरोत्तर भरता जा रहा था। हृदयमें एक

गुदगुदी-सी हो रही थी। मैं अपने हृदयके भावोंको संवरण करनेमें असमर्थ-सी होने लग गयी। इसलिये भावके वेगको कुछ हल्का करनेके लिये मैं मधुर कण्ठसे गाने लगी—

> चालाँ वाही देस प्रीतम पावाँ चालाँ वाही देस।
> कहो कसूमल साड़ी रँगावाँ कहो तो भगवाँ भेस॥
> कहो तो मोतियन माँग भरावाँ कहो छिटकावाँ केस॥ —मीरा

मैं बार-बार आवृत्ति करने लगी—'कहो तो मोतियन माँग भरावाँ, कहो तो मोतियन माँग भरावाँ, कहो छिटकावाँ केस, कहो छिटकावाँ केस'। साथ ही पुष्प भी तोड़ती जा रही थी। उसी समय मेरी आँखें पश्चिम एवं दक्षिणकी ओर चली गयी। मैं देखती हूँ कि मुझसे केवल दस-बारह हाथ दूर एक वन्य वृक्षके नीचे प्यारे श्यामसुन्दर खड़े हैं तथा प्यारभरी दृष्टिसे मेरी ओर देख रहे हैं। श्यामसुन्दरको वहाँ खड़े देखकर मैं लज्जित हो गयी। जीवनमें अकेलेमें श्यामसुन्दरके दर्शनका यह प्रथम अवसर था।...

प्यारे श्यामसुन्दर मधुर कण्ठसे बोले— री! तू तो बहुत सुन्दर गाती है।

श्यामसुन्दरके मुखसे यह सुनकर मैं और भी लज्जित हो गयी। कुछ भी बोल नहीं सकी। प्यारे श्यामसुन्दरने अतिशय सरलतासे पूछा—इस समय यहाँ पुष्प क्यों तोड़ रही है?

मैं धीरेसे बोली—रानीने ही पुष्प तोड़ लानेके लिये कहा है, इसलिये आयी हूँ।

रानी! तुम्हारा नाम सुनते ही प्यारे श्यामसुन्दरकी आँखोंमें आँसू भर आये; पर उन्होंने उसे छिपा लेना चाहा। शीघ्रता पूर्वक पीताम्बरसे अपना मुँह पोंछनेके बहानेसे आँसू पोंछ लिये, फिर बोले—इधर आ, एक बात सुन।

रानी! प्यारे श्यामसुन्दरके उस स्वरमें कुछ ऐसी अद्भुत मधुरता थी, उस ध्वनिसे कुछ ऐसा निर्मल प्रेम टपक रहा था कि मैं अपनी सुध-बुध खोने लग गयी। यह स्मरण था कि प्यारे श्यामसुन्दरने मुझे बुलाया है;

पर पैर भूमिसे नहीं हटते थे मानो वे भूमिसे सर्वथा चिपके हुए हों। पुनः श्यामसुन्दरकी कण्ठ-ध्वनि सुनायी पड़ी—क्यों, नहीं आयेगी ?

अब अपनेको सँभाल नहीं सकी। भूमिपर वहीं बैठ गयी। बैठते ही मूर्च्छित हो गयी। मुझे यह भी ज्ञान नहीं रहा कि यहाँ क्या हो रहा है ! कुछ देर बाद चेतना आयी। मैं देखती हूँ कि प्यारे श्यामसुन्दर पासमें खड़े हैं। वे मन्द-मन्द मुस्करा रहे हैं। मेरा अञ्चल पुष्पोंसे भरा है। मैं आश्चर्यसे श्यामसुन्दरकी ओर देखती हुई सोचने लगी कि मैं तो बहुत कम पुष्प तोड़ पायी थी, इतने पुष्प मेरे अञ्चलमें कैसे आ गये। मैं सरलतासे प्यारे श्यामसुन्दरसे पूछ बैठी—इतने पुष्प कहाँसे आ गये ?

श्यामसुन्दर खुलकर हँसने लगे; फिर बोले—बावली ! तू आयी थी पुष्प तोड़ने और यहाँ नींद लेने लग गयी ! अपनी रानीके पास खाली हाथ जाती और रानीसे सब बातें कहती तो तेरी रानी मुझे उपालम्भ देती कि तुम्हारे कारण उसे खाली हाथ लौटना पड़ा, तुमने उसे खाली हाथ लौटा दिया। इसलिये मैंने पुष्प तोड़कर तुम्हारे अञ्चलमें रख दिये। तेरा कार्य कर दिया।

प्यारे श्यामसुन्दरकी बात सुनकर मैं पुनः प्रेममें विभोर होने लग गयी। वे खड़े रहकर सरल हँसी हँस रहे थे। मैं एकटक उनकी ओर देखती जा रही थी। फिर कुछ देर बाद इच्छा न होने पर भी ऊपरसे बोली—तो मैं अब जाती हूँ।

प्यारे श्यामसुन्दर बोले—अरी ! मैंने तेरा काम कर दिया, फिर इतनी शीघ्रतासे कृतघ्न बन गयी !

मैं हँस पड़ी और हँसती हुई बोली—बोलो, बदलेमें क्या चाहते हो ?

प्यारे श्यामसुन्दरने कहा—तू भी मेरा एक काम कर दे।

मैं अब खिलखिलाकर हँस पड़ी। अब संकोच कम हो गया था। श्यामसुन्दरने फिर कहा—पर इस बातको कोई जानने न पावे।

मैं बोली—पहले काम तो बताओ।

श्यामसुन्दरने हँसकर कहा—बता, किसीसे बतायेगी तो नहीं ?

मैं बोली—यह पहले कैसे कह दूँ ?

श्यामसुन्दर इस बार कुछ गम्भीर होकर बोले—सचमुच तेरेसे एक काम लेना है। तू विनोद मत समझ।

मैं भी गम्भीर होकर बोली—मैं कहाँ विनोद समझ रही हूँ।

श्यामसुन्दर अतिशय प्रेमसे बोले—देख, संध्या समय गोष्ठमें जहाँ बैठकर मैं वंशी बजाऊँगा, उसके ठीक सामने दक्षिणकी तरफ यमुना-तटपर एक घड़ी रात बीत जानेपर तू आ जाना। वहाँ तुझे सुबल खड़ा मिलेगा। वह तुझे जो दे, उसे तू अपनी रानीको ले जाकर दे देना। समझी ?

मैं बोली—अच्छी बात है।

श्यामसुन्दर—पर उसके पहले तुमसे एक वस्तु लेनी है।

मैं—कैसी वस्तु ?

श्यामसुन्दर—तू देगी तो ?

मैं कुछ सोचकर बोली—हाँ, दे दूँगी।

श्यामसुन्दर—तेरे पास एक अँगूठी है न ?

मैं—मेरे पास तो बहुत-सी अँगूठियाँ हैं।

श्यामसुन्दर हँसकर बोले—मैं उसकी बात कह रहा हूँ, जिसके नगमें तेरी रानीका चित्र अङ्कित है।*

मैं—तो फिर ?

श्यामसुन्दर—तू मुझे वह दे दे।

मैं—बहुत ठीक, दे दूँगी; पर तुम लेकर क्या करोगे ?

यह सुनते ही श्यामसुन्दरकी आँखें भर आयीं। वे बोलने चले, पर बोल नहीं सके, उनका गला रुँध गया। कुछ क्षणोंके बाद गद्गद कण्ठसे

---

* मञ्जरीकी उस अँगूठीमें राधारानीका एक सुन्दर चित्र इस ढंगसे जड़ा हुआ है कि उसे आँखके पास ले जाकर देखनेसे वस्तुतः ऐसा दिखलायी देता है कि मानो सचमुच साक्षात् रानी सामने खड़ी हो; पर वह अनजानको नहीं दीख सकता। जो उसे देखनेकी कला जानता हो, उसे ही दीखेगा।

बोले—देख, जितनी देर तेरी रानी पास रहती है, उतनी देर तो इस संसारको ही नहीं, अपने-आपतकको भूला रहता हूँ; पर प्रियाके जाते ही मन विक्षिप्त हो जाता है। आँखोंसे चारों ओर केवल प्रिया-ही-प्रिया दीखने लगती हैं। आवेशमें आकर प्रियाको हृदयसे लगाने बढ़ता हूँ, पर जितना आगे बढ़ता हूँ, मेरी प्रियाकी वह छवि पुनः उतनी ही दूर आगे हटकर खड़ी प्रतीत होने लगती है। इस प्रकार बहुत बार करनेपर समझ पाता हूँ कि नहीं, यह मेरा भ्रम है। मेरी प्रिया होतीं तो मुझे व्याकुल नहीं देख सकतीं। मैं हताश होकर बैठ जाता हूँ; पर मेरे प्राण और भी अधिक छटपटाने लगते हैं। कुछ भी उपाय नहीं सूझता। आज रूपने तेरी उस अँगूठीकी चर्चा की थी। उसे सुनकर मैं सोचने लगा कि यदि तू वह अँगूठी दे दे तो फिर उस अँगूठीको ही हृदयसे लगा-लगा करके अपनी विरह-व्यथा कम करता रहूँगा।

प्यारे श्यामसुन्दरकी बात सुनकर मैं स्वयं प्रेमसे रोने लग गयी। रोती हुई, अपनी अँगुलीसे अँगूठी उतारकर प्यारे श्यामसुन्दरकी अँगुलीमें पहनाने चली। मेरा सारा शरीर काँप रहा था। बड़ी कठिनतासे धैर्य धारण करके मैंने प्यारे श्यामसुन्दरकी अँगुलीमें अपनी अँगूठी पहना दी। पहनाकर अलग हटकर खड़ी हो गयी।

प्यारे श्यामसुन्दरने गद्गद कण्ठसे कहा—तुमने आज मुझे मोल ले लिया!

प्यारे श्यामसुन्दरके मुखसे यह सुनकर मेरा हृदय और भी कातर हो गया। मैं मन-ही-मन सोचने लगी—प्यारे श्यामसुन्दर यह क्या कह रहे हैं? रानीके अणु-अणुपर, रानीसे सम्बद्ध समस्त वस्तुओंके अणु-अणुपर उनका अनादिसिद्ध अधिकार है। अँगूठी ही नहीं, उसके साथ-साथ मेरा अणु-अणु उनका ही है। अपनी वस्तु लेनेमें प्यारेको संकोच क्यों हुआ!

रानी! यह सोचते-सोचते मैं इतनी अधीर हो उठी कि मेरे लिये खड़ी रहना असम्भव हो गया। मैं बैठ गयी। मेरी आँखोंसे झर-झर करते हुए आँसू बह रहे थे। प्यारे श्यामसुन्दर बैठ गये। अपने पीताम्बरसे मेरे आँसू पोंछने लगे। कुछ देर बाद मुझे धैर्य हुआ। प्यारे श्यामसुन्दरने इस बार मुस्कुराकर कहा—देख! तुझे ज्ञान नहीं। दिन बहुत अधिक

ढल चुका है। मुझे बहुत विलम्ब हो गया है। तेरी रानी तुम्हारी बाट देख रही होगी। अब शीघ्र जाकर पुष्प दे दे।

प्यारे श्यामसुन्दरकी यह बात सुनकर मुझे चेत हुआ। मैं तुरंत ही खड़ी हो गयी। प्यारे श्यामसुन्दरने कहा—मेरे पीछे चली चल। मैं तुम्हें यमुना-तटपर पहुँचा दूँगा, नहीं तो तू पुनः रास्ता भूल जायेगी।

वे आगे-आगे चलने लगे और मैं पीछे-पीछे चल पड़ी। थोड़ी देरमें ही यमुना-तटपर आ पहुँची। वहाँ पहुँचकर वे मेरी ओर अतिशय प्यारभरी दृष्टिसे देखने लगे। मैं संकोचवश कभी उनकी ओर देखती, कभी नीचे दृष्टि कर लेती। वे हँसते हुए फिर बोले—बावली! देर हो गयी है, शीघ्र चली जा।

फिर वे हँसते हुए एक झाड़ीके पीछे जाकर सघन वनमें प्रवेश कर गये। कुछ क्षण मैं खड़ी-खड़ी देखती रही। फिर आनन्दमें भरी हुई पुष्पोंको अञ्चलमें लिये हुए शीघ्रतासे लौटी। महलके पास पहुँची तो देखा कि रूपदेवी शीघ्रतासे मेरी ओर दौड़ रही है। पास पहुँचकर रूपदेवी बोली—री! तुमने तो आज बहुत सुन्दर शृङ्गार किया है। मैं तो भ्रममें पड़ गयी। पहचान ही नहीं सकी कि तू है। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि रानी आ रही हैं। मैं घबराकर दौड़ी कि रानी यहाँ इस समय कैसे आ गयीं। पास आनेपर देखा कि ना, रानी नहीं, तू है।

अब रूपदेवी मुझपर प्यारकी वर्षा करने लगी। कुछ क्षण एकटक मेरी ओर देखती रहनेके बाद उन्होंने मुझे हृदयसे लगा लिया। वह मेरे सिरपर हाथ फेरने लगी। मेरा अञ्चल खिसक गया। रूपदेवी पुनः चकित स्वरमें बोली—महा आश्चर्य! तू तो हम सबकी अपेक्षा भी चतुर हो गयी? इतनी सुन्दर वेणी तो मैं भी नहीं बना सकती।

रूपदेवीकी बात सुनकर मैं पुनः विचारमें पड़ गयी और सोचने लगी—अयँ! यह कैसे हो गया? मैं तो स्नान करके कपड़े पहनकर कञ्चुकी कसती हुई तुरंत चल पड़ी थी। रानीने कहा था कि नहाकर तुरंत चली जा; इसलिये केशोंको भी भीगे छोड़कर उन्हें पीठपर बिखेरकर दौड़ पड़ी थी। फिर किसने वेणी बनायी? किसने पुष्प खोंसे? किसने

सब अङ्गोंका शृङ्गार किया ! ओह ! जब मैं मूर्च्छित हो गयी थी, उस समय प्यारे श्यामसुन्दरने मेरे अञ्चलमें फूल भर दिये थे। अहा ! निश्चय ही उन्होंने उस समय मेरे केश भी सँवारे, मेरी वेणी बनायी एवं मुझे सजाया।

यह सब सोचकर मैं प्रेममें डूब गयी। रूपदेवीको सारी बातें सुना दी। सुनकर रूपदेवीकी आँखोंसे प्रेमके आँसू बह निकले। उसने मुझे पुनः हृदयसे लगा लिया एवं बार-बार मेरे होठोंको चूमने लग गयी। फिर वह बोली—चल, तुझे रानीके पास ले चलूँ। तू आज सायंकाल रानीको सब सुना देना।

रूपदेवीके साथ मैं तुम्हारे पास आयी। मुझे देखते ही तुम्हें प्यारे श्यामसुन्दरकी अङ्ग-गन्ध मिली और तुम मूर्च्छित............।

मञ्जरी यह कह ही रही थी कि रानीने अपने दोनों हाथ बढ़ाकर उस मञ्जरीको हृदयके पास खींच लिया। रानीकी दशा प्रेमके कारण कुछ विचित्र-सी हो गयी। वह मञ्जरीको मानो अपने हृदयके भीतर घुसा लेना चाहती हो, इस प्रकार उसे कसकर हृदयसे चिपटा लिया। मञ्जरी रानीके हृदयसे लगकर प्रेममें इतनी तल्लीन हो गयी कि अब उससे कुछ भी बोला नहीं जाता था। सभी सखियाँ एवं अन्य मञ्जरियाँ भी सुनती-सुनती प्यारे श्यामसुन्दरके ध्यानमें इतनी तल्लीन हो गयीं कि अधिकांश बाह्य ज्ञान खो बैठीं।

इसी समय ललिता एवं अन्यान्य मञ्जरियोंके साथ प्यारे श्यामसुन्दर घाटपर आ पहुँचते हैं; पर यहाँ तो इतनी नीरवता छायी हुई है कि मानो मुनि-मण्डली समाधि लगाये बैठी हो। किसीको यह पता नहीं चला कि प्यारे श्यामसुन्दर आये हैं।

अब श्यामसुन्दर दबे पाँव घाटसे नीचे उतरते हैं। धीरे-धीरे आकर चित्राके बगलमें बैठ जाते हैं तथा अपने दोनों हाथोंसे रानीकी आँखोंको पीछेसे मूँद लेते हैं। रानी अपने प्रियतमका कर-स्पर्श पाकर एक बार तो चौंक जाती हैं, पर फिर सोचती हैं कि किसने आँखें मूँदी हैं ? प्यारे प्रियतम प्राणनाथ तो नहीं हैं ? ना, वे अभीतक सम्भवतः नहीं

आये होंगे। फिर हँसकर उच्च स्वरसे कहती हैं—हाँ, हाँ, पहचान गयी। ललिता ? ना, ना, चित्रा ?

रानी अपने हाथोंको ऊपर उठाकर प्यारे श्यामसुन्दरकी कलाईके पास ले जाती हैं। रानीके हाथ श्यामसुन्दरके कङ्कणसे छू जाते हैं। रानी अकचकाकर उच्च स्वरसे कह उठती हैं—अरे !

अब रानी बल लगाकर हाथोंको आँखोंसे हटाकर देखती हैं। श्यामसुन्दर दीख पड़ते हैं। रानी हँसती हुई शीघ्रतासे खड़ी हो जाती हैं। सभी सखियाँ एवं मञ्जरियाँ भी हँसती हुई खड़ी हो जाती हैं। प्यारे श्यामसुन्दर रानीको हृदयसे लगा लेते हैं। गलबाँही डाले हुए प्रिया-प्रियतम सीढ़ियोंपर पैर रखते हुए स्रोतके घाटके ऊपर चले आते हैं। वृन्दादेवी सबको ऊपरकी एक वेदीपर ले जाती हैं। वेदी अतिशय सुन्दर ढंगसे सजी हुई है। प्रिया-प्रियतम वेदीपर अपने पैर नीचे लटकाकर बैठ जाते हैं। वृन्दा एवं वृन्दाकी दासियाँ सेवामें लग जाती हैं। मधुमतीमञ्जरी वीणाके तारोंको छेड़ती हुई अतिशय सुरीले कण्ठसे गाने लगती हैं—

नंद-कुल-चंद वृषभानु-कुल-कौमुदी, उदित वृन्दा-विपिन विमल अकासे।
निकट वेष्टित सखि-वृंदवर-तारिका लोचन चकोर तिन रूप-रस-प्यासे॥
रसिक-जन-अनुराग-उदधि तजि मरजाद, भाव अगनित कुमुदिनी-गन-विकासे।
कहि गदाधर सकल विस्व असुरनि बिना, भानु भव ताप अग्यान न बिनासे॥

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

निशानुरञ्जन लीला

श्रीयमुना-पुलिनपर प्रिया-प्रियतम घूम रहे हैं। सखियोंकी टोली आगे-पीछे तथा दाहिने-बायें घेरे हुए चल रही है। श्यामसुन्दरने बायें हाथसे श्रीप्रियाजीकी कमरके दाहिनी ओरके अञ्चलके एक छोरको पकड़ रखा है तथा प्रियाजी श्यामसुन्दरके बायें कंधेको दाहिने हाथसे पकड़े हुई हैं एवं बायें हाथसे कमलका पुष्प डंटीके सहारे पकड़कर घुमाती जा रही हैं। श्यामसुन्दरके दाहिने हाथमें सोनेकी बनी हुई मुरली है। इस प्रकार प्यारसे सने हुए दोनों एक-दूसरेकी ओर बीच-बीचमें झुकते हुए वनकी शोभा निहारते हुए बढ़ रहे हैं। मुख्य रूपसे पूर्वकी ओर बढ़ रहे हैं, पर पुष्पोंका चयन करते हुए पथ छोड़कर कभी उत्तरकी ओर एवं कभी दक्षिणकी ओर मुड़ जाते हैं।

चन्द्रदेवकी शुभ्र चाँदनीसे वन जगमग-जगमग कर रहा है। श्रीप्रिया एवं सभी सखियाँ चम्पई रंगकी रेशमी साड़ियाँ पहने हुए हैं। साड़ियोंकी ज्योतिसे चन्द्रमाकी किरणोंका संयोग होकर एक विचित्र ही आभा फैल रही है। श्यामसुन्दर धोती पहने हुए हैं तथा उनके कंधेपर दोनों ओर लटकती हुई गाढ़े पीले रंगकी चादर शोभा पा रही है। चादरपर जरीका काम किया हुआ है, जो चाँदनीमें चमचम कर रहा है। श्रीश्यामसुन्दरके अङ्गसे नीलिमा-मिश्रित एवं श्रीप्रियाके अङ्गसे पीत-युदित शुभ्र ज्योति निकल रही है तथा अत्यन्त मनमोहक सुगन्धि बढ़-बढ़कर वन्य पुष्पोंकी सुगन्धिको अनन्त गुना बना रही है।

शीतल-मन्द-सुगन्धित पवन प्रवाहित हो रहा है। पवनके झोंकोंसे चम्पा, स्थल-कमल एवं विभिन्न पुष्पोंके वृक्ष हिल रहे हैं। हिल-हिलकर वे सभी अत्यन्त उतावलीसे प्रिया-प्रियतमको बुला रहे हैं और प्रार्थना कर रहे हैं—आओ, मेरे जीवन-सर्वस्व! तुम्हारे लिये ही पुष्पोंकी डाली सजा रखी है। अपने प्यारभरे हाथोंसे इस उपहारको ग्रहण करो!

प्रिया-प्रियतम, दोनों ही वृक्षोंकी मूक भाषाकी प्रार्थना सुनते हैं और

पुलिन-पथके प्रत्येक पुष्प-वृक्षके पाँच-सात पुष्पोंका चयन करके एक-दोको सूँघ करके गुणमञ्जरीकी डलियामें उन्हें धीरेसे रख देते हैं। कभी श्यामसुन्दर प्रियाजीको खींचते हैं, खींचते-से ले जाते हैं तथा कभी प्रियाजी श्यामसुन्दरको खींचती हुई ले जाती हैं। किसी वृक्षके पास पहुँचकर प्रियाजी आनन्दमें भरकर उन्मुक्त कण्ठसे हँस पड़ती हैं तथा वृक्षकी फूलोंसे लदी हुई किसी शाखाको झुकाकर श्यामसुन्दरके मुँहके पास ले जाती हैं। ऐसा करनेपर श्यामसुन्दर अत्यन्त प्यारसे श्रीप्रियाकी ठोडीको छूकर हँसते हुए उस शाखासे एक-दो पुष्प तोड़कर श्रीप्रियाके सिरपर रख देते हैं। श्रीप्रिया उसी पुष्पको श्यामसुन्दरके कंधेपर रख देती हैं तथा फिर सिर झुकाकर मुस्कुराने लगती हैं। इस प्रकार कभी कुछ एवं कभी कुछ क्रीड़ा करते हुए प्रत्येक वृक्ष-लता आदिको छू-छूकर उनका आनन्दवर्द्धन करते हुए पूर्व दिशाकी ओर बढ़ते चले जा रहे हैं।

मयूरोंकी टोली आनन्दमें भरकर पंख फैलाकर नृत्य कर रही है। श्यामसुन्दरको खींचती हुई श्रीप्रिया किसी टोलीके पास आ पहुँचती हैं। उनके पास पहुँचते ही मयूरगण 'को-ओं, को-ओं' बोलते हुए प्रिया-प्रियतमकी प्रदक्षिणा करने लगते हैं। श्यामसुन्दर कहते हैं—मयूरो! मेरी तरह रास-नृत्य करके दिखाओ तो सही!

इतना कहते ही मयूरी एवं मयूरका एक जोड़ा खड़ा हो जाता है। उसे घेरकर मण्डलाकार मयूरी एवं मयूरका दल खड़ा हो जाता है। फिर मध्यमें स्थित मयूरी प्रियाजीकी ओर देखकर सिर नवाती है एवं मयूर श्यामसुन्दरकी ओर सिर नवाता है। फिर मयूर कुछ संकेत-सा करता है। श्यामसुन्दर हँस पड़ते हैं तथा कहते हैं—हाँ-हाँ, मैं मुरली बजाता हूँ, तुम नृत्य आरम्भ करो।

श्यामसुन्दर मुरली होठोंसे लगाकर तान छेड़ते हैं। तानके चढ़ाव-उतारकी गतिपर मयूरी-मयूरोंका दल पैरोंको ठीक प्रकारसे नचाते हुए मध्य-स्थित मयूरी-मयूरके जोड़ेके चारों ओर घूमने लगता है। मध्य-स्थित मयूरी एवं मयूर, दोनों अपने चोंचोंको मिलाकर वहीं अपने स्थानपर ही मुरलीके सुरके अनुसार थिरकते हुए घूम रहे हैं। श्यामसुन्दर एवं प्रियाजीका मुख इस समय दक्षिणकी ओर है तथा सखियाँ मयूर-मण्डलीको चारों ओरसे घेरे हुए क्रीड़ा देख रही हैं। श्रीप्रिया खिलखिलाकर हँस

पड़ती हैं। गुणमञ्जरीके पास पुष्पोंसे भरी हुई जो डलिया है, उसमेंसे रानी अपनी दोनों अञ्जलिमें पुष्प भर लेती हैं तथा इस प्रकार बिखेरती हैं कि सभी मयूरी-मयूरोंपर एक-दो पुष्प अवश्य गिरते हैं। पुष्प गिरते ही मयूरोंका दल आनन्दमें विह्वल होकर कलरव करने लगता है। सखियाँ एवं प्रियाजी और भी हँसने लगती हैं और सारा वन गूँजने लग जाता है। इस प्रकार सखियाँ एवं प्रियाजी हँसते-हँसते लोट-पोट होने लगती हैं। श्रीप्रिया अत्यधिक हँसती हुई और श्यामसुन्दरकी पीत चादरको झटकती हुई वहीं उनके चरणोंके पास बैठकर लोट-पोट होने लगती हैं। श्रीप्रियाके बैठते ही श्यामसुन्दर भी वहीं धीरेसे बैठ जाते हैं, पर मुरली बजाना बंद नहीं करते। इसपर प्रियाजी खिलखिलाकर हँसती हुई, दाहिने हाथसे श्यामसुन्दरका बायाँ कंधा पकड़कर, बायें हाथसे मुरलीको होठोंसे हटा देती हैं। अब श्यामसुन्दर भी अत्यधिक हँसने लगते हैं। मुरली बंद होते ही मयूरी-मयूरोंका दल नृत्य बंद करके चुपचाप खड़ा हो जाता है, पर सखियोंके तथा प्रिया-प्रियतमके हँसनेका एवं मयूरोंके कलरवका तार कुछ क्षणोंतक टूटता नहीं। कुछ क्षणके बाद श्यामसुन्दर पहले सँभलते हैं, फिर प्रियाजी हँसी सँभालती हैं तथा अन्य सभी सखियाँ भी। अब जो सखियाँ मण्डलाकार खड़ी थीं, वे दौड़-दौड़ करके श्यामसुन्दर एवं प्रियाजीके पास आकर खड़ी हो जाती हैं। अभी भी बीच-बीचमें कोई-कोई सखी हँस पड़ती है। फिर कुछ क्षणके लिये नीरवता छा जाती है। अब इस नीरवताको भंग करके मुस्कुराते हुए श्यामसुन्दर कहते हैं— प्रिये! मयूरी-मयूरोंको नृत्यका पुरस्कार दो!

राधारानी मुस्कुराती हुई खड़ी हैं। श्यामसुन्दरकी बात सुनकर वे हँस पड़ती हैं। तत्पश्चात् वे गुणमञ्जरीको कुछ संकेत करती हैं। गुणमञ्जरी अपने हाथकी पुष्पोंवाली डलिया रूपमञ्जरीको पकड़ा देती है तथा वहाँसे दक्षिणकी ओर दौड़कर चली जाती है। मयूरी-मयूरोंका दल अब कुछ शान्त-सा हो जाता है तथा अपने पंखोंको कभी फैलाता एवं कभी समेटता हुआ पूर्वकी ओर मुख करके एक पंक्तिमें खड़ा हो जाता है। गुणमञ्जरी एवं वृन्दादेवीकी दासियाँ इसी समय सोनेकी छः परातोंमें मिठाइयाँ लेकर आ पहुँचती हैं। मिठाइयाँ पीले रंगकी हैं तथा उनपर सोने एवं चाँदीके वरक चढ़ाये हुए हैं। मिठाईकी एक परात गुणमञ्जरी उठाती है। श्यामसुन्दर एवं श्रीप्रिया, दोनों मयूरोंकी पंक्तिके पास

जाकर खड़े होते हैं। श्यामसुन्दरकी बायीं ओर श्रीप्रिया हैं एवं श्रीप्रियाकी बायीं ओर गुणमञ्जरी मिठाईवाली परात लिये खड़ी है। श्रीप्रिया अपने हाथसे परातमेंसे मिठाई लेकर श्यामसुन्दरके हाथमें देती हैं तथा श्यामसुन्दर मयूरोंको खिलाना प्रारम्भ करते हैं। सखियाँ इस समय ऐसा देखती हैं कि प्रत्येक मयूरी एवं मयूरके पास श्यामसुन्दर खड़े होकर एक साथ ही सबको अत्यन्त प्यारसे खिला रहे हैं। मिठाई खिलाते हुए बीच-बीचमें मयूरी-मयूरोंके सिरपर अपना बायाँ हाथ रखकर उन्हें सहलाते हैं। इस प्रकार कुछ देरतक उन्हें खिलाकर फिर सोनेके कटोरेमें जल भरकर जल पिलाते हैं और अपने पीताम्बरसे मयूरोंकी चोंचोंको पोंछते हैं।

उन्हें खिला-पिलाकर सखियोंकी मण्डलीके सहित पहलेकी तरह ही श्रीप्रियाके अङ्गसे सटे हुए श्यामसुन्दर पूर्वकी ओर बढ़ते हैं। जिस समय ऊँचे-ऊँचे वृक्षोंके पास वे आते हैं, उस समय वृक्ष अपनी डालियोंको हिला-हिलाकर पुष्पोंकी वर्षा करने लगते हैं। श्रीप्रिया अपना अञ्चल तथा श्यामसुन्दर अपना पीताम्बर फैला देते हैं। क्षणभरमें ही ऊपरसे गिरे हुए पुष्पोंसे अञ्चल एवं पीताम्बरकी झोली भर जाती है। उसे वे दोनों ही मञ्जरियोंकी डलियोंमें उड़ेल देते हैं। भौंरे गुन-गुन करते हुए चारों ओर मँडरा रहे हैं। कभी-कभी एक-दो भ्रमर श्यामसुन्दरके एवं प्रियाके गलेमें झूलती हुई वनमालापर बैठ जाते हैं। सखियाँ उन्हें उड़ा देती हैं। इस प्रकार वृक्ष-लताओंको छू-छूकर उन्हें प्रेममें विभोर बनाते हुए तथा उनके द्वारा दिये हुए पुष्पोंके उपहारोंको ग्रहण करते हुए वे दोनों अत्यन्त विशाल एवं सुन्दर ढंगसे बनी हुई एक गोलाकार वेदीके पास जा पहुँचते हैं।

वेदी संगमरमरकी बनी हुई है। उसका व्यास करीब एक सौ गज है। वेदी भूमिसे एक हाथ ऊँची है। उसके चारों ओर दो-दो हाथके अन्तरपर केलेके वृक्ष लगे हैं तथा प्रत्येक वृक्षके कुछ पत्तोंके आपसमें जुड़ जानेसे मेहराब बन गया है। वेदीके चारों ओर कमलके पुष्पोंसे पिरोकर चार-चार हाथके अन्तरसे चार-चार हाथ लम्बे बेंचके आकारके आसन सजाये हुए हैं। वेदीपर नीली कालीन बिछी है, जिसपर अत्यन्त सुन्दर ढंगसे जरीकी चित्रकारी की हुई है। उसके दक्षिणके भागमें किनारेसे सात-आठ हाथ हटकर अत्यन्त सुन्दर पुष्पोंका बना हुआ सिंहासन है।

बेला-चमेली आदि पुष्पोंका बना हुआ छत्र सिंहासनके पिछले भागको सुशोभित कर रहा है। चन्द्रमाकी किरणोंका प्रवेश होने देनेके लिये चाँदनी तो हटा दी गयी है, पर प्रत्येक केलेके स्तम्भ, जो वेदीके चारों ओर लगे हैं, उनसे सम्बद्ध करते हुए पतली लताओंके द्वारा अत्यन्त विशाल गुम्बद वेदीके ऊपर बना हुआ है। लताओंमें तरह-तरहके पुष्प खिले हुए हैं। गुम्बदके बीचमें अर्थात् शिखरके पास नीचे एवं ऊपर दो मणियाँ जड़ी हुई हैं, जिनकी किरणोंसे अत्यन्त सुन्दर उज्ज्वल शीतल प्रकाश निकल रहा है। वह प्रकाश इतना अधिक है कि दिन-सा हो गया है। वेदी चमचम कर रही है।

इसी वेदीपर श्रीप्रिया-प्रियतम सखियोंकी टोलीके साथ उत्तरकी ओरसे चढ़कर चलते हुए सिंहासनके पास आ जाते हैं। वृन्दादेवी अपने अञ्चलसे सिंहासनको पोंछती है तथा उसपर श्यामसुन्दर एवं राधारानीको हाथ पकड़कर बैठाती हैं। उनके बैठनेपर सखियाँ भी बैठ जाती हैं। ललिताके संकेत करते ही वृन्दाकी दासियाँ तुरंत अनेक प्रकारके वाद्य-यन्त्रोंको, जो वेदीके पश्चिमकी ओर दस गजके अन्तरपर बने हुए छोटेसे निकुञ्जमें रखे थे, ला-ला करके रख देती हैं। जिस प्रकार पश्चिमकी ओर एक निकुञ्ज है, वैसे ही पूर्व एवं दक्षिणकी ओर भी लताओंसे बनी हुई उतनी ही बड़ी एक-एक निकुञ्ज है। उत्तरकी ओर लगभग चालीस गजकी दूरीपर यमुनाजी प्रवाहित हो रही हैं। वेदीके सिंहासनपर बैठे हुए प्रिया-प्रियतम यमुनाकी ओर दृष्टि डालते हैं तथा कभी पीछे स्थित निकुञ्ज ओर।

वृन्दा पनबट्टेसे पान निकालकर प्रियाजीके संकेतके अनुसार श्रीकृष्णको देना चाहती है, पर श्रीकृष्ण पहले प्रियाजीको खिलानेके लिये आग्रह करते हैं। जब प्रियाजी वृन्दाके हाथसे पहले पान नहीं स्वीकार करतीं तो श्रीकृष्ण वृन्दाके हाथसे पान ले लेते हैं तथा बायें हाथसे श्रीप्रियाके कंधेको पकड़े रखकर दाहिने हाथसे पानको राधारानीके होठोंसे लगा देते हैं। रानी लजायी-सी होकर पानको अपने दाँतोंसे थोड़ा पकड़ लेती हैं। उनके ऐसा करते ही श्यामसुन्दर पानको झटक लेते हैं तथा हँसते हुए यह कहकर कि अच्छा, मैं ही पहले खाता हूँ, तुम्हारी ही जीत सही, वह पान अपने मुँहमें रख लेते हैं। प्रियाजीने बड़ी शीघ्रतासे हाथ बढ़ाया, पर उनका हाथ

पहुँचनेके पहले ही पानको श्यामसुन्दरने अपने मुखमें रख लिया।

प्रियाजी तिरछी चितवनसे विहँसती हुई बोलीं—धूर्त………!

इधर सखियाँ हाथोंसे वाद्य-यन्त्रोंका सुर ठीक कर रही हैं; पर उनकी दृष्टि श्यामसुन्दरके मुखारविन्दपर ही टिकी है। प्रियाजीके मुखसे 'धूर्त' शब्द सुनकर सभी खिलखिलाकर हँस पड़ती हैं। श्यामसुन्दर बड़े प्रेमसे कहते हैं—अच्छा, अब ऐसा नहीं करूँगा। तुम्हीने तो वृन्दाको संकेत किया था कि पान पहले मैं खाऊँ। इसलिये कि कहीं तुम रुष्ट न हो जाओ, मैंने पहले खा लिया। अब तुम खा लो।

श्यामसुन्दर वृन्दाके हाथसे बीड़ा लेकर प्रियाजीके मुँहमें देने लगते हैं। प्रियाजी इस बार श्यामसुन्दरका हाथ पकड़े रहती हैं तथा सावधानीसे बीड़ेको अपने मुँहमें धीरे-धीरे ले लेती हैं। इन दोनोंको बीड़ा खिलाकर वृन्दा सभी सखियोंको बीड़ा खिलाने चलती हैं; पर श्यामसुन्दर सिंहासनसे उठकर स्वयं पनबट्टेसे पान निकालते हैं तथा सखियोंको खिलाते हैं। प्रत्येक सखी ऐसा अनुभव कर रही है कि श्यामसुन्दर मुझे पहले पान खिलाने आये हैं, अतः आनन्दमें विह्वल हो जाती है; पर साथ ही नखरेसे यह कहती है—मैं तो अभी सुर ठीक कर रही हूँ। पहले उसे दे आओ, मुझे फिर दे देना।

श्यामसुन्दर अत्यन्त प्यारसे कहते हैं—हाथसे थोड़े ही खाओगी। तू वाद्यका सुर ठीक करती रह। मैं तुम्हारे मुँहमें पान रख देता हूँ।

सखी कहती हैं—धूर्तता तो नहीं करोगे? (अर्थात् राधारानीकी तरह मुँहमें देकर फिर झटककर अपने मुँहमें तो नहीं रख लोगे?)

श्यामसुन्दर हँसकर कहते हैं—सर्वथा नहीं।

तब सखी पान खानेके लिये अपना मुँह खोल देती है और श्यामसुन्दर उसके मुँहमें पान रख देते हैं। उसे पान खिलाकर फिर उसके कपोलोंको अपने दाहिने हाथकी तर्जनीसे छूकर कहते हैं—देखना भला, चूना अधिक हो तो उगल देना।

सखी हँसती हुई कहती है—हाँ, हाँ उगल दूँगी।

इस प्रकार एक साथ ही सबको पान खिलाकर श्यामसुन्दर फिर राधारानीके पास आकर सिंहासनपर बैठ जाते हैं। राधारानीको पान खिलाते समय श्यामसुन्दरने अपनी मुरली सिंहासनपर रख दी थी। वे जब पान खिलाने उठे थे तो राधारानीने उसे उठाकर अपने हृदयसे लगा लिया था। ऐसा करते ही वे समाधिस्थ-सी हो गयी थीं। दृष्टि तो श्यामसुन्दरकी ओर लगी थी, परंतु मुरलीको अपने हृदयसे लगाये हुए चित्रकी तरह बैठी थीं। श्यामसुन्दर जब पुनः सिंहासनपर बैठे, तब भी श्रीप्रिया मुरली दबाये उसी प्रकार बाह्यज्ञान-हीन-सी स्थितिमें बैठी रहीं। श्यामसुन्दर निर्निमेष नयनोंसे श्रीप्रियाकी मुख-शोभा निहारते हुए कुछ देरतक सिंहासनपर शान्त भावसे बैठे रहते हैं। इसी समय दोनोंकी यह अवस्था देखकर ललिता खिलखिलाकर हँस पड़ती हैं। ललिताके हँसनेसे श्यामसुन्दरकी भाव-समाधि शिथिल हो जाती है और वे रानीकी ठोड़ीको दाहिने हाथकी अँगुलियोंसे छूकर कुछ हिलाते हुए-से कहते हैं—प्रिये! आज मुरलीका अहोभाग्य है, कि इसे तूने अपने हृदयसे लगाकर इसकी सारी व्यथा दूर कर दी। मैं जब-जब इस मुरलीको होठोंसे लगाता, तभी मुझसे यह कहा करती कि प्यारे श्यामसुन्दर! तुम मेरे अंदर 'राधा-राधा'की तान जिस समय छेड़ते हो, उस समय राधारानी विकल होकर यह देखनेके लिये दृष्टि उठाती हैं कि तुम कहाँ स्थित रहकर तान छेड़ रहे हो, पर तुम्हें नहीं देखकर वे रो पड़ती हैं और कहती हैं कि कृष्णकी प्यारी मुरलिके! तू तो स्त्री है! स्त्रीके कोमल हृदयमें जब वियोगकी आग भभक उठती है, उस समयकी व्याकुलता कितनी असह्य होती है, बहिन! इसे तू जानती होगी। फिर इस प्रकार मेरी वञ्चना तू क्यों करती है? बहिन! मैं जिधर कान लगाती हूँ, जिस दिशामें कान लगाकर सुनती हूँ, उसी दिशामें तू बजती हुई प्रतीत होती है। मैं निर्णय नहीं कर पाती कि मेरे प्रियतम श्यामसुन्दर किस दिशामें हैं, कहाँपर हैं? ऐसा कहकर राधारानी अत्यन्त व्याकुल हो जाती हैं। इसलिये मेरे प्यारे श्यामसुन्दर! एक बार जब तुम दोनों साथ रहो, तब रानीके हृदयके पास मुझे पहुँचा दो। फिर मैं रानीको इसका वास्तविक रहस्य समझा दूँगी कि रानी! मैं वञ्चना नहीं करती हूँ, अपितु तुम्हारा हृदय ही तुम्हारी वञ्चना करता है। मेरी प्यारी रानी! तुम्हारे इस हृदयमें निरन्तर श्यामसुन्दर बसे ही रहते हैं। एक निमेषके लिये भी यहाँसे नहीं निकलते। यही कारण है कि तुम्हारा

वह हृदय भी श्यामसुन्दरका निरन्तर संग करते-करते श्यामसुन्दरकी तरह तुम्हें ठगने लग गया है। मेरी बात सच है या झूठ, इसकी अभी-अभी जाँच कर लो। देखो, मैं तुम्हारे हृदयको दबाकर बैठी हूँ, तुमने मुझे अपने हाथोंमें ले रखा है, श्यामसुन्दर तुम्हारे बगलमें बैठे हैं, पर तुम्हारा हृदय तुम्हें यह सुझा रहा है कि यहाँसे दूर किसी रमणीय कदम्बकी छाँहमें त्रिभङ्गी होकर श्यामसुन्दर मुरलीमें मेरा नाम गाते हुए मुझे बुला रहे हैं। प्रिये ! मैंने मुरलीको वचन दे रखा था कि आज प्रिया राधासे तुम्हें एक बार हृदयसे लगानेके लिये प्रार्थना करूँगा, सो तुमने बड़ी कृपा की। तुमने मेरे वचनकी रक्षा अपने-आप कर दी। देखना भला, अब बेचारी मुरलिकासे अच्छी तरह पूछ-पूछ करके अपना सारा संदेह मिटा लेना।

श्यामसुन्दरकी वाणी कानोंमें पड़ते ही श्रीप्रियाकी भाव-समाधि कुछ शिथिल तो हो गयी थी, पर वह अभी पूर्णतः टूटी नहीं थी। श्रीप्रिया ठीक उसी प्रकार अनुभव कर रही थीं कि श्यामसुन्दर कुछ दूरपर कदम्बकी छायामें खड़े रहकर मेरे नामकी तान भरते हुए मुझे बुला रहे हैं। अब जब श्यामसुन्दरने बोलना बंद कर दिया, तब श्रीप्रियाको चेत हुआ। उन्होंने देखा कि श्यामसुन्दर मुस्कुरा रहे हैं। श्रीप्रिया अर्द्ध-बाह्य-ज्ञानकी-सी दशामें श्यामसुन्दरकी उन सब बातोंको भी प्रायः सुन चुकी थीं। अब चेत आ जानेपर उन्होंने सारी परिस्थिति समझ ली कि श्यामसुन्दर जब सखियोंको पान खिलाने गये थे, उस समय मैंने मुरलीको उठाकर अपने हृदयसे लगाया था। लगाते ही मैं सुध-बुध खो बैठी।

रानी संकुचित-सी हो गयीं तथा दाहिने हाथसे श्यामसुन्दरके कंधेको हिलाती हुई एवं बायेंसे मुरलीको श्यामसुन्दरके होठोंपर रखती हुई बात बदलनेके उद्देश्यसे बोल उठीं—प्यारे श्यामसुन्दर ! आज विशाखाने मुझे संध्याके समय बड़ा ही सुन्दर एक गीत सुनाया था। मैं फिर सुनूँगी। तुम विशाखाकी वीणाके सुरमें मुरली बजा दो। देखना, जान-बूझकर सुर नहीं बिगाड़ना।

श्यामसुन्दर हँसते हुए कहते हैं—विशाखे ! गा, पर मुरली बजानेका ठीक-ठीक पारिश्रमिक मुझे तुम्हारी सखीसे मिल जाना चाहिये, नहीं तो मैं तुमसे दूना लूँगा।

विशाखा तिरछी चितवनसे श्यामसुन्दरको ओर देखती हुई मुस्कुराकर कहती हैं—यह पहलेसे ही कह देती हूँ कि तुमने कहीं अनाप-शनाप पारिश्रमिक माँगा तो मैं उत्तरदायी नहीं हूँ।

अबतक सभी सखियोंने वीणा, मृदङ्ग एवं अन्यान्य वाद्योंके सुर मिला लिये थे। सभी बजानेकी मुद्रामें प्रस्तुत बैठी हैं। विशाखाकी बात सुनकर ललिता कहती हैं—श्यामसुन्दर! सज्जन गायक एवं बजानेवाले मोल-तोल नहीं करते। वे श्रोताको प्रसन्न करते हैं। तुम पहले मेरी सखीको मुरली सुनाकर प्रसन्न करो, घबराते क्यों हो?

श्यामसुन्दर बड़ी उत्सुकतासे हँसते हुए कहते हैं—बस, बस, ललिते! तू अपना यह वचन याद रखना। मैं तुम्हारी सखीको प्रसन्न करनेकी चेष्टा करता हूँ।

श्यामसुन्दर होठोंपर मुरली रखकर दोनों हाथोंकी अँगुलियोंसे छिद्रोंको सँभाल रखते हुए विशाखाकी वीणाके सुरमें सुर मिलाकर तान छेड़ते हैं। कुछ क्षणतक केवल वाद्य-यन्त्रोंकी ध्वनि गूँजती रहती है। सर्वत्र मधुरिमा बिखरने लगती है तथा अत्यन्त कोमल एवं अतिशय मधुर स्वरमें विशाखा गाती हैं।

सखि हौं स्याम रंग रँगी।
देखि बिकाइ गई वा मूरति सूरति माँहि पगी॥
संग हुतो अपनो सपनो सो सोइ रही रस खोई।
जागेहु आगे दृष्टि परै सखि नेकु न न्यारो होई॥
एक जु मेरी अँखियनिमें निस द्यौस रह्यौ करि भौन।
गाइ चरावन जात सुन्यौ सखि सो धौं कन्हैया कौन॥
कासौं कहौं कौन पतिआवै कौन करै बकवाद।
कैसे कै कहि जात गदाधर गूँगे को गुड़ स्वाद॥

गीत समाप्त होते ही सारी मण्डली प्रेममें बेसुध-सी हो जाती है। श्यामसुन्दर तिरछी चितवनसे श्रीप्रियाको देखकर मुस्कुरा पड़ते हैं। श्रीप्रिया कुछ क्षणतक तो हक्की-बक्की-सी मुद्रा बनाये हुए बैठी रहीं, पर फिर श्यामसुन्दरके बायें कंधेको हिलाकर जोरसे हँस पड़ती हैं।

श्यामसुन्दर कहते हैं—विशाखा रानी ! अपनी सखीसे पूछो कि मुरली ठीकसे बजी या नहीं और उन्हें सुख मिला या नहीं। यदि सुख नहीं मिला तो फिर दूसरी बार कुछ बजा करके सुनाऊँ और यदि उन्हें सुख मिला तो मेरा पारिश्रमिक पुरस्कारके साथ मिलना चाहिये।

श्यामसुन्दरकी बात सुनकर विशाखा वीणाको अपने सामने रख देती हैं तथा मुस्कुराती हुई उठकर राधारानीके पास जाकर खड़ी हो जाती हैं। रानी संकेतके द्वारा ललितासे कुछ कहती हैं। ललिता आकर श्यामसुन्दरके सामने खड़ी हो जाती हैं तथा कहती हैं—देखो, न्यायकी बात यह है कि पुरस्कार तो मुरलीको मिले और पारिश्रमिक तुम्हें। अवश्य ही यह ठीक है कि मुरली भी तुम्हारी ही है और प्रकारान्तरसे यह पुरस्कार तुम्हारे ही पास आ जायेगा, पर यह हमारी जातिकी है, इसलिये इसे तुम्हारे सामने हमलोगोंके द्वारा दिये हुए पुरस्कारसे भूषित होनेमें संकोच होगा। इसलिये इसे हमें दे दो। राधासे हमारी बात हो गयी है। मैं इसे पुरस्कार देकर फिर तुम्हारे पास ला दूँगी तथा पारिश्रमिककी बात तुम विशाखासे करो। मैं उस सम्बन्धमें कुछ नहीं जानती।

श्यामसुन्दर मुस्कुराकर कहते हैं—अरे, तू अच्छी पंच बनी ! तुम्हें पता है, यह मुरली हमसे कितना प्रेम करती है। मुझे तुम्हारी सखीको तो मनानेमें अत्यधिक अनुनय करना पड़ता है और यह लाज छोड़कर मेरे संकेतसे ही अपने होठोंको मेरे होठोंपर रखकर जो मैं कहता हूँ, वही करने लग जाती है। इसे मेरे सामने पुरस्कार स्वीकार करनेमें तनिक भी संकोच नहीं होगा। तू लाकर दे तो सही।

ललिता मुस्कुराती हुई कहती हैं—अच्छा, यही सही। क्या करूँ, तुम मानते ही नहीं। हमें यदि देते तो अधिक लाभ होता, पर जाने दो। अच्छा, सुनो। जितनी देर तुमने इसे होठोंपर रखकर विशाखाके संगीतके लिये इसमें सुर भरा है, उतनी देर मेरी सखी राधा इसे अपने होठोंपर रखकर इसका सम्मान करती हुई तुम्हारे गानेके समय इसमें सुर भरेंगी।

श्यामसुन्दर बहुत प्रसन्न होकर कहते हैं—ललिते ! सुन्दरसे सुन्दर। तुम एवं तुम्हारी सखीने बहुत उदारतासे पुरस्कार दिया है। अब आशा है कि पारिश्रमिक पाकर तो मैं निहाल ही हो जाऊँगा; क्योंकि पारिश्रमिक तो पुरस्कारकी अपेक्षा बहुत अधिक होता है, यह सदाका नियम है।

श्यामसुन्दर बड़ी फुर्तीसे श्रीप्रियाके होठोंपर वंशी रख देते हैं। श्रीप्रिया उसके ऊपरी छिद्रमें फूँक भरने लगती हैं, बायें हाथसे वंशीको पकड़े रहती हैं और दाहिना हाथ श्यामसुन्दरके बायें कंधेपर ही रखे रहती हैं। श्यामसुन्दर कुछ तिरछे बैठकर वंशीके अन्य छिद्रोंको अपने दोनों हाथोंसे दबाते-उठाते हुए सुर ठीक करते हैं। फिर वीणा एवं अन्यान्य वाद्य-यन्त्र बजने लगते हैं एवं मधुरतम-सुन्दरतम स्वरमें श्यामसुन्दर गाना प्रारम्भ करते हैं—

प्यारी तेरे नैननि को ब्यौहार।
रूप तुरंग चढ़े मदमाते मृग मन करत सिकार॥
भौंह कमान रही चढ़ि दिन प्रति चितवनि बान सुधार।
सहज अरुन अति घूम घुमारे खूनी खून खुमार॥
कज्जल रेख अनी अति तीखी निरखि हरत सत मार।
अलबेलि अलि प्रान बिहंगम परे प्रेम के जार॥

श्यामसुन्दरके कण्ठकी मधुरिमासे सारा वन रसमय हो उठता है। वेदीके चारों ओर जो केलेके वृक्ष लगे हैं, उनमेंसे भी रस चूने लग जाता है। यद्यपि श्यामसुन्दर संगीत बंद करके मन्द-मन्द मुस्कुराते हुए श्रीप्रियाके मुखारविन्दकी ओर देख रहे हैं, पर अभी भी दिशाओंसे यह ध्वनि अत्यन्त मधुरातिमधुर होकर गूँजती हुई सुन पड़ रही है—'अलबेली अलि प्रान बिहंगम परे प्रेम के जार'।

श्रीप्रिया अब बहुत धीरेसे खड़ी हो जाती हैं तथा चित्राको संकेतसे अपने पास बुलाती हैं। वे उसके कानमें कुछ धीरेसे कहती हैं। चित्रा श्यामसुन्दरसे कहती हैं—देखो श्यामसुन्दर! अब मेरी सखी गाना चाहती है, पर यह वचन देना पड़ेगा कि तुम संगीत समाप्त होनेतक स्थिरतापूर्वक बैठे-बैठे सुनते रहोगे।

श्यामसुन्दर कुछ देरतक सोचते रहते हैं। फिर मुस्कुराकर कहते हैं—अच्छी बात है, जबतक संगीत होता रहेगा, तबतक मैं स्थिरतापूर्वक बैठकर सुनता रहूँगा।

श्रीप्रिया विशाखाके हाथसे वीणा ले लेती हैं तथा वीणा-विनिन्दित स्वरमें गाने लगती हैं—

जब रूप के रंग रँगी सजनी, तब मोहि मनोहि सुभावहि को ।
मुख कंज मनोज मैं भृंगिनि सी लपटी चपटीन उछावहि को ॥
जब मादक माधुरी पान पगी तब घूँघट ओट दुरावहि को ।
गुनवारे गुपाल की आँखिन सों उरझी अँखियाँ सुरझावहि को ॥

श्यामसुन्दर मन्द-मन्द मुसकराते हुए श्रीप्रियाकी ओर एकटक देखते हैं। श्रीप्रिया दृष्टि उठाकर कई बार देखती हैं, पर श्यामसुन्दरको अपनी ओर देखते हुए देखकर दृष्टि मिल जानेसे लजाकर आँखें नीची कर लेती हैं। श्रीप्रिया गाती जाती हैं तथा वे बीच-बीचमें इस प्रकार दृष्टि उठाकर श्यामसुन्दरको देखनेकी चेष्टा करती हैं। अन्तिम चरण पूरा होते ही कई सखियाँ धीरे-से एक साथ ही बोल उठती हैं—बहिन! बंद मत कर देना। एक और, एक और।

सखियोंके अनुरोधपर प्रिया फिर गाती हैं—

चख कोर चकोर बनाय भटू, ससि आनन सों सरमावहि को ।
मृदु बोलन गाढ़ कपोल हँसी, फँसि रूप सरोवर पावहि को ॥
सुर तान ते मोहि मृगी ज्यों भजि बहुरो बन बीथि फिरावहि को ।
गुनवारे गुपाल की आँखिन सों उरझी अँखियाँ सुरझावहि को ॥

इस बार अन्तिम चरण गाते-गाते श्रीप्रियाका कण्ठ भर आता है। गला रुँधकर स्वर अस्पष्ट होने लग जाता है। सारा शरीर पसीनेसे भर जाता है। आँखें बंद हो जाती हैं। वे मूर्च्छित होकर गिरनेवाली ही थीं कि श्यामसुन्दर चटपट आसनसे उठकर श्रीप्रियाको सँभालते हैं। श्रीप्रिया यन्त्रकी तरह श्यामसुन्दरकी गोदमें सिर रखकर लेट जाती हैं। श्यामसुन्दर अपने दाहिने हाथसे श्रीप्रियाके ललाटको सहलाने लगते हैं। सभी सखियोंमें प्रेम उमड़ रहा है। श्रीप्रियाके गीतको सुनकर प्रायः सभी बाह्य-ज्ञान-शून्य-सी हो गयी हैं। केवल दो-चार मञ्जरियाँ बड़ी कठिनाईसे अपनेको सँभाले रखकर खड़ी हैं तथा निर्निमेष नयनोंसे श्यामसुन्दरकी रूप-सुधाका पान कर रही हैं।

कुछ देरतक शान्ति, आनन्द तथा प्रेमका प्रवाह इतना अधिक प्रबल रहता है कि सर्वत्र नीरवता छायी रहती है। प्रिया अपनी आँखें खोलकर देखती हैं, पर आँखें फिर बंद हो जाती हैं। धीरे-धीरे सखियाँ भी भाव-

समाधिसे जागकर श्यामसुन्दरको देखती हुई मुस्कुराने लगती हैं। अब प्रियाजी भी आँखें खोलकर मुस्कुराती हुई श्यामसुन्दरकी गोदसे उठकर बैठ जाती हैं तथा बायें हाथसे श्यामसुन्दरके कन्धेको एवं दाहिने हाथसे श्यामसुन्दरकी ठोड़ीको हिलाती हुई मुस्कुराकर कहती हैं—तुमने अपना वचन भङ्ग क्यों कर दिया ? संगीतके बीचमें ही उठकर क्यों आये ?

श्यामसुन्दरने हँसते हुए कहा—मैंने वचन भङ्ग सर्वथा नहीं किया है। जबतक संगीत (सं = गीत, अर्थात् ठीक-ठीक तरहसे गाया जानेवाला गीत) था, तबतक स्थिरतापूर्वक सुनता रहा। तुमने संगीतको बिगाड़ दिया (अर्थात् तेरी वाणी लड़खड़ाने लग गयी) तो मैं फिर बन्धनमें क्यों रहता ?

सभी सखियाँ हँसने लगती हैं। वहीं श्रीवृन्दाकी दासियाँ पीले रंगके पानकी पत्तियोंके बने हुए बीड़े सोनेकी परातमें लाकर रख देती हैं। इस बार श्रीप्रिया पहले दो बीड़े उठाकर श्यामसुन्दरके मुखमें रख देती हैं। श्रीश्यामसुन्दर बीड़ा खाने लगते हैं। श्यामसुन्दर दो बीड़े उठाकर श्रीप्रियाको खिलाना चाहते हैं, पर प्रिया कहती हैं—मुझे तो प्यास लगी है।

श्यामसुन्दर कहते हैं—प्यास तो मुझे भी लगी थी, पर तुमने मुँहमें पहले पान खिला दिया। अब तुम्हारे हाथका पान कैसे छोड़ देता !

श्रीप्रिया रूपमञ्जरीको संकेत करती हैं। रूपमञ्जरी प्यालेके आकारके, पर प्यालेसे कुछ लम्बी आकृतिके सोनेके गिलासमें शीतल सुवासित जल लाती है तथा प्रियाजीके हाथोंमें पकड़ा देती है। श्रीप्रिया गिलास लेकर पानी पीनेके लिये श्यामसुन्दरको संकेत करती हैं। रानीके हाथसे श्यामसुन्दर गिलास पकड़ लेते हैं। विशाखा उठकर श्यामसुन्दरके मुँहके पास पीकदानी ले जाती है। श्यामसुन्दर उसमें पानको उगल देते हैं। फिर गिलाससे घूँट भरकर उस सोनेके कटोरेमें, जिसे लवङ्गमञ्जरी पासमें लिये हुई खड़ी है, कुल्ला कर देते हैं। फिर वे आधा गिलास पानी पी जाते हैं। इसके बाद गिलासको राधारानीके होठोंसे लगा देते हैं। रानी लजाते-लजाते पाँच-छः घूँट पानी पी लेती हैं। चित्रा दोनोंके मुखको क्रमशः सुन्दर रूमालसे पोंछ देती हैं। फिर रानी अत्यन्त प्यारसे श्यामसुन्दरके मुखमें एक बीड़ा

रख देती हैं। श्यामसुन्दर रानीके मुखमें दो बीड़े एक साथ ही रख देते हैं। श्यामसुन्दरने जान-बूझकर दो बड़े बीड़े उठाये थे। एक साथ ही उनको मुखमें दे देनेके कारण रानीका दाहिना कपोल किंचित् ऊँचा-सा हो जाता है। श्यामसुन्दर मुस्कुराते हुए उसे देखने लग जाते हैं। प्रिया कुछ और भी लजा जाती हैं तथा शीघ्रतापूर्वक पानको दाँतोंसे कुचलकर पतला बना लेती हैं। पहलेकी ही तरह श्यामसुन्दर सखियोंको भी एक साथ ही एक क्षणमें पान खिला देते हैं। अब परातके पान आधे हो जाते हैं।

राधारानी उठ पड़ती हैं। श्यामसुन्दर भी उठ पड़ते हैं। इसी समय वृन्दाकी दासी सामने बहती हुई श्रीयमुनाजीके प्रवाहमेंसे एक कमल तोड़कर लाती है और श्रीप्रियाके हाथमें दे देती है। श्रीप्रिया कमलको हाथमें लेकर कहती हैं—री! एक और तोड़ ला।

श्यामसुन्दर श्रीप्रियाकी बात सुनकर चटपट बोल उठते हैं—प्रिये! चलो, आज नावपर चढ़कर कमलके फूल तोड़ें।

श्यामसुन्दरकी बात सुनते ही कई सखियाँ एक साथ बोल उठती हैं—हाँ, हाँ, चलो।

विशाखा मुस्कुराती हुई उत्तरकी ओर मुँह करके चल पड़ती है। श्यामसुन्दर हँसते हुए कहते हैं—विशाखा रानी! मेरा पारिश्रमिक मिलना अभी शेष है। यमुनाके कमल-वनसे पार होनेतक मुझे मिल जाना चाहिये। इसका दायित्व तुमपर है।

विशाखा मुस्कुराती हुई आकर श्रीराधाके कानमें धीरेसे कुछ कहनेके लिये रानीका हाथ पकड़कर उन्हें अपनी ओर झुका लेती हैं तथा कानमें कुछ कहती हैं। रानी मुस्कुराती हुई कहती हैं—बहुत ठीक।

विशाखा कहती है—हाँ, श्यामसुन्दर! मिल जायेगा! मेरी सखीकी आज्ञा हो गयी है।

बात समाप्त करके श्रीप्रिया-प्रियतम मन्द-मधुर गतिसे उत्तरकी ओर चलते हुए कमल-वन-विहारके लिये यमुना-तटपर आकर खड़े हो जाते हैं।
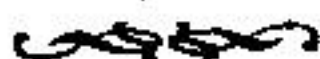
॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

रासनृत्य लीला

श्रीश्यामसुन्दर एवं राधारानी नौका-विहारके पश्चात् नावसे उतरकर पुलिनपर खड़े हैं। चन्द्रमाकी शुभ्र चाँदनीमें पुलिनकी वालुका अतिशय चमचम कर रही है। श्रीयमुनाके जलको स्पर्श करता हुआ शीतल पवन मन्द-मन्द प्रवाहित हो रहा है। पवन श्रीवृन्दावनके पुष्पोंकी सुगन्धिसे सुगन्धित तो था ही, इसपर श्रीप्रिया-प्रियतमके अङ्गोंकी सुगन्धिसे युक्त होकर यह अनन्तगुना सुगन्धित हो गया है।

श्रीश्यामसुन्दरने अपने दुपट्टेको कमरमें कस लिया है, इससे कमरके ऊपरका भाग पूर्णतः खुला हुआ है। हाथमें वंशी है। बड़ी मतवाली चालसे वे उत्तर एवं पश्चिमके कोनेकी ओर चलने लग जाते हैं। श्रीश्यामसुन्दरके बायें हाथमें पीले रंगका रूमाल है, जिसके नीचेकी ओरपर एक गाँठ लगी है। वे कुछ दूर चलकर फिर ठहर जाते हैं तथा पीछेकी ओर मुँह करके खड़े हो जाते हैं। इस समय श्यामसुन्दरका मुख पूर्व एवं दक्षिणके कोनेकी ओर है। वे मन्द-मन्द मुसकुरा रहे हैं।

श्रीश्यामसुन्दरसे पाँच-छः हाथ हटकर उनके पूर्वकी ओर श्रीराधारानी खड़ी हैं। श्रीराधारानीका मुख ठीक उत्तर एवं पश्चिमके कोनेकी ओर है। रानी एक बार तो श्यामसुन्दरके मुखकी ओर देखती हैं, फिर पीछे मुड़कर कुछ दूरपर पूर्वकी ओर खड़ी हुई विशाखाको देखती हैं तथा संकेतसे उसे अपने पास बुलाती हैं। विशाखा पासमें आ जाती है। रानी विशाखाके कानमें कुछ कहती हैं। विशाखा वहाँसे दाहिनी ओर कुछ हट जाती है तथा नीचे झुककर पुलिनपरसे थोड़ी बालुका उठा लेती है। बालुकाको एक रूमालमें शीघ्रतासे बाँधकर उसमें ठीकसे गाँठ लगा देती है। गाँठ लगाकर बायें हाथसे गुणमञ्जरीके हाथमें दे देती है। श्रीकृष्ण विशाखाकी इस चेष्टाको देख लेते हैं तथा वहाँसे दक्षिणकी ओर चलकर उस स्थानपर पहुँचते हैं, जहाँ यमुनाका प्रवाह पुलिनको छूता हुआ बह रहा है। जलके पास पहुँचकर श्यामसुन्दर एड़ी डूबनेतक पानीमें

प्रवेश कर जाते हैं तथा अपनी पीठ राधारानीकी ओर करके पश्चिमकी ओर मुख करके खड़े हो जाते हैं। फिर वे झुककर पानीमें हाथ डालते हैं। और ऐसी मुद्रा बनाते हैं मानो पानीसे आँख धो रहे हों। इसी बीचमें पानीके भीतरसे थोड़ी गीली बालुका बहुत शीघ्रतासे निकालकर अपने रूमालमें, जो कमरमें आगेकी ओर लटक रहा था, बाँध लेते हैं।

राधारानी कुछ तीव्र गतिसे चलती हुई ठीक उसी समय उनके पीछे आकर खड़ी हो जाती हैं। रानी श्यामसुन्दरके कंधेको पीछेसे पकड़कर खिलखिलाकर हँसती हुई हिला देती हैं। श्यामसुन्दर पीछे मुड़कर राधारानीकी ओर मुख करके खड़े हो जाते हैं। रानी झुक करके अपनी अञ्जलिमें थोड़ा यमुना-जल भर लेती हैं तथा एक श्लोक पढ़ती हुई श्रीश्यामसुन्दरके मुखपर धीरेसे कुछ छींटे दे देती हैं। रानीने जो श्लोक पढ़ा है, उसका भावार्थ यह है कि आजके रास-यज्ञकी निर्विघ्न सम्पन्नताके लिये मैं वृन्दावनके देवताका अभिषेक कर रही हूँ।

श्रीश्यामसुन्दर रानीके हाथसे छींटे लगते ही उसी प्रकार थोड़ा जल लेकर रानीके मुखपर छींटे देते हुए यह कहते हैं—नहीं, वनदेवीका अभिषेक पहले होना चाहिये।

राधारानी रूमालसे मुँह पोंछने लग जाती हैं। मुँह पोंछकर फिर दाहिने हाथसे श्रीकृष्णका दाहिना हाथ पकड़ लेती हैं तथा झटका देती हुई पानीसे बाहर निकल आती हैं। अब श्रीश्यामसुन्दर एवं राधारानी, दोनों ठीक पूर्वकी ओर मुख किये हुए खड़े हैं। श्रीश्यामसुन्दर मुरलीको अपनी फेंटमें खोंस लेते हैं तथा कमलके पत्तेकी एक छोटी-सी पुड़िया अपनी कमरसे निकालते हैं। पुड़ियाको खोलकर, उसमें जो हरे रंगकी चूर्णवत् कोई वस्तु है, उसे अपनी अँगुलियोंमें लगा लेते हैं। फिर राधारानीको संकेतसे कहते हैं कि चुप रहना, कुछ बोलना नहीं! इसके बाद वे आगे बढ़ जाते हैं एवं गुणमञ्जरीके पास जाकर खड़े हो जाते हैं। श्यामसुन्दरको अपनी ओर आते देखकर गुणमञ्जरी समझ गयी कि ये बालुकाकी पोटली मुझसे छीनने आ रहे हैं, अतः वह उनके आनेके पहले ही पोटलीको रूपमञ्जरीके हाथमें देकर दोनों हाथोंको कमरपर रखकर खड़ी हो जाती है तथा श्यामसुन्दरके पास आनेपर पूछती है—क्यों, क्या बात है?

श्रीश्यामसुन्दर समझ जाते हैं कि इसने पोटली तो कहीं आगे बढ़ा दी है, इसलिये तुरंत ऐसी मुद्रा बना लेते हैं मानो वे सचमुच दूसरे कामसे उसके पास आये हों। श्यामसुन्दर कहते हैं—री! एक काम कर। दौड़कर वहाँसे थोड़ा घिसा हुआ चन्दन ले आ।

वहाँसे लगभग पचास गज उत्तर-पश्चिमकी ओर हटकर विस्तृत रासवेदी सजी हुई है। श्यामसुन्दर अँगुलीसे संकेत करते हुए वहींसे चन्दन लानेके लिये कह रहे हैं। गुणमञ्जरी हँसती हुई चन्दन लानेके लिये चली जाती है। श्यामसुन्दर श्रीप्रियासे प्रेमभरी दृष्टिसे पूछते हैं—प्रिये! बता दे, बालुकाकी पोटली किसके पास है?

राधारानी संकेत कर देती हैं—ठीक पीछे देखो!

श्रीश्यामसुन्दरके कुछ दूर पीछे चित्रा खड़ी हैं। चित्राका मुख पश्चिमकी ओर है। वायुके हिलोरेसे चित्राके सिरका आँचल सरककर कंधेपर आ गया है। वह किसी ध्यानमें इतनी तल्लीन है कि उसको यह पता ही नहीं है कि पीछे क्या हो रहा है? श्रीकृष्ण पीछेसे आकर चित्राकी वेणीको पकड़कर हिलाते हुए पूछते हैं—चित्रारानी! वह पोटली कहाँ है?

पोटली वास्तवमें चित्राके पास नहीं थी। चित्राके पास ही इन्दुलेखा खड़ी थीं, उन्हींके पास पोटली थी एवं राधारानीने उन्हींके लिये संकेत भी किया था। पर इन्दुलेखाने यह देख लिया कि राधाने मेरी ही ओर संकेत कर दिया है, अतः शीघ्रतासे वे उत्तरकी ओर हट गयी थीं। श्रीकृष्णने चित्राको ही अपने ठीक पीछे पाया था, इसीलिये उसकी वेणीको हिलाकर पूछ रहे थे। वेणी हिलानेपर चित्राको चेत होता है। वे प्रेमभरी आँखोंसे,पर कुछ चिढ़ी हुई-सी मुद्रामें देखती हुई कहती हैं— कैसी पोटली?

श्यामसुन्दर समझ जाते हैं कि पोटली इसके पास नहीं है, पर तुरंत प्रश्न करते हैं—क्यों, कल मैंने तुम्हें बालुकाकी कुछ पोटलियाँ बनानेके लिये कहा था न?

श्रीश्यामसुन्दर सचमुच ही कल चित्राको बालुकाकी कुछ पोटलियाँ बनानेके लिये कह चुके थे। इन पोटलियोंसे यह होड़ होनेवाली थी कि

नौका-विहारके समय जलमें कौन कितनी दूर पोटलीको फेंक सकती है। अतः चित्रा मुस्कुराकर कहती है—हाँ! बन चुकी है। वहाँ वेदीके पास है।

श्रीश्यामसुन्दर अब रास वेदीकी ओर बढ़ने लग जाते हैं। श्रीराधारानी उनके पीछे पीछे चल रही हैं। श्यामसुन्दर रह-रहकर श्रीप्रियाकी ओर देखने लगते हैं, फिर ठहर जाते हैं तथा श्रीप्रियाके दाहिने कंधेपर हाथ रखकर चलने लगते हैं। सखियाँ एवं मञ्जरियाँ भी उनके इधर-उधर एवं कुछ मञ्जरियाँ-सखियाँ पीछे-पीछे चल रही हैं। चलते-चलते श्यामसुन्दर रास-वेदीके पास पहुँच जाते हैं। श्यामसुन्दर वेदीके ऊपर दाहिना पैर एवं नीचे बायाँ पैर रखे रहकर राधारानीसे संकेतमें कुछ पूछते हैं। रानी विशाखाकी ओर अँगुलीसे संकेत कर देती हैं! श्यामसुन्दर विशाखासे कहते हैं—विशाखे! आज तुम्हें दाहिनी ओर रहना होगा।

श्रीविशाखा अत्यन्त प्यारभरी तिरछी चितवनसे श्यामसुन्दरकी ओर देखती हैं तथा अपने सुन्दर नयनोंको कोयोंमें घुमाती हुई मुस्कुराकर कहती हैं—अच्छी बात है।

श्यामसुन्दर श्रीप्रियाके कंधेपर हाथ रखे हुए श्रीप्रियाको खींचते हुए-से वेदीपर चढ़ जाते हैं। सखियाँ एवं मञ्जरियाँ भी चढ़ जाती हैं। आज वेदीकी सजावट तो निराली ही है। चारों ओरसे चन्दनकी एक हाथ चौड़ी पाटीको जोड़-जोड़कर गोलाकार विस्तृत वेदी बनायी गयी है। वेदीका व्यास लगभग एक सौ गज है। बीचके भागमें बालूको भरकर उस गोलाकार स्थलको चन्दनकी पाटी जितना ऊँचा बना दिया गया है। फिर उसपर पीले रंगकी अत्यन्त सुन्दर कालीन बिछा दी गयी है। वेदीके चारों ओर किनारे-किनारे दो-दो हाथके अन्तरपर सोनेके गमले रखे हुए हैं, जिनमें दो-दो हाथ ऊँचे हरी लतासे लिपटे हुए पुष्पोंके हरे-हरे वृक्ष हैं। उनमें कुन्दकी तरह पीले रंगके पुष्प खिले हुए हैं। किसी-किसी वृक्षमें तो इतने अधिक पुष्प खिले हुए हैं कि ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो पुष्पमय पौधा हो। उन पुष्पोंसे विलक्षण जातिकी सुगन्धि निकल-निकलकर समस्त पुलिनको अतिशय सुवासित कर रही है। गमलोंकी एक कतारके बाद दो हाथ स्थान छोड़कर फिर एक और कतार सोनेके गमलोंकी है, जिनमें एक-एक हाथ ऊँचे बहुत ही सघन एवं महीन पत्तियोंके कोई

वृक्ष-विशेष लगे हुए हैं। उनमें भी गुलाबके छोटे-छोटे पुष्प खिले हुए हैं तथा उन वृक्षोंकी पत्तियों एवं पुष्पोंसे भी अतिशय मधुर-मधुर सुगन्धि निकल रही है।

वेदीके किनारे-किनारे तीन-तीन हाथके अन्तरपर खंभे हैं। ये खंभे वेदीसे सटे हुए हैं तथा लगभग सोलह-सोलह हाथ ऊँचे हैं। खंभे चन्दनके बने हुए हैं, पर उनमें चारों ओरसे खिले हुए उजले कमलके पुष्पोंको इस प्रकार पिरो दिया गया है मानो कमलके पुष्पोंका ही खंभा बना हुआ है। उन खंभोंको भी ऊपरसे एक-दूसरेसे चन्दनकी पतली छड़ियोंसे जोड़ दिया गया है तथा उनमें भी उजले कमल इसी प्रकार पिरोये हुए हैं। उन छड़ियोंके सहारे प्रत्येक तीन हाथके अन्तरपर एक-एक गमला लटक रहा है। वह भी कमलके पुष्पोंसे ऐसा पिरो दिया गया है कि उसके चारों ओर केवल खिले हुए कमल ही दीख पड़ रहे हैं मानो कमलोंका ही गमला हो। उन गमलोंमें भी छोटे-छोटे पुष्पोंके पौधे लगे हुए हैं तथा उनमें भी पुष्प खिले हुए हैं। एक खंभेसे दूसरे खंभेको ऊपर-ही-ऊपर जोड़ते हुए कमलके पुष्पोंका ही अत्यन्त सुन्दर मेहराब है। उन मेहराबोंमें एवं खंभोंमें स्थान-स्थानपर अत्यन्त विलक्षण मणियाँ पिरोयी हुई हैं, जिनके भिन्न-भिन्न प्रकारके प्रकाशसे वेदीकी चमक आज अत्यन्त विलक्षण बन गयी है।

वेदीसे नीचे उतरकर पुलिनकी बालुकापर छः-छः हाथके अन्तरपर कुछ बड़े आकारके गमलोंमें लगभग पाँच हाथ ऊँचे-ऊँचे रजनीगन्धा पुष्पके वृक्ष लगे हुए हैं। उनमें पुष्पोंके गुच्छे लटक रहे हैं। वेदीसे लगभग चालीस हाथ दक्षिणकी ओर एवं बीस हाथ उत्तरकी ओर, दोनों ओरसे श्रीयमुनाकी धारा प्रवाहित हो रही है। इन दोनों धाराओंके पास जानेके लिये वेदीसे सटाकर तीन हाथ चौड़ा पथ बनाया गया है। पथ भी वेदीके स्थान जैसा ही सुन्दर बना हुआ है। पथके दोनों किनारोंके गमलोंमें उसी प्रकार रजनीगन्धाके वृक्ष लगे हुए हैं।

वेदीके पश्चिमी किनारेपर ठीक बीचमें स्थलसे आठ हाथ ऊँचाईपर पुष्पोंका एक सिंहासन बना हुआ है। सिंहासनके पास जानेकी जो सीढ़ियाँ बनी हैं, उन सीढ़ियोंसहित सिंहासनको चारों ओरसे उजले कमलोंसे पिरो दिया गया है। उनके चारों ओरके एक-एक हाथ स्थानको

कमलके पत्तोंसे एवं और भी कई प्रकारकी हरी-हरी पत्तियोंसे सजा दिया गया है। उस आसन एवं सीढ़ियोंके चारों ओर नीले रंगके रेशमी वस्त्र लगा दिये गये हैं। उनपर मणियोंकी एवं चन्द्रमाकी शुभ्र किरणोंके पड़नेसे ऐसा प्रतीत हो रहा है कि यमुनाके प्रवाहमें कमलका वन हो और उसपर स्वाभाविक ही अत्यन्त सुन्दर ढंगसे कमलका एक सिंहासन बन गया हो। यमुना-पुलिनपर बहते हुए शीतल-मन्द-सुगन्ध वायुका झोंका रह-रहकर उन टँगे हुए रेशमी वस्त्रोंको किंचित् हिला देता है। उस समय ऐसा प्रतीत होता है मानो सचमुच यमुनाका जल वायुके कारण हिल रहा हो।

वेदीके बीचका स्थान रास-नृत्यके लिये खाली है। श्रीश्यामसुन्दर श्रीप्रियाके साथ पूर्वकी ओरसे वेदीपर चढ़कर सिंहासनकी ओर बढ़ने लग जाते हैं। श्रीवृन्दा तुरंत ही आगे बढ़ जाती हैं तथा श्यामसुन्दरके पहुँचनेके पहले ही वेदीके पास पहुँच जाती हैं। श्रीश्यामसुन्दरके आनेपर वृन्दा राधारानीका हाथ पकड़ लेती हैं तथा विशाखा श्यामसुन्दरके दाहिने हाथकी कलाई पकड़ लेती है एवं उनके दाहिनी ओर खड़ी हो जाती हैं। रानी श्यामसुन्दरके बायीं ओर हैं। उनका दाहिना हाथ श्यामसुन्दरके बायें कंधेपर है। वृन्दा प्रिया-प्रियतमको साथ लेकर सिंहासनपर चढ़ना चाहती हैं कि इसी समय श्यामसुन्दर कुछ संकेत करते हैं। वृन्दा रुक जाती हैं तथा ललिताको पुकारती हैं। ललिता रानी कुछ दूरपर खड़ी रहकर कुछ मञ्जरियोंको यह बता रही थीं कि कौन किस वाद्य-यन्त्रको आज बजायेगी और कौन कहाँपर खड़ी होगी। उन्हें पुकारकर वृन्दादेवी कहती हैं—ललितारानी! श्यामसुन्दर तुम्हें बुला रहे हैं।

ललिता धीरे-धीरे चलती हुई श्यामसुन्दरके पास आ जाती हैं तथा मुस्कुराती हुई कहती हैं—क्यों, बोलो!

श्यामसुन्दर कहते हैं—अपना रूमाल दे।

ललिता कुछ कपट-क्रोध करके कहती हैं—अभीसे छेड़खानी आरम्भ कर दी? राधाका रूमाल ले लो, मैं नहीं देती।

श्यामसुन्दर मुस्कुराते हुए अपनी कलाई विशाखाके हाथसे छुड़ाकर बड़ी फुर्तीसे ललिताकी कमरमें लटकते हुए रूमालको छीन लेते हैं तथा

उसमें पोंछ देते हैं वह हरे रंगकी चूर्णवत् कोई वस्तु, जो उन्होंने अपनी अँगुलीमें कुछ देर पहले लगायी थी। फिर विशाखाकी कलाई पकड़कर वृन्दा एवं श्रीप्रियाके साथ श्यामसुन्दर सीढ़ियोंपर चढ़ते हुए ऊपर सिंहासनपर जा पहुँचते हैं। वहाँ श्रीप्रिया-प्रियतम पूर्वकी ओर मुख करके बैठ जाते हैं।

विशाखा कलाई छुड़ाकर रानीके पास जाकर कानमें बहुत धीरेसे कुछ कहती हैं; पर श्यामसुन्दर उसे सुन लेते हैं और कहते हैं—नहीं, आज तो विशाखा रानी ही हमारे दाहिनी ओर रहेंगी। अब मैं किसीका कोई प्रस्ताव नहीं सुनूँगा।

वेदीके पश्चिमकी ओर रेशमी वस्त्रोंसे निर्मित अत्यन्त सुसज्जित एक कुञ्ज है। अब वृन्दादेवीकी दासियाँ उस कुञ्जके अंदरसे सेवाके विभिन्न प्रकारके सामान लाकर सीढ़ीके नीचे रख देती हैं। शीतल जलकी झारियाँ, पानोंसे भरी परात, कुल्ला करनेके लिये सुन्दर आकारवाले सोनेके गमले, गुलाबपाश, पिचकारी, छोटी-छोटी सोनेकी प्यालियोंमें खस, गुलाब, मेंहदी, मोतिया आदिके अत्यन्त सुगन्धित इत्र और फिर इन प्यालियोंसे भरी परात, इस प्रकार सेवाके विभिन्न सामानोंसे सिंहासनके नीचेका कुछ दूरतकका स्थल भर जाता है। विचित्र-विचित्र वाद्य-यन्त्रोंको ला-लाकर वृन्दाकी दासियोंने सिंहासनके पास सजा-सजाकर रख दिया है।

ललिता, विशाखा, वृन्दा एवं अन्यान्य मञ्जरियाँ मिलकर सेवा प्रारम्भ करती हैं। श्रीप्रिया-प्रियतम पहले शीतल जलका पान करते हैं, फिर पानका बीड़ा मुखमें लेते हैं। कोई सखी सीढ़ियोंपर बैठी हुई है, कोई खड़ी है तथा प्रिया-प्रियतमके मुखारविन्दकी शोभा निहार रही है। यद्यपि देखनेमें सीढ़ी बहुत बड़ी नहीं है, पर आश्चर्यकी बात यह है कि सभी सखियाँ-मञ्जरियाँ एवं वृन्दाकी बहुत-सी दासियाँ यह अनुभव कर रही हैं कि मैं सीढ़ीके पास या सीढ़ीपर खड़ी या बैठी हूँ।

स्वयं जल पीकर एवं पान खाकर श्यामसुन्दर उठते हैं तथा एक साथ ही सब सखियोंको अपने हाथोंसे सुमधुर जल पिलाते हैं तथा मुँहमें पान खिलाते हैं। इसके पश्चात् श्यामसुन्दर रानीको कुछ संकेत करते हैं। रानी अत्यन्त प्यारभरे स्वरमें कहती हैं—वृन्दे! मेरे प्यारे श्यामसुन्दर

आज अपने हाथोंसे तुम्हारी दासियोंको पान खिलाना चाहते हैं। अतः सब दासियोंसे मेरी ओरसे अनुरोध कर दे कि मेरी प्रार्थना मानकर सभी श्यामसुन्दरके हाथसे पान खा लें। कोई तनिक भी संकोच नहीं करे।

रानीकी बात सुनकर वृन्दा मुस्कुरा देती है तथा कहती है अच्छी बात है।

वृन्दादेवी फिर दासियोंके प्रति कहती है—बहिनो! रानीकी आज्ञा है, इसलिये संकोच छोड़कर हमलोगोंको श्यामसुन्दरके हाथसे पान खा ही लेना है।

वृन्दाके ऐसा कहते ही श्यामसुन्दर एक साथ ही वृन्दाकी दासियोंको तथा मञ्जरियोंको पान खिलाकर अपनी प्रेमभरी दृष्टिसे तथा अपने मधुर कर-स्पर्शसे सभीको आनन्द एवं प्रेममें विभोर बना डालते हैं।

वेदीके मेहराबोंपर, खंभों एवं पुष्प-वृक्षोंकी टहनियोंपर बैठकर भिन्न-भिन्न जातिके सुन्दर पक्षी कलरव कर रहे हैं। पुष्पोंपर गुन-गुन करते हुए भौंरे मँडरा रहे हैं। पुलिनकी बालुकापर मयूरी एवं मयूरोंका वृन्द आनन्दमें डूबा हुआ विचरण कर रहा है। श्रीयमुनाकी धारापर जलजातीय पक्षियों एवं हंसोंका समूह तैरता हुआ अपनी मधुर बोलीसे वन एवं पुलिनको निनादित कर रहा है। इन सबकी ओरसे प्रतिनिधिके रूपमें वृन्दा कहती है—प्यारे श्यामसुन्दर! अपने वनके समस्त चर-अचर प्राणियोंकी ओरसे मैं प्रार्थना कर रही हूँ कि अपनी प्रिया एवं सखियोंके साथ रास करके हमलोगोंके नयनोंको शीतल करो। प्यारे! असंख्य वर्षोंसे मैं तुम्हारा रास देख रही हूँ। प्रत्येक रात्रिको ही तुम रास रचाकर हमारे नयनोंको शीतल करते हो; पर प्यारे श्यामसुन्दर! तुम्हारा यह रास नित्य नूतन ही रहता है। मेरी प्रिय सहेलियोंने अत्यन्त उत्साहके साथ वेदी सजायी है। इस वेदीको अपने चरण-स्पर्शका दान करके मेरी सखियों एवं दासियोंकी सेवा स्वीकार कर लो।

श्रीश्यामसुन्दर अत्यन्त प्यारभरी दृष्टिसे वृन्दा एवं वृन्दाकी दासियोंको देखते हैं। उनकी दृष्टि पड़ते ही सब प्रेम एवं आनन्दमें बेसुध होने लगती हैं। श्रीश्यामसुन्दर सिंहासनकी सबसे नीचेवाली सीढ़ीपर खड़े हैं। श्रीप्रिया निर्निमेष नयनोंसे श्यामसुन्दरके सुन्दर मुखारविन्दकी

शोभा निहार रही हैं। श्रीश्यामसुन्दर श्रीप्रियासे रास-मण्डलमें पधारनेके लिये अनुरोध करते हैं। श्रीप्रिया मुस्कुराती हुई सिंहासनसे नीचे उतर पड़ती हैं तथा श्यामसुन्दरका कंधा पकड़कर खड़ी हो जाती हैं। उन्हें साथ लेकर अत्यन्त मदभरी चालसे चलते हुए श्यामसुन्दर वेदीके बीचमें आकर खड़े हो जाते हैं।

श्रीप्रिया बायीं ओर खड़ी होती हैं। विशाखा दाहिनी ओर तथा ललिता श्रीराधाके बायीं ओर खड़ी होती हैं; चित्रा विशाखाके दाहिनी ओर। इस प्रकार श्यामसुन्दरको लेकर पाँच तो बीचमें दक्षिणकी ओर मुख करके खड़ी हो जाती हैं तथा शेष सखियों एवं मञ्जरियोंकी मण्डली इन पाँचोंको घेरकर गोलाकार खड़ी हो जाती है। उनके इस प्रकार खड़ी हो जानेपर अर्द्धचन्द्राकारमें मञ्जरियोंका एक-एक दल चारों दिशाओंके ठीक बीच-बीचमें सुन्दर-सुन्दर वाद्य-यन्त्रोंको लेकर खड़ा हो जाता है। वेदीका शेष अंश वृन्दाकी दासियोंसे ठसाठस भर जाता है। सभी सखियों, दासियों एवं मञ्जरियोंके बदनपर चम्पई रंगकी साड़ियाँ अत्यन्त सुन्दर लग रही हैं। सबके शीशपर एक-से-एक बढ़कर सुन्दर-सुन्दर चन्द्रिका शोभा पा रही हैं तथा उनपरकी मणियोंके लाल, नीले, पीले, उजले, हरे, नारंगी एवं बैंगनी रंगके प्रकाशसे एवं चन्द्रमाकी अत्यन्त शुभ्र चाँदनीसे—इन सबसे वहाँकी चमक-दमक एवं शोभा सर्वथा अवर्णनीय हो गयी है। श्रीप्रिया, श्रीश्यामसुन्दर, सखियों, मञ्जरियों और दासियोंके अङ्गोंसे ज्योति एवं सुगन्धिके फैलनेसे समस्त पुलिन ही प्रकाश तथा सुवाससे कुछ इतना अधिक परिपूरित हो उठा है कि उसका वर्णन सर्वथा असम्भव है।

श्रीश्यामसुन्दरके दाहिने हाथमें मुरली है। बायें हाथसे वे श्रीप्रियाके दाहिने कंधेको पकड़े हुए हैं। सर्वत्र आनन्द एवं अनुरागकी धारा बह रही है। इसी समय सबसे प्रथम श्रीश्यामसुन्दर मुरलीमें सुर भरते हैं। उनके सुर भरते ही वाद्य-यन्त्र बजानेवाली मञ्जरियोंके चारों दल भी एक साथ ही श्यामसुन्दरके सुरमें सुर मिलाकर वाद्य बजाना प्रारम्भ करते हैं। मुरली एवं वाद्य-यन्त्रोंकी मधुरिमासे पुलिन रसमय बन जाता है। श्यामसुन्दर सुर भरकर रुक जाते हैं। उनके रुकते ही सब वाद्य-यन्त्र भी तत्क्षण रुक जाते हैं। वे दो-तीन क्षणके लिये रुकते हैं। उस रुकनेके

क्षणमें सखियाँ, मञ्जरियाँ एवं दासियाँ—सभी मिलकर एक साथ ही अपने एक पैरको ऐसी चतुराई एवं विलक्षण रीतिसे किंचित् हिला देती हैं, जिससे घुँघरू एक साथ एक स्वरमें बज उठते हैं तथा उनका अनिर्वचनीय मधुरिम स्वर समस्त पुलिनपर बिखर जाता है। वह ध्वनि सर्वत्र गूँजने लग जाती है। ऐसा प्रतीत होता है मानो यमुनाके प्रवाहके अन्तरालमें, बालुका-कणोंके हृदयमें, पुष्प-वृक्षोंके अन्तरतममें, सर्वत्र घुँघरू बज रहे हों। घुँघरूकी ध्वनि बंद होते ही दूसरे क्षण फिर वही मुरलीका मधुरतम स्वर और वाद्य-यन्त्रोंका सुन्दरतम स्वर गूँजने लगता है। इस प्रकार घुँघरू एवं मुरली तथा वाद्य-यन्त्रोंकी ध्वनि क्रमशः गूँजती है। प्रत्येक बार स्वरका तार पहलेकी अपेक्षा दीर्घ होता जा रहा है, अर्थात् उत्तरोत्तर अधिक समयके लिये स्वरकी गति चालू रखी जाती है।

श्रीप्रिया अपने बायें हाथको अब ऊँचा उठा लेती हैं तथा स्वरका निर्देश करती हुई उसे अत्यन्त सुन्दर रीतिसे धीरे-धीरे ऊपर-नीचे एवं बायें-दाहिने घुमा रही हैं। श्रीश्यामसुन्दर अब अपना बायाँ हाथ श्रीप्रियाकी दाहिनी बाँहके भीतर ले जाकर श्रीप्रियाके दाहिने हाथकी अँगुलियोंको अपने बायें हाथकी अँगुलियोंसे पकड़ लेते हैं।

श्रीप्रियाके बायें हाथका अँगुली-संचालन ही सबको स्वरकी सूचना देता जा रहा है। ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो उन अँगुलियोंसे कोई छिपी हुई शक्ति निकल करके श्यामसुन्दरकी मुरली एवं अन्यान्य वाद्य-यन्त्रोंको श्रीप्रियाकी इच्छानुसार नचा रही हो। श्यामसुन्दरके मुखारविन्दपर मन्द-मन्द मुस्कान है। सखियों एवं दासियोंकी आँखें प्रेममें झूम रही हैं। श्रीप्रिया अपनी सुन्दर आँखोंकी पुतलियोंको कोयोंमें इस प्रकार नचा रही हैं कि देखते-देखते दर्शक-मण्डली बेसुध-सी होती जा रही है।

अब वाद्य-यन्त्रोंकी मधुरिमाके साथ ही मञ्जरियोंके चार दलोंमें जितनी मञ्जरियाँ थीं, वे सब अत्यन्त मधुर कण्ठसे एक साथ स्थायी स्वरमें गाना प्रारम्भ करती हैं—

(राग कान्हरो)

बन्यौ मोर मुकुट नटवर बपु स्याम सुंदर कमल नैन
बाँको भौंह ललित भाल घुँघरवारी अलकें।

पीत बसन मोती माल हिये पदिक कंठ लसे
हँसनि बोलनि गावनि मंडन श्रवन कुंडल झलकें ॥
कर पद भूषन अनूप कोटि मदन मोहन रूप
अद्भुत वदन चंद देख गोपी भूली पलकें ।
कहें भगवान् हित राम राय प्रभु ठाढ़े रास मंडल मधि
राधा सों बाँह जोटी किये हिये प्रेम ललकें ॥

गीत समाप्त होनेपर दो-तीन क्षण सर्वत्र नीरवता छा जाती है। फिर तुरंत ही श्रीप्रिया अपने घुँघरुओंको बजा देती हैं। उनके ऐसा करते ही घुँघरू एवं वाद्य-यन्त्र एक साथ बज उठते हैं। इस बार विश्वमोहन नृत्य प्रारम्भ होता है। स्वरके साथ वह मण्डली, जो श्रीप्रिया-प्रियतम एवं ललिता-विशाखा-चित्राको घेरकर गोलाकार खड़ी थी, अपने पैरोंको उठाती-गिराती हुई घूमने लगती है तथा श्रीप्रिया-प्रियतम एवं ललिता-विशाखा-चित्रा अपने स्थानपर ही उसी प्रकार अपने पैरोंको नचाती हुई घूमने लगती हैं। नृत्य-मण्डलीकी गति पूर्वसे पश्चिमकी ओर है। इसी समय श्यामसुन्दर, जितनी सखियाँ हैं, उतने रूपोंमें प्रकट होकर प्रत्येकके बीचमें खड़े हो जाते हैं तथा सबका हाथ पकड़कर नृत्य करते हैं। अब सखी-श्यामसुन्दर, सखी-श्यामसुन्दर, सखी-श्यामसुन्दर, सखी-श्यामसुन्दरकी जोड़ी हाथोंसे हाथ मिलाये हुए नृत्य कर रही है। श्रीप्रिया एवं सखियाँ एक साथ ही स्वरके क्षणिक लय एवं सामयिक परिवर्तनके अवसरपर 'तत-थेई थेई, तत-थेई थेई' आदि शब्दोंको इतने मधुरतम स्वरमें उच्चारण करती हैं कि वेदीकी समस्त दर्शक-मण्डली आनन्दमें विभोर होकर भावके वेगको सँभाल नहीं पाती और तद्भावाविष्ट होकर 'थेई थेई' उच्च स्वरसे बोल उठती है। अब नृत्यकी गति तीव्र हो जाती है तथा उसी नृत्यके स्वरमें स्वर मिलाकर मञ्जरियोंके चारों दल मधुर कण्ठसे गाने लगते हैं—

देखो देखो री नागर नट निर्तत कालिंदी तट
गोपिन के मध्य राजे मुकुट लटक (री)।
काछिनी किंकिनि कटि पीताम्बर की चटक
कुंडल किरन रवि रथ की अटक (री)॥
तत थेई तत थेई सबद सकल घट
उरप तिरप गति पग की पटक (री)।
रास में श्रीराधे राधे मुरली में एक रट
नंददास गावें तहाँ निपट निकट (री)॥

नृत्यकी गति और भी तीव्रतर होती है तथा मञ्जरियोंका दल इसी पदको नृत्यके स्वरमें स्वर मिलाकर गाता है।

इस बार सखियाँ और श्यामसुन्दर परस्परका हाथ छोड़कर अपने-अपने दोनों हाथोंसे भाव बताना प्रारम्भ करते हैं। समस्त सखियोंके समस्त अङ्ग नृत्यके चढ़ाव-उतारके साथ विचित्र-विचित्र भङ्गिमाका प्रकाश करते हुए सबको आश्चर्यमें डाल रहे हैं। नृत्यके समय अङ्गोंको झुकाने, मोड़ने आदिके ढंगको देखनेपर ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो इन सखियोंके अङ्गोंमें अस्थि-संस्थान है ही नहीं और इनके अङ्ग सर्वथा सुन्दरतम सुकोमल माँससे निर्मित हैं, जो इच्छानुसार सब ओर सभी स्थानोंसे मुड़ जा सकते हैं। नृत्य करते-करते सखियोंका अञ्चल सिरसे सरक जाता है। श्यामसुन्दर बड़ी सावधानीसे उनके अञ्चलको बीच-बीचमें ठीक कर देते हैं।

अब नृत्यके आवेशमें श्रीप्रिया एवं ललिता आदि भी बेसुध होने लगती हैं। बीचमें भी एक मण्डल बन गया है, जिसमें ललिता-श्यामसुन्दर, प्रिया-श्यामसुन्दर, विशाखा-श्यामसुन्दर, ये छः हैं। ये मण्डलियाँ इस प्रकार स्थित हैं—
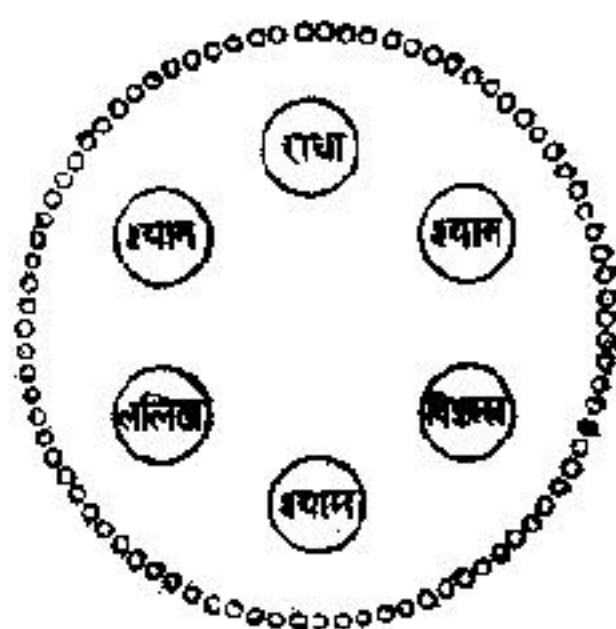
मध्यस्थित श्रीप्रिया एवं ललिताकी मण्डली ज्यों-की-त्यों नृत्य करती हुई अपने स्थानपर ही घूम रही है, पर बाहरवाली मण्डली नृत्यके आवेशमें

बहुत ही सुन्दर दूसरा आकार धारण कर लेती है। वह आकार ऐसा है—
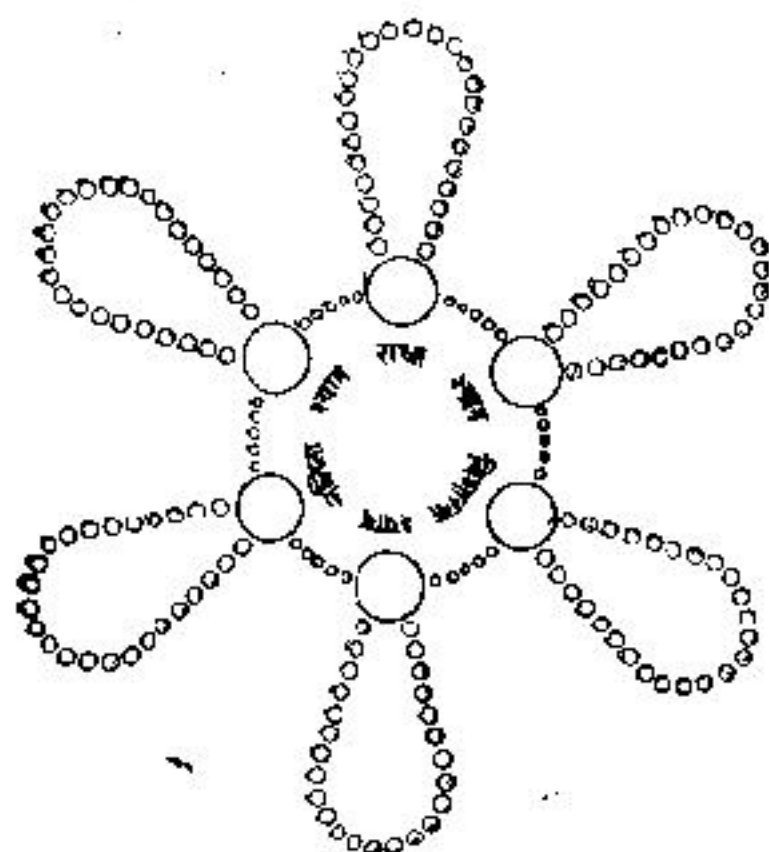
फिर कुछ देर बाद मण्डली जो तीसरा आकार धारण करती है, वह है—
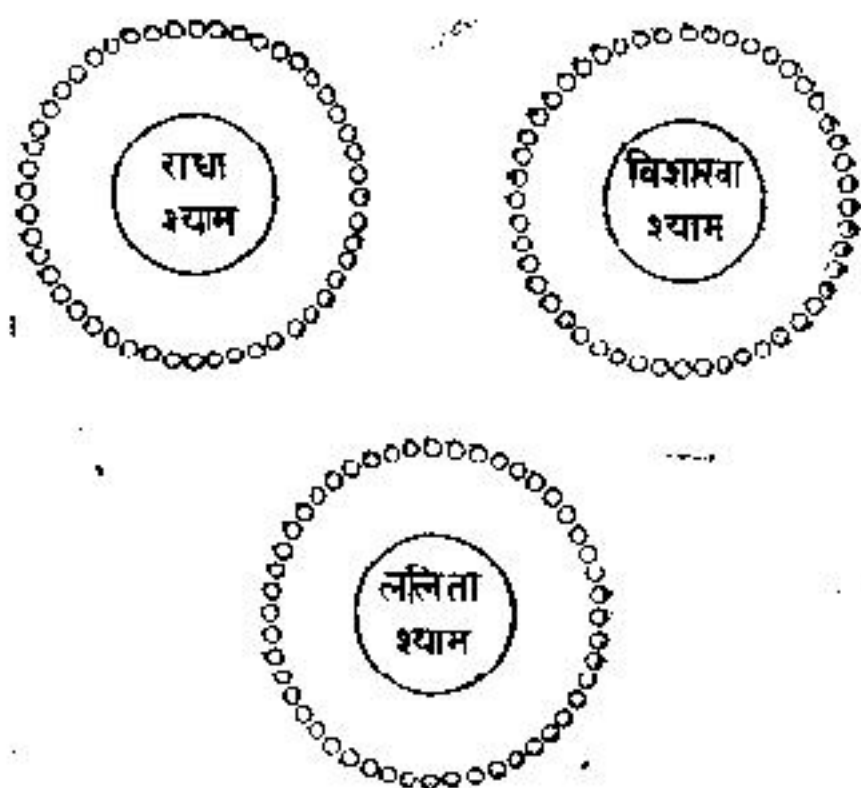
कुछ देर बाद चौथा आकार धारण कर लेती है, वह यह है—
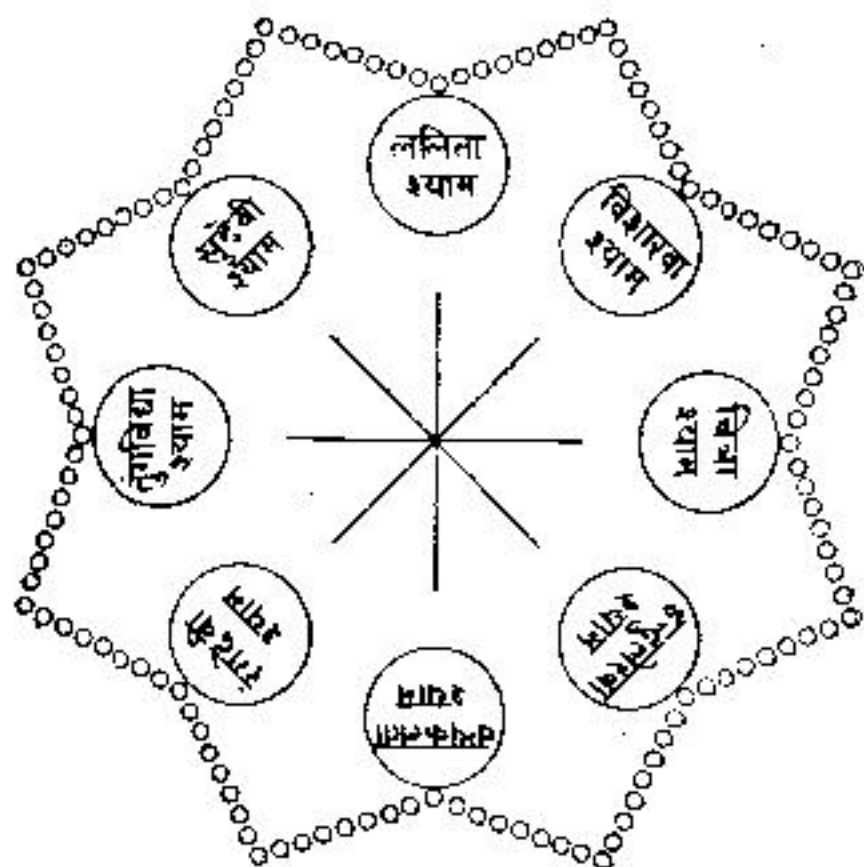
कुछ देर बाद इस प्रकारका पाँचवाँ आकार धारण करती है—
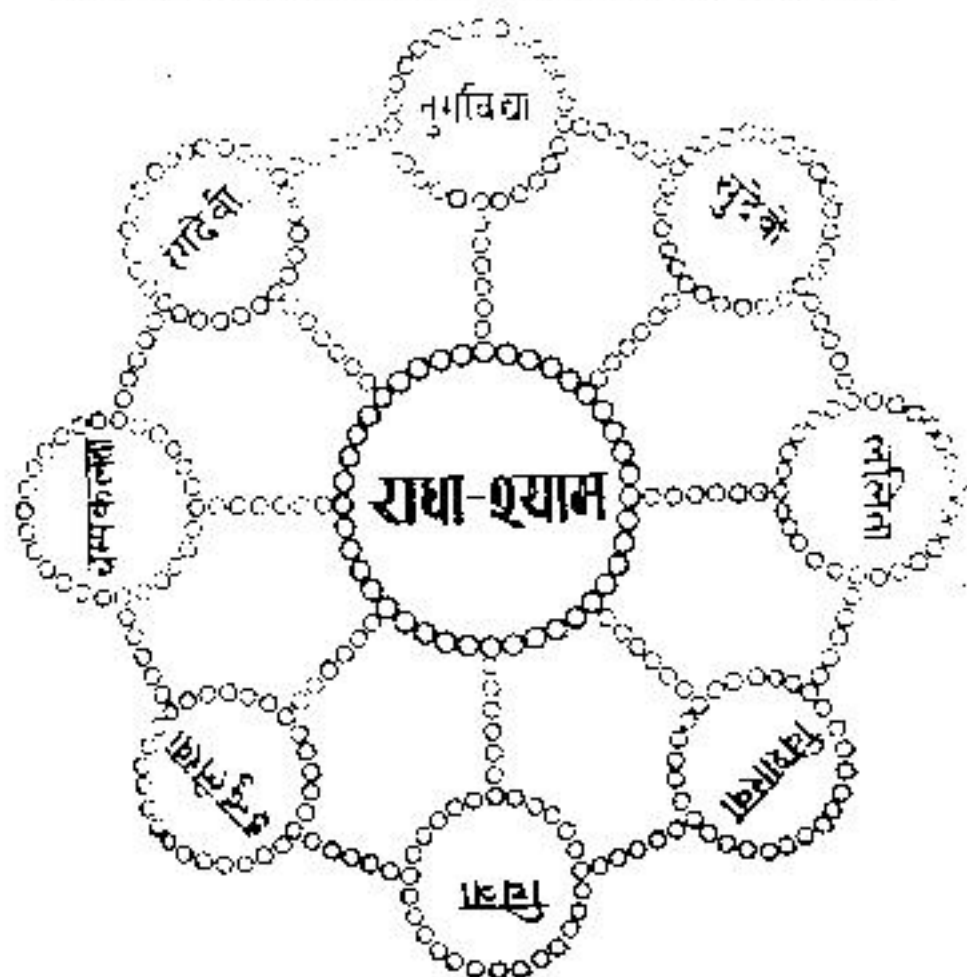
उपर्युक्त पाँचों आकारोंमें ही यह बात निश्चित रूपसे है कि प्रत्येक सखीके पास श्यामसुन्दर हैं। इन पाँच प्रकारके ढंगसे बहुत देरतक मधुरतम नृत्य एवं संगीतका सरस प्रवाह बहता रहा। अब रात्रिका समय अढ़ाई प्रहरसे कुछ अधिक व्यतीत हो जाता है, पर किसीको भी इसकी सुधि नहीं है।

श्रीप्रिया एवं सखियोंकी वेणियाँ खुल गयी हैं। उनमेंसे फूल झर-झरकर गिर रहे हैं। मुखारविन्दपर प्रस्वेद-कण मोतीकी तरह झलमल-झलमल कर रहे हैं। श्रीप्रिया आनन्दमें मूर्च्छित होकर गिरने लगती हैं। इसी समय श्यामसुन्दर मुरली होठोंसे अलग करके प्रियाको हृदयसे लगा लेते हैं। मुरली बंद होते ही और वाद्य-यन्त्र भी बंद हो जाते हैं। प्रत्येक सखीको श्यामसुन्दर अपने हृदयसे लगाकर अपने पीताम्बरसे उसका मुँह पोंछने लगते हैं।

श्रीप्रिया आनन्दमें कुछ देरतक मूर्च्छित रहती हैं। कई सखियाँ भी मूर्च्छित हैं। कोई-कोई अर्द्ध-बाह्य-ज्ञानकी दशामें हैं। सभीको श्यामसुन्दर हृदयसे लगाये-लगाये अपने पीताम्बरसे पंखा झल रहे हैं। धीरे-धीरे सखियाँ पूर्णतः प्रकृतिस्थ हो जाती हैं। प्रकृतिस्थ होते ही श्यामसुन्दर अपने और सब रूपोंको छिपा लेते हैं तथा एक श्यामसुन्दर बचे रहते हैं, जो राधारानीको गोदमें लिये बैठ जाते हैं। थोड़ी देर बाद रानी भी प्रकृतिस्थ हो जाती हैं। रानी हँसती हुई उठ बैठती हैं तथा अपना अञ्चल सँभालने लगती हैं।

वृन्दा आनन्दमें डूबती-उतराती हुई श्रीप्रियाका हाथ पकड़ लेती है तथा प्यारवश हाथोंसे प्रियाके हाथोंको दबाने लग जाती है। वृन्दाकी दासियाँ गुलाबपाशसे सुन्दर-शीतल जल श्रीप्रिया, श्यामसुन्दर एवं सखियोंपर धीरे-धीरे छींटती हैं। यमुना-पुलिनका शीतल-मन्द समीर यद्यपि प्रवाहित हो रहा है, फिर भी वृन्दाकी दासियाँ कमलके फूलोंसे पिरोये हुए सुन्दर-सुन्दर बड़े-बड़े पंखोंको लेकर धीरे-धीरे झलने लग जाती हैं। वृन्दा श्यामसुन्दरके वस्त्रोंमें अत्यन्त सुगन्धित इत्र लगाती है। उन्हें इत्र लगाती देखकर रानी भी थोड़ा इत्र लेकर श्यामसुन्दरके कंधेपरके दुपट्टेमें लगा देती हैं। वृन्दाकी सभी दासियाँ फिर ऐसा अनुभव करती हैं कि मुझे प्यारे श्यामसुन्दरके वक्षमें इत्र लगानेके लिये अवसर मिला है और

वे श्यामसुन्दरके अङ्गोंका स्पर्श पाकर आनन्दमें बेसुध-सी हो जाती हैं। फिर श्यामसुन्दर एवं सभी सखियाँ मिलकर रानीके वस्त्रोंमें इत्र लगाती हैं। इसके बाद श्यामसुन्दर सभी सखियोंके वस्त्रोंमें एक साथ ही इत्र लगाते हैं।

सर्वत्र आनन्द-ही-आनन्द छाया हुआ है। इस समय श्रीप्रिया-प्रियतमका मुख पूर्वकी ओर है। श्रीवृन्दाकी दासियोंकी टोली झारीमें जल एवं कुल्ला करनेके लिये चौड़े मुँहका गमला लिये हुये आ खड़ी होती है। दूसरी टोली सोनेकी परातोंमें सजा-सजाकर सोनेकी तश्तरियोंमें दूधकी मलाई एवं बरफके संयोगसे बनी हुई विभिन्न आकार एवं स्वादकी मिठाइयाँ लिये हुए खड़ी हैं। श्रीश्यामसुन्दर एवं श्रीप्रिया कुल्ला करती हैं। दासियोंकी टोली बड़ी शीघ्रतासे सबको कुल्ला करा देती है। कुल्ला कर लेनेके पश्चात् तश्तरी-भरी परातको श्यामसुन्दरके आगे रख देती है। रानी तश्तरीसे मिठाई निकालकर अत्यन्त प्यारपूर्वक श्यामसुन्दरके मुखमें देती जाती हैं। श्यामसुन्दर श्रीप्रियाके मुखारविन्दकी शोभा निहारते हुए मिठाई खा रहे हैं। कुछ मिठाई खाकर कहते हैं—न, अब तू जबतक नहीं खायेगी, तबतक मैं और नहीं खाऊँगा।

श्रीप्रिया कहती हैं—मैं पीछे खा लूँगी।

श्रीश्यामसुन्दर कहते हैं—तब न सही, मैं भी अब और नहीं खाऊँगा।

श्रीप्रिया प्रेममें भर जाती हैं तथा कहती हैं—अच्छा, मैं खा लूँगी; पर मैं जितनी मिठाई खाऊँ तुम्हें फिर उससे चौगुनी खानी पड़ेगी।

श्यामसुन्दर अत्यन्त प्यारसे कहते हैं—चौगुनी ही सही, इसपर भी यदि मैं अपने हाथसे खिलाऊँ और तू ठीकसे खा ले तो तुमसे आठ गुना अधिक खा लेनेका वचन दे रहा हूँ।

श्रीप्रिया सकुचा जाती हैं। सभी सखियाँ भी आनन्दमें विभोर हो जाती हैं। श्रीप्रिया चुप बैठी रहती हैं। श्यामसुन्दर मुस्कुराकर पूछते हैं—क्यों प्रिये! मेरी बातको स्वीकार करती हो या नहीं?

रानी बहुत सकुचाये स्वरमें धीरेसे कहती हैं—अच्छा, खिला दो।

श्यामसुन्दर अत्यन्त प्यारसे श्रीप्रियाके हाथको पकड़ लेते हैं तथा फिर दाहिने हाथसे श्रीप्रियाके मुखमें मिठाईका एक छोटा-सा खण्ड रख देते हैं। श्रीप्रिया मिठाईको मुखमें लेकर प्रेममें इतनी अधीर होने लगती हैं कि सँभलकर बैठे रहना कठिन हो जाता है। रूपमञ्जरी तुरंत पीछेसे आकर उन्हें सँभाल लेती है। श्रीप्रिया उसीके सहारेसे बैठकर मिठाई खाती हैं। स्वयं श्यामसुन्दर ही अब प्रेममें इतने अधिक विभोर हो जाते हैं कि मिठाईका खण्ड हाथमें लेकर चुपचाप बैठे रह जाते हैं। न प्रियाको यह ज्ञान है कि मैं मिठाई खा रही हूँ, न श्यामसुन्दरको यह ज्ञान ही है कि मैं मिठाई खिला रहा हूँ। दोनों निर्निमेष नयनोंसे एक-दूसरेके मुखारविन्दको देखते हुए चित्रकी भाँति बैठे हैं। सखियाँ भी इनकी दशा देखकर प्रेममें पगली होती जा रही हैं। फिर ललिता कुछ सँभलकर रानीके मुखमें मिठाई देती हैं। रानी यन्त्रकी भाँति मिठाईको धीरे-धीरे कण्ठसे नीचे उतार लेती हैं। श्यामसुन्दर भी यन्त्रकी भाँति मिठाई उठा-उठाकर ललिताके हाथोंमें देते चले जाते हैं। श्रीप्रिया-प्रियतम, दोनोंकी ही अवस्था विचित्र हो गयी है।

ललिता कुछ मिठाई खिलाकर शीतल-सुवासित जलके गिलासको श्रीप्रियाके होठोंसे लगा देती हैं। श्रीप्रिया जलके कुछ घूँट पी लेती हैं। ललिता रानीके होठोंको जलसे पोंछकर चाहती हैं कि रूमालसे पोंछ दूँ, पर श्यामसुन्दर अपना पीत दुपट्टा ललिताके हाथमें दे देते हैं। ललिता मुस्कुराती हुई उसी दुपट्टेसे रानीका मुँह पोंछ देती हैं। अब रानीको चेत हो आता है। श्यामसुन्दरकी भी भाव-समाधि टूट जाती है। दोनों ही एक-दूसरेको देखकर हँस पड़ते हैं। श्यामसुन्दर फिर सखियोंको उसी प्रकार एक साथ मिठाई खिलाते हैं। फिर आपसमें एक-दूसरेको पान भी उसी प्रकार खिलाते हैं।

अब रात्रि लगभग तीन पहर पूरी होनेको आ गयी है। श्रीश्यामसुन्दरकी आँखोंमें प्रेमभरा आलस्य-सा झलकने लगता है। श्रीप्रिया मुस्कुराती हुई उठ पड़ती हैं। मण्डलीके सहित श्यामसुन्दर विश्राम-कुञ्जकी ओर चलने लगते हैं। श्रीयमुनाके उत्तरी तटपर विश्राम-कुञ्जकी पंक्तियाँ लगी हुई हैं। आज जिस कुञ्जमें विश्राम करना है, उसी ओर

वृन्दा आगे-आगे चल रही है। उनके पीछे प्रिया-प्रियतम एवं उनके पीछे सखियाँ चल रही हैं।

बालुकामय पुलिन एवं तटके बीचमें यमुनाकी एक धारा बहती है। उसपर नावका अत्यन्त सुन्दर पुल है। उसीपर चढ़कर श्रीप्रिया-प्रियतम किनारेपर पहुँचते हैं। मार्गमें चलते हुए आपसमें अत्यन्त प्रेममय विनोद होता जा रहा है। श्रीप्रिया-प्रियतम एवं सखियाँ कुछ सघन वन-श्रेणीको पार करती हैं तथा मणियोंके प्रकाशमें चमचम करते हुए सुन्दर पथसे चलकर रत्नमय निकुञ्ज-भवनमें आ पहुँचती हैं।

निकुञ्ज-भवनकी शोभा अनुपम ही है। उसमें प्रत्येक सखी, दासी एवं मञ्जरीके विश्रामके लिये अलग-अलग स्थान बने हुए हैं। निकुञ्ज-भवनके मध्यमें अत्यन्त सुसज्जित कमरा है, जिसमें सेवाकी सब सामग्रियाँ हैं। अत्यन्त सुन्दर मखमली शय्या बिछी है। उसके पास ही कमलोंकी एक और पुष्प-शय्या है। समस्त कमरेमें अपूर्व शान्ति-आनन्द-उल्लास भरा हुआ है। रानी जाकर श्यामसुन्दरको मखमली शय्यापर बैठा देती हैं। श्यामसुन्दर मुस्कुराने लग जाते हैं। कुछ देर आपसमें निर्मल विशुद्ध प्रेममय विनोद होता रहता है।

फिर ललिता उठकर खड़ी हो जाती हैं। अत्यन्त प्यारसे कहती हैं—मुझे नींद आ रही है, मैं सोने जा रही हूँ।

श्यामसुन्दर चाहते हैं कि ललिताको पकड़कर बैठा लें, पर वे फुर्तीसे बाहर निकल आती हैं तथा समीपस्थ कमरेमें शीघ्रतासे जाकर द्वार बंद कर लेती हैं। इसी प्रकार और-और सखियाँ भी कोई किसी मिससे, कोई किसी मिससे बाहर आ जाती हैं। सबसे पीछे रूपमञ्जरी निकलती है। बाहर आकर वह द्वारको बंद कर देती है।

द्वारके पास ही दो पंक्तियोंमें, छः इस ओर एवं छः उस ओर अत्यन्त सुन्दर मखमली गद्दोंकी शय्याएँ लगी हुई हैं। रूपमञ्जरीके द्वारा द्वार बंद कर दिये जाते ही बारह मञ्जरियाँ उन्हीं शय्याओंपर लेट जाती हैं। उनकी चार-चारकी एक टोली बारी-बारीसे प्रत्येक घंटेमें जागती रहती है,

कि जिससे कहीं कुछ सेवाकी आवश्यकता होनेपर प्रिया-प्रियतमको कष्ट न हो जाये।

वृन्दा प्रत्येक सखीके द्वारके पास जाती हैं तथा छिद्रसे देखकर मुस्कुराती हुई आगे बढ़ती हैं। प्रत्येक जगह जा-जाकर जब वृन्दा स्वयं देख लेती हैं कि सब विश्रामके स्थानमें ठीक-ठीक पहुँच गयी हैं, तब अपनी दासियोंके साथ उसी महलके समीपस्थ महलमें जाकर विश्राम करती हैं।

शीतल-मन्द-सुगन्धित पवन प्रवाहित हो रहा है। यमुनाका प्रवाह बड़ी शान्तिकी अवस्थामें है। सर्वत्र एक अनिर्वचनीय शान्ति फैली हुई है। अवश्य ही कान लगाकर सुननेसे ऐसा प्रतीत हो रहा है कि वन एवं यमुना-पुलिनका अणु-अणु धीरे-धीरे जप रहा है—

'राधेश्याम राधेश्याम राधेश्याम राधेश्याम।'

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

शृङ्गार लीला

श्रीप्रिया-प्रियतम श्रीविशाखाकी कुञ्जमें कदम्बकी छायामें विराजमान हैं। कदम्बके चारों ओर फूल खिले हुए हैं। उनपर भौंरे गुञ्जार कर रहे हैं। कदम्बके नीचे आलबाल (गट्टा) बना हुआ है, जो भूमिसे लगभग डेढ़ हाथ ऊँचा है। आलबालके चारों ओरकी भूमिपर आठ-आठ हाथतक संगमरमर लगा हुआ है। इसके बाद बेला-पुष्पके पौधोंकी गोलाकार क्यारी लगी हुई है। बेलेके बाद दूसरी गोलाकार क्यारी मल्लिकाके फूलोंकी है। इसके बाद भूमिपर हरी-हरी दूब लगी हुई है। स्थान-स्थानपर स्थल-कमल एवं अत्यन्त सुगन्धित फूलोंकी छोटी-छोटी झाड़ियाँ भी लगी हुई हैं।

श्रीप्रिया-प्रियतम दक्षिणकी ओर मुँह किये बैठे हैं। दोनोंकी पीठ गट्टेके सहारे टिकी हुई है। श्रीश्यामसुन्दरकी बायीं ओर श्रीप्रियाजी बैठी हैं। दोनोंके आगे बाँसकी बनी हुई डलियामें बेला एवं चमेलीके फूल रखे हुए हैं। बाँसकी डलिया केलेके हरे एवं पीले पत्तोंसे जड़ दी गयी है तथा उसपर पानीकी कुछ बूँदें झलक रही हैं। श्रीप्रिया-प्रियतम एक धागेमें फूलोंको पिरो-पिरोकर गजरा बना रहे हैं। धागेके एक छोरको पकड़कर श्रीप्रिया फूल पिरो रही हैं तथा दूसरे छोरको पकड़े हुए श्यामसुन्दर फूल पिरो रहे हैं। फूल तोड़ती हुई कुछ सखियाँ पासमें ही बेले एवं चमेलीकी क्यारियोंमें खड़ी हैं। वे सब फूल तोड़-तोड़कर अपने-अपने अञ्चलोंमें रखती जाती हैं। जब कुछ इकट्ठे हो जाते हैं तो वे उन्हें लाकर श्यामसुन्दरके आगे रखी हुई डलियामें उड़ेल देती हैं।

यद्यपि अत्यन्त शीतल-मन्द-सुगन्धित पवन चल रहा है, फिर भी विमलामञ्जरी खसके बने हुए एक पंखेको धीरे-धीरे झल रही है। विमलामञ्जरी उत्तरकी ओर मुँह किये खड़ी है। श्रीप्रिया-प्रियतमके मुखारविन्दपर रह-रहकर अत्यन्त मधुर मुसकान झलक जाती है, पर दोनों ही उसे रोकनेकी चेष्टा करके ऐसा भाव व्यक्त करते हैं मानो दोनों ही सर्वथा एकान्त मनसे फूलोंको पिरो रहे हैं। श्रीप्रिया कनखीसे

श्यामसुन्दरको देखती हैं तथा श्यामसुन्दर श्रीप्रियाजीको। इस चेष्टामें जब दोनोंकी आँखें मिल जाती हैं तो प्रिया लज्जित होकर कभी ललिता, कभी विशाखाका नाम लेकर पुकार उठती हैं और कहती हैं—ललिते! देख, जल्दी और फूल ला। अब डलियाके फूल समाप्त हो चले हैं।

श्यामसुन्दर भी श्रीप्रियाकी बातोंको विनोदमें उड़ा-सा देते हुए कहते हैं—हाँ-हाँ, अब फूल बहुत कम रह गये हैं, शीघ्र ला।

गजरेके दोनों छोरोंको बार-बार इकट्ठा करके श्रीप्रियाजी एवं श्यामसुन्दर देखते हैं कि गाँठ देने जितनी माला पिरोयी जा चुकी है कि नहीं। ऐसा करते समय श्रीप्रिया एवं श्यामसुन्दर, दोनोंकी अँगुलियाँ छू जानेके कारण दोनोंमें ही प्रेम उफनने लगता है, जिससे दोनोंके ही शरीर काँप जाते हैं तथा कभी दोनोंके मुखारविन्द प्रस्वेद-कणोंसे भर जाते हैं। क्रमशः गजरा तैयार हो जाता है। श्रीप्रिया गाँठ देनेके लिये गजरेके दूसरे छोरको पकड़ लेती हैं। गाँठ देनेका कार्य हो चुकनेके बाद श्यामसुन्दर पिरोनेके लिये फूलोंको डलियामेंसे छाँट-छाँटकर अलग अपने पीताम्बरके एक किनारेपर रख रहे हैं। अब श्यामसुन्दर उस सुन्दर गजरेको अपने हाथमें लेकर उस गजरेमें लटकनेवाले गुच्छेका निर्माण करनेके लिये फूल पिरोने लगते हैं। कदम्बके पुष्पोंकी मीठी-मीठी सुगन्ध आ रही है। श्यामसुन्दरकी वनमालासे निकली हुई सुगन्धिके कारण भौंरोंका एक दल बार-बार मँडराकर आता है। वह चाहता है कि वनमालापर बैठ जाये, पर प्रिया अपने हाथमें रूमाल उठाकर उन्हें उड़ा देती हैं।

श्यामसुन्दर फूल पिरो रहे हैं। श्रीप्रिया चुन-चुनकर उनके हाथोंमें फूल देती चली जा रही हैं। जब गजरा बन जाता है तो श्यामसुन्दर उसे अपने हाथोंमें लेकर प्रियाको पहनानेके लिये खड़े हो जाते हैं; पर प्रिया गजरेको पकड़ लेती हैं तथा कहती हैं—नहीं, इसे मैं तुम्हें पहनाऊँगी।

श्यामसुन्दर कहते हैं—नहीं, इसे मैं तुम्हें पहनाऊँगा। प्रतिदिन मेरा शृङ्गार तू पहले करती है, आज मैं तुम्हारा करूँगा।

सभी सखियोंके सामने श्यामसुन्दरके द्वारा शृङ्गार करानेमें श्रीप्रिया लज्जाका अनुभव करती हैं, अतः वे कहती हैं—नहीं।

श्रीललिता आती हैं तथा दाहिने हाथसे श्रीराधारानीके बायें कंधेको पकड़कर कहती है—देखो, मैं निर्णय कर देती हूँ। पर इसमें फिर किसीको आनाकानी नहीं करनी पड़ेगी।

श्रीराधा—क्या निर्णय, बताओ!

श्रीललिता—पहले यह बता, तू मान लेगी न?

श्रीराधा—ऐसे कैसे हाँमी भर लूँ? तू पहले निर्णयका रूप बता दे, फिर 'हाँ' या 'ना' कहूँगी।

श्यामसुन्दरने बीचमें ही रोककर कहा—मैं तो मान लूँगा।

श्यामसुन्दरके इस प्रकार कहते ही सबको आश्चर्य हुआ कि आज श्यामसुन्दर बिना किसी आनाकानीके ललिताका बताया हुआ निर्णय कैसे मान रहे हैं? क्या बात है? अब सभी सखियाँ राधारानीपर भी दबाव डालने लगती हैं कि तू भी मान ले। सखियोंके कहनेपर राधारानी भी हाँमी भर देती हैं कि मैं भी मान लूँगी।

ललिता बेलके बड़े-बड़े फूल उठा लेती हैं तथा दोनोंके सामने फूलकी एक पँखुड़ीपर 'राधा' तथा दूसरे फूलकी एक पँखुड़ीपर 'श्याम'का चिह्न बना करके दोनों फूलोंको हाथकी अञ्जलिमें रखकर कहती है—तुम दोनों आँखें मूँद लो। मैं इन्हें उलटकर रख देती हूँ। फिर राधा एक फूल उठा ले। जिसका नाम उसमें रहेगा, उसीको आज गजरा पहनाने तथा शृङ्गार करनेका अधिकार समझा जावेगा।

श्रीप्रिया-प्रियतम आँखें मूँद लेते हैं। ललिता दोनों फूलोंको उलटकर रख देती हैं तथा कहती है—आँखें खोलो!

राधारानी आँखें खोलकर बड़े विचारमें पड़ जाती हैं तथा सोचने लगती हैं कि कौन-सा उठाऊँ। सोचते-सोचते वे एक फूल उठा लेती हैं। संयोगवश वे उसीको उठाती हैं, जिसपर 'श्याम' नाम लिखा था। श्रीकृष्ण उनके उठाते ही दूसरा फूल उठा लेते हैं तथा देखते हैं कि किसका नाम प्रिया राधाने उठाया है। देखते ही वे आनन्दमें भरकर गजरा श्रीप्रियाके गलेमें डाल देते हैं तथा सखियाँ आनन्दमें निमग्न होकर ताली बजाने लगती हैं।

अब फूलोंका शृङ्गार आरम्भ होता है। श्रीप्रियाके लिये श्यामसुन्दर भाँति-भाँतिके फूलोंके गहनोंका निर्माण करते हैं तथा उनसे प्रियाको सजाते हैं। सखियाँ भी विभिन्न प्रकारके फूलोंको ला-लाकर डलियामें उड़ेलती जा रही हैं। अन्तमें श्यामसुन्दर फूलोंकी अत्यन्त सुन्दर चन्द्रिका बनाते हैं। उसे प्रियाके सिरपर बाँधनेके लिये वे प्रियासे पहलेवाली रत्न-मणि-मोती-जटित चन्द्रिकाको उतारनेके लिये कहते हैं। प्रियाका संकेत पाकर विशाखा धीरेसे अञ्चल हटाकर और बन्धन खोलकर उसे उतार लेती है। श्यामसुन्दर प्रियाके मस्तकपर पुष्पोंकी चन्द्रिका बाँधते हैं। बाँधते समय प्रेमावेशके कारण श्यामसुन्दरका हाथ काँपने लगता है तथा बहुत चेष्टा करनेपर भी हाथ स्थिर नहीं रह पाता। श्रीप्रिया मुस्कुराकर कहती हैं—खेल मत करो। शीघ्र बाँध दो।

श्यामसुन्दर उसे नहीं बाँध पाते। श्यामसुन्दरकी यह प्रेमावस्था देखकर श्रीप्रियामें भी प्रेमका संचार होने लगता है। उनका शरीर भी कुछ काँपने-सा लगता है। श्यामसुन्दर अपनेको कुछ सँभालकर मुस्कुराते हुए कहते हैं—मैं क्या करूँ? तू सिर हिला दे रही है, इसीसे मैं बाँध नहीं पा रहा हूँ।

श्रीप्रिया मुस्कुराती हुई चन्द्रिकाको अपने हाथोंसे पकड़ लेती हैं तथा कहती हैं—लो, देखो! मैं स्वयं बाँध लेती हूँ।

श्यामसुन्दरका हाथ काँप रहा था, इसलिये वे चन्द्रिकाको श्रीप्रियाके हाथोंमें दे देते हैं। प्रियाजी चन्द्रिका बाँधने लगती हैं। श्यामसुन्दर सामने पड़े हुए दर्पणको उठाकर श्रीप्रियाके मुखके सामने करते हैं, फिर भी हाथ रह-रहकर काँप जाता है, जिससे दर्पण हिल जाता है। इधर श्रीप्रिया दर्पणमें अपना मुख देखना चाहती हैं तथा चाहती हैं कि उसमें देखकर चन्द्रिका ठीकसे बाँध लूँ; पर दर्पणमें उन्हें अपना मुख नहीं दीखता। अपने मुखके स्थानपर उन्हें दर्पणमें श्यामसुन्दरका ही सुन्दर मुख दीखता है। अतः बड़ी कठिनतासे वे चन्द्रिकाको अपने सिरपर बाँध पाती हैं। चन्द्रिका बाँधते ही वे प्रेमसे मूर्च्छित होकर श्यामसुन्दरकी गोदमें गिर पड़ती हैं। श्यामसुन्दर उन्हें अपनी गोदमें लिटाकर अपने बायें हाथसे खसके पंखेको पकड़कर झलने लगते हैं तथा दाहिने हाथसे

प्रियाजीके शरीरको धीरे-धीरे सहलाते हैं। मधुमतीमञ्जरी वीणाके तारोंको शीघ्रतासे ठीक करके सुर मिलाकर अत्यन्त मधुर-मधुर स्वरमें गाने लगती है—

> तू है सखी बड़भाग भरी नंदलाल तेरे घर आवत हैं।
> निज कर गूँथि सुमन के गजरे हरषि तोहि पहरावत हैं॥
> तू अपनो सिंगार करति जब दरपन तोहि दिखावत हैं।
> आनँदकंद चंद मुख तेरो निरखि निरखि सुख पावत हैं॥
> जाके गुन सब जगत बखानत सो तेरो गुन गावत हैं।
> नारायन बिन दाम आजकल तेरेहि हाथ बिकावत हैं॥

श्रीप्रियाकी मूर्च्छा टूट जाती है तथा वे अपनेको श्यामसुन्दरकी गोदमें पड़ी हुई पाती हैं। वे लज्जाका अनुभव करती हुई घबराकर शीघ्र उठ जाती हैं और अपना अञ्चल सँभालने लगती हैं। श्यामसुन्दर हँसने लगते हैं। सखियाँ भी हँसने लगती हैं। अब श्यामसुन्दरके शृङ्गारकी बारी आती है। सभी सखियाँ आनन्दमें फूली हुई भाँति-भाँतिके आभूषण बनाती हैं तथा राधारानीके हाथोंमें देती जाती हैं। श्रीराधारानी श्यामसुन्दरको सजा रही हैं।

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

आँखमिचौनी लीला

श्रीचित्राके कुञ्जमें श्रीप्रिया-प्रियतम अत्यन्त सुन्दर पुष्पोंसे लदी हुई एक झाड़ीकी छायामें बैठे हैं। श्रीकृष्ण झाड़ीकी जड़में पीठ टेककर उत्तरकी ओर मुख किये बैठे हैं। वे दोनों पैर फैलाये हुए हैं। श्रीप्रिया उनकी बायीं ओर उसी प्रकार झाड़ीकी मूलसे अपनी पीठ टेके हुए बैठी हैं, पर उनका दाहिना हाथ श्यामसुन्दरके बायें कंधेपर है। श्रीललिता श्रीश्यामसुन्दरकी दाहिनी ओर कुछ दूरपर खड़ी हैं। सामने विशाखा एवं चित्रा एक कपड़ेके दोनों छोरोंको पकड़कर उसमें शर्बत छान रही हैं। शर्बत छन-छनकर चौड़े मुखके स्वर्णपात्रमें गिर रहा है। उस स्वर्णपात्रसे शर्बत गिलासमें भरकर रूपमञ्जरी दूसरे-दूसरे गिलासोंमें भरती जा रही है। विमलामञ्जरी उन गिलासोंको सजा-सजाकर बहुत बड़ी सोनेकी परातमें रखती जा रही है।

श्यामसुन्दर बीच-बीचमें मुरलीको होठोंसे लगाकर उसमें एक-दो बार फूँक भर देते हैं। फूँक भरते ही उसकी स्वर-लहरी वनमें गूँजने लगती है तथा सखियों एवं राधारानीका शरीर उतनी देरतक प्रेमसे काँप उठता है। श्यामसुन्दर बीच-बीचमें श्रीप्रियाकी ओर देख भी लेते हैं। श्रीप्रिया मुस्कुराकर अपने हाथोंसे कभी-कभी श्यामसुन्दरकी आँखें मूँद देती हैं।

संकेतके पाते ही रूपमञ्जरी शर्बतका एक गिलास लाकर श्रीप्रियाके हाथोंमें पकड़ा देती है। श्रीप्रिया उसे श्यामसुन्दरके होठोंसे लगा देती हैं। श्रीश्यामसुन्दर एक घूँट शर्बत पीते हैं और फिर श्रीप्रियाके मुखारविन्दकी शोभा निहारने लगते हैं। श्रीप्रिया इस बार दाहिने हाथसे गिलासको पकड़े रहती हैं तथा बायें हाथसे श्यामसुन्दरको आँखें मूँद देती हैं; पर श्रीप्रियाकी अँगुलियोंके छिद्रोंसे फिर भी श्यामसुन्दर श्रीप्रियाकी शोभा निहारने लगते हैं। श्रीप्रिया कुछ सकुचायी-सी होकर धीरेसे कहती हैं—तुम्हारा नटखटपना नहीं जाता। शर्बत पीनेमें इतनी देर लगाते हो!

श्रीप्रियाकी बात सुनकर श्यामसुन्दर अपना मुख ऊपरकी ओर उठा देते हैं तथा हँसते हुए कहते हैं—अच्छा ! हम तो नटखट हुए, ठीक; पर तुम्हारा नखरा क्या कम हो गया है ?

इस बार श्रीप्रिया बायें हाथसे श्यामसुन्दरके सिरको अत्यन्त प्रेमसे हिलाकर बहुत धीरेसे कहती हैं—देखो, शीघ्र पी लो। ललिता-विशाखाको इसी समय एक कामसे मुझे बाहर भेजना है।

श्यामसुन्दर इस बार श्रीप्रियाकी ओर देखते हुए शीघ्रतापूर्वक पाँच-सात घूँट पी लेते हैं। श्रीप्रिया गिलासको लेकर रूपमञ्जरीके हाथमें दे देती हैं। रूपमञ्जरी गिलासको लेकर जैसे ही पीछे हटनेके लिये पैर बढ़ाती है, वैसे ही श्यामसुन्दर गिलासको पकड़ लेते हैं तथा कहते हैं—थोड़ा और पीऊँगा।

श्रीश्यामसुन्दर गिलास लेकर श्रीप्रियाके होठोंके पास ले जाना चाहते हैं कि इतनेमें ही ललिता वहाँ आ जाती हैं तथा कहती हैं—देखो, शर्बत पीते-पीते तुमने तो इतनी देर कर दी। कलकी बात भूल गये क्या ?

श्यामसुन्दर गिलास हाथमें लिये हुए ही ऐसा भाव बनाते हैं मानो उन्हें सचमुच कोई बात स्मरण ही नहीं हो तथा आश्चर्यभरी मुद्रामें कहते हैं—कलकी कौन-सी बात ?

ललिता श्यामसुन्दरके हाथसे चटसे गिलास ले लेती हैं। श्यामसुन्दर भी बिना आनाकानीके गिलास छोड़ देते हैं। गिलास लेकर ललिता कहती हैं—ऐसे साधु बन गये मानो कुछ स्मरण ही नहीं है।

ललिताकी बात सुनकर श्यामसुन्दर मुस्कुरा पड़ते हैं और कहते हैं—हाँ, अब स्मरण आया। अभी-अभी, देख, मैं अभी एक साथ ही तुम सब लोगोंको सिखला देता हूँ।

श्यामसुन्दरकी बात सुनकर ललिता कहती हैं—चतुराई रहने दो, बात पलटनेसे नहीं छोड़ूँगी। आज होड़ बदकर देख लो, तुम्हें मैं कितना छकाती हूँ।

यह सुनकर श्यामसुन्दर चटपट बोल उठते हैं—हाँ, हाँ, मैं भूल

गया था। क्या हानि है? देख ले। मैं हटता नहीं; पर एक बात तुम सबको माननी होगी।

ललिता—क्या बात ?

श्यामसुन्दर—मेरी आँख मेरी प्रिया राधा मूँदेगी।

ललिता—यह तो होनेका ही नहीं है। राधाके आँख मूँदनेपर तो तुम देख ही लोगे कि मैं कहाँ छिप रही हूँ। और नहीं तो यह राधा तुम्हें व्याकुल देखकर संकेतसे ही बता देगी कि ललिता किधर गयी है।

बात यह थी कि कल श्यामसुन्दरने यह प्रतिज्ञा की थी कि आँखमिचौनीके खेलमें यदि मैं हार गया, तब तो एक दिनके लिये वंशी राधारानीके हाथ बन्धक रख दूँगा। और यदि मैं नहीं हारा तो होगा यह कि श्रीराधा या ललिता आदि सखियोंमेंसे जो-जो हारेंगी, उन सबको एक-एक घंटेतक मेरे हाथकी कठपुतली बनकर, मैं जो कहूँगा, वही-वही करना पड़ेगा। कल देर हो जानेके कारण यह खेल नहीं हो सका था, इसलिये आज ललिताने स्मरण दिलाया है तथा प्रोत्साहन दे रही है।

ललिता एवं श्यामसुन्दरमें झगड़ा होने लग जाता है। श्यामसुन्दर कहते हैं कि यदि मैं चोर बना तो प्रिया राधा ही मेरी आँखें मूँदेगी और ललिता कहती है—ना, राधाको तो आँखें मूँदने ही नहीं दूँगी। या तो विशाखा मूँदेगी या चित्रा।

अब वृन्दा पंच बनायी जाती है। वृन्दादेवीने यह निर्णय दिया—ऐसे नहीं। राधा, विशाखा, चित्रा, तीनोंके नाम मैं तीन फूलोंपर लिखकर उन फूलोंको ऊपर आकाशमें उछाल देती हूँ। जो फूल पट गिरेगा, अर्थात् दल भूमिकी ओर एवं डंटी आकाशकी ओर होकर गिरेगा, उसे मैं छोड़ दूँगी, अर्थात् वह आँख नहीं मूँद सकेगी। यदि तीनों फूल पट गिरे तो इन तीनोंके अतिरिक्त कोई चौथी ही आँख मूँदेगी।

वृन्दा इस प्रकार कहकर तीन फूलोंको समीपस्थ डलियामेंसे उठा लेती है। एकपर 'राधा', दूसरेपर 'विशाखा' और तीसरेपर 'चित्रा' का चिह्न बनाती है तथा तीनोंको एक साथ ही आकाशमें उछाल देती है।

तीनों फूल एक साथ ही भूमिपर गिरते हैं। जिसपर श्रीराधारानीका नाम चिह्नित था, वही फूल आकाशकी ओर दल तथा भूमिकी ओर डंटी करके गिरा। अतएव श्रीकृष्णके आनन्दकी सीमा नहीं रही। वे हँसकर ताली पीटने लग जाते हैं। राधारानी कुछ लजा-सी जाती है।

ललिताके हाथमें अभीतक श्यामसुन्दरके अधरामृत शर्बतका गिलास उसी तरह पड़ा था। वे कुछ मुस्कुराती हुई कहती हैं—अच्छी बात है, देख लूँगी।

ऐसा कहनेके बाद वे कुछ आगे बढ़कर श्रीराधारानीका एक हाथ बायें हाथसे पकड़कर कुछ दूर पश्चिमकी ओर ले जाती हैं तथा श्यामसुन्दरकी ओर पीठ करके रानीके कानमें कुछ कहती हैं। रानी मुस्कुराती हुई सुनती हैं। कुछ ही क्षणमें बात समाप्त हो जाती है तथा ललिता उस गिलासको रानीके होठोंसे लगा देती हैं। रानी उसमेंसे चार-पाँच घूँट बहुत शीघ्रतासे पी लेती हैं। रूपमञ्जरी तुरंत वहाँ जलकी झारी लेकर पहुँच जाती है तथा सोनेके गिलासमें पानी भरकर रानीके होठोंसे लगा देती है। मुँहमें कुल्ला भरकर रानी उसे शीघ्रतासे भूमिपर ही फेंक देती हैं तथा ललिताके पास चली जाती हैं, जो वहाँसे कुछ दूर खड़ी होकर कुछ गम्भीरतासे सोच रही थीं। रानी ललिताकी कमरमें खोंसी हुई रूमाल निकाल लेती हैं तथा उससे अपना मुँह पोंछकर धीरे-धीरे श्यामसुन्दरके पास आकर खड़ी हो जाती हैं।

इसी बीच श्यामसुन्दरने भी कुल्ले कर लिये थे। वे विशाखाके हाथसे दिये हुए पानको हाथमें लेकर खड़े-खड़े श्रीप्रियाकी ओर देख रहे हैं। मुखपर मन्द-मन्द मुस्कान है। श्रीप्रियाको पास आयी देखकर श्यामसुन्दर मुस्कुराकर कहते हैं—क्यों, ललितारानीसे सीख-पढ़ लिया तो?

रानी अत्यन्त प्यारभरी मुद्रामें मुस्कुराती हुई धीरेसे कहती हैं—थोड़ा सीखना और शेष है। तुम्हारी आँखें मूँदते समय वह भी सीख लूँगी।

फिर रानी श्यामसुन्दरके दाहिने हाथको, जिसमें पानका बीड़ा था, धीरेसे पकड़ लेती हैं तथा श्यामसुन्दरके होठोंसे सटा देती हैं।

श्यामसुन्दर पान मुँहमें रख लेते हैं ।

अब सारी मण्डली आँखमिचौनीका खेल खेलनेके लिये पूर्वकी ओर बढ़ने लगती है । लगभग बीस गज चलकर मेंहदीकी गोलाकार क्यारीसे घिरे हुए एक स्थलपर श्रीप्रिया-प्रियतम एवं सखियाँ पहुँच जाती हैं । मेहराबदार द्वारसे प्रवेश करके वे लोग घेरेके भीतर चली जाती हैं । घेरेका व्यास लगभग साठ गज है, जिसके चारों ओर पाँच-पाँच हाथ ऊँची मेंहदीकी झाड़ियोंकी क्यारी है । घेरेसे निकलनेके लिये चारों दिशाओंमें चार मेहराबदार द्वार हैं, जिनपर लताएँ फैली हुई हैं तथा उनमें फूल खिल रहे हैं । घेरेके भीतर सब स्थानपर पाँच, छः, सात, आठ हाथके यथायोग्य अन्तरपर छिपनेके लिये झाड़ियाँ बनी हुई हैं । उनमें भी फूल खिले हुए हैं ।

घेरेके बीचमें चारों ओरसे आठ-आठ हाथका स्थान झाड़ियोंसे खाली है । उसपर हरी दूब लग रही है । दूब इतनी कोमल एवं सघन है मानो हरे रंगकी सुन्दर मखमली कालीन बिछी हुई हो । उसी स्थलपर आकर श्रीप्रिया-प्रियतम बीचमें बैठ जाते हैं । इस समय श्रीप्रिया-प्रियतमका मुख पश्चिमकी ओर है । सखियाँ भी उन्हें चारों ओरसे घेरकर कुछ तो बैठ जाती हैं, कुछ खड़ी रहकर ही श्यामसुन्दरके मुखारविन्दकी शोभा निहार रही हैं । अब यह विचार होने लगता है कि खेलमें पहले चोर कौन बने, अर्थात् किसकी आँख पहले मूँदी जावे । इसका निर्णय करनेके लिये ललिता एक बित्ता लंबी दूबका एक तिनका हाथमें उठा लेती हैं । उसे अपनी दोनों तलहथियोंको सटाकर इस प्रकार रख लेती हैं कि तिनकेका एक छोर तो तलहथीके भीतर छिप जाता है एवं दूसरा बाहर लटकता रहता है ।

लगभग दो-तिहाई तिनका बाहर निकला हुआ है और एक-तिहाई ललितारानीकी सटी हुई तलहथीके अंदर छिपा हुआ है । ललिता कहती हैं—देखो, श्यामसुन्दर ! तुम एवं मेरी सभी सखियाँ इस तिनकेको थोड़ा-थोड़ा बाहरकी ओर खींचो । जिसके हाथसे खींचे जाते हुए यह तिनका सम्पूर्ण रूपसे बाहर निकल आयेगा, वही पहले चोर बनेगा । उसकी आँख पहले मूँदी जायेगी ।

ललिताकी बात सुनकर श्रीश्यामसुन्दर आगे बढ़कर तिनकेको किंचित् खींचते हैं। खींचकर छोड़ देते हैं तथा धीरेसे राधारानीसे कहते हैं—थोड़ा तू खींच।

ललिता हँसकर कहती है——अरे! यह कैसे खींचेगी? यह तो आँख मूँदनेवाली है।

श्यामसुन्दर कुछ मुस्कुराकर कहते हैं—तू भला थोड़े भूलनेकी है।

श्यामसुन्दर और सखियोंको खींचनेके लिये संकेत करते हैं। विशाखा जाकर थोड़ा खींच लेती है, फिर चित्रा खींचती है, फिर इन्दुलेखा, चम्पकलता, तुङ्गविद्या, सुदेवी, रङ्गदेवी क्रमशः थोड़ा-थोड़ा खींचती हैं। अब तिनका अधिकांश बाहर निकल चुका है। लगभग एक-डेढ़ अंगुल भीतर छिपा है। फिर श्यामसुन्दर थोड़ा खींचते हैं और उसी प्रकार क्रमशः उपर्युक्त सभी सखियाँ खींचती हैं; पर तिनका अभी भी बाहर नहीं निकला है। किसीको पता तो था नहीं कि कितनी लंबी दूबका तिनका ललिताने चढ़ाया है। इसलिये सभी इतना कम खींचती हैं कि कठिनाईसे प्रत्येक बार तिनका एक चावलभर बाहर निकल पाता है। अब फिर श्यामसुन्दरकी बारी आ गयी। श्यामसुन्दरने तिनकेको छूआ ही था कि तिनका बाहर निकल पड़ता है। श्रीश्यामसुन्दर हँसते हुए ललिताके दोनों कंधोंको पकड़ लेते हैं तथा कहते हैं--तुमने छल किया है। जान-बूझकर मेरे छूते ही तुमने तिनका गिरा दिया है।

ललिता कहती है—नहीं, तुमने खींचा है। मैं तो जैसे पहले पकड़े हुए थी, वैसे ही पकड़े रही हूँ।

श्यामसुन्दर कंधा छोड़कर अलग हो जाते हैं तथा कहते हैं—-अच्छी बात है, देख लूँगा। पहलेसे ही कह देता हूँ, इस बार तुम्हारी ही बारी आयेगी; तू भले कहीं भी छिप जा।

अब खेल प्रारम्भ होता है। वृन्दादेवी निर्णय करनेवाली बनती हैं तथा ध्रुवस्थान श्रीरूपमञ्जरी बनती है। श्रीश्यामसुन्दर पूर्वकी ओर मुख करके बैठ जाते हैं। श्रीप्रिया मन्द-मन्द मुस्कुराती हुई आगे बढ़कर श्रीश्यामसुन्दरकी दोनों आँखोंको पीछे रहकर अपने दोनों हाथोंकी

सलइयोंसे बड़ी कोमलताके साथ मूँद लेती हैं। आँख मूँदते ही श्रीप्रियाके अङ्गोंमें प्रेमके विकार पैदा होने लगते हैं। शरीरसे हठात् इतना पसीना निकलने लग जाता है कि नीली साड़ी मानो भीग-सी जाती है तथा हाथ भी काँपने लगते हैं।

ललिता मुस्कुराकर कहती हैं—तब तो खेल हो चुका! श्यामसुन्दर! तुम हो बड़े चतुर! तुम्हारी इच्छा थी नहीं, इसीलिये तुमने राधाको चुन लिया! अब बताओ, इसकेद्वारा तो तुम्हारी आँखें मूँदी और न मूँदी जानी, दोनों एक समान ही है।

श्रीललिताकी बात सुनकर रानी कुछ लजा-सी जाती हैं। फिर वे कुछ धैर्य धारण करती हैं और कुछ लजायी मुद्रामें ललितासे डाँटती हुई कहती हैं—अच्छा-अच्छा, चल, हट! तू भला हमसे अच्छा मूँद पाती क्या?

इसके बाद श्रीप्रिया अपना रूमाल हाथमें लेकर अपना मुँह पोंछने लगती हैं। फिर तुरंत ही उस रूमालकी चार तह बनाकर श्यामसुन्दरकी आँखोंपर उस रूमालको रख देती हैं तथा इस बार बड़े साहसके साथ धीरेसे रूमालको अपने दोनों हाथोंसे दबा देती हैं। श्रीप्रियाके वैसा करते ही श्यामसुन्दर अपने दोनों हाथ आँखोंके पास ले जाते हैं। उसी समय वृन्दा सामने आ जाती हैं तथा कहती हैं--नहीं श्यामसुन्दर! यह तो अनुचित है। तुम ऐसा नहीं कर सकते। ऐसा करके तुम राधारानीके हाथोंको ढीला बना लोगे और फिर देख लोगे कि कौन कहाँ छिपती है।

श्यामसुन्दर हँसकर कहते हैं--अच्छी बात है, ऐसा नहीं करूँगा।

अब श्यामसुन्दर पाल्थी मारे हुए भूमिपर दोनों हाथोंको टेककर बैठे रहते हैं। श्रीवृन्दा देख लेती हैं कि आँखें ठीकसे मुँदी हुई हैं, तब वे 'एक-दो' बोलती हैं। श्रीवृन्दा साथ ही यह भी कहती हैं—आजके खेलमें कोई भी मेंहदीके घेरेके बाहर जाकर नहीं छिपेगी। यह नियम जो सखी तोड़ेगी, उसका हाथ बाँधकर मैं श्यामसुन्दरको सौंप दूँगी। श्यामसुन्दर फिर जो दण्ड देना चाहेंगे, देंगे। मैं फिर उसमें कुछ भी रोक-टोक नहीं करूँगी।

वृन्दाके 'एक-दो' बोलते ही सखियाँ इधर-उधर दौड़-दौड़कर झाड़ियोंमें जा छिपती हैं। कोई पूर्व, कोई पश्चिम, कोई उत्तर, कोई दक्षिणकी

ओर चली जाती हैं। जब सखियाँ ठीकसे छिप जाती हैं, तब वृन्दादेवी उच्च स्वरसे बोलती हैं— तीन !

वृन्दादेवीके ऐसा बोलते ही श्रीराधा श्यामसुन्दरकी आँखोंपरसे रूमाल हटा देती हैं। श्यामसुन्दर हँसते हुए उठकर खड़े हो जाते हैं तथा जहाँपर वे बैठे थे, उसी स्थानपर रूपमञ्जरी, जो कि 'ध्रुव-स्थान' बनी है, आकर बैठ जाती है। श्रीराधा रूपमञ्जरीके पीछे खड़ी होकर श्रीश्यामसुन्दरके मुखकी शोभा निहारती हैं।

श्यामसुन्दर एक बार चारों ओर दृष्टि डालकर संकेतमें श्रीप्रियासे पूछते हैं कि ललिता किधर गयी है। श्रीप्रिया एक बार तो मुस्कुरा देती हैं, फिर वृन्दाकी ओर देखने लगती हैं कि वृन्दा किधर देख रही है। श्रीवृन्दा इन दोनोंकी ओर देख रही थीं, इसलिये श्रीप्रिया विचारमें पड़ जाती हैं कि यदि कुछ भी संकेत किया तो वृन्दा ललितासे कह देंगी और ललिता फिर हमसे लड़ेंगी। श्रीप्रिया ऐसा सोचकर शीश नीचा कर लेती हैं। श्यामसुन्दर फिर भी कुछ दूरपर खड़े रहकर बाट देखते हैं कि मेरी प्राणेश्वरी राधा कुछ-न-कुछ संकेत करेगी ही। अतः श्रीप्रिया एक उपाय करती हैं। वे रूपमञ्जरीकी दाहिनी ओर बैठ जाती हैं तथा पीठ उसके सहारे टेक देती हैं। श्रीवृन्दा जबतक श्रीराधाके सामने आती हैं, उसके आनेके पहले ही श्रीप्रिया अपने दोनों हाथोंसे अपने हृदयको दबाकर मुस्कुराती हुई कनखियोंसे पश्चिमकी ओरका संकेत कर देती हैं। तबतक श्रीवृन्दा सामने आकर राधाके मुखकी ओर देखने लग जाती हैं। श्यामसुन्दर मुस्कुरा देते हैं, जिससे श्रीप्रिया समझ जाती हैं कि श्यामसुन्दर समझ गये हैं। श्यामसुन्दर भी श्रीप्रियाको बचानेके उद्देश्यसे ऐसा भाव बनाते हैं मानो सोच रहे हों कि किधर चलें। पहले कुछ दूर दक्षिणकी ओर बढ़ते हैं, फिर दो झाड़ी पार करके पुनः वहीं वापस लौट आते हैं। इस बार उत्तरकी ओर बढ़ते हैं। कुछ दूर बढ़ते चले जाते हैं। इसी समय तुङ्गविद्या दक्षिणकी ओरसे दौड़ती हुई आकर ध्रुवस्थानको छू लेती हैं, छूकर हँसने लगती हैं।

श्यामसुन्दर फिर पीछे लौट आते हैं। खेलके नियमके अनुसार जो चोर बनता है, उसे ध्रुवस्थानसे पाँच हाथ अलग खड़ा रहना पड़ता है,

जिससे छिपी हुई सखियाँ आ-आकर ध्रुवस्थानको छू सकें। अतः श्यामसुन्दर ध्रुवस्थानसे पहले पाँच हाथ दक्षिण खड़े रहे, फिर उत्तरकी ओरसे लौटकर पाँच हाथकी दूरीपर दक्षिणकी ओर मुख किये खड़े हैं।

इधर ललिता पहले तो पश्चिमकी ओर गयी। फिर लगभग दस-पंद्रह गज जाकर झाड़ियोंमें छिपती हुई उत्तर दिशाकी ओर आकर छिप गयी थी। श्यामसुन्दर खड़े-खड़े सोच ही रहे थे, तभी पश्चिमसे विशाखा आती हैं। श्यामसुन्दर चाहते तो विशाखाको पकड़कर छू सकते थे; क्योंकि विशाखा बहुत कम दूरपर ही थीं; पर श्यामसुन्दरने तो पहलेसे ही घोषणा कर दी है कि उन्हें ललिताको चोर बनाना है, इसलिये वे इसी घातमें हैं कि वह ध्रुवस्थानको छूने न पाये।

श्यामसुन्दर विचार रहे हैं कि विशाखा एवं तुङ्गविद्या तो आ गयी हैं। अब छः सखियाँ और बची हैं, जिनमें चित्रा तो सदा उत्तरकी ओर जाया करती है, इसलिये आज भी वह उधर ही गयी होगी। प्रियाने कहा भी है कि ललिता पश्चिमकी ओर गयी है तो मैं पश्चिमकी ओर ही चलूँ।

श्यामसुन्दर पश्चिमकी ओर बढ़ते हैं तथा ललिता झाड़ियोंके छिद्रसे उन्हें पश्चिमकी ओर बढ़ते देखकर ध्रुवस्थानकी ओर बढ़ने लगती हैं। श्रीप्रियाकी दृष्टि श्यामसुन्दरकी ओर ही लगी है। वृन्दा इस बार श्रीराधाके मुखके सामनेसे हटकर पश्चिमकी ओर आ जाती हैं। उनके सामनेसे चले जानेपर श्रीप्रिया उठकर खड़ी हो जाती हैं तथा पश्चिमकी दिशामें श्यामसुन्दरकी ओर ही देखने लग जाती हैं।

श्यामसुन्दर एक झाड़ीके छिद्रसे चित्राको उत्तरकी ओर छिपी देख लेते हैं तथा कहते हैं—चित्रारानी! तुम्हें डर नहीं है। तुम स्वच्छन्द होकर जा सकती हो। मुझे तो ललिताको चोर बनाना है।

इस बातको सुनकर जो सखियाँ छिपी हुई थीं, वे कुछ साहसके साथ एक-एक करके आने लग जाती हैं। पूर्वकी ओरसे रङ्गदेवी, पश्चिमकी ओरसे सुदेवी, उत्तर एवं पश्चिमके कोनेसे चम्पकलता, दक्षिण एवं पूर्वके कोनेसे इन्दुलेखा आ-आकर ध्रुवस्थानको छू लेती हैं। अब केवल चित्रा

एवं ललिता बच जाती हैं, जिसमें चित्राको तो श्यामसुन्दरने देख लिया है; पर ललिता किस दिशामें है, यह अभीतक किसीको मालूम नहीं।

श्यामसुन्दर कुछ देरतक सोचते हैं। फिर कुछ सोचकर पूर्व एवं उत्तरके कोनेवाली झाड़ियोंको पार करते हुए आगे बढ़ने लगते हैं। श्रीश्यामसुन्दर पाँच-सात झाड़ियोंको पार करके आँखोंसे ओझल हो गये। उनके छिपते ही श्रीप्रियाके मुखपर अतिशय व्याकुलताके चिह्न दीखने लग जाते हैं। वे घबरायी-सी होकर पूछती हैं—विशाखे! श्यामसुन्दर कहाँ गये, किधर चले गये? ओह, ललिता भी बहुत हठीली है। जा, तुरंत उसे बुला ला।

अत्यधिक अधीर होकर राधारानी चिल्लाती हुई 'ललिता', 'ललिता' पुकारने लग जाती हैं तथा वहीं अतिशय व्याकुलतासे इधर-उधर दौड़ने लग जाती हैं।

रानीकी पुकार सुनते ही ललिता दौड़ती हुई उत्तरकी ओरसे आती हैं। रानीकी दशा उस समय बड़ी विचित्र हो गयी है। आँखोंसे झर-झर करते हुए आँसुओंका प्रवाह बह रहा है। सिरसे अञ्चल खिसक गया है। वेणीके बाल खुलकर बिखर गये हैं। वे पगली-सी होकर ललितासे आकर लिपट जाती हैं और बहुत जिज्ञासाभरे स्वरमें पूछने लगती हैं—ललिते! तुम्हें ढूँढते हुए श्यामसुन्दर किधर चले गये? देख, देख, बहिन! वे सचमुच यहाँसे चले गये हैं। यदि वे होते तो अबतक आ जाते। ओह! तुम्हें आये कितनी देर हो गयी, पर वे तो नहीं आये।

रानी यह कहते-कहते मूर्च्छित होकर गिर पड़ती हैं। ललिता सर्वथा घबरा-सी जाती हैं। उनकी आँखोंसे भी छल-छल करते हुए आँसू गिरने लग जाते हैं। वे इस समय किंकर्तव्य-विमूढ-सी हो गयी हैं। विशाखा एवं रूपमञ्जरी दोनों रानीके सिरपर गुलाबपाशसे शीतल जल छिड़क रही हैं। चित्रा पंखा झलने लग जाती हैं।

रानीकी मूर्च्छा नहीं टूटती। सखियोंमें घबराहट फैल जाती है। सबका अन्तर करुणासे भर जाता है। विशाखा बार-बार नासिकाके पास हाथ ले जाती हैं और देखती हैं कि श्वास बंद तो नहीं हो रहा है। श्वास बहुत ही धीरे-धीरे चल रहा था। बहुत-सी सखियाँ-मञ्जरियाँ

इधर-उधर घेरेमें दौड़कर उच्च स्वरमें पुकार रही हैं—प्यारे श्यामसुन्दर ! शीघ्र आओ ! अरे, खेलको फेंको खाईमें। देखो, रानीकी दशा कैसी हो गयी है !

पर श्यामसुन्दरकी ओरसे कोई उत्तर नहीं मिलता। एक क्षणमें ही सखियाँ-मञ्जरियाँ उस घेरेकी झाड़ी-झाड़ीको छान डालती हैं; पर कहीं भी श्यामसुन्दरका पता नहीं चलता। सभी निराश होकर लौट आती हैं। ललिताके मुखपर अवसन्नता छायी हुई है। वे चित्रकी भाँति मूर्तिवत् खड़ी हैं। जब दासियाँ निराश होकर लौट आती हैं तो अब ललिताका धैर्य टूट जाता है। रानीकी दशा देखकर वे विलाप करती हुई पुकारकर कहती हैं—प्यारे श्यामसुन्दर ! एक बार नहीं, हजार बार मैं चोर बनूँगी। तुम आ जाओ ! अब देर मत करो !

ललिताके इस प्रकार कहते ही मतवाली चालसे चलते हुए श्यामसुन्दर पूर्वकी ओरसे आते हुए दिखायी देते हैं। सखियोंकी दृष्टि तो पड़ जाती है, पर ललिता इतनी व्याकुल थीं कि उनकी आँखें आँसुओंसे भरी हुई थीं। उनके सामने अन्धकार-सा छाया हुआ था। वे मूर्च्छित होकर गिरनेवाली ही थीं कि श्यामसुन्दर आकर उनको पकड़ लेते हैं। हृदयसे लगाकर रूमालसे ललिताके आँसू पोंछते हुए बड़े प्रेमसे कहते हैं यह देख ! मैं आ गया ; घबराती क्यों है ?

श्रीश्यामसुन्दरका कोमल स्पर्श पाकर ललिता शान्त हो जाती हैं, पर प्रणयकोप एवं आनन्दके भावोंका आवेग अतिशय बढ़ा रहनेके कारण वे बहुत ही गम्भीर रहती हैं, कुछ भी बोलतीं नहीं। सखियोंमें आनन्द छा जाता है, पर राधारानी अभी भी मूर्च्छित ही पड़ी हैं। विशाखाकी गोदमें मूर्च्छाकी अवस्थामें रानी यह अनुभव कर रही हैं कि श्यामसुन्दरको ढूँढते-ढूँढते मैं बहुत दूर वनमें चली आयी हूँ। कहीं भी श्यामसुन्दरका पता नहीं चल रहा है। हाँ, उनकी नूपुर-ध्वनिका रुनझुन-रुनझुन स्वर रह-रह करके सुनायी पड़ रहा है। इससे श्रीप्रियाको यह अनुमान हो रहा है कि मैं पीछे-पीछे दौड़ती आयी हूँ और वे छिपते हुए आगे बढ़ रहे हैं। श्रीप्रिया इसी भावावेशमें कभी-कभी उठकर बैठ जाती हैं तथा कभी-कभी भागनेकी चेष्टा करने लगती हैं। श्यामसुन्दर मधुर-मधुर मन्द-मन्द मुस्कुराते हुए अपनी प्राणेश्वरीकी प्रेम-लीला देख रहे हैं। उनके आ जानेके

कारण सखियोंमें कोई चिन्ता नहीं रह गयी है। सभी निश्चिन्त हो गयी हैं; क्योंकि सखियोंके मनमें श्यामसुन्दरकी उपस्थितिसे श्रीप्रियाके प्रति किसी प्रकारकी अनिष्ट-आशङ्का बहुत ही कम आती है। सखियाँ बहुत ही घबरा गयी थीं! उनका मन संदेहसे आकुल हो गया था। आजकी विरह-दशा कुछ ऐसी भीषण हो गयी थी एवं श्रीप्रियाके ऊपर इसका इतना गहरा प्रभाव पड़ा था कि सभी सखियाँ श्रीप्रियाके जीवनसे निराश-सी होने लग गयी थीं। अब श्यामसुन्दरके आ जानेपर तथा उन्हें हँसते हुए देखकर उन सबको ढाढस हो गया है। श्रीप्रियाकी भी अचेतनता अब कम हो गयी थी एवं वे भावावेशकी दशामें आ गयी थीं। इसलिये सखियाँ भी श्रीप्रियाकी प्रेम-लीला देखने लग जाती हैं।

श्यामसुन्दर रह-रह करके अपना पैर नचा देते हैं, जिससे नूपुर रुनझुन-रुनझुन शब्द करने लगते हैं और श्रीप्रिया उठकर भागनेकी चेष्टा करती हैं। इसी भावावेशमें श्रीप्रिया ऐसा अनुभव करने लग जाती हैं कि मैं कलसी लेकर यमुनाका जल भरने आयी हूँ। दूरपर खड़े होकर श्यामसुन्दर तिरछी चितवनसे मेरी ओर निहार रहे हैं। उनकी ओर दृष्टि जाते ही मेरी कलसी सिरसे गिर जाती है। मैं घबराकर अपनी साड़ी सँभालती हुई भाग रही हूँ। भागते-भागते अपने घर आ गयी हूँ। सखियोंकी गोदमें अचेत होकर गिर पड़ी हूँ। सखियाँ मुझसे बार-बार पूछ रही हैं— क्यों बहिन, क्या हो गया है?

राधारानी उसीके उत्तरस्वरूप भावावेशमें ही इस बार स्पष्ट बोल उठती हैं—कैसे जाऊँ री बीर! घट भरिबे नीर।

श्रीप्रियाके मुखसे इस शब्दोंको सुनकर ललिता, विशाखा एवं अन्य सखियाँ समझ जाती हैं कि रानी किस भावावेशमें हैं। आज थोड़ी देर पहले ही जब कि श्यामसुन्दरकी प्रतीक्षामें रानी बैठी थीं तो सखियोंके बहुत आग्रह करनेपर मन बहलानेके लिये वीणापर उन्होंने एक पद गाया था। गीतमें उन्होंने अपने जीवनकी प्रारम्भिक लगनकी कुछ बात अपनी सखियोंको सुनायी थी। अतः अभी मूर्च्छित होकर वे सचमुच उस भावसे आविष्ट हो गयीं। विशाखा खड़ी होकर श्यामसुन्दरके कानमें उनके आनेके पहले जो पद आदि गाये गये थे, उसकी याद बता देती हैं।

श्यामसुन्दर अत्यन्त प्रसन्नतासे कहते हैं—तू उस पदको फिरसे गा। मैं साथ-साथ बंशी बजाता रहूँगा।

विशाखा तुरंत ही वीणा मँगवा लेती हैं। इधर प्रिया बार-बार मुखसे रट रही हैं—'कैसे जाऊँ री बीर! घट भरिबे नीर'। वीणाका सुर शीघ्रतासे ठीक करके विशाखा अत्यन्त मधुर स्वरमें गाने लगती हैं। आज श्यामसुन्दर इतनी चतुराईसे बंशी बजा रहे हैं मानो कोई दूसरी सखी विशाखाके सुरमें सुर मिलाकर गा रही हो। विशाखा गा रही हैं—

(राग देश)

कैसे जाऊँ री बीर! घट भरिबे नीर।
ठाढो जमुना तीर साँवरो अहीर मारे दृगन तीर हरे सुधि सरीर॥
नित यही चित में चिंता समाय ब्रजराज सों कैसे बचेगी लाज
जिया काँपै आज नहिं धरत धीर।
वाको रूप है कै कोउ जादू यंत्र कैधों नारायन बसीकरन मंत्र
कैधों तंत्र कै पल ही में करे फकीर॥

गीत सुनते-सुनते श्रीप्रिया सर्वथा बावली-सी होकर उठकर बैठ जाती हैं तथा श्यामसुन्दर, जो पासमें बैठकर बंशीमें तान भर रहे थे, उनके गलेमें बाँहें डालकर सिसक-सिसककर रोने लग जाती हैं। श्रीप्रिया ऐसा अनुभव कर रही हैं कि कोई नयी ग्वालिन कहींसे आयी है और वही मुझे यह संगीत सुना रही है। श्रीप्रिया कुछ देरतक रोती रहकर फिर उसी भावावेशमें श्यामसुन्दरसे पूछती हैं—बहिन! बता, तू कौन है? कहाँसे आयी है? आह! मेरे प्यारे श्यामसुन्दरकी चितवनसे घायल होकर तू भी मेरे समान ही तड़प रही है। अच्छा, बहिन! तू मेरे पास ही रह। मुझे छोड़कर मत जाना। हम दोनों एक-दूसरीके सामने हृदय खोलकर रोयेंगी, रो-रोकर जी हलका करेंगी।

श्यामसुन्दर श्रीप्रियाको सँभाले रहकर मुस्कुराते हुए यह प्रेम-लीला देख रहे हैं। देख-देखकर वे आनन्दमें उत्तरोत्तर विभोर होते जा रहे हैं। वे अपने प्यारभरे हाथसे श्रीप्रियाकी बिखरी हुई लटोंको ठीक करते जा रहे हैं। श्रीप्रिया बार-बार उसी भावावेशमें पूछ रही हैं—बोल, मुझे छोड़कर तू नहीं जायेगी न?

श्यामसुन्दर प्रियाकी इस व्याकुलताको देखकर बड़ी चतुराईसे धीमे स्वरमें कहते हैं—नहीं जाऊँगी, तू निश्चिन्त रह।

यद्यपि श्यामसुन्दरने उत्तर बहुत धीमे स्वरमें दिया, पर अपने प्रियतम प्राणेश्वरकी चिर-परिचित यह कण्ठ-ध्वनि श्रीप्रियाके हृदयको भुला नहीं सकी। श्रीप्रिया चौंककर आँखें खोल देती हैं। भावावेश शिथिल होने लगता है। वे कुछ देरतक निर्निमेष नयनोंसे प्यारे श्यामसुन्दरके मुखारविन्दपर दृष्टि टिकाये हुए देखती रहती हैं। धीरे-धीरे पूर्ण बाह्य ज्ञान हो जाता है। श्रीप्रिया यह अनुभव करती हैं कि मैं सखियोंके सामने पूर्णतः अस्त-व्यस्त अवस्थामें श्यामसुन्दरके गलेमें बाँह डाले बैठी हूँ। रानी बड़ी त्वरासे उठ पड़ती हैं तथा अत्यधिक संकुचित होकर अञ्चल ठीक करने लगती हैं। श्यामसुन्दर खिलखिलाकर हँसने लगते हैं। सखियाँ-मञ्जरियाँ भी खुलकर हँसने लगती हैं। ललिता, जो अबतक बहुत गम्भीर बनी हुई थीं, वे भी खिलखिलाकर हँस पड़ती हैं। श्यामसुन्दर श्रीप्रियाको बहुत संकुचित देखकर बात बदलनेके उद्देश्यसे कहते हैं—प्रिये! देख, अब ललिता हार गयी है। अबकी बार तो इसकी आँख मूँदी ही जायेगी। इतना ही नहीं, एक हजार बार और इसने आँखें मूँदी जानेकी अयाचित स्वीकृति दी है। इसके अतिरिक्त खेलके नियमके अनुसार एक घंटेतक इसे मेरे हाथकी कठपुतली बनकर, मैं जैसे नचाऊँगा, वैसे नाचना पड़ेगा। क्यों, वृन्दे! तू पंच बनी है। मैं यदि कुछ अनुचित कह रहा हूँ तो बता देना।

श्यामसुन्दरकी बात सुनकर ललिता प्रेमभरी चितवनसे श्यामसुन्दरकी ओर देखती हुई कहती हैं—मैं तो तुम्हें भरपूर छकाती, पर क्या करूँ? मैं तो अपनी इस बावली सखी राधाके कारण विवश हो जाती हूँ।

श्यामसुन्दर हँसते हुए कहते हैं—इसमें क्या आपत्ति है, फिरसे खेल करके मनकी उमंग पूरी कर लें।

रानी बीचमें ही बोल उठती हैं—ना, ना, अब भर पायी! अब मैं आँखमिचौनीका खेल तो नहीं ही होने दूँगी।

श्रीश्यामसुन्दर, ललिता एवं अन्यान्य सखियाँ खुलकर हँस पड़ती हैं। श्रीश्यामसुन्दर श्रीप्रियाको हृदयसे लगा लेते हैं। विश्राम करनेके लिये चित्राके कुञ्जकी ओर श्रीप्रिया-प्रियतम गलबाँही दिये चल पड़ते हैं।

तत्सुखिया लीला

यमुना-पुलिनके उपवनमें श्यामसुन्दरकी प्रतीक्षामें श्रीप्रिया बैठी हैं। रात तीन घड़ीसे अधिक बीत चुकी है। यमुनाके तटपर ही तटसे सटा हुआ एक अत्यन्त सुन्दर उपवन है। उपवन हरी-हरी झाड़ियों एवं फूलोंसे लदे हुए वृक्षोंके द्वारा भरा हुआ है। यमुनाजीका प्रवाह वहाँपर पूर्वसे पश्चिमकी ओर है तथा घाटसे भली प्रकार बँधा हुआ है। यमुनाजी कुछ आगे पश्चिमकी ओर बढ़कर फिर दक्षिणकी ओर मुड़ गयी हैं। इसी मोड़पर यह उपवन है। श्रीयमुनाजीकी धाराका एक विभाग हो गया है, जो पहले उपवनके पूर्वकी ओर एवं फिर दक्षिणकी ओरसे बहता हुआ पुनः यमुनाजीमें जा मिलता है। इस छोटी शाखामें वर्षाके दिनोंमें तो जल अधिक रहता है, किंतु अन्य ऋतुओंमें कम। शाखाके दोनों छोरपर, अर्थात् जहाँ वह यमुनाजीसे निकलती है और जहाँ यमुनाजीमें पुनः मिलती है, उन दोनों स्थानोंपर, अत्यन्त सुन्दर पुल हैं। छोटी शाखाके और भी कई स्थानोंपर छोटे-छोटे पुल हैं। इन्हीं पुलोंपरसे होकर श्रीराधारानी एवं व्रजसुन्दरियाँ अपने-अपने घरोंसे आती हैं तथा संकेत-स्थलपर अपने प्यारे श्यामसुन्दरके साथ मिलती हैं।

उपवनमें श्रीयमुनाजीकी छोटी शाखाके उद्गमके स्थानपर एक अत्यन्त सुन्दर वेदी बनी हुई है, जिसकी लम्बाई-चौड़ाई लगभग सौ-सौ गजकी है। वेदी अत्यन्त सुन्दर ढंगसे सजायी हुई है। उसपर नीला कालीन बिछा हुआ है एवं पीले रंगकी बहुत बड़ी चाँदनी चारों ओरसे खम्भोंके सहारे लगायी हुई है। बीचमें कोई खम्भा नहीं है। रेशमकी डोरीसे एवं पीले रेशमी वस्त्रसे वेदीकी वह चाँदनी इस प्रकार शोभा पा रही है मानो सुन्दर रेशमी वस्त्रोंका मन्दिर हो। उस रेशमी चाँदनीमें स्थान-स्थानपर जरीके कामसे राधा-कृष्णकी लीलाओंके चित्र बने हुए हैं। उन चित्रोंपर मणियोंका हरा-हरा प्रकाश पड़नेसे ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो

वे चित्र नहीं, सचमुच पीले रंगके आकाशमें श्रीप्रिया-प्रियतमकी लीलाएँ चल रही हैं। चाँदनी जिन खम्भोंके सहारे टँगी है, उनमें विभिन्न प्रकारकी अनेकानेक प्रकाशयुक्त मणियाँ पिरोयी हुई हैं, जिनसे चित्र-विचित्र प्रकाश निकल रहा है।

उस वेदीसे सटा हुआ पूर्व एवं उत्तरके किनारेपर अत्यन्त सुन्दर बटका वृक्ष है। उस वटवृक्षके नीचे ही श्रीप्रिया बैठी हैं। वटवृक्षकी जड़के पासकी भूमि उजले रंगके किन्हीं अत्यन्त विचित्र मूल्यवान् पत्थरोंसे पाट दी गयी है। पत्थरोंपर इतनी चमक है कि उसमें वटवृक्ष प्रतिबिम्बित हो रहा है। वटवृक्षके मूलके पास बेंचके आकारका नीले मखमलका आसन है, उसीपर श्रीप्रिया दक्षिणकी ओर मुँह किये बैठी हुई हैं। पूर्वी गगनमें चन्द्रमाका उदय हो चुका है। आज कृष्ण पक्षकी तृतीया तिथि है, अतएव चन्द्रमा सूर्यास्तसे तीन घड़ी बीत जानेपर उदय हुए हैं और वे वृक्षोंके ऊपर चढ़ चुके हैं।

राधारानीसे कुछ दूर हटकर उनकी बायीं ओर विशाखा खड़ी हैं तथा चार-पाँच हाथ आगेकी ओर ललिता खड़ी होकर बड़ी उत्सुकतापूर्ण दृष्टिसे, जिस पथसे श्यामसुन्दर आया करते हैं, उस पथकी ओर देख रही हैं। राधारानीकी विकलता बढ़ती जा रही है। वे बार-बार आसनसे उठकर खड़ी हो जाती हैं तथा कुछ देर खड़ी रहकर फिर बैठ जाती हैं। श्रीप्रियाके शरीरपर चम्पई रंगकी साड़ी शोभा पा रही है। सभी सखियाँ भी चम्पई रंगकी साड़ी पहने हुए हैं। इस प्रकार कुछ देरतक बार-बार उठती-बैठती हुई राधारानी बहुत अधिक व्याकुल हो जाती हैं तथा ललिताको पुकारकर कहती हैं—ललिते! अब कितनी रात्रि शेष है? प्रभात होनेमें कितनी देर है?

ललिता अत्यन्त प्यारभरे स्वरमें कहती हैं—बहिन! अभी तो रात तीन घड़ी ही बीती है।

राधारानी कुछ निराशा एवं करुणाभरे स्वरमें कहती हैं—ललिते! तू मुझे भुलाती है। रात तो बीत गयी। देख, चन्द्रमा अस्त होने जा रहे हैं।

राधारानीकी यह बात सुनते ही ललिता वहाँसे आकर श्रीराधारानीके गलेमें अपना बायाँ हाथ डाल देती हैं और दाहिने हाथमें रूमाल लेकर

श्रीराधारानीके कपोलोंपर आये हुए प्रस्वेदकणोंको पोंछती हुई कहती है—बहिन ! विश्वास कर, मैं तुम्हें भुलाती नहीं हूँ। सचमुच अभी रात केवल तीन घड़ी ही बीती है। तुम्हें वस्तुतः दिग्भ्रम हो रहा है। चन्द्रमा तो अभी-अभी उदित हुए हैं। प्यारे श्यामसुन्दरके विरहमें तुम्हारे मनकी दशा प्रायः ऐसी ही हो जाती है, तुम्हें दिग्भ्रम हो जाया करता है। यह पूर्व दिशा है। चन्द्रमाका उदय अभी हुआ है।

राधारानी कहती हैं—फिर श्यामसुन्दर क्यों नहीं आये ? धनिष्ठाने कहा था कि वे थोड़ी देरमें चलनेवाले ही हैं।

ललिता—आते ही होंगे, निश्चय ही थोड़ी देरमें आ जायेंगे। बहिन ! धीरज धर ! रूप गयी है। वह भी नहीं लौटी है। इससे अनुमान होता है, उन्हें साथ लेकर वह अब आती ही होगी।

श्रीराधा ललिताकी गोदमें अपना सिर रखकर उसी चँवके पास पूर्वकी ओर पैर करके लेट जाती हैं। राधारानीकी व्याकुलतासे ललिता भी व्याकुल-सी होने लगती हैं। इसी समय वृन्दादेवी ललिताके कानमें आकर धीरेसे कुछ कहती हैं। उसे सुनते ही ललिताका मुख तमतमा उठता है। वे कुछ चिढ़ी-सी होकर इधर-उधर देखने लगती हैं। फिर कुछ क्रोधभरे स्वरमें कुछ दूरपर खड़ी विमलामञ्जरीसे कहती हैं—विमले ! जा, रति उस पुलके पास खड़ी है। उसे एवं धन्या, जो उस शेफालिकावाले पुलपर है, दोनोंको कह देना कि ललिताने कहा है कि श्यामसुन्दर आवें तो उन्हें सर्वथा आने न दें। स्पष्ट-स्पष्ट कह दें कि ललिताकी आज्ञा नहीं है।

ललिताकी बात सुनकर राधारानी ललिताकी गोदसे उठ बैठती हैं तथा उसकी ठोड़ी छूकर बड़े ही करुणाभरे स्वरमें कहती हैं—बहिन ! पगली हो गयी है क्या ? क्या करने जा रही है !

फिर तुरंत राधारानी विमलाकी ओर देखकर उसी करुण स्वरमें कहती हैं—ना, विमले ! जाना मत !

ललितारानी उसी क्रोधभरे स्वरमें कहती हैं—ना, अब आज नहीं सहूँगी। आज श्यामसुन्दरको मैं भी दिखा दूँगी कि ललिता क्या है !

राधारानी कहती हैं—प्यारी ललिते ! ऐसा मत कर। देख, मेरा हृदय तेरी बात सुनकर धक्-धक् कर रहा है। देख, कितना ऊँचा उछल रहा है। मेरे ऊपर दया कर। बहिन ! तेरा हृदय मेरे स्नेहके कारण धैर्य छोड़ रहा है; पर सच मान, तू ऐसा करेगी तो मुझे बहुत दुःख होगा।

ललिताका क्रोध ठंडा हो जाता है; पर फिर भी कुछ उग्र स्वरमें कहती हैं—मैं क्या करूँ ? तू ही तो सब खेल बिगाड़ देती है, अन्यथा क्या यह सम्भव है कि श्यामसुन्दर इस तरह करनेका कभी साहस करें ?

श्रीराधाकी आँखोंमें आँसू भर आते हैं। वे उन्हें रोकती हुई कहती हैं—बहिन ! मैं तेरे स्नेहकी ओर देखती हुई कहनेकी इच्छा होनेपर भी कहते-कहते रुक जाया करती थी; पर आज मैं तुम्हें अपने हृदयकी एक बात बतलाती हूँ। मेरी बात सुनेगी क्या ?

ललिताकी आँखोंसे छल-छल करते हुए आँसू बहने लगते हैं। वे राधारानीके गलेसे लिपटकर रोने लगती हैं। फिर कुछ सँभलकर कहती हैं—बहिन ! सुनूँगी क्यों नहीं ? पर मुझसे यह सहा नहीं जाता। इधर तेरी ऐसी दशा है और वे शैव्याके कुञ्जके चक्कर लगा रहे हैं।

राधारानी अत्यन्त प्यारसे कहती हैं—तो इसमें वे कौन-सा अपराध कर रहे हैं ? बहिन ! सचमुच आज तुम्हें अपने हृदयको खोलकर एक बात बता रही हूँ। मेरी प्यारी ललिते ! श्यामसुन्दर, मेरे प्रियतम श्यामसुन्दर मेरे दास नहीं हैं, अपितु मैं उनकी दासी हूँ।

यह कहते-कहते राधारानीका गला प्रेमसे रूँधने लगता है, आँखें भर आती हैं तथा समस्त अङ्गोंमें प्रस्वेद-कण झलकने लगते हैं। कुछ समय चुप रहकर फिर राधारानी कहती हैं—रसके समुद्र ! सुखके सागर !! मेरे जीवन-सर्वस्व !!! तुम्हारी दासी राधापर तुम्हारा पूर्ण अधिकार है। यह जीवन, यौवन सब तुम्हारा ही है। मेरे प्राणनाथ ! इसे हृदयसे लगाकर अपने अन्तस्तलमें छिपाये रखो अथवा इस दासीको चरणोंसे ठुकरा दो, दोनों अवस्थाओंमें ही यह दासी तुम्हारी है, तुम्हारी ही रहेगी।

ललिताकी आँखोंसे पुनः झरझर आँसू बहने लगते हैं। रानी अपने अञ्चलसे ललिताके आँसुओंको पोंछने लगती हैं। अबतक विशाखा

दूरपर खड़ी हुई निर्निमेष नयनोंसे ललिता एवं राधारानीकी ओर देख रही थीं। अब पास आकर बैठ गयीं। विशाखाके बैठनेपर रानी अपना बायाँ हाथ विशाखाके कंधेपर रख देती हैं। ललिताकी ओर देखती हुई फिर रानी कहती हैं--मेरी प्यारी ललिते! एक बार हँस दे। तू रो मत बहिन! नहीं तो फिर मैं तुझे रोती देखकर मूर्च्छित-सी होने लग जाऊँगी। सच मान, मेरे प्यारे श्यामसुन्दरको यदि बहिन चन्द्रावलीसे सुख मिलता है तो मैं चाहती हूँ, प्रार्थना करती हूँ—'हे विधाता! जितनी देर मेरे प्यारे श्यामसुन्दर बहिन चन्द्रावलीके कुञ्जमें रहें, उतनी देरतक उनके हृदयमें मेरी स्मृतिको ढक देना। मैं उन्हें स्मरण ही नहीं आऊँ। नहीं तो उनके सुखमें विघ्न होगा। मेरी याद आते ही वे विकल हो जायँगे। मेरे पास आना चाहेंगे'। ललिता! देख ले, हृदयके अन्तस्तलमें जाकर देख ले, मैं सच कह रही हूँ या झूठ। बहिन! सचमुच मुझे कोई दुःख नहीं है। तू रो मत बहिन!

ललिता कुछ शान्त-सी होने लगती हैं। इसी समय विशाखा कहती हैं—बहिन! एक बात पूछना चाहती हूँ, बतायेगी?

राधारानी—हाँ, अवश्य बताऊँगी। कुछ न छिपाते हुए आज जो-जो पूछेगी, वही बता दूँगी।

विशाखा—अच्छा बहिन! मान ले, श्यामसुन्दर तुम्हारे पास आना पूर्णतः बंद कर दें तथा चन्द्रावलीके कुञ्जमें ही जाने लग जायँ, वे तुम्हें किसी दिन बुलावें, वहाँ तुम्हारे सामने ही चन्द्रावलीके गलेमें बाँह डाले हुए कहें कि प्रिये! मैं थोड़ी देरमें आया और फिर चन्द्रावलीके साथ उसके कुञ्जमें चले जायँ तो क्या उस समय तू धैर्य रख सकेगी?

राधारानी कुछ गम्भीर-सी होकर कहती हैं—हाँ, बहिन! अवश्य धैर्य रख सकूँगी।

विशाखा—तुम्हें दुःख नहीं होगा?

राधारानी—सर्वथा नहीं!

विशाखाकी आँखोंमें आँसू भर आते हैं। रानी कुछ मुस्कुराती

हुई-सी कहती हैं—सच बहिन! दुःख सर्वथा नहीं होगा, अपितु आनन्दातिरेकके कारण मूर्च्छित होकर मैं कहीं गिर न पड़ूँ।

विशाखा आश्चर्यभरी दृष्टिसे रानीकी ओर देखती हैं। रानी फिर कहने लगती हैं—विशाखे! मैं प्यारे श्यामसुन्दरको देखकर आनन्दसे फूली-सी होने लग जाती हूँ। मैं सोचती हूँ कि न मेरे अंदर रूप है, न यौवन। कुछ भी तो नहीं है; पर फिर भी श्यामसुन्दर मुझे सबसे अधिक प्यार क्यों करते हैं? मैं तुम्हें देखती हूँ। सोचती हूँ, विशाखा मेरी अपेक्षा कहीं अधिक सुन्दर है। आज मैं इसे अपने हाथोंसे सजाऊँगी; तुम्हें सजाकर प्यारे श्यामसुन्दरके चरणोंमें बिठाकर देखूँगी कि उन्हें कितना अधिक सुख मिलता है! फिर ललिताको देखती हूँ, चित्राको देखती हूँ। जिस-जिसको देखती हूँ, उसीको देखकर मनमें यही आता है कि इससे मेरे प्यारे श्यामसुन्दरको बहुत सुख मिलेगा, मैं इसे सजाऊँगी। कई बार ऐसा कर भी चुकी हूँ। ठीक इसी प्रकार बहिन चन्द्रावलीको देखकर मनमें आता है कि प्यारे श्यामसुन्दरको इससे अधिक सुख मिलेगा। अतः तुम्हारी कल्पनाके अनुसार यदि वे वैसा कभी करें तो मुझे दुःख नहीं होगा। बहिन! मैं तो आनन्दके समुद्रमें डूबकर निहाल होती रहूँगी; पर यह होनेका नहीं। देख, मैं श्यामसुन्दरके हृदयको जानती हूँ। बहिन! उनका हृदय प्रेमका असीम सागर है। जिस समय वे मुझे हृदयसे लगाते हैं, उस समय वह सागर उफन पड़ता है। मैं उसमें डूब जाती हूँ। डूबकर देखती हूँ, बहिन! वहाँ अणु-अणुमें मैं बैठी हूँ, मैं-ही-मैं हूँ केवल, बस, एकमात्र मैं ही।

रानी यह कहते-कहते प्रेममें अधीर होने लग जाती हैं। विशाखा एवं ललिता रानीके पास आकर उन्हें सँभालने लगती हैं। रानी कुछ मूर्च्छित-सी हो जाती हैं। रानीका सिर ललिता अपनी गोदमें रखकर उन्हें लिटा देती हैं। कुछ देर मूर्च्छित रहकर बाह्य-ज्ञान-हीन दशामें ही रानी धीरे-धीरे बोलने लगती हैं—मेरे जीवनसर्वस्व! मेरे हृदयधन!! मेरे हृदयको देखो! तुम्हारी दासी राधा आज कितनी प्रसन्न है। तुम बहिन चन्द्रावलीके कुञ्जमें गये हो? आह! आज मेरी बहुत दिनोंकी अभिलाषा पूर्ण हो गयी। हाँ, हाँ, मेरे प्राणनाथ! संकोच मत करो! मैं तो तुम्हारी क्रीत-दासी हूँ न! मेरे हृदयेश्वर! मेरे सामने ही बहिन

सैंय्या, बहिन चन्द्रावलीके गलेमें बाँह डाले हुए मेरे इस उपवनके पुष्पोंकी शोभा निहारो ! राधा, तुम्हारी यह दासी, इसे देखकर आनन्दमें विभोर हो जायेगी। सच, मेरे प्राणनाथ ! मेरे सुखकी सीमा नहीं रहेगी। मेरे प्रियतम ! एक बार नहीं, यदि अगणित बार बहिन चन्द्रावलीके समक्ष तुम मुझे हृदयसे लगाओ, उस समय मुझे जितना सुख मिलेगा, ठीक उतना ही सुख; नहीं, नहीं; उससे भी अनन्त गुना सुख मुझे आज बहिन चन्द्रावलीके साथ तुम्हें इस निकुञ्जमें देखकर मिलेगा।

राधारानी कुछ रुक जाती हैं। धीरे-धीरे बड़-बड़ करने लगती हैं। ललिता रानीके मुखके पास कान ले जाकर सुनती हैं कि वह क्या कह रही है, पर कुछ समझमें नहीं आता। ललिता एवं विशाखा, दोनोंके मुखपर आश्चर्य छाया हुआ है।

रानी फिर बोलने लगती हैं—बहिन ! सच बतलाती हूँ ! मेरे प्यारे श्यामसुन्दरको मैं देखती हूँ, नित्य देखती हूँ; पर नित्य यह अनुभव करती हूँ कि आज तो ये और भी सुन्दर हो गये हैं। एक क्षण पहले जिसे देखती थी, वही सौन्दर्य पूर्णतः नवीन होकर दीखने लग जाता है। बहिन ! जहाँ-जहाँ दृष्टि डालती हूँ, वहीं आँखें चिपट जाती हैं। वहाँसे आँखें हटना नहीं चाहतीं। देखती-देखती जब मैं मूर्च्छित-सी होने लग जाती हूँ, उसी समय वे हँस देते हैं और कहते हैं कि प्रिये ! क्या देखती हो ? मेरी प्रियतमे ! मैं सुन्दर नहीं हूँ, सुन्दर तुम्हारी आँखें हैं। यह सुनते ही बहिन ! मैं लजा जाती हूँ। उस समय वे मेरी ठोढ़ीको आकर छू देते हैं तथा मुस्कुराते हुए कहते हैं कि प्रिये ! तुमने मुझे देखा ! अब मैं तुम्हारी रूप-सुधाका पान करूँगा। बहिन ! उस समय मैं विह्वल हो जाती हूँ। उस समय कई बार मनमें यह आता है कि ठीक जिस प्रकार मेरे श्यामसुन्दर मेरा मुख देखकर सुख पाते हैं, उसी प्रकार किसी दिन बहिन चन्द्रावलीके मुखारविन्दको निहार-निहारकर वे सुख पायें। मैं दूरपर खड़ी-खड़ी प्यारे श्यामसुन्दरके मुखकी मुस्कान देखूँगी और आनन्दमें विभोर हो जाऊँगी। सच-सच हृदयकी बात कहती हूँ। बहिन ! तू रो रही है। मेरे स्नेहके कारण रो रही है। तू सोचती है कि मेरी प्यारी राधाके हृदयको कष्ट पहुँचाकर श्यामसुन्दर बहिन चन्द्रावलीके कुञ्जमें क्यों गये ? पर बहिन ! मुझे सर्वथा दुःख नहीं है। विश्वास कर,

विशाखा ! श्यामसुन्दरकी किसी बातसे भी, उनकी किसी चेष्टासे भी मुझे दुःख नहीं होता, अपितु प्रतिक्षण मैं नये आनन्दमें डूब जाती हूँ। बहिन ! उनका हृदय इतना कोमल है, इतना सरस है कि वे चाहनेपर भी मुझे दुःख पहुँचा ही नहीं सकेंगे। यह असम्भव है।

राधारानी फिर चुप हो जाती हैं तथा थोड़ी देर चुप रहकर कहती हैं—अच्छा, मान लेती हूँ कि थोड़ी देरके लिये तेरी बात ही ठीक हो जाये। श्यामसुन्दर मुझे चिढ़ाने लग जायँ, मुझे दुःख देने लग जायँ तो इससे क्या हुआ ! बहिन, मैं तो उनकी क्रीतदासी हूँ। वे जैसे चाहें, मुझे रख सकते हैं। हाँ बहिन ! मुझे उनके सुखमें ही सुख है। यदि वे मुझे दुःख पहुँचाकर, मुझे चिढ़ाकर आनन्द पा सकें तो बहिन ! मैं चाहती हूँ, अनन्त कालतक वे मुझे चिढ़ाते रहें, अनन्त कालतक वे मुझे दुःख पहुँचाते रहें। इससे बढ़कर और सुख मेरे लिये होगा नहीं।

राधारानी अब बावली-सी होकर उठ बैठती हैं तथा विशाखाका गला पकड़कर रोने लग जाती हैं। विशाखाकी आँखोंसे भी पुनः आँसू बहने लगते हैं। वे हतमति-सी होकर सोचने लगती हैं कि मैं अपनी प्यारी सखीको कैसे शान्त करूँ। इसी बीच राधारानी फिर खिलखिलाकर हँस पड़ती हैं तथा मूर्च्छित-सी होकर भूमिपर गिरने लगती हैं। ललिता ठीक पहलेकी भाँति उन्हें गोदमें ले लेती हैं। रानी कुछ देर चुप रहती हैं। फिर कुछ मुस्कराकर कहती हैं—प्यारी विशाखा ! तुझे कैसे समझाऊँ ? अच्छा देख, एक बात मैंने तुम दोनोंसे छिपा रखी थी, आज बतला देती हूँ। उसे केवल मैं, चित्रा और रूप जानती हैं। मैंने रूपको सौगन्ध दिला दी थी कि ललिता-विशाखासे यह बात अभी मत कहना। बहिन ! तीन दिन पहलेकी बात है। मैं सूर्यमन्दिरमें बैठी थी। तुम सब श्यामसुन्दरकी टोहमें बाहर चली गयी थीं। केवल रूप मेरे पास थी। उसी समय मेरे प्यारे श्यामसुन्दर आये। उनका मुख कुछ सूखा-सा था। मैं व्याकुल हो उठी कि प्यारे श्यामसुन्दरका मुख सूखा क्यों है ? वहाँ कोई नहीं था। दौड़ी हुई उनके पास जा पहुँची। अञ्चलसे मुख पोंछकर बोली—प्यारे ! तुम्हारा मुख सूखा क्यों है ?

प्यारे श्यामसुन्दरने बात टालनी चाही, पर मैं गले पड़ गयी। उनके

गलेमें बाँह डालकर बैठ गयी। मेरी आँखोंसे आँसू बहने लगे। मैं बोली—क्या नहीं बताओगे?

प्यारे श्यामसुन्दर पीताम्बरसे मेरे आँसू पोंछकर मुझे अपनी गोदमें लिटाकर बोले—प्रिये! मैं सचमुच ही बहुत घृणाके योग्य हूँ, तेरे प्यारके योग्य नहीं। मुझे क्षमा करो। मैं सत्य बात बताकर तेरे हृदयको दुखाना नहीं चाहता।

बहिन! मेरी प्यारी विशाखा!! मेरा हृदय फटने लग गया। बहुत देरतक उनकी गोदमें सिर रखकर रोती रही। फिर बोली—नहीं, तुम्हें बताना पड़ेगा, तुम मुझे बताओ!

फिर बहिन! प्यारे श्यामसुन्दरने बताया—प्रिये! अभी-अभी मैं तेरे पास आ रहा था। पता नहीं, कौन है, एक षोडशवर्षीया किशोरी मुझे वनमें मिली। प्रिये! मेरी आँखें उसकी ओर बरबस चली गयीं। मैंने पूछा कि अरी ग्वालिन! तू किसकी पुत्री है और कहाँ रहती है? इसपर प्रिये! उसने इतनी रुखाईसे मुझे फटकारा कि मैं तो झिझक गया। फिर भी सोचता रहा कि यह ग्वालिन है बहुत सुन्दरी। मैंने उससे कहा कि अरी गरबीली! एक बार देख तो सही। पर प्रिये! वह फिर उसी तरह रुखाईसे बोली कि चल, हट! मैं राधा नहीं हूँ कि तेरे जालमें फँस जाऊँ। यह सुनकर प्रिये! मैं क्या करता; चुपचाप वहाँसे चला आया।

यह बात सुनते ही मेरे चित्तमें एक बार तो क्रोध आया। बहिन! आज बिना छिपाये तुम्हें सब बात बता दे रही हूँ। क्रोध इसलिये नहीं हुआ कि श्यामसुन्दर मुझे छोड़कर उस ग्वालिनकी ओर क्यों आकर्षित हुए, अपितु क्रोध इस बातसे हुआ कि ऐसी गरबीली ग्वालिन कौन है, जिसने मेरे प्यारे श्यामसुन्दरके कोमल हृदयको ठेस पहुँचायी है। बहिन! मैंने मन-ही-मन निश्चय कर लिया कि मैं उसे, जैसे भी हो, प्रसन्न करके अपने प्यारे श्यामसुन्दरके पास ले आऊँगी। उसके चरणोंको पकड़कर उससे प्रार्थना करूँगी। जैसे भी होगा, वैसे ही प्यारे श्यामसुन्दरसे मिलाऊँगी। इसी निश्चयसे मैं बोली—प्यारे श्यामसुन्दर! वह कहाँ है, मुझे दिखाओ!

श्यामसुन्दर बोले—तुम्हें देखनेसे तो उसका गर्व ही टूट जायेगा। उसने तुम्हें देखा नहीं है, इसीलिये तुम्हारे ऊपर आक्षेप कर रही थी।

बहिन ! मैं यह सुनकर उठी। उठकर प्यारे श्यामसुन्दरके हाथोंको पकड़कर उठाया और बोली—अभी चलो, मैं उसे देखना चाहती हूँ।

श्यामसुन्दर उठे, मुझे साथ लेकर माधवीकुञ्जके उस पार ले गये तथा दूरसे दिखलाया— वह देखो, वहाँ वह बैठी है।

बहिन ! मैंने देखा, दूरपर एक पेड़के सहारे अत्यन्त सुन्दर एक ग्वालिन बैठी है। मैंने श्यामसुन्दरसे कहा—तुम यहींपर बैठो। देखो, मैं अभी उसे अपने साथ लाती हूँ।

बहिन ! मैं वहाँ गयी। वहाँ जाकर उसके पास खड़ी हो गयी। बहिन ! सचमुच वह ग्वालिन मुझे इतनी सुन्दर दीख पड़ी कि मैं तो चकित होकर एक बार उसे देखती तथा फिर दूरपर खड़े हुए श्यामसुन्दरको देखती। फिर सोचती, क्या ही सुन्दर जोड़ी है। हे विधाता ! मेरी सहायता करना। मैं इसे प्यारे श्यामसुन्दरके पास ले जा सकूँ, इसके लिये तुमसे प्रार्थना करके सफलताकी भिक्षा माँग रही हूँ।

बहिन ! मैं फिर उसके पास जाकर बैठ गयी। उसने मुझे देखा। वह कुछ बोलने लगी, फिर रुक गयी। वह फिर बोल उठी—बहिन ! तू कौन है ?

मैं मन्द स्वरमें बोली—मुझे लोग 'राधा' कहते हैं।

यह सुनते ही वह कुछ झेंप-सी गयी और बोली—हूँ, मैंने तेरा नाम सुना है।

उसकी बात सुनकर बहिन ! एक बार तो मैं सकपका गयी, पर फिर बोली—क्यों बहिन ! मुझसे कोई अपराध हुआ हो तो क्षमा करना। न जाने तू बैठी क्या सोच रही थी ? मैंने आकर तुम्हारे सोचनेमें विघ्न पहुँचाया।

वह बोली—विघ्नकी तो कोई बात नहीं, पर मैं डरती हूँ कि जैसे तू

आयी है, वैसे ही तेरे पीछे वह नटखट फिर कहीं आकर मुझे छेड़ने न लग जावे।

मैं कुछ देर चुप रही, फिर बोली—बहिन! वे नटखट अवश्य हैं, पर वे तुम्हें प्यार करते हैं।

उसने आँखें चढ़ाकर कहा—चल, हट! तू मुझे ठगने आयी है?

बहिन! उसकी मुद्रा देखकर मेरे मनमें निराशा-सी हुई और बरबस मेरी आँखोंसे आँसू निकल पड़े। मुझे रोती देखकर उसका हृदय कुछ पसीजा। वह बोली—तू रोने क्यों लग गयी?

मैंने कुछ धैर्य धारण करके कहा—बहिन! वे सचमुच तुझे प्यार करते हैं।

वह इस बार कुछ नरमायी-सी होकर बोली—बहिन! प्यार करते होंगे, पर वे मेरे लिये तुम्हें थोड़े ही छोड़ देंगे। प्यार करना तो एकसे ही होता है।

विशाखे! उसकी बात सुनकर मुझे आशा-सी होने लग गयी। मैं कुछ साहस करके बोली—बहिन! यदि सचमुच तू एक बार उनके पास जाकर देख सकती तो तुरंत समझ जाती कि वे तुझे अतिशय प्यार करते हैं।

वह फिर बोली—करते होंगे, पर मैं नहीं चाहती कि तेरे सुखमें काँटा बनूँ।

अब मुझे पूरी आशा हो गयी कि मेरा काम बन जायेगा। मैंने उसके दोनों हाथोंको पकड़ लिया और बोली—बहिन! तू मेरे हृदयकी ओर देख ले। यदि तू प्यारे श्यामसुन्दरके पास जायेगी तो मेरे लिये इससे बढ़कर और कोई सुख है ही नहीं।

वह एकटक मुझे देखने लगी। फिर कुछ गम्भीर-सी होकर बोली—क्या तुम्हें मेरे जानेसे ईर्ष्या नहीं होगी?

मैं बोली—शपथ करके कहती हूँ बहिन! इससे मुझे बड़ा सुख मिलेगा।

वह बोली—क्या तू सहन कर सकेगी कि मैं उनके साथ तुम्हारे कुञ्जमें रहूँ?

मैं बोली—मेरी प्यारी बहिन ! सच मान, मेरी तो कोई कुञ्ज है ही नहीं, पर मेरी आठ सखियोंकी कुञ्जें तुम्हारी ही हैं। तू जिस कुञ्जमें प्यारे श्यामसुन्दरसे मिलना चाहेगी, उसीमें मैं तेरे लिये, तू जैसा कहेगी, वैसा प्रबन्ध कर दूँगी। बहिन, सच कहती हूँ, मैं तो तुम्हारी दासी हूँ। तू मुझे दासी मानकर जैसी आज्ञा देगी, वही करूँगी।

वह ग्वालिन कुछ हँसी, फिर बोली—यह मत समझना कि मैं श्यामसुन्दरको प्यार नहीं करती। मैं प्यार तो उन्हें करती हूँ, उन्हें प्यार किये बिना कोई रह ही नहीं सकता; पर मुझे फिर भी तुम्हारा डर है कि कहीं तेरे मनमें ईर्ष्या होगी तो व्यर्थका एक झगड़ा चल पड़ेगा। मैं तो बहिन ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· !

ग्वालिन यह कहते-कहते रुक गयी। मैंने फिर उसके दोनों हाथ प्रेमसे पकड़ लिये और बोली—हाँ, हाँ, बता ! रुकी क्यों ?

वह बोली—मैं भी चाहती हूँ कि एक बार श्यामसुन्दरसे अकेलेमें मिलकर उनसे कई बातें पूछती, पर तुम्हारा भय अभी भी मनसे नहीं जाता।

बहिन विशाखा ! इस बार मैं फूट-फूटकर रो पड़ी। फिर कुछ देर बाद मैं बोली—बहिन ! हृदय चीरकर दिखानेकी वस्तु होती तो दिखा देती, पर उसे चीरकर दिखानेसे मेरे श्यामसुन्दर फिर जीवित नहीं बचेंगे। नहीं तो मैं चीरकर दिखला देती। बहिन ! मैं चाहती हूँ एकमात्र श्यामसुन्दरका सुख, मुझे अपने लिये कुछ नहीं चाहिये। तुम्हें पाकर यदि श्यामसुन्दर प्रसन्न हों तो इससे बढ़कर मुझे कुछ भी नहीं चाहिये।

मैं फिर रोने लग गयी। इस बार उसे विश्वास हो गया। वह बोली—अच्छा, चल ! तेरे साथ ही चली चलती हूँ।

बहिन ! मेरे आनन्दकी सीमा नहीं थी। मैंने उसे हाथ पकड़कर उठाया। उसे लेकर वहाँ आयी, जहाँ श्यामसुन्दर बैठे थे। श्यामसुन्दरसे बोली—देखो, एक मेरी बड़ी बहिन आयी है। देखना भला, इसे कोई कष्ट न हो।

मेरे प्यारे श्यामसुन्दरकी आँखोंमें आँसू भर आये थे; पर मैंने सोचा कि कहीं मेरे खड़े रहनेके कारण वह ग्वालिन फिर रुष्ट न हो जाये,

इसलिये मैं वहाँसे चल पड़ी। मैंने मुख मोड़ा ही था कि श्यामसुन्दरने आकर मुझे हृदयसे लगा लिया। मैंने देखा, वह ग्वालिन चेतनाशून्य होकर गिर पड़ी है। मैं घबरायी-सी हो गयी और तुरंत श्यामसुन्दरके भुजपाशसे निकलकर उसके पास गयी। उसे गोदमें लेकर अञ्चलसे हवा करने लगी। पानी कहाँसे लाऊँ, मैं यह सोच ही रही थी कि रूप वहाँपर पानीकी झारी लेकर हँसती हुई-सी आ पहुँची। मैं अञ्चलको पानीमें भिगोकर उस ग्वालिनके मुखपर छींटे देने लग गयी। छींटे देते ही उसके मुखपरसे कुछ रंग-सा उतरने लगा। मैं बहुत ही चकित हुई। और भी जलके छींटे दिये। मुखपरसे पानी गिरकर उसके कपोलोंपर आ गया। अयँ! यह क्या? यह तो मेरी चित्रा है। मैंने श्यामसुन्दरकी ओर देखा। उनकी आँखोंसे प्रेमके आँसू अभी भी बह रहे थे। वे मेरे पास आये। इसी बीचमें चित्राको भी चेतना हो आयी। वह प्रेममें रोने लग गयी और बोली—बहिन! आज मैंने तेरा हृदय देखा है। प्यारे श्यामसुन्दरके प्रति प्रेम किसे कहते हैं, आज मैं समझ पायी हूँ।

बहिन! श्यामसुन्दरने मुझे फिर अपने हृदयसे लगा लिया और बोले—मेरे हृदयकी रानी! यह श्यामसुन्दर तुम्हारा है। ओह! प्रिये!! तू मेरे लिये जितना त्याग कर सकती है, उसके समान तो मेरे पास कोई भी वस्तु नहीं, जिसे देकर मैं तुम्हारे प्रेमका ऋण चुकाऊँ।

बहिन विशाखे! मैं पीछे जान पायी कि यह सब मेरे प्यारे श्यामसुन्दरकी ही लीला थी। उन्होंने ही चित्राको अपने हाथोंसे सजाया था। आह! बहिन!! चित्रा सचमुच उस दिन इतनी सुन्दर हो गयी थी कि क्या बताऊँ! मैं तो उसे सर्वथा पहचान ही नहीं सकी कि मेरी प्यारी चित्रा ही ग्वालिन बनी है। उसके तीन दिन पहले श्यामसुन्दरने कहा था कि प्रिये! तुमसे छिपाकर मुझे चित्रासे एक काम करवाना है। तू उसे आज्ञा दे दे। वह मेरी बात नहीं सुनती। प्यारेके ऐसा कहनेपर मैंने चित्राको अपनी सौगन्ध देकर कहा था कि श्यामसुन्दर जैसे कहें, वही करना। इसीलिये मेरी प्यारी चित्रा श्यामसुन्दरके कहनेसे ग्वालिन बनी थी।

बहिन! भेद खुल जानेपर मैं समझ पायी कि प्यारे श्यामसुन्दर मुझे कितना प्यार करते हैं! इसलिये बहिन! वे सम्भवतः ललिताको

चिढ़ानेके लिये ही शैव्याके कुञ्जमें गये हो। हाँ बहिन ! मैं ठीक जानती हूँ कि प्यारे श्यामसुन्दर मुझे हृदयसे प्यार करते हैं। बहिन! अपने हृदयके कोने-कोनेको वे मेरे लिये ही सजाते रहते हैं कि मेरी प्यारी राधा यहाँ रहकर विश्राम करेगी। हाँ बहिन ! सर्वथा ऐसी ही बात है। देख, तुझे एक बात और बता देती हूँ............... ।

इतना कहना ही था कि श्रीप्रिया विशेषरूपसे भावाविष्ट हो जाती हैं। वे ऐसा अनुभव करने लगती हैं कि मैं अकेले एक कुञ्जमें बैठी हूँ। प्यारे श्यामसुन्दर आये हैं। प्यारे श्यामसुन्दरने मुझे अपने हृदयसे लगा लिया है। फिर अपने हाथसे फूलोंसे मेरा श्रृङ्गार कर रहे हैं; पर इसी समय शैव्या आ जाती है। शैव्या यह देखकर कुछ चिढ़-सी जाती है तथा कहती है कि प्यारे श्यामसुन्दर ! मेरी सखी चन्द्रावलीने तुम्हें एक पत्र दिया है, मैं उसे देने आयी हूँ, अकेले आकर ले जाओ ! अब प्यारे श्यामसुन्दर कुछ विचारमें पड़ जाते हैं कि यदि पत्र लेने नहीं जाता हूँ तो चन्द्रावली रूठ जायेगी और छोड़कर जाता हूँ तो प्यारी राधा रूठेगी। राधारानी श्यामसुन्दरके भावको समझ जाती हैं तथा श्यामसुन्दरके पाससे उठकर कुछ दूर हट जाती हैं एवं अत्यन्त प्यारसे कहती है--ना ! मेरे प्यारे श्यामसुन्दर !! बहिन चन्द्रावलीका पत्र एकान्तमें जाकर ले लो। शैव्या बहिन ! मैं तो बहिन चन्द्रावलीकी दासी हूँ। श्रीप्रिया मन-ही-मन कह रही थीं, पर इस वाक्यसे इतना अधिक आविष्ट हो गयीं कि उच्च स्वरसे बोलने लगीं—हाँ, हाँ, मैं तो चन्द्रावलीकी दासी हूँ, दासी हूँ।

श्रीप्रियाको इस प्रकार रटते देखकर ललिता एवं विशाखा घबरायी-सी होकर सोचने लगती हैं—क्या करूँ, रानीको कैसे शान्त करूँ।

वे ऐसा सोच ही रही थीं कि रानी उठ बैठती हैं तथा बड़ी शीघ्रतासे खड़ी होकर यमुनाके घाटकी ओर दौड़ने लगती हैं। ललिता एवं विशाखा उन्हें पकड़ लेती हैं। रानी फिर भावाविष्ट होकर यह सोचने लगती हैं कि मैं चन्द्रावलीके कुञ्जके द्वारपर आ गयी हूँ। साथमें ललिता एवं विशाखा हैं। सामने शैव्या खड़ी है। रानी उसी भावमें बोल उठती हैं—हाँ ! बहिन शैव्या ! शीघ्रतासे जा। बहिन चन्द्रावलीसे कह कि मैं आयी हूँ। उनके यहाँ दासी होकर रहूँगी। प्रतिदिन उन्हें अपने हाथोंसे

सजाऊँगी, उन्हें नहलाऊँगी, उनके लिये फूलोंके गहने बनाऊँगी, उन्हीं गहनोंसे उन्हें सजाकर मैं उन्हें प्रतिदिन श्यामसुन्दरके पास बिठाकर पासमें खड़ी रहकर पंखा झलूँगी। सच कहती हूँ, शैव्या बहिन ! कपटसे नहीं। मेरे हृदयको देख ले, मैं नित्य यही सोचती हूँ कि मैं श्यामसुन्दरके योग्य नहीं हूँ। श्यामसुन्दर मेरे प्रेमके कारण विवेक खो बैठे हैं, इसीलिये मैं उन्हें सुन्दर दीखती हूँ। इसीलिये वे मुझे प्यार करते हैं। आज बड़े ही आनन्दका दिन है। मेरे प्यारे श्यामसुन्दरको आज ही सच्चा सुख मिलेगा। आज वे तुम्हारे कुञ्जमें आये हैं। बस, मैं उन्हें यहाँसे अब जाने नहीं दूँगी। बहिन ! चन्द्रावलीके कुञ्जमें ही उन्हें रखकर उन दोनोंकी दासी बनकर मैं भी यहीं रहूँगी। ललिता-विशाखा भी रहेंगी। शैव्या बहिन ! चन्द्रावलीसे जाकर कह दे कि राधा, तुम्हारी दासी आयी है।

प्रियाजी भावावेशमें बोल ही रही थीं कि एकाएक वहाँ पीछे घाटपरसे उठकर श्यामसुन्दर आ जाते हैं। उनकी आँखोंसे प्रेम झर रहा था। वे चटपट आकर राधारानीको हृदयसे लगा लेते हैं। ललिता-विशाखाका हृदय आनन्दसे उछलने लग जाता है।

श्रीश्यामसुन्दरका स्पर्श पाकर श्रीप्रिया प्रेमसे मूर्च्छित हो जाती हैं। कुछ देरके बाद चेतना आती है तो अपनेको वे श्यामसुन्दरके भुजपाशमें बँधी हुई देखती हैं। प्रेमावेशके कारण इस बार श्यामसुन्दरकी आँखोंसे भी झर-झर करते हुए आँसू निकलने लगते हैं। श्यामसुन्दर कहते हैं— प्रिये ! आज मैं तुमलोगोंके आनेके पहले ही यहाँ आ गया था। घाटपर छिपकर बैठा था। इच्छा थी कि आज फिर तुम्हारे मुखसे तुम्हारे हृदयकी बात सुनूँ। तेरा हृदय तो सर्वथा श्याममय ही है। मैं उससे एक क्षणके लिये भी बाहर नहीं जाता। मैं सब जानता हूँ, पर तुम्हारे मुखसे सुननेकी इच्छा हो जाती है, इसलिये कभी-कभी तुम्हें भुला दिया करता हूँ। मेरे हृदयकी रानी ! श्यामसुन्दरकी दासी तू नहीं है, सचमुच श्यामसुन्दर तेरा बिना मोलका दास है। प्रिये ! तुम्हारे कोमल हृदयमें न जाने मैं कितनी बार ठेस पहुँचाता रहता हूँ, पर तू मुझे प्यार ही करती है। तेरे प्यारका कोई ओर-छोर नहीं है। प्रिये ! मुझे भी तेरे प्यारका एक कण तू भीखमें देगी क्या ?

श्रीप्रिया श्यामसुन्दरके मुखको अपने हाथोंसे दबा देती हैं कि जिससे श्यामसुन्दर आगे कुछ भी बोल न सकें। सखियोंमें आनन्दका समुद्र तरंगित होने लगता है। वृन्दा श्यामसुन्दरके हाथको पकड़कर वेदीके ऊपर ले जाती हैं। वे एक अत्यन्त सुन्दर सिंहासनपर प्रिया-प्रियतमको बैठाती हैं। ललिता उजले रंगका शर्बत गिलासमें भरकर श्यामसुन्दरके होठोंके पास ले जाती हैं। श्यामसुन्दर गिलासको हाथमें लेकर राधारानीसे कहते हैं—प्रिये! एक बूँद आज पहले तू पी ले, तब मैं पीऊँगा। सच, आज मेरी यह बात टालना मत भला!

प्रिया संकुचित-सी होकर गिलासको हाथसे पकड़कर उसमेंसे थोड़ा-सा शर्बत पी लेती हैं। श्यामसुन्दर फिर पीते हैं। विशाखा हाथमें बीणा लिये खड़ी हैं। चित्रा शर्बतका भरा एक और गिलास लिये खड़ी हैं। कुल्ला करानेके लिये हाथमें परात लिये अनङ्गमञ्जरी खड़ी है तथा झारीमें शीतल जल लिये विमलामञ्जरी खड़ी है। मधुमतीमञ्जरी बीणा लेकर प्रिया-प्रियतमके मुखारविन्दपर दृष्टि टिकाये हुए गाती है—

बसो मेरे नैनन में दोउ चंद।
गौर बरन वृषभानु नंदिनी स्याम बरन नँद नंद॥
गोलक रहे लुभाय रूप में निरखत आनँद कंद।
जै श्रीभट्ट प्रेम रस बंधन क्यों छूटे दृढ फंद॥

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

मान लीला

राधा प्यारी बात सुनो एक मेरी ।
मैं आयो चाहत हौं तुम पे बीच लिये उन घेरी ॥
जतन अनेक बिनति करि हार्यो कैसे बात न फेरी ।
परबस पर्यो दास परमानँद काहि सुनावौं टेरी ॥

श्रीप्रिया इन्दुलेखाके कुञ्जमें बैठी हैं । गोलाकार संगमरमरकी सुन्दर वेदी है। वेदीका व्यास आठ गज है। वह पृथ्वीसे एक हाथ ऊँची है । वेदीके चारों ओर हरी-हरी दूब लग रही है। दूबको अत्यन्त सुन्दर ढंगसे काट-छाँटकर उसपर चित्रकारी बनायी गयी है । वेदीके ऊपर नीले मखमलका मोटा गद्दा बिछा हुआ है। वेदीके बीचमें नीले मखमलसे जड़ा हुआ सिंहासन है। सिंहासनसे कुछ दूर पश्चिमकी ओर एक नीला मसनद है, उसीके सहारे श्रीप्रिया पूर्व एवं दक्षिणके कोनेकी ओर मुख किये हुए बैठी है। श्रीप्रियाके पीछे ललिता खड़ी हैं। ललिता मन्द-मन्द मुस्कुरा रही हैं तथा दाहिने हाथकी तर्जनी अँगुलीको अपने मुँहके पास ले जाकर दूरपर खड़े हुए श्यामसुन्दरको संकेतसे बोलनेके लिये मना कर रही हैं ।

श्रीश्यामसुन्दर वेदीसे लगभग बारह गज पश्चिमकी ओर हटकर सुगन्धित पुष्पके वृक्षकी एक डालीको बायें हाथसे पकड़े हुए हैं। श्यामसुन्दरके दाहिने हाथमें वंशी है। कुञ्जके द्वारके पास आते ही वे विलासमञ्जरीसे यह बात कर चुके हैं कि आज प्रिया मान करके बैठी हुई हैं। इसीलिये श्यामसुन्दर धीरे-धीरे आकर वेदीसे दूर खड़े होकर ललिताको संकेतसे पूछ रहे हैं—क्यों, आज क्या ढंग है ?

ललिता पहले तो आँखें तरेरकर कुछ धमकाती हैं, पर श्यामसुन्दरको मुस्कुराते देखकर बरबस मुस्कुरा पड़ती हैं, फिर भी कुछ नहीं बोलनेका संकेत कर रही हैं। श्यामसुन्दर आये हैं, इस बातसे सभी

सखियोंमें आनन्दका प्रवाह बह रहा है, पर साथ ही श्रीप्रियाकी गम्भीर मुख-मुद्राको देखकर सभी अपने आनन्दको सँभालकर बहुत शान्तिपूर्वक अपनी-अपनी सेवाका कार्य कर रही हैं। श्रीप्रिया बहुत ही गम्भीर बनी बैठी हैं तथा किसीसे कुछ भी नहीं बोल रही हैं। उनके आगे पानदान पड़ा है। वेदीके पूर्व एवं दक्षिणकी ओर अत्यन्त सुन्दर बड़े-बड़े अशोकके दो वृक्ष लगे हुए हैं; उनपर तोता एवं मैनाओंके समूह-के-समूह बैठे हुए हैं। इनके अतिरिक्त विभिन्न जातिके पक्षी कुञ्जके वृक्षोंकी डालियोंपर बैठे हुए कलरव कर रहे हैं।

इस प्रकार श्यामसुन्दरको आये हुए जब कुछ देर हो जाती है, तब अशोक वृक्षपर बैठा हुआ तोता बोल उठता है—देवि इन्दुलेखे! अहा देखो, प्यारे श्यामसुन्दर तुम्हारे कुञ्जमें पधारे हैं। अहा! उनकी कैसी विलक्षण शोभा है! अलकावलीकी दो बिखरी हुई लटें कपोलोंपर आ गयी हैं। ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो भौंरोंके समूह दो दिशाओंसे उड़ते हुए आकर, फिर एक पंक्तिमें बैठकर श्यामसुन्दरके मुख-कमलका मकरन्द-पान कर रहे हों। अहा! कितनी सुन्दर आँखें हैं! क्या उपमा दूँ, कुछ समझमें नहीं आता! अरे! ये वस्तुतः सर्वथा अनुपम हैं। अहा! देखो, अधरपर कैसी मन्द मुस्कान है! प्यारे श्यामसुन्दर! बलिहार है तुम्हारे इस रूपको!

तोता कुछ देर ठहरकर फिर कहता है—देवि इन्दुलेखे! आज क्या बात है? तुम खड़ी हो? सुनो, मेरे प्यारे श्यामसुन्दरको खड़े-खड़े कितनी देर हो गयी? उनके पैर दुख गये होंगे। आसन बिछाओ, अपने कोमल हृदयका आसन बनाकर प्यारे श्यामसुन्दरको उसपर बैठाओ......।

तोता यह बोल ही रहा था तथा आगे बोलनेका तार अभी टूटा नहीं था कि सारी बीचमें ही बोल उठती है—तोते! तू भी श्यामसुन्दरकी भाँति वस्तुतः रससे अनभिज्ञ है, इसीलिये तू इतना बक-बक कर रहा है। अरे! तू जिन श्यामसुन्दरके स्वागत करनेके लिये इतना व्याकुल हो रहा है, उन्हींका गुण मैं तुम्हें सुनाती हूँ; फिर पता लग जायेगा कि वे कैसे हैं। सुन, तू जानता है मेरी प्यारी राधारानीके हृदयकी बात? नहीं जानता। यदि जानता होता तो फिर आज इस प्रकार नहीं बोलता।

सुन, सचमुच ये श्यामसुन्दर हैं तो बड़े सुन्दर, पर इनका हृदय बड़ा कठोर है; रस इसमें नहीं है। यदि रस होता तो ये मेरी प्यारी राधारानीको छोड़कर भला कभी किसी दूसरेके कुञ्जमें जाते? तोता! एक बार मेरी राधारानीके मुखकी ओर देख और देखकर बता कि क्या इतना सौन्दर्य तुमने और कहीं देखा है? तुमने कहीं भी नहीं देखा होगा। और राधारानीके हृदयकी बात मैं तुम्हें बताऊँ? देख, बताती हूँ, उनके सारे हृदयमें ऊपर-नीचे, बाहर-भीतर एकमात्र श्यामसुन्दर भरे हैं; तनिक भी कहीं भी कोई स्थान नहीं बच गया है कि इसमें कोई दूसरी वस्तु प्रवेश कर सके। ऐसा हृदय एवं ऐसा सौन्दर्य! अब श्रीराधारानीके इस दिव्य स्वरूपपर विचार कर तथा फिर विचार कर श्यामसुन्दरकी करतूतपर! फिर कहना कि वे श्यामसुन्दरकी कैसी सेवा करें!

सारीकी बात सुनकर श्यामसुन्दर समझ जाते हैं कि राधारानीके रूठनेका कारण क्या है! फिर श्यामसुन्दर सारीके उत्तरमें तोतेको कुछ भी न कहनेके लिये संकेत करते हैं। इसके बाद वेदीके पास आ जाते हैं एवं वेदीपर चढ़कर राधारानीके पास आकर बैठ जाते हैं। उनके बैठ जानेपर ललिता कुछ कड़े स्वरमें कहती है—क्यों! अब वहाँसे मन ऊब जानेपर यहाँ मनोरञ्जन करने आये हो? ठीक यही बात है न?

श्यामसुन्दर—तू विश्वास तो करेगी नहीं, बताकर क्या होगा?

श्यामसुन्दर यह कह करके फिर जिस मसनदके सहारे श्रीप्रिया बैठी है, उसपर अपना दाहिना हाथ रख देते हैं तथा अत्यन्त प्यारभरे स्वरमें कहते हैं—प्रिये! मेरी एक बात सुनो!

श्रीराधारानी अपना सिर नीचा कर लेती हैं, कुछ बोलती नहीं। श्यामसुन्दर अत्यन्त प्यारसे श्रीप्रियाका दाहिना हाथ, जो मसनदपर पड़ा है, उसे अपने हाथमें लेकर कहते हैं—प्यारी! सच कहता हूँ, मैं आ रहा था यहीं, पर बीचमें ही ये सब मिल गयीं। सारीने तुम्हें ठीक ही समाचार दिया है कि मैं उनके कुञ्जमें गया था; पर किस परिस्थितिमें गया था, सारीने इस बातको नहीं देखा। देखो! बात यह हुई कि मैं फूल तोड़ रहा था, उसी समय उन सबने मुझे आ घेरा। मैंने मधुमङ्गलको संकेतसे कहा कि तू मुझसे झगड़ा कर और हम दोनों झगड़ते हुए यहाँसे

भाग निकलें। मधुमङ्गलने वही किया, पर मेरी चतुराईने मुझे और फँसा दिया। मधुमङ्गलने झगड़ते हुए मेरी फेंट खींच ली। मैं फूलोंके दोनेको बायें हाथसे पकड़े हुए था। मधुमङ्गल कहता था कि यह दोना फेंक दो, इसे इन ग्वालिनोंने छू दिया, अब इसकी माला मैं तुम्हें पहनने नहीं दूँगा। मैं यह भाव दिखला रहा था कि मैं दोना नहीं फेंकूँगा। मधुमङ्गल एक हाथसे दोनेकी ओर लपका और दूसरेसे मेरी फेंट पकड़ ली। मैं दोनोंको सँभालने लगा, पर फेंट ढीली हो जानेके कारण उसी समय मेरी वंशी, जो उसमें खोंसी हुई थी, गिर पड़ी। उसे शैव्याने चटपट उठा लिया। अब तो मैं फँस गया। यदि मैं बिना वंशीके तेरे पास आता हूँ तो तू पूछती कि वंशी क्या हो गयी? तब मैं जो भी उत्तर देता, उसे सुनकर तेरा संदेह और भी बढ़ता। इसीलिये मैंने वंशी ले लेनी चाही। उन सबोंसे मैंने बहुत प्रार्थना की कि मेरी वंशी मुझे वापस दे दो, पर उन्होंने एक भी नहीं सुनी। वे बार-बार यही कहती थीं कि वंशी लेना हो तो चलो, एक बार मेरे कुञ्जमें चलकर थोड़ा शर्बत पी लो, फिर दे दूँगी। जब उन्होंने किसी प्रकार भी वंशी लौटाना स्वीकार नहीं किया तो हारकर मैं उनके कुञ्जमें गया था। उसी समय सारी उड़ती हुई वहाँ आयी। मैं तो इस परिस्थितिमें पूर्णतः फँस गया था। सारीको खोलकर अपनी बात समझा भी नहीं सकता था। अतः सारीने जो कुछ भी कहा है, वह सच ही कहा है; पर प्रिये! मेरा इसमें अपराध नहीं है। तू ही बता, मैं भला इसके अतिरिक्त कर ही क्या सकता था?

श्रीप्रिया श्यामसुन्दरकी बात सुनकर सोचने लगती हैं—मेरे प्रियतम श्यामसुन्दर कितने सरल हैं! अहा! इनका हृदय कितना कोमल है! ओह! ये मुझे कितना प्यार करते हैं! मेरे अंदर न कोई गुण है, न तनिक रूप भी; फिर भी मेरे प्राणनाथ मुझे इतना प्यार करते हैं! हाय! मैं रूठकर बैठी हूँ, इससे इनके कोमल हृदयमें कितना दुःख होता होगा! ओह! मैं कितने कठोर हृदयकी हूँ!

ऐसा सोचते-सोचते श्रीप्रिया प्रेममें अधीर होने लगती हैं। बार-बार इच्छा हो रही है कि श्यामसुन्दरको गलेसे लगा लूँ, पर लज्जा आ घेरती है। इसी समय इन्दुलेखा शर्बतका एक गिलास ले आती हैं तथा श्यामसुन्दरके पास जो छोटी-सी मणिजटित तिपाई है, उसपर रख देती हैं।

श्रीप्रिया कनखीसे गिलासको देखती हैं। देखते ही श्यामसुन्दरके शैव्याके कुञ्जमें शर्बत पीनेकी बात याद आती है। राधारानी सोचती हैं, मेरे प्रियतमको शैव्याने शर्बत पिलाया है। उसने शर्बत पिलाया और मेरे सरल हृदय प्यारे श्यामसुन्दरने पी भी लिया, पर गँवारी शैव्याने यह नहीं सोचा कि शर्बत पीकर श्यामसुन्दरको यदि कहीं सर्दी लग गयी तो कितना अनर्थ हो जायेगा ? क्या पता, शर्बत किस वस्तुसे बनाया गया था और कैसा बनाया गया था। शैव्याको शर्बत बनाना थोड़े ही आता होगा! पता नहीं, उसने कौन-सी वस्तु अधिक डाल दी होगी और किसी वस्तुका डालना आवश्यक होनेपर भी डालना भूल गयी हो। वह इन बातोंपर ध्यान थोड़े ही रख सकी होगी। उसे तो मेरे प्रियतमके अधरामृतका सुख लूटना था, भले ही श्यामसुन्दर अस्वस्थ हो जायँ। और मेरे प्राणनाथ इतने सरल हैं कि जिस-किसीके हाथकी दी हुई वस्तु स्वीकार कर लेते हैं। इसलिये आज रूठे रहकर थोड़ी कड़ाई करनी ही पड़ेगी कि जिससे ये भविष्यमें कभी किसीकी दी हुई वस्तु यों ही, बिना सोचे-समझे ही स्वीकार न करें।

ऐसा निश्चय करके श्रीप्रिया उसी तरह सिर नीचा किये हुए बैठी रहती हैं, कुछ भी नहीं बोलतीं। श्यामसुन्दर उठकर वेदीके नीचे चले आते हैं तथा ललितासे हाथ जोड़कर मूक प्रार्थना करते हैं कि तू मेरी सहायता कर। ललिता श्यामसुन्दरके हाथ पकड़कर उत्तर एवं पश्चिमके कोनेकी ओर कुछ दूर ले जाती हैं तथा वहाँ धीरेसे कहती हैं—तुम्हें एक उपाय बतलाती हूँ। किसी प्रकार रूपमञ्जरीको प्रसन्न कर लो। कलकी बात है, रूपमञ्जरीने सायंकाल मेरी प्यारी राधाको तुम्हारे रूपके वर्णनका पद गाकर सुनाया था। राधाने अतिशय प्रसन्न होकर रूपमञ्जरीको इच्छापूर्तिका एक वचन दिया है।* वह उधार है। इसलिये यदि वह प्रसन्न हो जायेगी तो तुम्हारे लिये मान तोड़नेकी प्रार्थना कर सकती है।

---

*यहाँकी लीला यद्यपि सर्वथा सच्चिदानन्दमयी है, इसमें जड़ताका लेश भी नहीं है, फिर भी लीलाकी सिद्धिके लिये भाँति-भाँतिकी चेष्टाएँ सखियों एवं दासियोंके द्वारा होती हैं। लीलामें समय-समयपर श्रीराधा एवं श्रीकृष्ण, दोनों ही प्रसन्न होकर सखियोंको, दासियोंको यह वचन देते हैं कि तुम्हारी एक बात, तुम जो भी कहोगी, मान ली जायेगी। प्रत्येक दासी

श्यामसुन्दर यह सुनकर प्रसन्न हो जाते हैं तथा वहीं घासपर बैठकर रूपमञ्जरीको पुकारते हुए कहते हैं— रूपे ! मुझे प्यास लगी है, एक गिलास ठण्डा पानी पिला।

रूपमञ्जरी मुस्कुराती हुई हाथमें शीतल जलका एक गिलास लेकर धीरे-धीरे आती है। उसके निकट आनेपर श्यामसुन्दर खड़े हो जाते हैं तथा उसके कंधोंको पकड़कर कहते हैं—देख, तू मेरी सहायता कर दे। तेरे पास राधाका एक वचन उधार है, यह मुझे ज्ञात हो गया है। तू मेरी प्यारी राधाको मना दे।

रूपमञ्जरी धीरेसे कहती है—मेरे पास तो एक ही थाती है; उसे दे देनेपर मैं रिक्त हो जाऊँगी। यदि इससे भी अधिक कोई आवश्यक अवसर आयेगा तो मुझे फिर किसी दूसरेसे प्रार्थना करनी पड़ेगी। हाँ, एक उपाय बतलाती हूँ। पहली बात तो यह है कि अब तुम हर किसीके हाथका शर्बत नहीं पीओगे, तुम्हें यह प्रतिज्ञा करनी पड़ेगी। और यदि कहीं पीना पड़े तो रानी जो उपाय तुम्हें बतलायेंगी, उसे पालन करके फिर पीना होगा; बोलो, स्वीकार है ?

श्यामसुन्दर—हाँ, स्वीकार है।

रूपमञ्जरीने प्रसन्न होकर कहा—ठीक है, अब एक काम करो।

एवं सखीके पास प्रायः ऐसे वचन थातीके रूपमें रहते हैं और सखियाँ एवं दासियाँ उस उधार वचनको इस प्रकार लीलाको और भी मधुर बनानेके लिये ही काममें लिया करती हैं। उदाहरणके लिये, जब कभी मान नहीं टूटता तो श्यामसुन्दर किसी सखीसे अनुनय करते हैं; फिर वह राधारानीसे उनके दिये हुए वचनकी स्मृति दिलाकर माँग लेती है कि रानी ! मेरी यह इच्छा है कि आज श्यामसुन्दरके गलेमें आप अपनी दोनों बाहें डाल दें और मैं इस छविका दर्शन करूँ। राधारानी अपने वचनकी पूर्तिके लिये उस सखीके सामने ऐसा ही करती हैं। ऐसा करते ही वे प्रेममें अधीर हो जाती हैं और मान टूट जाता है। इसी प्रकार तोता एवं मैना आदि पक्षियोंके पास भी इच्छापूर्तिके वचन उधार रहते हैं। सभी विलक्षण ढंगसे अपनी-अपनी इच्छापूर्ति करके लीलाका आनन्द लेते हैं।

आज दिनभरके लिये फिर मेरी रानी नहीं रूठ सकेंगी। वह जो सारी बैठी है, उसके पास भी श्रीरूपमञ्जरिका एक वचन उधार है। उसे कुछ देकर प्रसन्न कर लो। सारी वृन्दाके कहनेसे तुम्हारा काम कर देगी।

श्रीकृष्ण वृन्दाको संकेत करके उस सारीको बुला देनेके लिये कहते हैं। वृन्दादेवी, उसी वेदीपर जिसपर राधारानी बैठी हैं, पैर लटकाकर बैठी हुई श्यामसुन्दरके मुखारविन्दकी शोभा निहार रही हैं। वृन्दा संकेतसे ही सारीको श्यामसुन्दरके पास जानेकी आज्ञा देती हैं। सारी उड़ती हुई आती है तथा श्यामसुन्दरके चरणोंके पास सिर झुकाकर पंख फुलाकर बैठ जाती है। श्यामसुन्दर सारीको हाथोंपर उठाकर कहते हैं—प्यारी सारिके! तुम्हारे पास राधाका एक वचन उधार है। तू मनचाही वस्तु उसके बदले मुझसे माँगकर उस वचनके द्वारा प्यारी राधाका मान तुड़वा दे।

सारी प्रसन्न होकर यह वर माँगती है—मेरे प्यारे श्यामसुन्दर! मैं यही वर माँगती हूँ कि जब कभी भी मुझे श्रीप्रियाकी आज्ञा आपका समाचार लानेके लिये मिले तथा मैं उड़कर जाऊँ और आपके पास पहुँचूँ तो एक बारके लिये आप मुझे अपने पास बुला लें।*

---

*व्रजप्रेमकी यही विशेषता है कि इसमें अपने सुखकी तनिक भी वासना नहीं रहती। वहाँ प्रत्येककी चेष्टा इसीलिये होती है कि किसी प्रकार श्रीराधा एवं श्रीकृष्णकी परम मधुर लीलामें उन्हें अधिक-से-अधिक सुख पहुँचा सकूँ। श्रीराधारानीका मान-प्रसङ्ग वस्तुतः क्या है, इसे तो वे ही जानती हैं; पर लीलाके अनुभवी संतोंका कहना है कि मानमें भी अपने सुखकी गन्ध नहीं रहती। सूत्ररूपसे कहनेपर, यह कहा जा सकता है कि श्रीराधारानीका मान तीन कारणोंसे ही होता है—

(१) श्यामसुन्दरके मनमें यह इच्छा होती है कि मेरी प्यारी राधा मुझसे रूठे, मेरी ताड़ना-भर्त्सना करे और मैं उसे मनाऊँ। इसीलिये श्यामसुन्दरके प्रति श्रीराधारानी मान करती हैं। अर्थात् श्यामसुन्दर चाहते हैं, इसीलिये श्रीराधारानी मान करती हैं।

(२) श्यामसुन्दर जब कोई ऐसी चेष्टा करते हैं कि जिससे उनको कष्ट पहुँचनेकी सम्भावना होती है तो प्रियाजी मान कर बैठती हैं कि

श्यामसुन्दर सारीकी प्रार्थना स्वीकार कर लेते हैं। वह प्रसन्न होकर उड़ती है। उड़कर राधारानीके पास जाती है। राधारानीके पास जाकर सिर झुकाकर एक पदका पाठ करती है—

जयति नव नागरी कृष्न सुख सागरी सकल गुन आगरी दिनत भोरी।
जयति हरि भामिनी कृष्न घन दामिनी मत्त गज गामिनी नव किसोरी।।
जयति सौभाग्य मनि कृष्न अनुराग मनि सकल तिय मुकुट मनि सुजस लीजै।
दीजिये दान यह प्यार की स्वामिनी कृष्न सों बहुरि नहिं मान कीजै।।

जिससे मेरे प्यारे श्यामसुन्दर ऐसा न करें। यह मान भी इसीलिये होता है कि मेरे प्यारेको कोई कष्ट न हो जाये।

(३) श्यामसुन्दर जब कोई ऐसी चेष्टा करते हैं कि जिसके फलस्वरूप राधारानीके मनमें उन्हें बहुत अधिक सुखके बदले अल्पसुख मिलनेकी सम्भावना होने लगती है तो प्रियाजी मान कर बैठती हैं। इसमें भी यही हेतु है कि मेरे प्यारे श्यामसुन्दर ऐसा न करें; क्योंकि ऐसा न करनेसे उन्हें अधिक सुख मिलेगा।

इसी प्रकार व्रजके प्राणी बाह्य दृष्टिमें अनुकूल या प्रतिकूल कैसी भी चेष्टा क्यों न करें, सबके मूलमें यही भाव रहता है कि मैं श्यामसुन्दरको अधिक-से-अधिक सुख पहुँचा सकूँ। दासियाँ वचन उधार इसीलिये रखती हैं कि वे श्यामसुन्दरकी अधिक-से-अधिक सेवा कर सकें। यहाँ सारीने जो वर माँगा है, उसमें भी एक रहस्य है। सारीका उद्देश्य यह है कि श्यामसुन्दरकी अधिक-से-अधिक सेवा कर सकूँ। सारी उड़-उड़ करके श्यामसुन्दरका संदेश लाने जाया करती है; पर जब श्यामसुन्दर किसी दूसरे कुञ्जमें (श्रीचन्द्रावली या उनकी सखियोंके किसी कुञ्जमें) रहते हैं तो द्वारपर पहरा रहनेके कारण वह निकुञ्जके अंदर प्रवेश नहीं कर पाती है। बाहर तो डालियोंपर बैठकर सब कुछ सुन लेती है, पर जब श्रीचन्द्रावली या उनकी सखियाँ श्यामसुन्दरको लेकर सघन निकुञ्जमें चली जाती हैं, तब अंदर प्रवेश सम्भव नहीं हो पाता। इसीलिये श्यामसुन्दरसे वह यह प्रार्थना कर रही है कि मैं जब उड़कर जाऊँ तो वे मुझे बुला लें; क्योंकि उनके बुला लेनेपर मुझे फिर कोई रोकेगा नहीं और मैं सब बातें ठीकसे सुन-समझकर राधारानीके पास उड़ करके आ

सारीके पद-पाठ करनेसे श्रीराधाके गम्भीर मुखारविन्दपर मुस्कुराहट दौड़ जाती है; पर वे सोचने लगती हैं कि सारीकी इच्छा तो पूरी करनी ही होगी और शर्बत नहीं पीनेका संकल्प करवाना अभी अपूर्ण ही रह गया। रूपमञ्जरी समझ जाती है तथा इसी समय कहती है—सब ठीक कर लिया है। अब श्यामसुन्दर किसीके हाथका शर्बत यों ही नहीं पीयेंगे। उन्होंने मेरे सामने प्रतिज्ञा कर ली है।

इस बातको सुनकर राधारानी प्रसन्न हो जाती हैं तथा मान छोड़ देनेके लिये प्रस्तुत हो जाती हैं; पर लज्जा आ घेरती है। अतः श्यामसुन्दरके पास जानेकी इच्छा होनेपर भी खड़ी रह जाती हैं। श्यामसुन्दर समझ जाते हैं कि काम बन गया। वे वहाँसे चलकर वेदीपर चढ़ जाते हैं तथा अपने गलेसे एक माला निकालकर श्रीराधाके गलेमें पहनाकर कहते हैं—प्रियतमे! आज मैंने इस मालाको तुम्हारे लिये ही बनाया था। बनाकर मैं देखने लगा कि यह कैसी बनी है। फिर सोचने लगा कि तुम्हारा हृदय

जाऊँगी। सारीके मनमें श्यामसुन्दरके पास बैठकर सुख लेनेकी इच्छा नहीं है। उसके मनमें यही इच्छा है कि श्यामसुन्दरके विरहमें व्याकुल श्रीराधाके पास श्यामसुन्दरका अधिक-से-अधिक वर्णन सुनाकर उन्हें आनन्द पहुँचा सकूँ।

यह सर्वथा अटूट सिद्धान्त है कि जहाँ तनिक भी अपने सुखकी अभिलाषा है, वहाँ तो काम है। व्रजसुन्दरियोंमें अपने सुखकी इच्छा सर्वथा होती ही नहीं। इच्छा न होनेपर भी उन्हें अपार-असीम सुख मिलता है। श्यामसुन्दरको सुख मिल रहा है, यही एकमात्र उनके सुखमें हेतु होता है। श्यामसुन्दरको हँसते हुए देखकर, उनको प्रसन्न वदन देखकर श्रीगोपीजनोंमें प्रसन्नताकी बाढ़ आ जाती है। श्रीगोपीजनोंको प्रसन्न देखकर श्यामसुन्दर और अधिक प्रसन्न होते हैं। फिर श्यामसुन्दरको और अधिक प्रसन्न देखकर व्रजसुन्दरियाँ और भी प्रसन्न होती हैं। प्रसन्न व्रजसुन्दरियोंको देखकर फिर श्यामसुन्दर और प्रसन्न होते हैं। इस प्रकार परस्पर प्रसन्नता एवं आनन्दके समुद्रमें डूबते हुए श्रीप्रिया-प्रियतमकी यह सच्चिदानन्दमयी लीला निरन्तर चलती रहती है और अनन्त कालतक चलती रहेगी।

तो अत्यन्त कोमल हैं और ये पुष्प बहुत अधिक कठोर हैं। इनके लिये तो मेरा कठोर हृदय ही उपयुक्त स्थान है। अतः मैंने इसे पहन लिया था। पर तुम्हारे पास आते ही इनपर तुम्हारी छाया पड़ गयी और ये कोमल हो गये। इतने अधिक कोमल हो गये हैं कि मेरे कठोर हृदयपर टिक नहीं रहे हैं। इसीलिये अब तुम्हारे हृदयपर मैं इन्हें झुला दे रहा हूँ।

राधारानी विहँसती हुई कहती हैं—बस, बस, कविजी महाराज ! चुप··· ··· ··· ··· ··· ···।

वाक्य पूरा होनेके पूर्व ही राधारानी अपने दाहिने हाथकी अँगुलियोंसे श्रीकृष्णका मुँह बंद कर देती हैं। श्रीकृष्ण श्रीराधारानीको हृदयसे लगा लेते हैं। सखियाँ उन दोनोंपर पुष्प बरसाने लगती हैं तथा वृक्षोंपर बैठे हुए पक्षी अत्यन्त मधुर स्वरमें गाने लगते हैं—

जय राधे जय राधे राधे जय राधे जय श्रीराधे।
जय कृष्ण जय कृष्ण कृष्ण जय कृष्ण जय श्रीकृष्ण ॥

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

मिलनोत्कण्ठा लीला

श्रीप्रिया चम्पकलताके कुञ्जमें एक फव्वारेके पास बैठी हैं। फव्वारेका जल लगभग दस गज चारों ओरसे बने हुए कुण्डमें झर-झरकर गिर रहा है। कुण्डके चारों ओर उजले रंगके चमकीले एवं कहीं-कहींपर सुनहले रंगके पत्थरोंकी सुन्दर गच है। कुण्डमें उतरनेके लिये चारों दिशाओंमें छोटी-छोटी सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। कुण्डके जलपर कमलके हरे-हरे बड़े-बड़े पत्ते फैले हुए हैं तथा उनपर कमलके पुष्प खिले हुए हैं। नीले, लाल एवं उजले, तीन रंगके कमलके पुष्प वायुके झोंकोंसे हिल रहे हैं। फव्वारा लगभग तीन-चार गज ऊँचा है। उसपर पत्थरका हंस बना हुआ है। हंसने अपनी चोंचमें डंटीसहित कमलका पुष्प ले रखा है। उसी पुष्पके छिद्रसे फव्वारेका जल मोतीकी भाँति झरता हुआ कुण्डमें गिर रहा है। कुण्डके चारों ओर सुगन्धित पुष्पोंसे लदी हुई एक-एक झाड़ीको बड़े सुन्दर ढंगसे काँट-छाँटकर उसपर 'राधा-श्याम', 'राधा-श्याम' का मेहराब बना दिया गया है। मेहराबके दोनों ओर छोटे-छोटे संगमरमरकी बेंचें हैं। झाड़ीके पीछे एक-एक आमका पेड़ है, जिसपर बैठी हुई कोयल कुहू-कुहू कर रही है।

फव्वारेके कुण्डके दक्षिणकी ओर जो गच है, उसीपर श्रीप्रिया उत्तरकी ओर मुँह किये बैठी हैं। उनके दोनों पैर कुण्डकी पहली सीढ़ीके ऊपर टिके हुए हैं तथा दोनों हाथोंसे अपने कपोलोंको पकड़े हुए वे नीची दृष्टि किये बैठी हैं। उनके पीछे विमलामञ्जरी खड़ी है तथा मधुमतीमञ्जरी हाथमें वीणा लिये उनकी बायीं ओर बैठी है। वीणा बजानेकी मुद्रामें बैठी हुई वह श्रीप्रियाकी आज्ञाकी बाट देख रही है। श्रीप्रिया कुछ सोचती हुई इतनी तल्लीन हो गयी हैं कि अभी थोड़ी देर पहले मधुमतीको वीणा लानेके लिये कहा था; पर मधुमतीके वीणा ले आनेपर भूल गयीं कि यहाँ क्या हो रहा है, मैं कहाँ हूँ? कभी-कभी दृष्टि उठाकर हिलते कमलोंको देख

लेती हैं; किंतु फिर भी उनकी दृष्टि मधुमतीकी ओर नहीं जाती। मधुमतीमञ्जरी पीछे खड़ी हुई विमलामञ्जरीको आँखोंसे कुछ संकेत करती है। विमलामञ्जरी अपनी कञ्चुकीसे श्यामसुन्दरका अत्यन्त सुन्दर चित्र निकालकर श्रीप्रियाके दाहिनी ओर आकर बैठ जाती है। श्रीप्रिया विमलामञ्जरीके बैठ जानेपर कुछ तिरछी दृष्टिसे उस ओर देखने लगती हैं। उधर देखते ही चित्रपर दृष्टि चली जाती है। श्रीप्रिया झटपट उस चित्रको विमलामञ्जरीके हाथसे ले लेती हैं तथा देखने लगती हैं। देखते ही आँखोंमें आँसू भर आते हैं। प्रिया आँसू रोकनेकी चेष्टा करती हैं, पर आँसू रुकते नहीं।

चित्रको हाथमें लिये हुए श्रीप्रिया चाहती हैं कि उसे देखूँ; पर उनकी आँखें आँसुओंसे पूर्णतः भर जाती हैं और वे चित्रको देख नहीं पातीं। चित्र देखनेके लिये वे बार-बार अञ्चलसे आँसू पोंछती हैं, पोंछकर फिर चित्रकी ओर देखती हैं, पर देखते ही पुनः आँखें आँसुओंसे भर जाती हैं। इस प्रकार पाँच-छः बार चेष्टा करनेपर भी श्रीप्रिया उस चित्रको देख नहीं पा रही हैं, अतः व्याकुल होकर चित्रको तो हृदयसे लगा लेती हैं तथा सिर ऊँचा करके रोने लग जाती हैं। कुछ क्षण इसी भाँति बीत जाते हैं। मधुमती वीणाको रख देती है तथा अपने अञ्चलसे प्रियाके आँसुओंको पोंछने लग जाती है। कुछ देर रोते रहनेके बाद फिर प्रियाको कुछ धैर्य होता है एवं वे लड़खड़ाते स्वरमें कहती हैं—मधुमती! कुछ गा······!

मधुमती वीणाको कंधेके सहारे रखकर गाने लगती है—

ये नयना रिझवार नये री।
एकहि बार बिलोकि स्याम को तजि घर बार फकीर भये री।
अब देखे बिन आँसू ढारत जुग समान पल बीत गये री।
नारायन ये हू अति चंचल फल पाये जस बीज दये री॥

गाते-गाते स्वयं मधुमतीकी आँखोंसे भी आँसू बहने लगते हैं। श्रीप्रिया तो इस बार सिसक-सिसककर रोने लग जाती हैं। मधुमती धैर्य धारण करके वीणाको तुरंत वहीं रख देती है तथा श्रीप्रियाके गलेमें दाहिना हाथ डालकर बायें हाथमें अपना अञ्चल लेकर प्रियाके आँसुओंको पोंछने

लग जाती है। कुछ देर बाद श्रीप्रियाको कुछ धैर्य होता है। वे कुछ गम्भीर-सी होकर वहाँसे उठकर पीछे जो झाड़ी थी, उसके पास जाकर उत्तरकी ओर मुँह करके बैठ जाती हैं। झाड़ीके मेहराबके दोनों ओर बैठनेके लिये छोटे-छोटे संगमरमर पत्थरकी जो बेंचें बनी हुई हैं, श्रीप्रिया उसीके सहारे पीठ देकर बैठी हैं।

इसी समय कुञ्जके पूर्वी द्वारसे रूपमञ्जरी आती है। रूपमञ्जरीके मुखपर अत्यधिक प्रसन्नता छायी हुई है। वह आकर राधारानीके पास बैठ जाती है तथा बड़ी प्रसन्नताके स्वरमें कहती है—मेरी रानी! आज मधुमङ्गलने बड़ा काम किया, नहीं तो मैया आज श्यामसुन्दरको वनमें जानेके लिये पूर्णतः रोक ही चुकी थीं। तुम्हारा अनुमान ठीक ही निकला! आज नागपञ्चमीकी पूजा है। पहले तो पूजा करानेके लिये एवं फिर श्यामसुन्दरके द्वारा ब्राह्मणभोजन करानेके लिये मैयाने उन्हें रोक ही लिया। पर मधुमङ्गल वहीं श्यामसुन्दरसे लड़ पड़ा और इतनी धूम मचा दी कि उसने भोजन करना भी अस्वीकार कर दिया। उसके न खानेसे श्यामसुन्दर भी भला कैसे खाते? उन्होंने भी भोजन करना अस्वीकार कर दिया। मधुमङ्गल कहता था कि कल इसने वचन दिया है कि आजके हारे हुए दाँव कल अवश्य चुका दूँगा। अब वह आनाकानी करता है कि मैया आज वन जानेके लिये मना करती है। श्यामसुन्दरके न खानेके कारण मैयाने हार मानकर यह आज्ञा दे दी कि अच्छा, डेढ़ पहर दिन चढ़ते-चढ़ते मैं पूजा समाप्त कर दूँगी, फिर तू वनमें चले जाना। अतः मेरी रानी! अब वे आयेंगे तो अवश्य, पर सम्भवतः कुछ विलम्ब हो जाये।

रूपमञ्जरीकी बात सुनकर रानीके हृदयमें आशा एवं प्रसन्नता भर जाती है। वे रूपमञ्जरीको हृदयसे लगाकर प्यार करती हुई इस शुभ संवादके लिये कृतज्ञता-सी प्रकट करती हैं। इसी समय राधारानीकी सारी उड़ती हुई वहाँ आती है। आकर राधारानीके सामने बैठ जाती है। राधारानी उत्कण्ठाभरी दृष्टिसे देखती हुई सारीको अपने बाँये हाथपर रख लेती हैं तथा दाहिने हाथसे उसके सिरको सहलाती हुई पूछती हैं—सारिके! मेरे प्यारे श्यामसुन्दरका समाचार तू अवश्य लायी होगी। बोल, श्यामसुन्दरके आनेमें कितना विलम्ब है?

केलि कुञ्ज

विजयेता श्रीप्रियाप्रियतमौ

सारी कहती है--रानी ! वे गायोंके साथ नन्द-भवनके द्वारसे बाहर हुए ही थे कि मैं तुम्हें सूचना देने आ गयी हूँ।

इस सूचनासे रानीकी प्रसन्नताकी सीमा नहीं रहती। वे सारीको हृदयसे लगा लेती हैं। सारी भी प्रेममें डूबने लग जाती है। सबके मनमें आनन्द छा जाता है। सबको संदेह था कि पता नहीं, श्यामसुन्दर आज आयेंगे या नहीं; पर सारीकी बातसे सबकी चिन्ता मिट गयी, सभी आनन्दमें विभोर हो गयीं। रानी सारीको हाथमें बैठाये रखकर ही उसे प्यार करने लग जाती हैं। साथ ही उत्कण्ठाभरी दृष्टिसे श्यामसुन्दरके आनेके पथकी ओर बार-बार देखती भी जाती हैं। रानी फिर भी कुछ व्याकुल हो जाती हैं। सारी हाथपरसे उड़कर नीचे भूमिपर बैठ जाती है। रानी उठकर खड़ी हो जाती हैं। थोड़ी देर खड़ी रहकर फिर जिस बेंचके सहारे वे बैठी हुई थीं, उसपर बैठ जाती हैं। इस बार उनका मुख पूर्वकी ओर हो जाता है तथा पीठ बेंचके हत्थेपर टेककर उसी बेंचपर पैर फैलाकर बैठ जाती हैं। फिर धीरेसे कहती हैं—सारिके ! इधर आ !

सारी उड़कर चरणोंके पास जो बेंचका हत्था था, उसपर बैठ जाती है। रानी पूछती हैं—सारी ! क्या तेरे-जैसे मुझे भी पंख हो सकते हैं ?

सारी—रानी ! पंख लेकर क्या करोगी ?

राधारानी—पंख होते……………, मैं भी तेरी तरह उड़-उड़कर प्रियतम श्यामसुन्दरको देखती फिरती। जहाँ जिस कुञ्जमें रहते, वहीं उड़कर चली जाती।

सारी चुप हो जाती है। कुछ भी उत्तर नहीं देती। राधारानी फिर पूछती हैं—अच्छा सारिके ! बता तो सही, श्यामसुन्दर मुझे क्यों प्यार करते हैं ?

सारी कुछ देर चुप रहकर रानीके मुखमण्डलकी ओर देखती है। फिर कहती है—रानी ! कभी श्यामसुन्दरसे पूछकर बताऊँगी।

राधारानी—पर देखना भला, वे कहीं तुम्हें ठग नहीं लें।

सारी—मेरी प्यारी रानी ! वे मुझे नहीं ठगेंगे। मुझको भी वे बहुत प्यार करते हैं।

राधारानी प्रसन्न-सी होकर कहती हैं—अच्छा, तुझे क्यों प्यार करते हैं, यह बता !

सारी कहती है—रानी ! एक दिन मैं उड़कर गयी । वहाँ जाते ही श्यामसुन्दरने मुझे हाथपर उठा लिया । हाथपर रखते ही उनकी आँखोंसे आँसू झरने लगे । कण्ठ रुँध गया । फिर कुछ देर बाद धैर्य धारण करके बोले कि सारिके ! तुम्हें देखते ही मेरे प्राण व्याकुल हो जाते हैं । तू मेरी प्राणेश्वरी राधाकी सारी है । आह ! मेरी प्रियाने अपने हाथोंसे स्पर्श करके तुम्हें मेरे पास भेजा होगा । सारी ! आ, मेरे हृदयमें बैठ जा । सच, सारी ! देख, मैं तुम्हें जिस क्षण हाथपर लेता हूँ, उसी क्षण मुझे चारों ओर मेरी प्यारी राधा-ही-राधा दीखने लग जाती है । सारी ! इसीलिये तू मुझे प्राणके समान प्यारी लगती है ।

रानीके मुखपर गम्भीरता छा जाती है । वे कुछ देर चुप रहकर कहती हैं—सारी ! एक बात पूछती हूँ; तू ठीक-ठीक बतायेगी न ?

सारी—हाँ रानी ! अवश्य बताऊँगी ।

राधारानी—अच्छा, बता, कोई ऐसी औषधि तू जानती है कि जिसके खानेसे मैं मर जाऊँ !

सारी कुछ देर चुप रहकर सोचती है । इसी समय ललिता दबे पाँव मुस्कुराती हुई पश्चिमकी ओरसे आ जाती है । रानी इस प्रकार तल्लीन हो रही थीं कि ललिताके आनेका उन्हें तनिक भी पता नहीं लगता । ललिता राधारानीकी बात सुन लेती है तथा सारीको कुछ संकेत करती है । ललिताके संकेतको सारी समझ जाती है । इसी बीचमें राधारानी फिर कहती हैं—हाँ, सारी ! सच, बड़ी विनयसे पूछती हूँ कि मैं मर सकूँ, इसके लिये तू कोई उपाय बता सकती है ?

सारी कहती है—रानी ! मरकर क्या करोगी ?

राधारानी—देख, मरकर सदाके लिये श्यामसुन्दरके चरणोंमें चिपट जाऊँगी । मेरी देह ही मुझे श्यामसुन्दरसे अलग रख रही है ।

सारी—पर रानी ! फिर श्यामसुन्दरकी क्या दशा होगी, यह भी तुमने कभी सोचा है ?

राधारानी घबरा-सी जाती हैं तथा अत्यधिक त्वरासे कहती हैं—ओह ! मैं तो सचमुच भूल गयी ! ना सारी ! मैं नहीं मरूँगी । आह ! मेरे मरते ही प्यारे श्यामसुन्दर जीवित नहीं रहेंगे ! ओह ! मैं तो सर्वथा बावली हो गयी थी । ठीक समयपर तूने मुझे सावधान कर दिया ! ना, अब मैं नहीं मरूँगी, कभी नहीं मरूँगी !

अब रानी आँखें बंद करके कुछ सोचती हैं तथा फिर कहती हैं—सारी ! तू जानती है, श्यामसुन्दर आजकल कहाँ चले जाते हैं ?

रानीकी बात सुनकर सारी पुनः कुछ सोचने लगती है । रानी आँखें खोलकर फिर कहती हैं—हाँ, हाँ, बता, महीनों हो गये, वे इधर इन निकुञ्जोंमें तो आये ही नहीं । पता नहीं, कहाँ चले जाते हैं ?

राधारानीका मुख-मण्डल कुछ-कुछ लाल होने लग जाता है तथा वे भावाविष्ट होने लगती हैं । उन्हें ऐसा प्रतीत हो रहा है कि मैं प्रतिदिन इन कुञ्जोंमें आती हूँ, पर श्यामसुन्दर यहाँ नहीं आते, कहीं दूसरी जगह चले जाते हैं । इसी भावसे भावित होकर वे सारीसे फिर पूछने लगती हैं—हाँ, तू तो उड़ सकती है, उड़कर देखती होगी, वे कहाँ चले जाते हैं ? कहीं मार्ग तो नहीं भूल जाते ? हाँ, सारी ! वे बड़े सरल हैं, उन्हें कोई भी भुलावा दे सकता है ....।

रानीकी आँखोंसे ढल-ढल करके आँसू बहने लग जाते हैं । ललिता पीछे खड़ी थी । वे सामने आ जाती हैं तथा रानीके सिरके पास घुटने टेककर भूमिपर बैठ जाती हैं । रानीकी दृष्टि ललितापर नहीं जाती । वे भाव-समाधिमें अधिकाधिक डूबती जा रही हैं । ललिता कुछ देरतक रानीकी ओर एकटक देखती रहती हैं । राधारानी भी कुछ देरतक आँख बंद किये रहती हैं, कुछ भी नहीं बोलतीं । फिर एकाएक कह उठती हैं—सारी ! जा, ललिताको बुला ला !

रानीकी बात सुनकर ललिता वहीं उस बेंचकी कोरपर बैठ जाती हैं तथा कहती हैं—क्यों बहिन ! मैं तो तेरे पास ही हूँ ।

ललिताकी बात सुनकर राधारानी कहती हैं—अच्छी बात है, तू आ गयी । देख, तुम्हें एक बात सुनाती हूँ । धैर्यसे सुनना, घबराना मत भला !

ललिता—ना बहिन! मैं शान्तिसे सुनूँगी, घबराऊँगी नहीं, तू सुना।

राधारानी—देख, मुझे एक रोग हो गया है। मैं अबतक तुमलोगोंसे छिपाती रहती थी, पर आज मेरे जीवनका अन्तिम क्षण उपस्थित है, इसलिये तुमसे सब बात खोलकर कह देना चाहती हूँ। क्यों, सुनकर अशान्त तो नहीं हो जायेगी?

ललिताकी आँखोंमें प्रेमके आँसू भर आते हैं। वे कहती हैं—ना, मैं अशान्त नहीं होऊँगी। तू अपना अन्तर खोलकर बता।

राधारानी—देख, तुझे याद होगा, आजसे हजारों-हजार वर्ष पहले मैंने श्यामसुन्दरको केवल एक बार देखा था। बस, इसके बाद फिर उन्हें मैंने कभी नहीं देखा।* हाँ बहिन! बस, एक बार ही देख पायी; पर उसी क्षणसे उनकी वह छवि मैं अपने हृदयमें छिपाये बैठी हूँ! तुम सबसे भी

---

*प्रेमकी ऊँची अवस्थामें जब प्यारेका एक क्षणके लिये भी वियोग होता है, तब वह एक क्षण ही युगके समान प्रतीत होने लग जाता है। श्रीश्यामसुन्दर जब वनको चले जाते थे तो श्रीगोपीजनोंको उनका विरह इतना दुखदायी हो जाता था कि एक त्रुटि भी उनके लिये युगके समान प्रतीत होने लगती थी। यह वर्णन श्रीमद्भागवतमें ही आया है। इसी प्रकार राधारानीके हृदयमें जो भाव-तरंगें उठती हैं, वे तो सर्वथा असीम-अतुलनीय हैं। जब कभी श्रीप्रियाको श्यामसुन्दरके विरहकी अनुभूति एक क्षणके लिये भी होती है, उस समय उन्हें ऐसा प्रतीत होता है मानो युग बीत गये हैं और तबसे मैंने श्यामसुन्दरको नहीं देखा है। यद्यपि प्रतिदिन श्रीप्रियासे श्यामसुन्दरका मिलन होता है, पर प्रिया भावाविष्ट होकर यह समझने लगती हैं कि मेरा यह मिलन भावनासे प्रतीत होने लग गया था। ध्यान करते-करते मैं सुध-बुध भूल जाती हूँ और कुछ-का-कुछ सोचने लगती हूँ। वस्तुतः श्यामसुन्दर तो हजारों-हजार वर्षसे मेरे पास आये ही नहीं हैं। उसी प्रकार आज भी श्रीप्रियाको भ्रम हो रहा है कि श्यामसुन्दरसे मिले बहुत दिन हो गये। प्रेमकी इस अवस्थाको कोई वाणीसे नहीं बता सकता। बिरले सच्चे संत ही उसे अनुभव करके कृतार्थ होते हैं।

छिपाती रही। दिन-रात उन्हें हृदयमें बैठाये रखकर भावनासे उनकी रूप-सुधाका पान करती रही हूँ। बहिन! पर साथ ही जलती भी रही हूँ। वह विचित्र-सी दशा है। रूप-सुधाके समुद्रमें डूबी रहकर भी मैं जलती रही हूँ। कभी यह भ्रम हो जाता था कि प्यारे श्यामसुन्दर आये हैं, मुझे अत्यन्त प्यार कर रहे हैं। बस, इसी आनन्दमें रात समाप्त हो जाती। फिर सोचती कि ना, यह तो सचमुच मुझे भ्रम हो गया था। हृदयमें बैठाये रखकर श्यामसुन्दरके साथ मैं भावनाका आनन्द लूटने लगती हूँ। इसी प्रकार हजारों-लाखों वर्ष बीत गये हैं। मैं एक क्षणमें तो आनन्दके समुद्रमें डूबने लगती हूँ और दूसरे ही क्षण हृदय विरहाग्निसे दग्ध होने लगता है। इस प्रकार हँसती हुई, जलती हुई मैंने इतने दिन बिताये हैं; पर अब तो हृदय दग्धप्राय: हो गया है। अब थोड़ी देरमें मेरे प्राण बाहर निकल जायँगे। हाँ, बहिन! बस, एक बार मुझे अपनी रूप-सुधाका पान कराकर फिर वे नहीं आये। पता नहीं, कहाँ चले गये? प्रतीक्षामें इतने दिन बीत गये, अब आज अन्तिम दिन है ....।

रानी यह कहकर रुक जाती हैं। ललिता कुछ भी नहीं बोलती। वे एकटक श्रीप्रियाके मुखारविन्दकी ओर देखती रह जाती हैं। रानी फिर कहने लगती हैं—हाँ, अब देख! तुझे हृदयको कठोर बनाना पड़ेगा। बहिन! तू मुझे अतिशय प्यार करती है। मेरे विरहमें, पता नहीं, तेरे प्राण रहेंगे या नहीं। पर बहिन! कुछ क्षणके लिये धीरज रखना! देख, अब अधिक देर नहीं है; मेरे प्राण निकलनेवाले ही हैं। तू मेरे प्यारे श्यामसुन्दरके उस चित्रको मेरे हृदयपर रख दे। जब प्राण निकल जायँ, तब उस चित्रको मेरे अञ्चलसे बाँध देना। भली भाँति कसकर बाँध देना तथा उस चित्रके साथ ही मेरे प्यारे श्यामसुन्दरके कुण्डमें मेरी समाधि दे देना। देख, धीरजसे अपनी प्यारी सखीकी यह अन्तिम सेवा करना।

यह कहकर रानी रुक जाती हैं। उनकी दशा देखकर ललिता अतिशय व्याकुल होकर सोचने लगती हैं कि क्या उपाय करूँ, जिससे प्यारी सखीको सान्त्वना मिले। कुछ क्षण सोचकर वे राधारानीके कानमें कहती हैं—बहिन! प्यारे श्यामसुन्दर आ गये हैं। वह देखो, विशाखाके कुञ्जकी पगडंडीपर खड़े हैं।

रानीके कानोंमें ये शब्द पड़ते ही वे चटपट उठकर बैठ जाती हैं तथा कुछ लजायी-सी होकर उधर ही देखने लगती हैं। दृष्टिके सामने विशाखाके कुञ्जकी पगडंडीपर नीली साड़ी पहने तथा पीले रंगकी ओढ़नी कंधेपर रखे हुए उसी समय अनङ्गमञ्जरी आ जाती है। उसकी नीली साड़ीको एवं पीले रंगकी ओढ़नीको देखकर श्रीप्रिया समझने लगती हैं कि सचमुच श्यामसुन्दर आ रहे हैं, अतः उन्हें धैर्य हो जाता है। फिर वे धीमे स्वरमें कहने लगती हैं—देख, प्यारे श्यामसुन्दर आ रहे हैं। मैं छिप जाती हूँ। तू कह देना कि राधा तो आज नहीं आ सकेगी। आज देखूँगी कि वे मुझे ढूँढ़ने कहाँ जाते हैं!

राधारानी यह कहकर खड़ी हो जाती हैं तथा दौड़ने लगती हैं। वे दक्षिणी मेहराबके भीतरसे दौड़ती हुई दक्षिण दिशाकी ओर दौड़ने लग जाती हैं। ललिता देखती हैं कि मेरी सखी भावावेशमें ही दौड़ रही है और कहीं गिर न पड़े, अतः उन्हें सँभालनेके लिये उसके पीछे दौड़ने लगती हैं। रानीके मनमें तो यह बात है कि श्यामसुन्दर उत्तरकी ओरसे आ रहे हैं, इसलिये वे निधड़क दक्षिणकी ओर तीव्र गतिसे चली जा रही हैं। इसी समय श्यामसुन्दर चम्पकलताके कुञ्जके दक्षिणी द्वारसे आकर वहाँसे कुछ दूरपर खड़े होकर रानीका भागना देखने लग जाते हैं। रानीकी दृष्टि श्यामसुन्दरपर नहीं पड़ती। वे चटपट मेंहदीकी क्यारीसे घिरे हुए गुलाबकी लताओंके निकुञ्जमें चली जाती हैं तथा वहाँ खड़ी होकर उत्तरकी ओर देखने लगती हैं कि श्यामसुन्दर आ रहे हैं या नहीं।

ललिताकी दृष्टि श्यामसुन्दरपर पड़ जाती है। वे बहुत प्रसन्न हो जाती हैं तथा आँखोंके प्रेमपूर्ण संकेतद्वारा श्यामसुन्दरको बतला देती हैं—आज रानी बहुत अधिक भावाविष्ट हो गयी थीं; किसी प्रकार हमने उसे कुछ शान्त किया है। अब अपनी प्राणप्यारीको तुम सँभालो!

श्यामसुन्दर मुस्कुराने लगते हैं तथा दबे पाँव उसी मेंहदीकी क्यारीके दक्षिणकी ओर आकर खड़े हो जाते हैं। वे मेंहदी-लताके छिद्रोंसे देखने लगते हैं कि मेरी प्यारी राधा क्या कर रही है! इधर राधारानी कुछ देरतक उत्तरकी ओर देखनेके बाद दक्षिणकी ओर देखने लग जाती हैं। फिर वे पश्चिमकी ओर एवं इसके बाद पूर्वकी ओर मुख करके धमसे

भूमिपर बैठ जाती हैं। इतनेमें ललिता निकुञ्जके भीतर, जहाँ रानी बैठी हैं, वहाँ आ जाती हैं तथा कहती है—बहिन! अब श्यामसुन्दर ढूँढ़ते फिरेंगे। बड़ा अच्छा हुआ। प्रतिदिन देर करने लगे थे। आज पता लगेगा कि प्रतीक्षा करते समय कितना दुःख होता है।

रानी कुछ उदास-सी हो जाती हैं तथा कहती हैं—ललिते! यदि प्यारे श्यामसुन्दर मुझे ढूँढ़ते फिरें और मैं नहीं मिलूँ तो भला उन्हें कष्ट तो नहीं होगा ?

एक-दो क्षणके उपरान्त रानी फिर तुरंत बोल उठती हैं—ना बहिन! मैं नहीं छिपूँगी। हाय! उनके कोमल हृदयको दुखा करके मैं आनन्द प्राप्त करना चाहती हूँ? ओह, नहीं! नहीं!! चल, मैं वहीं फव्वारेके पास जाऊँगी।

श्यामसुन्दर छिपे-छिपे श्रीप्रियाकी बात सुन रहे हैं तथा आनन्द एवं प्रेममें अधिकाधिक विभोर होते जा रहे हैं। राधारानी चटपट उठकर पुनः भागना चाहती हैं, पर ललिता उन्हें इस बार पकड़कर रोक लेती हैं, जिससे रानी फिर वहीं बैठ जाती हैं। राधारानी कहने लगती हैं—अच्छा बहिन! तू मुझे नहीं जाने देती तो एक काम कर! तू वहाँ चली जा। वे फव्वारेके पास खड़े होकर अत्यन्त व्याकुलतासे मुझे ढूँढ़ रहे होंगे। हाय! हाय!! निराश हो गये होंगे. ओह! उनका मुख म्लान हो गया होगा। बहिन! मैं इसे सह नहीं सकूँगी। तू तुरंत जा। उन्हें कह दे कि राधा उस निकुञ्जमें बैठी उनकी बाट देख रही है।

ललिता तुरंत उठकर चली जाती हैं तथा बाहर श्यामसुन्दरके पास आकर उन्हें सब बातें धीरे-धीरे संक्षेपमें बता देती हैं। इधर राधारानी इस प्रतीक्षामें हैं कि ललिताके साथ श्यामसुन्दर आनेवाले ही हैं, इसलिये कभी उठकर निकुञ्जके बाहर झाँकने लगती एवं कभी पुनः बैठकर उत्सुकताभरी दृष्टिसे देखने लग जाती हैं।

निकुञ्जमें फूलोंकी एक शय्या है। रानी उसी शय्यापर जाकर लेट जाती हैं तथा आँखें बंद करके धीरे-धीरे कुछ गुनगुनाने लगती हैं। श्यामसुन्दर एवं ललिता मेंहदी-लताके छिद्रोंसे झाँककर श्रीप्रियाकी

प्रेम-लीला देख रहे हैं। श्रीप्रिया एक पद गुनगुना रही हैं। वह स्पष्ट सुन नहीं पड़ता; पर बीच-बीचमें इसके दो-एक शब्द सुनायी पड़ते हैं। कुछ देरतक इस प्रकार गुनगुन करती हुई वे फिर उठ बैठती हैं तथा अपनी दोनों तलहथीपर अपना मुख रखकर कुछ सोचने लग जाती हैं। फिर वे कहती हैं—प्यारे श्यामसुन्दर! हृदयका कोना-कोना तुम्हारा है। हाँ, मेरे जीवनसर्वस्व! इस हृदयको प्रतिदिन तुम्हारे लिये ही सजा-सजाकर रखती हूँ। देखो, आज भी तेरे ही लिये इसे सजाकर तेरी प्रतीक्षामें बैठी हूँ; पर पता नहीं, तुम क्यों नहीं आ रहे हो?

विकलताके कारण श्रीप्रिया उठकर खड़ी हो जाती हैं। वे बावली-सी होकर निकुञ्जके बाहर निकल पड़ती हैं। बाहर निकलते ही और भी भावाविष्ट हो जाती हैं। निकुञ्जके द्वारपर पत्तोंका बना हुआ खेलका एक झूला था। उसे देखकर उन्हें ऐसा प्रतीत होने लगता है कि मैं झूलेपर झूल रही हूँ और प्यारे श्यामसुन्दर बहुत वेगपूर्वक झोंटा दे रहे हैं, जिससे मेरी साड़ी पवनके झोंकोंमें उड़ रही है। इस बार इतने वेगसे झोंटा लगा है कि मेरी साड़ीका अञ्चल नीचे गिर गया है तथा गुलाबके काँटोंमें उलझ गया है। रानी फिर ऐसा अनुभव करने लगती हैं कि मैं रूठ गयी हूँ तथा झूलेको बलपूर्वक रोक करके उतर पड़ी हूँ। प्यारे श्यामसुन्दर भी मेरे पीछे उतर पड़े हैं तथा मुझसे कह रहे हैं—ना, अब ठीकसे धीरे-धीरे झोंटा दूँगा। प्रिये! फिर चलो, झूलें।

इसी भावावेशमें श्रीप्रिया दृष्टि-विहीन-सी होकर उस मेंहदीकी क्यारीकी परिक्रमा लगाने लगती हैं और 'ना, अब नहीं झूलूँगी, अब नहीं झूलूँगी' कहती हुई वहाँ पहुँच जाती हैं, जहाँ श्यामसुन्दर खड़े हैं। वे इसी भावावेशमें श्यामसुन्दरसे टकरा जाती हैं। श्यामसुन्दरका स्पर्श होते ही श्रीप्रिया समझने लगती हैं कि वे मुझे आग्रहपूर्वक झूलेपर ले जाना चाहते हैं। इसलिये श्रीप्रिया प्रेममें अतिशय अधीर हो जाती हैं तथा बाहरसे कपट-क्रोध करती हुई उसी भावावेशमें वहाँ खड़े हुए श्यामसुन्दरका हाथ वस्तुतः पकड़ लेती हैं एवं कहती हैं - देखो! अब यों नहीं झूलूँगी। लाओ, यह तुम्हारा पीताम्बर! मैं इसे कसकर अपने ऊपर बाँध लूँगी। फिर कोई बात नहीं।

श्यामसुन्दर श्रीप्रियाके हृदयके भावावेशको जान लेते हैं और सचमुच हँसकर अपना पीताम्बर श्रीप्रियापर ओढ़ाने लग जाते हैं तथा कहते हैं—प्रिये ! तू जो कहेगी, वही करूँगा ।

श्यामसुन्दरके इन वचनोंके कानोंमें पड़ते ही श्रीप्रिया प्रकृतिस्थ हो जाती हैं । वे देखती हैं कि प्यारे श्यामसुन्दर मुझे पीताम्बर ओढ़ा रहे हैं । रानीको सारी बातें स्मरण हो आती हैं तथा वे सकुचा जाती हैं । श्यामसुन्दर उन्हें अपने हृदयसे लगा लेते हैं । ललिता खिलखिलाकर हँस पड़ती हैं । सखियाँ और दासियाँ दौड़ती हुई वहाँ आ जाती हैं तथा उनकी सेवाके कार्यमें लग जाती हैं ।

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

प्रतीक्षा लीला

श्रीप्रिया कदहरी चम्पाकी छायामें चौकके आकारके अत्यन्त सुन्दर सिंहासनपर बैठी हैं। कुञ्जकी हरी-हरी दूबपर नीले मखमलकी मोटी चादर बिछी हुई है, उसीपर वह सिंहासन है। सिंहासन बना हुआ है काठका, पर उसमें सब ओरसे नीले मखमलकी गद्दी लगी हुई है। श्रीप्रियाके चरणोंके पास रूपमञ्जरी बैठी है तथा नीले रूमालसे धीरे-धीरे श्रीप्रियाके चरणोंके तलवे सहला रही है। श्रीप्रियाकी साड़ी नीली है। चूड़ामणि सिरपर है। ललाटमें सिन्दूरकी एक गोल बिंदी अत्यन्त सुहावनी लग रही है। ठोड़ीपर छोटा-सा एक काला तिल है। उनके दाहिने हाथमें डण्डीसहित कमल है, जिसे वे घुमा रही हैं। वे श्यामसुन्दरकी प्रतीक्षामें बार-बार राधाकुण्डके उत्तर एवं पूर्वकी ओर दृष्टि डालती हैं। कदहरी चम्पाके पूर्वकी ओर दस गजकी दूरीपर एक बड़ा ही सुन्दर आमका पेड़ है, जिसमें मञ्जरियाँ लगी हुई हैं। उसीपर कोयल बैठी हुई कुहू-कुहूकी रट लगा रही है। श्रीप्रिया कभी-कभी उस कोयलकी ओर देख लेती हैं।

चम्पाके पूर्व एवं उत्तरके कोनेपर अत्यन्त सुन्दर हरे बाँसकी झाड़ी लगी हुई है। उसमें चार-पाँच बहुत ऊँचे-ऊँचे बाँस हैं। उनमें मञ्जरी लगी हुई है। उसके सबसे ऊपरके भागपर कुछ तोते बैठे हैं। एक तोता बोल रहा है—राधे! राधे!! धीरज धरो! श्यामसुन्दर अब आ ही रहे होंगे। मैं अभी वहींसे उड़कर आया हूँ। माधवी कुञ्जके पास श्यामसुन्दर खड़े थे। उनके मुखपर अलकावली बिखरी हुई थी। कमरमें वंशी खोंसी हुई थी। लाल अधर बिम्बाफलके समान शोभा पा रहे थे। वे सुबलके कंधेपर बायाँ हाथ रखे हुए थे तथा दाहिने हाथसे पुष्प तोड़ रहे थे। कभी-कभी तिरछी चितवनसे इधर-उधर देख भी लेते थे। पैरोंके नूपुर रुनझुन-रुनझुन शब्द कर रहे थे। मधुमङ्गल मुँह बनाता हुआ आता था और

श्रीश्यामसुन्दर हँसकर कभी-कभी उसे हल्की चपत लगा देते थे। श्यामसुन्दरने पीताम्बरका ही झोला बना लिया था और उसीमें पुष्प तोड़कर रखते जाते थे। उनकी आँखोंमें अञ्जन लगा हुआ था। कपोलोंपर कुछ पसीनेकी बूँदें थीं। मन्द-मन्द मुस्कुराते हुए उन्होंने सुबलके कानमें कुछ कहा था। मैं उसी समय उड़कर और भी निकट जा पहुँचा। मैंने केवल तुम्हारा नाम सुना, जिससे समझ गया कि तुम्हारी ही कुछ बात कह रहे थे। श्रीकृष्ण-प्रियतमे राधे! बस, अब आते ही होंगे।

तोता अत्यन्त सुन्दर मधुर स्वरमें बार-बार इस बातको दुहरा रहा है कि बस, बस, अब आते ही होंगे। उसी समय वृन्दादेवी निकुञ्जके पश्चिमकी ओरसे आती हैं। उनके हाथमें सोनेका पिंजरा है, जिसमें एक सुन्दर सारी बैठी है। वृन्दाके आते ही श्रीराधारानी कहती हैं—वृन्दे! उस तोतेको बुला।

वृन्दादेवी तोतेको आनेके लिये संकेत करती हैं। तोता तुरंत उड़कर आता है तथा जिस पिंजरेमें सारी बैठी है, उसीपर आकर बैठ जाता है। वृन्दा श्रीराधासे कहती हैं—अब बात करो!

श्रीराधा तोतेको बुलाती हैं। तोता उड़कर श्रीराधारानीके बायें हाथकी हथेलीपर आकर बैठ जाता है। राधारानी अपने दाहिने हाथके कमलको सिंहासनपर रख देती हैं तथा उसी हाथसे तोतेके सिर एवं पीठको सहलाती हुई कहती हैं—तोता! तूने मेरे प्यारे श्यामसुन्दरकी बातें सुनायी हैं, तुम्हें क्या दूँ?

तोता अपने पंख फुलाता है तथा श्रीराधारानीके कर-स्पर्शको पाकर प्रेममें डूब जाता है। कभी आँखें बंद करता है, कभी खोलता है। इसी समय वृन्दादेवी, जो श्रीराधाके पश्चिमकी ओर खड़ी थीं, घूमकर श्रीराधाके दाहिनी ओर आ जाती हैं तथा कहती हैं—तोता! एक बार फिर उड़कर जा और देख कि श्यामसुन्दरके आनेमें इतना विलम्ब क्यों हो रहा है?

तोता यह सुनते ही फुर्रसे उड़कर आकाशमें पहले तो पूर्वकी ओर जाता है, फिर उत्तरकी ओर उड़ता हुआ राधाकुण्डको पार करके, तदुपरान्त विशाखा-कुञ्जको भी पार करके दृष्टिसे ओझल हो जाता है। जबतक तोता

दिखलायी देता है, तबतक राधारानी उधर ही देखती रहती हैं। जब तोतेका दीखना बंद हो जाता है, तब उसी सिंहासनका सहारा लेकर, उसपर पीठका भार देकर वे बायें हाथसे अपने कपोलोंको पकड़कर बैठ जाती हैं। दृष्टि फिर भी उसी ओर लगी हुई है कि जिस ओरसे श्यामसुन्दरके आनेकी सम्भावना है। ललिता, जो श्रीराधाके पीछे खड़ी रहकर कुछ सोच रही थीं, वे उत्तरकी ओर जाती हैं तथा चहारदीवारीके पास पहुँचकर, उसके ऊपर हाथ रखकर उत्तरकी ओर देखने लगती हैं। रूपमञ्जरी, जो रूमालसे तलवेको सहला रही थी, एकटक रानीके मुखकी ओर देख रही है।

अब वृन्दा पिंजरेका द्वार खोल देती हैं। उसमेंसे सारी निकलकर राधारानीके बायें पैरके पास आकर मखमली चादरपर खड़ी हो जाती है एवं श्रीराधारानीके पैरका अपनी चोंचसे स्पर्श करती है। श्रीराधारानी श्रीकृष्णके ध्यानमें इतनी तल्लीन हैं कि उन्हें यह सर्वथा पता नहीं चलता कि सारी मेरे पैरोंको छू रही है। पर विशाखाने थोड़ा झुककर सारीको अपनी हथेलीपर रख लिया तथा दाहिने हाथसे उसके सिरपर हाथ रखकर उससे बोलीं—सारी! तू बड़ी चतुर है। यदि किसी प्रकार श्यामसुन्दरका समाचार ला सकेगी तो मैं तेरा बड़ा उपकार मानूँगी। तू जब जाती है तो काम बना करके ही आती है। इसीलिये आज भी मैं तुझसे प्रार्थना करती हूँ कि ठीक-ठीक समाचार ला दे कि आज श्यामसुन्दरको देरी क्यों हो रही है?

सारी तत्क्षण बोल उठती है—अभी-अभी समाचार लाती हूँ। बस, एक घड़ीमें सारा भेद लेकर लौट आऊँगी।

सारी भी उड़कर उधर ही चली जाती है, जिधर तोता उड़कर गया था। विशाखा पंखा लेकर राधारानीको बयार करने लगती हैं; पर श्रीराधारानी रोक देती हैं तथा कहती हैं—रहने दो, अच्छा नहीं लग रहा है।

श्रीराधा उस सिंहासनपरसे उठकर नीचे मखमली चादरपर लेट जाती हैं। विमलामञ्जरी गुलाबपाशमें केवड़ेका अत्यन्त सुगन्धित जल लाती है तथा श्रीराधारानीके सिरको अपनी गोदमें लेकर बैठ जाती है।

श्रीराधारानी चित्त लेटी हुई हैं। उनका पैर पूर्वकी ओर है और सिर पश्चिमकी ओर विमलामञ्जरीकी गोदमें। विमलामञ्जरी दाहिने हाथमें गुलाबपाशको लेकर उसके अत्यन्त महीन छिद्रोंसे सुगन्धित जल श्रीराधाके मुख एवं शरीरपर धीरे-धीरे छींटती है तथा अपने बायें हाथसे ललारपर बिखरे हुए केशोंको ठीक कर रही है। कुछ देर बाद राधारानी उठ बैठती हैं तथा चहारदीवारीके पास खड़ी हुई ललितासे उत्सुकतापूर्वक पूछती हैं—ललिते! तोता आया क्या?

ललिता कहती हैं—नहीं।

श्रीराधारानी उठकर चहारदीवारीके पास जाती हैं तथा ललिताकी दाहिनी ओर खड़ी हो जाती हैं। कुछ देर खड़ी रहकर मुस्कुरा पड़ती हैं तथा कुछ लज्जामिश्रित मुद्रामें पूर्व एवं उत्तरके कोनेकी ओर हाथसे संकेत करते हुए कहती हैं—ललिते! वह देखो! श्यामसुन्दर आ रहे हैं।

ललिता—कहाँ आ रहे हैं?

श्रीराधा कुछ झल्लाये हुए स्वरमें कहती हैं—अन्धी हो गयी हो क्या? क्या देखती नहीं, वे वहाँ खड़े हैं?

अब ललिता समझ जाती हैं कि श्रीराधाको भ्रम हो रहा है। प्रेमके आवेशमें राधाकी दृष्टि स्पष्ट नहीं देख रही है। ललिता मुस्कुराकर चुप रह जाती हैं। श्रीराधा फिर वहाँसे हटकर, जहाँ पहले लेटी हुई थीं, वहीं जाकर लेट जाती हैं। फिर कुछ उतावलेपनकी मुद्रामें उठकर वहीं ललिताके पास आ जाती हैं तथा कहती हैं—ललिते! मेरा सिर घूम रहा है। मुझे भ्रम हो गया था, वहाँ श्यामसुन्दर नहीं थे।

फिर थोड़ी देर खड़ी रहकर श्रीप्रिया प्रसन्न स्वरमें कहती हैं—वह देखो, वे आ रहे हैं।

ललिता इस बार भी मुस्कुराकर चुप रह जाती हैं। राधा कुछ चिढ़ी-सी होकर वहीं चहारदीवारीके सहारे पीठ टेककर खड़ी हो जाती हैं। कुछ देर बाद फिर उधर ही देखने लगती हैं। श्रीराधाका मुख-मण्डल कुछ लाल होता जा रहा है। शरीर भी कुछ काँप-सा रहा है। ललिता

रूपमञ्जरीको कुछ संकेत करती है। रूपमञ्जरी श्रीराधाके हाथोंको पकड़कर वहाँ सिंहासनके पास ले जाती है। राधा जाते ही धड़ामसे वहाँ गिर पड़ती हैं, पर लवङ्गमञ्जरी उन्हें सँभाल लेती है। वह अपनी गोदमें सिर रखकर पासमें ही रखे हुए गुलाबपाशसे केवड़ेका सुगन्धित जल लेकर राधाके मुखपर छींटा देने लगती है। विशाखा मधुमतीमञ्जरीको कुछ संकेत करती है। मधुमती वीणाके तारको एक-दो बार ऐंठकर तुरंत ही ठीक कर लेती है तथा अत्यन्त मधुर स्वरमें गाने लगती है—

> मो मन गिरिधर छबि पै अटक्यौ।
> ललित त्रिभंगी चाल पै चलि कै चिबुक चारु गड़ि ठटक्यौ॥
> सजल स्याम घन बरन लीन ह्वै फिर कहुँ अनत न भटक्यौ।
> कृष्णदास किये प्रान निछावर यह तन जग सिर पटक्यौ॥

गीत सुनते ही श्रीराधाका सारा शरीर काँपने लग गया। वे पहले तो लेटी हुई कुछ बड़बड़ाने लगीं, फिर उठ बैठीं और उठकर इधर-उधर देखने लगीं। फिर बहुत शीघ्रतासे उठकर वहाँ गयीं, जहाँ ललिता खड़ी थीं। ललिताके पाससे फिर दौड़कर सिंहासनके पास आ गयीं। सिंहासनपर पैर फैलाकर बैठ गयीं तथा मुस्कुराने लगीं। फिर उठकर खड़ी हो गयीं तथा जिस प्रकार श्रीकृष्ण ग्रीवा टेढ़ी करके बोलते हैं, उसी प्रकार ग्रीवाको कुछ तिरछी करके बोलती हैं—री ललिते! सुन।

ललिता अब एकटक श्रीराधाकी ओर ही देख रही है। ललिता जब नहीं आयीं, तब श्रीराधारानी स्वयं उठकर उसके पास जाकर खड़ी हो गयीं तथा अत्यन्त विनयके स्वरमें बोलीं—ललिते! बता दे, राधा कहाँ छिपी है? अभी तो यहीं थी, कहाँ चली गयी?

राधा इस प्रकार ललिताके पैरोंपर गिरकर प्रार्थना कर रही थी कि उसी समय श्यामसुन्दर आ पहुँचते हैं तथा राधारानीकी प्रेम-दशाको मुग्ध होकर खड़े-खड़े देखने लग जाते हैं।

सारी एवं तोता भी चहारदीवारीके ऊपर जा बैठते हैं। श्रीराधा सर्वथा व्याकुल-सी होकर बार-बार ललितासे कहती हैं—ललिते! मेरी प्यारी ललिते!! क्या नहीं बतायेगी कि राधा कहाँ छिपी है?

ललिता एवं सखियाँ तो चकित होकर श्रीराधारानीकी यह प्रेम-लीला देख रही हैं। ललिता आँखोंके संकेतद्वारा श्रीकृष्णको, जो राधाके पूर्व एवं दक्षिणके कोनेपर कुछ दूरपर खड़े हैं, कह रही है—देखो, यहाँ कैसी लीला हो रही है ?

श्रीराधा फिर वहाँसे उठकर इधर-उधर घूमने लग जाती हैं। श्रीराधाका मुँह जब श्रीकृष्णकी ओर होता है तो श्रीकृष्ण पासकी एक छोटी-सी झाड़ीमें छिप जाते हैं तथा राधा सर्वथा पगली-सी होकर कभी पूर्व, कभी उत्तर एवं कभी दक्षिणकी ओर मुँह करके देखती रहती हैं। श्रीकृष्ण संकेतसे ललिताको बुलाते हैं। ललिता श्रीकृष्णके पास जाती हैं। श्रीकृष्ण उसके कानमें कुछ कहते हैं। ललिता राधाके पास आती हैं तथा उन्हें पकड़कर कहती हैं—देखो, तुम्हें राधाके मिलनेका उपाय बता देती हूँ। तुम वंशीमें तान भरो, फिर राधा तो पगली होकर दौड़ी आयेगी।

राधारानी बड़ी प्रसन्नतासे अपनी कमरपर हाथ रखकर ऐसी मुद्रा बनाती हैं कि मानो वंशी खोज रही हों। ठीक इसी समय श्रीकृष्ण पीछेसे आकर श्रीराधाके होठोंपर अपनी वंशी रख देते हैं। श्रीराधा उसमें सुर भरने लगती हैं; पर श्यामसुन्दरका स्पर्श जैसे-जैसे होता जाता है, वैसे-वैसे वे कुछ मूर्च्छित-सी होती जाती हैं। श्यामसुन्दर मुस्कराते हुए श्रीराधाको धीरेसे बैठा देते हैं। श्रीराधा यन्त्रकी तरह बैठ जाती हैं, पर अधिक देरतक बैठे रहना सम्भव नहीं। मूर्च्छित होकर वे श्रीकृष्णकी गोदमें गिर पड़ती हैं। श्रीकृष्ण गुलाबपाश लेकर अपने दाहिने हाथसे श्रीराधाके मुखपर छींटा देने लगते हैं। जब श्रीराधाकी मूर्च्छा नहीं टूटती, तब श्रीकृष्ण बायें हाथसे वंशी बजाते हैं तथा उसी स्वरमें मधुमती गाती है—

> स्याम हगन की चोट बुरी री।
> ज्यों ज्यों लेत नाम तू वाको सो घायल पै नोन पुरी री॥
> ना मानों अब सुध बुध मेरी कौन बिपिन में जाय दुरी री।
> नारायन नहिं छुटत सजनी ताको जासों प्रीति जुरी री॥

गीत सुनते ही श्रीराधाको चेत होने लगता है। वे आँखें खोल देती हैं तथा देखती हैं कि उनका सिर श्यामसुन्दरकी गोदमें है एवं श्यामसुन्दर मन्द-मन्द मुस्करा रहे हैं। श्रीराधा सकुचायी-सी होकर सखियोंकी ओर

देखती हैं। अब उन्हें ज्ञान होता है कि मैं तो चहारदीवारीके पास खड़ी थी, फिर यहाँ कैसे आ गयी? यही सोचती हुई घबरायी-सी होकर वे उठ बैठती हैं। सखियाँ खिलखिलाकर हँस पड़ती हैं। श्यामसुन्दर हँसते हुए कहते हैं—क्यों, श्रीराधारानी मिली कि नहीं?

अब राधारानी समझ जाती हैं कि वे बाह्यज्ञानशून्य होकर कुछ-का-कुछ बकती रही हैं, इसलिये और भी सकुचा-सी जाती हैं; पर साथ ही आनन्दके कारण मुखपर मुस्कुराहट आ जाती है। श्यामसुन्दर उन्हें हाथ पकड़कर उठाते हैं तथा राधारानी उठकर श्यामसुन्दरके कंधोंको पकड़कर मन्द-मन्द गतिसे चलती हुई सिंहासनके पास पहुँच जाती हैं। श्रीकृष्ण एवं राधारानी, दोनों सिंहासनपर उत्तरकी ओर मुँह करके बैठ जाते हैं। दो सखियाँ पंखा झलने लगती हैं तथा कुछ सखियाँ शर्बत तैयार करने लग जाती हैं।

॥ श्रीराधाप्रियतमौ विजयेतां ॥

विनोद लीला

निकुञ्जमें सुन्दर-सुन्दर फूलोंकी क्यारियाँ लगी हुई हैं। श्रीकृष्ण एवं श्रीराधा दोनों हाथोंमें फूल तोड़कर डलियामें रखते जा रहे हैं। वे उजले-उजले बड़े-बड़े बेलके फूलोंको तोड़ते हैं तथा डलियामें सजा-सजा करके रख देते हैं। भौंरोंका समूह गुन-गुन करता हुआ इस फूलसे उस फूलपर उड़ रहा है। श्रीकृष्णके कपोलपर एक भौंरा बैठना चाहता है। श्रीकृष्ण उसे उड़ाना चाहते हैं, श्रीप्रिया मन्द-मन्द मुस्कुराती हुई सहायता करती हैं, दोनों हँसते हैं। इसी समय श्यामसुन्दरका प्यारा सखा मधुमङ्गल वहाँ आ जाता है। मधुमङ्गल बार-बार मुँह फुलाकर फुन-फुन करता हुआ सखियोंके बीचमें आकर खड़ा हो जाता है। ललिता धीरेसे पीछेसे आकर उसका कंधा हिलाकर पूछती है—क्यों बाबाजी! आज पेट भरा है कि खाली है?

मधुमङ्गल—डाइन कहींकी! कल तूने मुझे लीची खिला दी थी। अभीतक मेरा पेट दुख रहा है।

श्रीकृष्ण एवं राधा खिलखिलाकर हँस पड़ते हैं। श्रीकृष्णकी ओर देखकर मधुमङ्गल कहता है—अरे! तुम्हें तो हँसी आती है और मैं रातभर सो नहीं सका।

श्रीकृष्ण—भैया! मैं तो इसलिये हँस दिया कि तू सीधे यह क्यों नहीं कह देता कि हे ललिते, मुझे पपीता ला दे। बेचारीको झूठमूठ 'डाइन' कह दिया।

मधुमङ्गल—नहीं जी! मैं इसके हाथकी अब कोई भी वस्तु नहीं खा सकता।

इसी समय विशाखा आती है तथा कहती है—भैया मधुमङ्गल!

तू मेरा एक काम कर दे तो फिर मैं तुम्हें पेटभर आम खिलाऊँगी। मेरे निकुञ्जमें इतने बढ़िया-बढ़िया आम पके हैं कि तेरे मुँहमें देखते ही पानी आ जायेगा।

श्रीकृष्ण—अरे भैया! धोखेमें मत आना। यह विशाखा बड़ी चतुर है। पहले काम करा लेगी, फिर आम नहीं देगी।

मधुमङ्गल—हूँ! मैं तेरी तरह भोला थोड़े ही हूँ! आम पहले खाऊँगा, तब फिर कामकी बात।

विशाखा—नहीं, नहीं, पहले आम दूँगी। तू खा ले, फिर काम करना।

श्रीकृष्ण—मधुमङ्गल! देख, यह तुझे वास्तवमें यहाँसे हटाना चाहती है। तू लोभमें कहीं आ गया तो फिर मैं अकेला रह जाऊँगा और ये सब मुझे तंग करेंगी।

मधुमङ्गल—विशाखे! देख, मैं-तू एक ही गुरुके चेले हैं। तू मेरे कान्हूँसे मुझे यदि हटाना चाहेगी तो सावधान रहना। पाँच दिनतक लगातार तुम्हें ऐसा पाठ पढ़ाऊँगा कि जीवनभर याद रखेगी।

पासमें पड़े हुए कुछ जामुन मधुमङ्गलके हाथमें रखकर श्रीराधा कहती हैं—पहले तू इन्हें खा ले। फिर सचमुच एक काम तुमसे कराना है। तू कर देगा तो मैं तुम्हारे पिताके लिये दो सुन्दर हीरे दूँगी।

मधुमङ्गलसे श्रीकृष्ण आँखोंसे कुछ संकेत करके कहते हैं। मधुमङ्गल भी आँखोंसे ही उत्तर देता है। ललिता इसी बीच एक हलकी-सी चपत मधुमङ्गलको लगा देती हैं तथा कहती हैं—यों बात करनेसे बच्चू! छूटोगे नहीं। या तो सीधे मनसे हमलोग जो कहें, वह कर दो, नहीं तो मैं इस कुञ्जसे अभी-अभी बाहर निकाल दूँगी।

चपत लगनेपर मधुमङ्गल दोनों हाथोंसे अपना गाल पकड़ लेता है तथा विचित्र स्वरमें कहता है—बाप रे! ललिता तो महाकाली दुर्गा हो गयी है। अरे! मेरी बलि लेगी क्या? नहीं, नहीं, ऐसा मत करना। मैं अपने बापका एक ही बेटा हूँ।

सभी मधुमङ्गलकी बात सुनकर हँसने लगते हैं तथा विशाखा ललितापर कुछ गरम होकर कहती है—ललिते! सचमुच तू व्यर्थमें

मधुमङ्गलको तंग कर रही है। देख! यह बेचारा कितना भला है! उस दिन यह नहीं होता तो तू ही बता, हमलोगोंको श्रीकृष्णसे हारकर न जाने उनकी क्या-क्या चाटुकारिता करनी पड़ती?

विशाखा यह कहकर मधुमङ्गलका मुँह अपने रूमालसे पोंछती हैं। मधुमङ्गल श्रीकृष्णकी ओर देखकर संकेतसे कुछ कहना चाहता है, पर ललिता इस प्रकार बीचमें आकर खड़ी हो जाती हैं कि श्रीकृष्ण आड़में पड़ जाते हैं।

मधुमङ्गल—अजी देवीजी! आपने चपत भी लगा दी और अब फिर नयी छेड़खानी कर रही हैं तो फिर देवी-देवाका युद्ध होगा, भला! आप मेरी बात समझ रही हैं न!

ललिता मुस्कुराती हैं। मधुमङ्गल चाहता है कि किसी प्रकार यह सामनेसे हट जायें तो श्रीकृष्णको अपने मनकी बात संकेतसे ही समझा दूँ; पर मधुमङ्गल जिधर मुँह फेरता है, ललिता जान-बूझकर उसी ओर बढ़ जाती हैं और श्रीकृष्ण उसकी आड़में हो जाते हैं। मधुमङ्गल नयी चतुराई करता है। वह अपना कुर्ता फाड़ लेता है तथा कहता है—बाप रे! ललिता हमें फाड़कर खा जायेगी! कान्हूँ! देखो, सँभालो!

श्रीकृष्ण हँसते हुए ललिताके पीछे आकर खड़े हो जाते हैं तथा ललिताके कंधेपर हाथ रखकर कुछ ऐसी मुख-मुद्रा बनाते हैं मानो मधुमङ्गलसे कह रहे हों कि अभी थोड़ी देर चुप रह, हल्ला मत कर, नहीं तो खेल बिगड़ जायेगा। मधुमङ्गल संकेतको समझ जाता है तथा ललिताके आगे हाथ जोड़कर गालोंको फुलाकर एक श्लोक पढ़ता है। श्लोकका भाव यह है कि हे देवि! आप चण्डी हो, मेरी बलि मत लेना, नहीं तो मेरे बाप मेरे लिये बहुत रोयेंगे और चिढ़कर फिर तुम्हारी पूजा बंद कर देंगे। मधुमङ्गल इस श्लोकके द्वारा श्रीकृष्णको अपने मनकी बात संकेतमें समझा देता है तथा श्रीकृष्ण भी समझकर हँसने लगते हैं।

इतनेमें ही विशाखाकी एक मञ्जरी परातमें बहुत बड़े-बड़े अत्यन्त मधुर आम भरकर लाती है। मधुमङ्गलकी दृष्टि आमोंपर चली जाती है। वह काँख बजा-बजाकर नाचता एवं कहता है—अरे! क्या ही मीठे आम हैं! विशाखे! यदि तुमने ऐसे मीठे आम मुझे आज खिलाये तो सच मान

कि मैं तुम्हें हृदयसे आशीर्वाद दूँगा। देख! मैं ब्राह्मणका लड़का हूँ, मेरा आशीर्वाद कभी झूठा नहीं होता। मेरे आशीर्वादसे तेरे मुँहमें निरन्तर आमकी सुगन्धि आने लगेगी। फिर आम खानेपर तेरा जी नहीं चलेगा।

मधुमङ्गलके बोलनेके ढंगसे तथा बीच-बीचमें मुँह बनानेके कारण सभी हँस पड़ते हैं। राधारानी भी इस बार खुलकर हँसने लगती हैं तथा अत्यन्त मधुर स्वरमें कहती हैं—आ! मैं तुझे आम खिलाती हूँ।

वे मधुमङ्गलके पास आकर खड़ी हो जाती हैं। हाथ पकड़कर श्रीकृष्णको झकझोरता हुआ मधुमङ्गल बैठ जाता है। श्रीकृष्ण भी उसके साथ ही बैठ जाते हैं। चित्रा एक सुन्दर छुरी लाती हैं तथा आमोंको शीतल जलसे धोकर एवं छीलकर उनकी फाँक (टुकड़े) सोनेकी तश्तरीमें रखती जाती हैं। दो तश्तरियाँ भर जानेपर मधुमङ्गल कहता है—तुमलोगोंका परोसना तो शायद कलियुगके बीत जानेके बाद समाप्त होगा।

फिर मधुमङ्गल श्रीकृष्णसे कहता है—कान्हूँ! ऐसा लगता है कि आम सचमुच बहुत मीठे हैं।

श्रीराधा मन्द-मन्द मुस्कुराती हुई और मधुर चालसे चलती हुई दोनों तश्तरियोंको लाकर पहले मधुमङ्गलके सामने एवं फिर श्रीकृष्णके सामने एक-एक तश्तरी रख देती हैं। घनी दूबके कारण वहाँकी भूमि इतनी कोमल एवं हरी-हरी हो रही है मानो हरे मखमलका गद्दा बिछा हुआ हो। उसी दूबपर श्यामसुन्दर एवं मधुमङ्गल बैठे हुए आमका भोग लगाते हैं। श्यामसुन्दरका एक हाथ भूमिपर है, पैर फैले हुए हैं तथा वे दाहिने हाथसे आम खा रहे हैं। इन्दुलेखा दो गिलासोंमें शीतल एवं मधुर जल भरकर लाती हैं तथा उनकी तश्तरियोंके पास रख देती हैं। मधुमङ्गल कभी तो पालथी मारकर बैठता है और कभी श्यामसुन्दरके समान ही पैर फैलाकर एक हाथ भूमिपर रखकर आम खाता है। श्यामसुन्दर शान्त मुद्रासे ही आम खाते हैं। उनकी दृष्टि श्रीप्रियाके मुखकी ओर ही प्रायः लगी है। इसी बीचमें मधुमङ्गलने दो बार कहा—क्यों कान्हूँ! आम मीठा है न?

श्रीकृष्णकी दृष्टि श्रीराधाकी शोभा निहारती हुई उसीमें इतनी तल्लीन-सी हो गयी थी कि उन्होंने मधुमङ्गलकी बात सुनी ही नहीं। इसी

बीच मधुमङ्गल अपनी तश्तरीको उठाकर श्यामसुन्दरके सामने रख देता है तथा उनकी तश्तरी लेकर कहता है—कान्हू ! मेरी बात सुनो। देखो, अब तुम खाओगे तो पाप लगेगा; क्योंकि तुम ब्राह्मण तो हो नहीं ! मैं खा सकता हूँ, पर तुम्हें अब तबतक नहीं खाना चाहिये, जबतक ये सब कुछ प्रसाद न पा लें।

इसके बाद श्यामसुन्दरकी जो तश्तरी उसने उठायी थी, उसमेंसे आमकी एक फाँक लेकर मधुमङ्गल ललितासे कहता है—देवीजी ! पहले आप भोग लगायें, तब आपकी ये दासियाँ भोग लगायेंगी।

अब मधुमङ्गल ठीक ऐसे ढंगसे आमकी उस फाँकको फेंकता है कि वह टुकड़ा ललिताके ठीक होठोंपर जाकर लगता है। अब श्रीकृष्णको कुछ चेत हुआ तो देखते हैं कि मेरी तश्तरीमें तो आम है ही नहीं, उन्होंने तो दो-एक टुकड़े ही खाये थे। उन्होंने सोचा कि मधुमङ्गल खा गया होगा और फिर बोले—मधुमङ्गल ! मैं तो भूखा ही रह गया और तुम तो मेरा भाग भी चट कर गये !

मधुमङ्गल उठता है तथा आमका वही टुकड़ा, जो ललिताके होठोंसे लग करके भूमिपर गिर पड़ा था, लाकर श्रीकृष्णको देता है—लो ! भूखे हो तो देवीका प्रसाद पाओ !

श्रीकृष्ण बड़े ही प्रेमसे आमके उस टुकड़ेको खा जाते हैं तथा ललिता कुछ आँखें तरेरकर मधुमङ्गलपर खीझती हुई कहती है—मधुमङ्गल ! तू बड़ा पाजी हो गया है।

मधुमङ्गल मानो डर गया हो, ऐसी मुद्रा बनाकर आँखें फाड़कर कहता है—देवीजी ! मुझसे भूल हो गयी, बहुत बड़ी भूल हो गयी। आपकी बड़ी बहिनको भोग लगाये बिना आपको भोग लगा दिया। क्षमा ! क्षमा !! त्राहि देवि ! त्राहि ………।

इतना कहकर मधुमङ्गल तुरंत एक टुकड़ा ऐसी कुशलतासे फेंकता है कि वह राधारानीके होठोंपर जा लगता है तथा होठोंसे लगकर भूमिपर गिर जाता है। गिरते ही राधारानी बड़ी प्रसन्न होती हैं कि मधुमङ्गलने मुझे श्रीकृष्णका प्रसाद दिया है। वह उसे उठानेके लिये नीचे झुकती हैं, पर उनके उठानेके पहले ही मधुमङ्गल दौड़कर उसे उठा लेता है तथा लाकर

श्रीकृष्णके मुखमें दे देता है एवं कहता है—यह लो! देवीजीकी बड़ी बहिनका प्रसाद है। अब तुम अमर हो गये। तुम्हें भूख कभी नहीं लगेगा। खा लो!

यह देखकर ललिता दौड़कर आती है तथा मधुमङ्गलका हाथ पकड़कर उससे बलपूर्वक तश्तरी छीन लेती है। मधुमङ्गल कहता है—ठीक है। आज देवी बड़ी प्रसन्न हैं। अपने हाथसे ही अपनी बहिनको खिलायेंगी।

श्रीकृष्ण मुस्कुराते हुए होठोंसे गिलास लगाकर धीरे-धीरे घूँट भरकर जल पीते हैं; पर उनकी दृष्टि श्रीराधाके मुख-चन्द्रकी ओर ही लगी है। श्रीराधा पासमें ही खड़ी हैं। उनकी आँखोंमें प्रेमके आँसू भर आते हैं; पर मुस्कुराकर वे उन्हें रूमालसे शीघ्रतापूर्वक पोंछ लेती हैं कि कोई देख न ले।

रूपमञ्जरी हाथमें सोनेकी झारी लेकर पासमें ही खड़ी है। वह श्रीकृष्णके हाथ धुलाती है। अनङ्गमञ्जरी पीले रंगके रेशमी रूमालसे श्रीकृष्णके हाथ पोंछ देती है। मधुमङ्गल दूबमें अपना हाथ रगड़ने लगता है। श्रीकृष्ण हँसकर रूपमञ्जरीको संकेत करते हैं--तू भूल गयी। पहले इसका हाथ धुला देना चाहिये था।

रूपमञ्जरी हँसती हुई कहती है—बाबाजी! हाथ धो लें।

मधुमङ्गल हाथ धो लेता है। फिर जिस रूमालसे श्रीकृष्ण हाथ पोंछ रहे थे, उसीको तुरंत छीन लेता है तथा अपने हाथ पोंछने लगता है। पासमें ही श्रीप्रिया खड़ी थीं। उनका रूमाल उसी समय संयोगसे प्रेमके आवेशमें गिर पड़ता है। उन्हें पता नहीं; पर मधुमङ्गलकी दृष्टि तो अत्यन्त तीक्ष्ण है। उसने चटसे उसे उठाया तथा हँसता हुआ श्रीकृष्णके हाथमें देकर कहता है—यह लो, देवीकी बड़ी बहिनने तुमपर प्रसन्न होकर रूमालका यह प्रसाद मेरे हाथों भेजा है।

श्रीकृष्ण रूमालको लेकर सिरसे लगा लेते हैं। अब प्रियाकी दृष्टि उधर जाती है। उन्हें यह ज्ञान नहीं था कि क्या हुआ; पर जब देखा कि मेरा रूमाल तो श्रीकृष्णके हाथोंमें है तो कुछ लज्जित-सी हो गयीं और मधुमङ्गलकी ओर हँसती हुई देखने लगीं। श्रीकृष्णकी कटिमें उनका रूमाल खोंसा हुआ था। मधुमङ्गल उसे वहाँसे निकाल लेता है। उसे

हाथमें ले करके एवं पर्त लगा करके यह श्रीराधारानीके पास जाता है एवं कहता है—राधे ! यह लो, आज तुमपर वन-देवता बड़े प्रसन्न हैं; उन्होंने यह प्रसाद भेजा है।

राधा कुछ लजायी-सी होकर रूमाल हाथमें ले लेती हैं। श्रीकृष्ण उठते हैं। वहाँसे कुछ दूर दक्षिणकी ओर चलते हैं। इसी बीचमें ललिता राधाके मुखमें प्रसाद दे देती हैं। श्रीराधारानी शीघ्रतासे आम खा जाती हैं। रूपमञ्जरी गिलासके जलका प्रसाद होठोंसे लगा देती है। राधारानी दो घूँट भर लेती हैं। विशाखा अपने रूमालसे मुँह पोंछ देती है। यह काम उतनी देरमें ही हो जाता है कि जितनी देरमें श्रीकृष्ण मतवाली चालसे चलते हुए कदम्बकी जड़के पास पहुँचते हैं। श्रीकृष्ण कदम्बके पास जाकर उत्तरकी ओर मुँह करके दूबपर बैठ जाते हैं। श्रीराधा भी वहीं जाती हैं। गुणमञ्जरी पनबट्टा हाथमें लिये हुए पीछे-पीछे जाती है। इधर सभी सखियाँ भी शीघ्रतासे प्रसाद लेती हैं तथा हाथ धोकर एक-एक करके कदम्बके पास पहुँच जाती हैं। श्रीराधा सबसे पहले पहुँचती हैं तथा पनबट्टा खोलकर पान निकालती हैं एवं सबसे पहले मधुमङ्गलको देती हैं।

मधुमङ्गल—क्यों न हो ! देवीकी बड़ी बहिन कभी भूल नहीं सकती।

श्रीकृष्ण मुस्कुराते हैं। रानी मुस्कुराती हुई पान मधुमङ्गलके होठोंसे लगा देती हैं। मधुमङ्गल खा लेता है। राधा दूसरा बीड़ा पनबट्टेसे लेती हैं तथा अत्यन्त प्रेमसे श्रीकृष्णके होठोंसे लगाती हैं। श्रीकृष्ण बड़े ही प्रेमसे पानको धीरे-धीरे मुँहमें ले लेते हैं। अब मधुमङ्गल सोचता है कि किसी प्रकार यह पान श्रीकृष्ण उगल दें तो उठाकर इन सबको दे दूँ ! उसे युक्ति सूझ जाती है। वह पीकदानी उठाकर सामने रख देता है तथा अत्यधिक विचलित स्वरमें कहता है—कान्हूँ ! कान्हूँ भैया !! थूक दे, तुरंत पानको थूक दे; देर मत कर; अरे ! देर क्यों कर रहा है ?

श्रीकृष्ण हँसकर पूछते हैं—क्यों, क्या बात है ?

मधुमङ्गल—अरे भैया ! यह ललिता तो मुझे सचमुच न-जाने मार डालेगी क्या ? देखो, इसने पानमें चूना अधिक दे दिया है। मेरा मुँह कट गया है, तुम्हारा भी कट जायेगा। पानको थूक दो, अभी थूक दो !

मधुमङ्गल पीकदानी उठाकर श्रीकृष्णके मुखके पास ले जाता है, पर श्रीकृष्ण हाथसे पीकदानीको थोड़ा हटाकर मुस्कुराते हुए कहते हैं - मधुमङ्गल ! मेरा मुँह तो नहीं कटा, मैं क्यों थूकूँ ?

मधुमङ्गल श्रीकृष्णका मुँह पकड़ लेता है तथा कुछ खीझकर कहता है—सुनता नहीं ? मुँह कट जायेगा तो रोयेगा। अरे ! थूक दे।

श्रीकृष्ण मुस्कुराते हुए पीकदानीमें पान थूक देते हैं। मधुमङ्गल पीकदानी उठाकर ललिताको पकड़ा देता है—लो देवीजी ! विश्वास नहीं हो तो चखकर देख लो। फिर देखना, मुँह कैसा बन जाता है। इतना चूना देकर जैसे मेरा मुँह काट डाला, वैसे ही तनिक तुम खाओ, तब जानें कि सचमुच तुमने जान-बूझकर चूना अधिक नहीं डाला था।

ललिता बड़ी प्रसन्नतासे पीकदानीको उठा लेती हैं तथा पासमें खड़ी गुणमञ्जरीको पकड़ा देती हैं। गुणमञ्जरी उसे कुछ दूरपर ले जाकर घासपर रखती है। उसी समय वहाँ अनङ्गमञ्जरी एक दूसरा पनबट्टा ले आती है। वह उसमेंसे पान निकालकर और पनबट्टेके ढकनेपर रखकर पान लगाने लगती है। प्रत्येक बीड़ेमें श्रीश्यामसुन्दरके मुखारविन्दसे निकले हुए उस अमृतमय पीककी एक बूँद डालती है। गुणमञ्जरी बीड़े सजाती चली जाती है। कुछ बीड़े तैयार हो जानेपर अनङ्गमञ्जरी दो बीड़े उठाकर ललिताके हाथमें दे आती है। इधर यह काम हो रहा था, उधर मधुमङ्गल, वहाँ जो पनबट्टा पड़ा था, उसे उठाकर राधारानीके सामने रख देता है तथा कहता है—राधे ! एक बढ़िया-सा पानका बीड़ा लगाकर पहले तू मुझे दे दे, फिर एक श्यामसुन्दरको दे दे। तुम्हें पान लगाना बहुत बढ़िया आता है। मैं तुम्हारे हाथका पान जिस दिन खाता हूँ, उस दिन मेरा मुँह कभी नहीं कटता तथा सारे दिन मुँहसे सुगन्धि आती रहती है। ले, तुरंत लगा दे।

राधारानी मन्द-मन्द मुस्कुराती हुई पनबट्टेके ढकनेपर दो बीड़े लगाती हैं। बीड़े लगाकर उनपर सोनेके बरक चढ़ाती हैं। एक बीड़ा मधुमङ्गलके हाथमें देती हैं और दूसरा बीड़ा अतिशय प्यारभरी आँखोंसे श्यामसुन्दरकी ओर देखती हुई उनके होठोंसे लगा देती हैं। श्यामसुन्दर पान खाते जाते हैं तथा श्रीराधाके मुखकी शोभा देखते रहते हैं। श्रीराधा अपनी दृष्टि नीची किये बैठी हैं। इसी समय पश्चिमकी ओरसे मधुमती

वीणा लिये हुए आती है और राधारानीकी बायीं ओर बैठकर श्यामसुन्दरसे कहती है—श्यामसुन्दर ! आज तुम वंशी बजाओ और मैं वीणापर एक गीत गाती हूँ। सचमुच तुम गीत सुनकर बड़े प्रसन्न होओगे।

मधुमती वीणाको घासपर पूर्व-पश्चिमकी दिशामें रख देती है। वह बायें हाथसे वीणाकी खूँटियोंको ऐंठती जाती है तथा दाहिने हाथसे तारोंको झन-झन करती हुई स्वर ठीक करने लगती है। इतनेमें ही मधुमङ्गल उछल करके श्रीकृष्णकी बायीं ओर बैठ जाता है। श्रीकृष्ण उसके सहारे पीठ देकर एवं पैर पूर्वकी ओर फैलाकर बैठ जाते हैं तथा मधुमतीकी वीणाकी झनकारके साथ वंशीमें सुर भरते हुए सुर मिलाते हैं।

मधुमङ्गल कहता है—बाप रे बाप ! अरे कान्हूँ !! आज तुमने आम बहुत अधिक खाये हैं। आज तो तुम बहुत भारी हो गये हो।

यह सुनकर श्रीकृष्ण एक बार कनखीसे मधुमङ्गलको देखते हैं तथा धीरे-से कहते हैं—अच्छा ! तू इधर आकर बैठ जा।

मधुमङ्गल उठकर मधुमतीके सामने आकर बैठ जाता है। श्रीकृष्ण घासपर चित्त लेट जाते हैं। मधुमती जब-जब झन-झन करके तारोंके सुरको ठीक करती है, तभी-तभी श्यामसुन्दर उतनी देरके लिये उसी सुरमें सुर मिलाते हुए वंशीमें फूँक भर देते हैं। श्रीराधा अपने स्थानसे उठती हैं तथा श्रीकृष्णके सिरके पास आकर उत्तरकी ओर मुँह करके बैठ जाती हैं। इसी समय ललिता श्रीकृष्णके मुखको तनिक अपने अञ्चलकी ओटमें करके धीरेसे पानके प्रसादवाले दो बीड़े मुखमें दे देती है; पर श्यामसुन्दर तो देख लेते हैं और मुस्कुरा देते हैं। राधारानी भी मुँहमें पान लेकर मन्द-मन्द मुस्कुराने लगती हैं। मधुमतीकी वीणाके तार प्रायः ठीक हो चले हैं; पर श्यामसुन्दर कुछ ऐसी मुद्रा बनाते हैं मानो सिरके नीचे कुछ ऊँचा सहारा रहे तो उन्हें वंशी बजानेमें सुविधा हो। राधारानी पासमें ही बैठी हैं। वे श्यामसुन्दरको इस प्रकार करते देखकर ललिताको बड़ा मसनद लानेका संकेत करती हैं। इसी समय मधुमती वीणाको उठाकर कंधेपर रख लेती है। अब देर नहीं थी। श्रीकृष्णको सिर नीचा किये हुए बजानेमें कुछ असुविधा हो रही थी, इसीलिये उन्होंने अब विशेष देरी न देखकर वे कुछ पश्चिमकी ओर लेटे-लेटे ही सरक गये तथा श्रीराधारानीकी

गोदमें अपना सिर रखकर बोले—बस, मसनदकी कोई आवश्यकता नहीं है; मधुमती ! आरम्भ करो।

श्रीराधारानी बायें हाथसे श्यामसुन्दरके सिरको आवश्यकताभर ऊँचा करके अपनी गोदमें रख लेती हैं, जिससे श्यामसुन्दरको वंशी बजानेमें पूर्ण सुविधा हो जाती है तथा वे दाहिने हाथकी अँगुलियोंसे श्यामसुन्दरके लिलारको सहलाने लगती हैं। लिलारपर बिखरे हुए बालोंको ठीक कर देती हैं। अब एक साथ ही तालसे वीणा एवं वंशी बजने लगती है तथा मधुमती अत्यन्त मधुर स्वरमें गाने लगती है—

> बलि बलि बलि बलि कुँवरि राधिके नंद सुवन जासों रति मानी।
> तू अति चतुर वे चतुर सिरोमनि प्रीति करी कैसे रहत है छानी॥
> वे जो धरत तन कनक पीत पट सो तो सब तेरी गति ठानी।
> ते पुनि स्याम सहज सोभा वह अंबर मिस अपने उर आनी॥
> पुलक रोम अबहीं ह्वै आयो निरख देह निज रूप सयानी।
> सूर सुजान सखी के बूझे प्रेम प्रगट भयो वे हरषानी॥

(पदका भाव यह है—कुँवरि राधिके ! तुम्हारे ऊपर हम सब बलिहारी जाती हैं। जो श्रीकृष्ण सारे जगत्‌में, समस्त विश्व-ब्रह्माण्डमें आनन्दका संचार करते हैं, जिनसे सबको आनन्द मिलता है, जिनके एक कणके आनन्दसे समस्त ब्रह्माण्डमें आनन्दका विस्तार होता है, उन्हीं श्रीकृष्णको तुमसे आनन्द मिलता है। यह कितने आश्चर्यकी बात है, सबको आनन्द देनेवाला भी आनन्द पानेके लिये तुम्हारे पास आया है और उसे तुमसे आनन्द मिलता है। बलिहार हैं हम सब तुमपर ! राधे ! तू जैसे अतिशय चतुर है, वैसे ही वे भी चतुर-शिरोमणि हैं। चतुरसे चतुरकी प्रीति हुई है; पर प्रेम ऐसी वस्तु है कि वह छिप सकती ही नहीं। राधे ! धन्य है तुम्हारे दोनोंके प्रेमको। श्यामसुन्दर तुम्हें इतना प्यार करते हैं कि उन्होंने कनकवर्णीय पीताम्बर ही धारण कर लिया निरन्तर तुम्हारे कनक-कान्तियुक्त गौर मुखारविन्दकी स्मृति होते रहनेके लिये। तू भी तो नीली साड़ी इसीलिये पहनती है कि श्यामसुन्दरका श्याम-सौन्दर्य तुम्हारे हृदयमें निरन्तर बसा ही रहे। राधे ! देख, अभी इसी समय तुम्हारे प्रत्येक अङ्गसे प्रेमके चिह्न प्रकट हो रहे हैं। तुम्हारा

शरीर पुलकित हो गया है। तू ही देख ले कि तुम्हारी देहकी कैसी दशा हो रही है ? तुम्हारा रंग-रूप कैसा हो गया है ? सूरदास कहते हैं कि सखियोंके इस प्रकार कहते ही राधारानीके अङ्गोंमें प्रेमके विकार प्रकट हो गये तथा सारी सखियाँ आनन्दमें डूब गयीं।)

मधुमतीके गाते-गाते वहाँ सभी प्रेममें डूबने लग गये, चारों ओर निस्तब्धता छा गयी। गीत समाप्त होनेपर श्यामसुन्दरने अपनी आँखें मूँद लीं, वंशी वक्षःस्थलपर गिर गयी तथा राधारानीकी भी आँखें बंद हो गयीं। प्रेमके कारण सभीका धैर्य छूट रहा था। बड़ी कठिनाईसे रूपमञ्जरीने अपनेको थोड़ा सँभाला तथा जो मसनद थोड़ी देर पहले श्रीकृष्णके लिये लाया गया था, उसे उठाकर उसने श्रीराधाकी पीठके पास रख दिया। श्रीराधा आँखें बंद किये हुए उस मसनदका सहारा लेकर बैठी रहीं। सर्वत्र प्रेम एवं आनन्द छाया हुआ है। कुछ देर बाद श्रीकृष्ण उठकर बैठ जाते हैं। श्रीराधारानी उठकर खड़ी हो जाती हैं तथा ललितासे कुछ संकेत करती हैं। ललिता मधुमङ्गलसे कहती है—मधुमङ्गल! अब तो तूने आम खा लिये, अब मेरा काम कर दे।

मधुमङ्गल—हाँ-हाँ! अब एक नहीं, भले दो-तीन काम और करा लो।

ललिता पासमें ही एक शरीफेके पेड़के नीचे मधुमङ्गलको ले जाती है तथा धीरे-धीरे कुछ समझाती है। मधुमङ्गल 'बहुत ठीक', 'अच्छा', 'हाँ', 'तब'—इस प्रकार कहकर सिर हिलाता जाता है। श्रीकृष्ण दूरसे बैठे-बैठे यह देखते हुए मन्द-मन्द मुस्कुरा रहे हैं। राधारानी भी मन्द-मन्द मुस्कुरा रही हैं।

बात समाप्त होनेपर मधुमङ्गल उठता है तथा श्रीकृष्णसे कुछ आँखोंके संकेतमें कहता है। श्रीकृष्ण भी कुछ आँखोंके संकेतसे ही उत्तर देते हैं। इसके बाद मधुमङ्गल चल पड़ता है यह कहते हुए—अब शैब्याके कुञ्जमें अमरूद खाने जाता हूँ।

चलते-चलते मधुमङ्गल श्रीराधासे कहता है—देख! तूने मुझे दो हीरे देनेकी बात कही है न! कल काम हो जानेपर हीरे तुमको देना है। याद है न!

श्रीराधा मन्द-मन्द मुस्कुराती हुई कहती हैं—हाँ, हाँ अवश्य दूँगी।

मधुमङ्गल अपने कंधेपर एक छोटी-सी लकड़ी, जिसे उसने वहाँपर आते ही रख दी थी, उठा लेता है तथा वहाँसे सीधे पूर्वकी ओर चलकर राधाकुण्डको दाहिने रखते हुए कुण्डकी सीमा पारकर फिर पूर्वकी ओर चला जाता है। श्रीकृष्ण, श्रीराधा एवं सखियाँ नौकापर राधाकुण्डमें विहार करनेके लिये कुण्डके सुन्दर तटकी ओर बढ़ती हैं। श्रीराधाका दाहिना हाथ श्रीकृष्णके कंधेपर है तथा बायें हाथमें उन्होंने डंठीसहित कमलका फूल ले रखा है। श्रीकृष्ण बायें हाथमें वंशी पकड़े हुए हैं तथा दाहिने हाथसे निकुञ्जकी लताओंको दिखा-दिखाकर उनकी शोभा निहारनेके लिये राधारानीको संकेत करते जा रहे हैं। कभी सीधे पूर्वकी ओर, कभी दक्षिणकी ओर, कभी उत्तरकी ओर मुड़ते हुए निकुञ्जकी शोभा देखते हुए आगे बढ़ रहे हैं। इस प्रकार घूमते हुए निकुञ्जके द्वारपर आ पहुँचते हैं। निकुञ्जकी चहारदीवारी संगमरमरकी बनी है। उसपर अत्यन्त सुन्दर-सुन्दर लताएँ फैली हुई हैं। लताओंमें पुष्प लगे हैं। प्रवेशद्वार भी लता एवं पुष्पोंसे सजा हुआ है। मेहराबके ऊपर झुण्ड-के-झुण्ड तोता, मैना पक्षी बैठे हुए हैं। जैसे ही श्रीकृष्ण एवं श्रीराधा द्वारपर पहुँचते हैं, वैसे ही मैनाओंका झुण्ड अत्यन्त मधुर स्वरमें गाने लगता है—

जय राधे जय राधे राधे जय राधे जय श्रीराधे।

फिर तोतोंका झुण्ड गाता है—

जय कृष्ण जय कृष्ण कृष्ण जय कृष्ण जय श्रीकृष्ण॥

श्रीराधा विभिन्न प्रकारके मेवे लानेके लिये संकेत करती हैं। तुरंत ही लवङ्गमञ्जरी बहुत-सा मेवा लाती है। श्रीकृष्ण एवं श्रीराधा तोता-मैनाओंको बुला-बुलाकर उन्हें अपने हाथपर बैठाकर मेवा खिलाते हैं। द्वारसे बाहर निकलते ही मयूर एवं मयूरियोंका झुण्ड आता है। वह पंख फुला-फुलाकर तथा मनोरम शब्द करता हुआ श्रीराधा एवं श्रीकृष्णकी परिक्रमा करता है। विमलामञ्जरीके हाथमें मिठाईकी जो बहुत बड़ी परात है, उसमें-से मिठाई ले-लेकर मयूर एवं मयूरियोंकी चोंचोंमें देते हैं। इस प्रकार मयूरोंको खिलाते हुए आगे बढ़ते जाते हैं। इतनेमें ही उत्तरकी ओरसे जो पगडंडी राधाकुण्डपर आती है, उसी राहसे चौकड़ी भरते हुए हरिण

एवं हरिणियोंका एक झुण्ड आता है तथा श्रीकृष्णके अङ्गको छू-छूकर कभी कुण्डकी ओर चौकड़ी भरता है, कभी निकुञ्जकी ओर। उन हरिणोंको श्रीप्रिया-प्रियतम अपने हाथोंसे सहलाते हैं। गुणमञ्जरी एक डलियामें दूबकी बनी हुई छोटी-छोटी ढेरी लाती है। उसे हरिणोंके मुखमें देते हुए वे राधाकुण्डके तटपर पहुँच जाते हैं।

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥
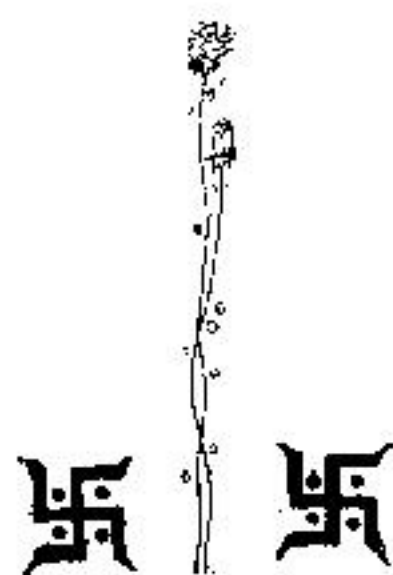
वंशी गोपन लीला

श्रीसुदेवीके कुञ्जमें अमरूदके वृक्षकी छायामें श्रीप्रिया बैठी हैं। चारों ओर अमरूदके वृक्षोंका ही वन है। प्रत्येक वृक्षपर बड़े-बड़े सुन्दर-सुन्दर अमरूदके फल लगे हुए हैं। श्रीप्रिया एक शाखासे पीठ टेके तथा पैर फैलाये पूर्वकी ओर मुख किये बैठी हैं। कोई भी बिछौना नहीं है। वे हरी-हरी दूबपर ही बैठी हैं। श्रीप्रियासे कुछ दूर उत्तरकी ओर अमरूदकी डाली पकड़े ललिता खड़ी हुई कुछ सोच रही हैं। श्रीप्रियाकी दाहिनी ओर सुन्दर-सुन्दर, बड़े-बड़े अमरूदके फल सुन्दर परातमें रखे हुए हैं। उसी परातको घेरकर कुछ मञ्जरियाँ बैठी हुई हैं। वे सुन्दर चमकती हुई छुरीसे अमरूदको खण्ड-खण्ड करके तश्तरियोंमें सजाती जा रही हैं।

जहाँ प्रिया बैठी हैं, उससे लगभग सात-आठ हाथ पूर्वकी ओर हटकर निर्मल जलकी नाली बह रही है। नाली डेढ़ हाथ चौड़ी है तथा संगमरमरके पत्थरसे उसके दोनों तट पटे हुए हैं। उसी नालीके पास विशाखा बैठी हुई हैं। वे बार-बार निर्मल जलको चुल्लूमें भरती हैं और फिर उसे पानीमें गिरा देती हैं।

रानी पुकार उठती हैं—विशाखे! क्या कर रही है? इधर आ।

रानीकी पुकार सुनते ही विशाखा उठकर उनके पास आ जाती हैं तथा अत्यन्त प्यारभरी वाणीमें कहती हैं—क्यों, बोल!

रानीने विशाखाको पुकार तो लिया, पर पुकारनेके बाद फिर किसी चिन्तनमें इतनी तल्लीन हो गयीं कि उन्हें तनिक भी पता नहीं कि विशाखा मेरे पास आयी है। रानीकी आँखें खुली हुई हैं, पर वे भाव-समाधिमें निमग्न हैं। विशाखा अतिशय प्यारसे रानीकी ठोड़ीको स्पर्श करती हुई धीरेसे कहती हैं—बावली बहिन! प्यारे श्यामसुन्दरको

वंशी फिर तो तेरे लिये छिपाकर रखना बड़ा कठिन है। श्यामसुन्दर आते ही होंगे। तू इस प्रकार पत्थरकी मूर्ति बनी बैठी रही, तब तो फिर वे आते ही वंशी ढूँढ़ निकालेंगे।

विशाखाकी बात सुनकर रानी घबरायी-सी होकर अपनी कञ्चुकीमें हाथ डालकर देखती हैं। वहाँ वंशीको ठीक स्थानपर पाकर अतिशय उमङ्गसे पुनः उसे दोनों हाथोंसे दबा लेती हैं। रानी अपने हृदयको इतना कसकर दबाती हैं कि मानो वे वंशीको भीतर हृदयमें ही धँसा देना चाहती हों। विशाखा रानीकी यह चेष्टा देखकर खिलखिलाकर हँस पड़ती है। रानी कुछ चकित-सी दृष्टिसे संकेतके द्वारा ललितासे कुछ कहती हैं। ललिता संकेतमें ही उत्तर दे देती हैं। रानी विशाखासे कहती हैं- री! वह पद सुना।

रानीकी आज्ञा सुनकर विशाखा मधुमतीको संकेत करती हैं। मधुमती झाड़ीके पास रखी हुई वीणा उठा लाती है तथा विशाखाके हाथमें पकड़ा देती है। विशाखा उसे कंधेके सहारे टिकाकर उसमें स्वर मिलाकर अत्यन्त मधुर कण्ठसे गाती हैं—

बाँसुरी तू कवन गुमान भरी।
सोने की नाहीं रूपे की नाहीं नाहीं रतन जरी।
जात सिफत सब कोऊ जानैं मधुबन की लकरी॥
कहा री भयो जब हरि मुख लागो बाजत बिरह भरी।
सूर स्याम प्रभु अब का करिये अधरन लागत री॥

रानी आँखें मूँदे रहकर पद सुनती हैं। पद समाप्त होनेपर कञ्चुकीसे वंशी निकालकर देखती हैं। देखते ही आँखें भर आती हैं। फिर भर्राये स्वरमें कहती हैं—वंशिके! प्यारे श्यामसुन्दरके अधरोंका रस तू पी चुकी है। आह! उस अनुपम अधर-रससे मतवाली होकर अपने साथ ही तू मुझे भी नचाती रही है; पर बहिन! इस समय तू चुप क्यों है? एक बार मेरी प्रार्थना मानकर मेरे कहनेसे 'श्याम-श्याम'की तान भरकर इस वनको गुँजा दे। मेरे प्रियतम प्राणेश्वरके पास इस तानके पहुँचते ही वे मेरे निकट निश्चय-निश्चय आ जायँगे।

रानी उत्कण्ठाभरी दृष्टिसे देखती हैं कि वंशी बजती है या नहीं; पर वंशी बजती नहीं। रानी कुछ रुदनभरे स्वरमें कहती हैं—हाँ बहिन! मैं समझ गयी, प्यारे श्यामसुन्दरसे बिछुड़कर तू नितान्त मूर्च्छित-सी हो रही है! ठीक है, बहिन! प्रेम इसे ही कहते हैं। मैं अभागिनी तो अभी भी हँस-खेल रही हूँ। हाय! मेरा हृदय कितना नीरस है, कितना कठोर है!

भाव-विह्वल हो जानेसे रानी मुखको अञ्चलसे ढककर सिसक-सिसककर रोने लगती हैं। रानीको पुनः रोती देखकर सखियाँ चिन्तित होने लग जाती हैं। बात यह है कि अभी थोड़ी देर पहले श्यामसुन्दरकी प्रतीक्षामें रानीको सारिकाके द्वारा यह समाचार मिला कि श्यामसुन्दर तो आज सम्भवतः वन नहीं आवें; क्योंकि आज मैया ब्राह्मणोंको श्यामसुन्दरके हाथसे बहुत-सी गायें दान करानेके उद्योगमें लगी हुई हैं। मधुमङ्गल लड़-झगड़ रहा है, पर मैया अभी सुन नहीं रही हैं। इस समाचारको सुनते ही रानी मूर्च्छित हो गिर पड़ी थीं। सखियोंने बहुत उपचार किये, परंतु चेतना नहीं आयी। फिर दौड़कर रूपमञ्जरी श्यामसुन्दरके पास गयी तथा उनसे बोली—ललिताने कहलवाया है कि किसी उपायसे शीघ्र आ जाओ या कोई दूसरा उपाय रचो; नहीं तो मेरी प्यारी सखी राधाके जीवनकी आशा समाप्त होती चली जा रही है।

श्यामसुन्दर बड़ी दुविधामें पड़ गये। मैया मध्याह्नके पहले-पहले छोड़ना नहीं चाहती, अतः श्यामसुन्दरने धीरेसे वंशी लाकर रूपके हाथमें दे दी और बोले—इसे मेरी प्रियाके होठोंपर लगा देना। उसे चेतना आ जायेगी तथा चेत हो आनेपर कहना कि मैं आ ही रहा हूँ।

रूपमञ्जरी वंशी ले आयी तथा वही किया गया। श्रीप्रियाको चेत हो आया तथा श्यामसुन्दरके आनेका समाचार सुनकर वे प्रसन्न हो गयीं। रानीके प्रसन्न होते ही सखियोंमें यह विचार होने लग गया कि इस वंशीको ही छिपाकर रख लिया जाये। श्यामसुन्दर इसे बड़ा ही प्यार करते हैं। वे इसे वापस लेना चाहेंगे ही, अतः उस अवस्थामें उनसे कुछ वचन भरवा लिया जाये। उनसे कहा जाये कि तुम इसे विभिन्न प्रकारसे बजाना जानते हो। कभी तो जिसका नाम लेते हो, वही सुनती है,

दूसरी सुनती ही नहीं। कभी तुम्हारे होठोंपर लगी रहकर यह वनमें ऐसी गूँजती है मानो तुम प्रत्येक वृक्ष, प्रत्येक लता, प्रत्येक पत्तेके भीतर बैठकर इसे बजा रहे हो। कभी ऐसा प्रतीत होता है कि हम प्रत्येकके हृदयमें बैठकर तुम भीतरसे ही हमारा नाम पुकार रहे हो। कभी ऐसा सुर भरते हो कि इधर उस ध्वनिके कानमें पड़ते ही हम सब तो पत्थरकी मूर्ति बन जाती हैं और उधर उस ध्वनिसे पत्थरकी शिलाएँ भी पिघल जाती हैं, पिघलकर उनके अन्तरालसे वंशी-ध्वनि गूँजने लगती है। कहाँतक कहें, अबतक हम सब इस वंशीकी तानके असंख्य रूप देखती रही हैं। इसलिये अधिक नहीं, केवल एक तान हम सबको सिखला दो। बस, केवल इतना सिखला दो, हम सबमेंसे किसी एकको ही सही, पर यह सिखला दो कि उसके द्वारा फूँक भरते ही तुम जहाँ कहीं भी रहो, वहीं मोहित होकर, आकर्षित होकर मेरी रानीके पास पहुँच जाओ। तब तुम्हें वंशी वापस मिलेगी। नहीं तो यह हम सबके पास ही रहेगी। और कुछ भी न सही, रानीके होठोंपर बैठकर यह 'श्याम-श्याम' ही बोलने लग जाये। इतनेसे ही हम सब संतोष कर लेंगी। कम-से-कम इतना तो तुम जान ही लोगे कि मेरी प्रिया मेरा नाम लेकर मुझे पुकार रही है।

सखियोंके बीचमें यह परामर्श चल ही रहा था कि रानीने इसका विरोध किया। रानी बोली—मैं यह नहीं सह सकती कि मेरे प्यारे श्यामसुन्दरको उनकी इच्छाके बिना ही मेरे पास मोहित होकर आना पड़े।

सखियोंने बहुत समझाया, पर उन्होंने एक नहीं सुनी। फिर यह निश्चित हुआ कि एक विनोद ही आज किया जाये। श्यामसुन्दर आवें तो उनके सामने ऐसा दृश्य हम सब उपस्थित करें मानो यहाँ कुछ हुआ ही नहीं हो। रूपमञ्जरी छिप जाये। हम सब कह देंगी कि ललिताने किसी कामसे उसे बाहर भेजा है। वह तो अभीतक लौटी ही नहीं है। फिर हमलोग देखें, प्यारे श्यामसुन्दर वंशीको ढूँढ निकालनेके लिये क्या उपाय रचते हैं। इस बातको रानीने स्वीकार कर लिया तथा उसे अपनी कञ्चुकीमें छिपाकर बैठी रही।

ललिताने कहा—तेरेद्वारा छिपाये रखना है तो कठिन, पर कोई बात नहीं, पहले तू ही छिपाकर रख। मैं सँभाल लूँगी।

इस निश्चयके साथ ही सभी बैठी थीं, पर श्यामसुन्दरको देर होते देखकर रानी वंशीको निकालकर भावाविष्ट होकर उससे बातें करने लग गयीं। भावावेशमें रानी अभ्यासवश वंशीको होठोंतक तो ले जाती हैं, पर उसे होठोंके ऊपर रखनेके पहले ही नीचे उतारकर देखती हैं तथा सोचती हैं कि आज यह मूर्च्छित हो गयी है। आज मेरे फूँकनेपर भी यह 'श्याम-श्याम' नहीं बोल रही है। वंशीके सम्बन्धमें यह भावना रानीके निर्मल प्रेमको अतिशय उद्दीप्त कर देती है। अपने भीतर प्रेमकी कमीका अनुभव करके रानी रोने लग जाती हैं। उन्हें सिसक-सिसककर रोते देखकर सखियाँ चिन्तित होने लग जाती हैं कि वंशी-हरणका खेल बने या बिगड़े, पर यदि कहीं मेरी प्यारी सखी पुनः मूर्च्छित हुई तो फिर कैसे चेत कराया जायेगा।

रानीको रोते देखकर बात पलटनेके लिये ललिता एक चतुराई करती है। अत्यन्त प्यारसे रानीके पास जाकर गलेमें बाँह डालकर आँसू पोंछती हुई कहती है—बहिन! तू रो रही है और तेरे रोनेसे कुञ्जके सभी पक्षी नीरव-से हो गये हैं। देख, इससे प्यारे श्यामसुन्दर निश्चय ही जान जायेंगे कि मेरी प्रिया रो रही है, फिर वे भी रोने लग जायेंगे। वे भला कितने दुखी होंगे, तू ही बता!

ललिताकी बात सुनकर रानी चौंक-सी जाती हैं तथा कहती हैं—अयँ, मेरे प्यारे श्यामसुन्दर दुखी हो जायेंगे? ओह! तब मैं नहीं रोऊँगी, तनिक भी नहीं रोऊँगी। ना, मैं कहाँ रोती हूँ? मैं तो हँस रही हूँ। मैं तो हँस रही हूँ। कुञ्जके पक्षियो! तुम मधुर कलरव आरम्भ करो। देखना भला, मेरे प्यारे श्यामसुन्दरके पास मेरे अभी-अभी रोनेका समाचार पहुँचने न पावे।

रानी गम्भीर होकर बैठ जाती हैं तथा वंशी, जो गोदमें पड़ी थी, उसे उठाकर फिर कञ्चुकीमें रख लेती हैं। ललिता सोचती हैं कि यह फिर अधिक भावाविष्ट न हो जाये, इसलिये तुरंत ही रानीसे बातें करने लग जाती हैं, जिससे वे बातोंमें फँस जायें। ललिता कहती हैं—देख! श्यामसुन्दर आनेवाले ही हैं। सावधान हो जा, वंशीकी बात बताना मत भला!

रानी—नहीं बताऊँगी।

ललिता—फिर यदि श्यामसुन्दर व्याकुल होकर पूछेंगे, तब?

रानी—तो बता दूँगी।

ललिता हँस पड़ती है और कहती है—तब तू मुझे वंशी दे दे।

रानी—ना! मैं तुम्हें नहीं दूँगी।

ललिता—अरे! देगी भी नहीं और श्यामसुन्दरको बता भी देगी, यह तो तुम अच्छा खेल करने चली।

रानी कुछ गम्भीर होकर कहती है—ललिते! देख। मैं बताती नहीं, पर जब कभी भी श्यामसुन्दर प्यारभरी दृष्टिसे कुछ भी पूछते हैं तो बरबस आँखें संकेत कर देनेके लिये घूम जाती हैं। कई बार तुम लोगोंकी बात मानकर निश्चय किया कि प्यारे श्यामसुन्दरसे छिपा लूँगी; पर छिपा पाती नहीं। उन्हें देखते ही सब कुछ भूल जाती हूँ।

ललिता—अच्छा, एक काम कर! जब वे आवें, तब तू उन्हें देखना मत। देखनेसे ही गड़बड़ी होती है।

रानी—आह! तू बड़ी भोली है! अरे! वे आवें और मेरी आँखें उन्हें देखें नहीं, यह कैसे हो सकता है?

ललिता—अच्छा, देख भी लेना, पर वंशीकी बात फिर छिपा लेना।

रानी—अच्छा, आज पूरी चेष्टा करूँगी।

रानी यह कह ही रही थीं कि श्यामसुन्दर वहाँ आ पहुँचते हैं। वे तीव्र गतिसे चलते हुए आते हैं और निर्मल जलकी नालीपर आकर खड़े हो जाते हैं। श्रीप्रिया निर्निमेष नयनोंसे उन्हें देखने लग जाती हैं। श्यामसुन्दरको आते देखकर रूपमञ्जरी पासकी ही एक झाड़ीकी आड़में जाकर छिप जाती है। उनके आनेपर वहाँ सबमें आनन्द छा जाता है। विशाखा दौड़कर श्यामसुन्दरका हाथ पकड़ लेती है तथा कहती है—देखो! आज मेरी सखी राधा पासेमें दाँव रखकर तुम्हें हार चुकी है, अतः आज तुम्हारे ऊपर मेरा अधिकार है। अभी तो पंदेसे हमलोग खेल रही थीं। आज बड़ा सुन्दर खेल हुआ।

श्यामसुन्दर कुछ चकित होकर विचारमें पड़ जाते हैं तथा धीरेसे पूछते हैं—रूपमञ्जरी कहाँ गयी ?

विशाखा—पूजाकी कुछ सामग्री घरपर छूट गयी थी, ललिताने उसको लानेके लिये बहुत देर पहले उसे भेजा है।

श्यामसुन्दर कुछ आश्चर्यमें पड़ जाते हैं तथा कहते हैं—क्यों, हमारी वंशी लेकर वह यहाँ नहीं आयी ?

विशाखा—तुम्हारी वंशी लेकर वह क्यों आती ? भाँग तो तुमने नहीं छानी है ?

श्यामसुन्दरकी बात सुनकर ललिता हँसती हुई कहती है—ऐसा लगता है कि आज तुम्हारी वंशी तुम्हारे हाथसे जाती रही है। रूपमञ्जरी राहमें मिली होगी, अतः तुम्हें संदेह हुआ है कि उसने वंशी कहीं छिपायी है। क्यों, यही बात है न ?

श्यामसुन्दर कुछ देर सोचकर समझ जाते हैं कि इन सबने मिलकर कोई चतुराई की है, अतः सावधानीपूर्वक श्रीप्रियासे कुछ संकेत-ही-संकेतमें पूछ लूँ कि वस्तुतः बात क्या है, वंशी लेकर यहाँ रूपमञ्जरी आयी या नहीं। प्रियासे इतनी बात तो पूछ ही लूँ, फिर तो सरलतासे वंशीको खोज निकालूँगा। ऐसा सोचकर श्यामसुन्दर श्रीप्रियाकी ओर देखने लग जाते हैं। दृष्टि मिलते ही श्रीप्रियामें प्रेमका आवेश बढ़ने लग जाता है। श्यामसुन्दर कुछ पासमें जाकर खड़े हो जाते हैं—प्रिये ! तू जानती है, मुझे वंशी कितनी प्यारी है ! यदि वह तुम्हारी दृष्टिमें हो, तब तो चिन्ताकी कोई बात नहीं। वंशी आज कह भी रही थी कि प्यारे श्यामसुन्दर ! रानीकी सखियाँ मुझे तुमसे अलग करना चाहती हैं। मेरे सौभाग्यसे उन्हें ईर्ष्या होने लग गयी है। अतः रानीके चरणोंमें मुझे पहुँचा दो। मैं रानीसे विनती करूँगी कि आपकी सखियाँ मुझसे व्यर्थ ही अप्रसन्न हैं। मैं किसीका कुछ बिगाड़ती नहीं। श्यामसुन्दर मुझे बोलनेके लिये कहते हैं तो मैं बोलती हूँ। वे नहीं कहते तो मैं चुप रहती हूँ। तुम्हीं बताओ कि मैं अपना धर्म कैसे बिगाड़ दूँ। अपने स्वामी श्यामसुन्दरकी आज्ञा न माननेसे तो मैं कुलटा बन जाऊँगी। मेरी रानी ! तुमसे बढ़कर मुझे धर्मका मर्म कौन बतायेगा, इसलिये तुम्हारे पास आयी हूँ। तुम्हीं निर्णय कर दो, यदि मेरा अपराध

हो तो मुझे अपनी सखियोंको सौंप दो। यदि सखियोंका अपराध हो तो उन्हें मेरे हाथ सौंप दो। मैं उन्हें ले जाकर अपने स्वामी प्यारे श्यामसुन्दरके हाथमें दे दूँगी। फिर वे जो आज्ञा करेंगे, वैसा ही व्यवहार इनके साथ करूँगी। मेरी प्राणेश्वरी ! वंशीकी बात सुनकर मैं सोचने लगा कि यदि तुम्हारी सखियाँ इसे मुझसे अलग कर देंगी तो यह बड़ी दुःखी होगी। यह तो पतिव्रता है, दिन-रात एकनिष्ठ मनसे मेरी सेवा करती है। यह तो अलग होकर भी मेरी ही रहेगी; पर मैं चाहता हूँ कि इसे दुःख न हो। यह कई बार मुझसे कह चुकी है कि प्यारे ! रानीकी सखियाँ मुझे उनके इच्छानुसार बजनेके लिये कहती हैं; पर मैं तो तुम्हारी इच्छाके बिना बज नहीं सकती और उनका चित्त भी दुखाना नहीं चाहती। इसलिये कभी-कभी मनमें आता है कि मेरे स्थानपर तुम भी हेगी* बहिनको रखो। फिर रानीकी सखियोंको भी ईर्ष्या नहीं होगी। वे फिर स्वयं सारा रहस्य भी समझ जायँगी। प्रियतमे ! आज वह वंशी इतनी मचल गयी थी कि रूठकर चले जानेकी भी धमकी दे चुकी थी। इसलिये मैं सोचता हूँ कि वह यदि कहीं रूठकर गयी हो, पर मुझसे अलग होकर तेरे पास आयी हो तो सुखी होगी; नहीं तो बहुत रोती होगी। अतः तूने उसे कहीं देखा हो तो बता देना।

श्यामसुन्दरकी बात सुनकर सखियाँ तो उच्च स्वरसे हँसती हैं, पर

---

*श्यामसुन्दर सोनेकी, बांसकी बनी हुई मुरली, वंशी आदि रखते हैं। जिस समय उनके हाथमें सोनेकी वंशी रहती है, उस समय सखियोंके अङ्गोंके आभूषण प्रफुल्लित हो जाते हैं कि हमारी जातिका इतना भाग्योदय हुआ है कि हममेंसे एक प्यारे श्यामसुन्दरके होठोंसे लग रही है। इस आनन्दमें स्वयं सभी सोनेके आभूषण उन्मत्त होकर मुरलीकी ध्वनिमें ध्वनि मिलाकर बजने लग जाते हैं तथा सखियाँ ऐसा अनुभव करती हैं कि मेरे बहुत रोकनेपर भी ये आभूषण विवश होकर श्यामसुन्दरकी मुरलीकी ओर जा मिले हैं। स्थिति यहाँतक हो जाती है कि आभूषणोंकी ध्वनि उनके हृदयमें जाकर और अनन्तगुनी होकर, ठीक श्यामसुन्दरके स्वरमें ही हृदयके स्वरको भी बाँध देती है। वे बावली-सी होकर उसी प्रकार बड़-बड़ करने लग जाती हैं।

रानी कुछ गम्भीर होकर कहती हैं—प्यारे ! वंशी तुम्हारे हृदयमें ही कहीं जा छिपी होगी।

रानीकी बात सुनकर ललिता कुछ चिढ़-सी जाती हैं; पर उसे छिपाकर कहती हैं—अच्छा श्यामसुन्दर ! तुम एक काम करो ! मैं अभी-अभी तुम्हारी रूठी हुई वंशीको खोज लाऊँगी तथा मना भी दूँगी। पर तुम आज विशाखाको अपने हाथसे फूलोंका तोता बनाकर दे दो; फिर हम सब मिलकर तुम्हें कल एक बहुत बढ़िया खेल दिखायेंगी।

ललिता यह कहकर रानीके सामने चली जाती हैं तथा श्यामसुन्दरको आड़में करके रानीसे कुछ संकेत करती हैं। रानी घूमकर पश्चिम एवं उत्तरके कोनेकी ओर देखने लग जाती हैं। विशाखा चतुराईसे श्यामसुन्दरको राधाकुण्डकी ओर फिरा देती हैं। इसी बीच ललिता वंशीको श्रीराधाकी कञ्चुकीसे निकालकर बड़ी कुशलतासे अपनी कञ्चुकीमें रख लेती हैं। इतनेमें श्यामसुन्दर उधर ही देखने लग जाते हैं। ललिताने वंशी बड़ी शीघ्रतासे छिपा ली और छिपाकर बोली—देखो ! यह मेरी सखी आधी बावली है। अभी-अभी कुछ कहती है, फिर कुछ कहने लग जायेगी। मैं तो उससे बहुत दुखी हो गयी हूँ। तुम एक काम और भी करो। अपने हाथसे अपना एक चित्र बनाकर इसे दे दो। तुम्हारे पीछे उसी चित्रके सहारे मैं इसे सान्त्वना देती रहूँगी।

श्यामसुन्दर मुस्कुराते हैं, पर मन-ही-मन वंशीको शीघ्र खोज निकालनेकी चेष्टामें लगे हैं। श्रीप्रियाकी बात सुनकर यह तो वे जान ही गये कि वंशी मेरी प्यारीके पास ही है; पर अब उसे ललिताने ले लिया था। श्रीप्रियाने भी संकेतसे यह बात बता दी कि ललिताने उसे ले लिया है; अतः ललिताको भरपूर छकानेकी युक्ति सोचते हुए श्यामसुन्दर खड़े हैं। युक्ति सूझ जाती है। वे तुरंत अपनी आँखें बंद करके कहते हैं—देख, मेरा सिर घूम रहा है। मैं थोड़ा लेट जाना चाहता हूँ, घबराना नहीं; साधारण-सी पीड़ा है।

श्यामसुन्दर वहीं लेट जाते हैं। श्रीप्रिया बहुत घबरायी-सी होकर उनके पास जा पहुँचती हैं। श्रीप्रियाको श्यामसुन्दर संकेत कर देते हैं कि घबराना मत, मुझे कोई पीड़ा नहीं है, ललिताको छकाना है। फिर भी

रानी कुछ घबरायी-सी रहती हैं। श्यामसुन्दर श्रीप्रियाके हाथको पकड़कर और दबाकर संकेतमें कह देते हैं कि मैं पूर्णतः स्वस्थ हूँ, तब प्रियाको धैर्य बँधता है।

श्यामसुन्दर धीरेसे उठकर बैठ जाते हैं तथा कहते हैं ललिते! कुछ दिन पहले मेरी प्रियाने एक दिन निकुञ्जमें मेरी वंशी छिपा दी थी। भाद्रपदकी पूर्णिमाके दिनकी बात है। पुष्पोंकी शय्यापर हम दोनों बैठे थे। समस्त निकुञ्ज पुष्पोंसे सजा हुआ था। तब मैं प्रियासे बोला कि अच्छी बात है, वंशी आजसे तेरी दासी होकर रहेगी; पर देखना भला, मेरे अधर-रसका पान करके ही वह जीती रहती है, इसलिये तू अपना अधर-रस उसे नियमसे पिला देना, नहीं तो भूखी रहेगी। देख, यदि तू कभी भूल जायेगी तो उसकी दशा देखकर तू स्वयं रोयेगी और तुझे रोती देखकर मैं भी रोने लग जाऊँगा।

श्रीप्रिया बड़ी उत्कण्ठासे सुन रही हैं। उस दिनवाली निकुञ्जलीलाकी बात उन्हें प्रेममें अधिकाधिक अधीर बनाती जा रही है। श्यामसुन्दर फिर कहते हैं—हाँ, तब इसके बाद क्या हुआ, सो तुम्हें सुनाता हूँ। मेरी प्रियाकी आँखोंसे प्रेम झर रहा था। मैं एकटक प्रियाकी आँखोंसे आँख मिलाये देख रहा था। उस समय प्रिया मुझसे बोली कि प्राणेश्वर! वंशी तो मैं अभी-अभी दे दूँगी, पर मेरी एक बात सुनो। कई दिनोंसे मैं तुमसे कहना चाह रही थी; तुम्हें देखकर वह बात भूल जाया करती थी। आज वह बात याद आ गयी है। देखो, प्रत्येक संध्यामें ललिता मेरा शृङ्गार करती है। शृङ्गार करके आनन्दमें मग्न हो जाती है। उसे आनन्दमें बावली देखकर मैं सोचती हूँ कि मेरेमें सुन्दरता तो है ही नहीं; पर जब इस बावलीने सजाया है तो मैं देख तो लूँ कि तुम्हारी सेवाके लिये तुम्हारी दासीको इसने कैसा सजाया है! वह दर्पण मेरे सामने ले आती है; पर प्राणेश्वर! पता नहीं क्यों, मुझे अपना मुख नहीं दिखलायी देकर तुम्हारा मुख दीखने लग जाता है। बहुत सोचते-सोचते आज यह निर्णय कर पायी हूँ कि तुम मुझे अतिशय प्यार करते हो; तुम्हारे हृदयका प्यार मुझे चारों ओरसे घेरे रहता है; इसीलिये मुझे अपना प्रतिबिम्ब दिखलायी न देकर तुम्हारा दीखता है। मेरे जीवनसर्वस्व! आज भी ऐसा ही हुआ था। उस समय मनमें आया कि अहा! यह प्रतिबिम्ब कितना सुन्दर है।

फिर यदि किसी दिन श्यामसुन्दर अपने हाथोंसे ठीक अपने ही समान अपनी वेष-भूषामें मुझे सजा दें तो वह प्रतिबिम्ब कितना सुन्दर होगा! इसलिये प्यारे! आज अपने हाथसे तुम मुझे अपनी धोती पहना दो, दुपट्टा ओढ़ा दो, मेरे केशोंको ठीक अपने-जैसे कंधोंपर बिखेर दो, मयूरपिच्छका मुकुट मेरे सिरपर बाँध दो और वंशी मेरे होठोंपर रख दो। फिर मैं देखूँगी कि दर्पणमें कैसी छवि प्रतिबिम्बित होती है।

श्यामसुन्दर ललितासे ये बातें कहते जा रहे थे एवं प्रिया सर्वथा उसी भावसे आविष्ट होती जा रही थीं। श्यामसुन्दरने श्रीप्रियाकी दशाको देखकर एक बार मुस्कुरा दिया और फिर बोले—ललिते! मैंने प्रियाको ठीक उसी भाँति सजा दिया है

श्यामसुन्दरके मुखसे यह बात निकलते ही श्रीप्रिया अतिशय भावाविष्ट होकर मूर्च्छित हो जाती हैं। श्यामसुन्दर अतिशय प्रेमसे उन्हें गोदमें लिटा लेते हैं। कुछ देर ठहरकर श्रीप्रिया उसी भावावेशमें बोल उठती हैं—हाँ, वंशी मेरे होठोंपर रख दो!

श्यामसुन्दर बड़ी चतुराईसे कहते हैं—प्रिये! वंशी तो तुमने ही छिपाकर रखी है। निकाल कर दे, मैं तेरे होठोंपर रख दूँ।

श्रीप्रिया श्यामसुन्दरकी बात सुनकर कञ्चुकीके भीतर हाथ ले जाती हैं। फिर भावावेशमें ही बोलती हैं—अयँ! क्या हो गयी? कहाँ चली गयी? आह! मैंने तो उसे यहीं छिपाकर रख रखा था! कौन उठा ले गयी?

श्रीप्रिया अतिशय व्याकुल होकर रोने लग जाती हैं तथा रोकर कहती हैं—हाय, हाय! मेरे प्यारे श्यामसुन्दरकी वंशी मेरे हृदयके पाससे कौन ले गयी? ना, कोई हो, ठिठोली मत करो, वंशी ला दो। मैं एक बार होठोंपर रखकर अपना प्रतिबिम्ब देखना चाहती हूँ।

श्रीप्रियाकी दशा देखकर ललिता गम्भीर हो जाती हैं। श्यामसुन्दर मुस्कुराकर बहुत धीरेसे, जिससे श्रीप्रिया नहीं सुन पायें, कहते हैं—ललिता रानी! अब अपनी सखीको सँभालो। शीघ्र वंशी लाओ, नहीं तो दशा देख लो! आगे क्या होगा, स्वयं सोच सकती हो।

ललिता घबरायी-सी होकर वंशी अपनी कञ्चुकीसे निकालकर श्यामसुन्दरके हाथमें दे देती हैं। फिर किंचित् हँसकर कहती हैं—श्यामसुन्दर! तुम सचमुच बड़े धूर्त हो। अच्छा, फिर कभी बात।

श्यामसुन्दर वंशी लेकर श्रीप्रियाके होठोंपर रख देते हैं। वंशी होठोंपर रखते ही प्रिया प्रसन्न हो जाती हैं तथा भावावेशमें ऐसा अनुभव करने लगती हैं कि मैं दर्पणमें प्रतिबिम्बकी शोभा निहार रही हूँ। रानी कुछ देरतक इसी मुद्रामें बैठी रहती हैं, फिर मूर्च्छित होकर श्यामसुन्दरकी गोदमें गिर पड़ती हैं। श्यामसुन्दर श्रीप्रियाको गोदमें लिटाये हुए उसके मुखकी शोभा निहारने लग जाते हैं।

कुछ देर बाद श्रीप्रियाको चेत हो जाता है। श्रीप्रिया उठ बैठती हैं तथा कुछ लजा जाती हैं। इधर श्यामसुन्दर अपने हाथमें वंशी लेकर खिलखिलाकर हँस पड़ते हैं। फिर कुछ देर बाद हँसते हुए कहते हैं—प्रिये! आज तो मेरा बहुत काम बन गया। अब देख, वंशीसे मैं सब रहस्य जान लेता हूँ।

इसके बाद श्यामसुन्दर वंशीको सिरसे लगाते हैं, फिर उसे चूमकर कहते हैं—वंशिके! तेरा अहोभाग्य है। ललितारानीके हृदयके पास रहकर आयी है; पर अब कुछ हमें भी तो बता कि ललितारानीके हृदयमें तुमने क्या देखा-सुना।

वंशीसे निवेदन करके श्यामसुन्दर उसे कानोंके पास ले जाते हैं। फिर हँसकर राधारानीसे कहते हैं—प्रिये! तू सुनेगी, वंशीने मुझे क्या समाचार सुनाया है?

रानी उत्कण्ठाभरे स्वरमें कहती हैं—सुनाओ!

सभी सखियाँ भी अत्यन्त उत्कण्ठित हो जाती हैं; पर ललिता कुछ काँप रही हैं। श्यामसुन्दर कहते हैं—वंशिके! तुमने जो मुझसे कहा है, वही सुन्दर स्वरमें गाकर सबको सुना दो।

श्यामसुन्दर वंशीमें सुर भरने लगते हैं। वंशीसे अत्यन्त मधुर स्वरमें गान होने लग जाता है। सभी सखियाँ यही अनुभव कर रही हैं

कि वंशीके छिद्रोंसे ये शब्द निकल रहे हैं—प्यारे श्यामसुन्दर ! ललिताके हृदयके अन्तस्तलमें जो पद गूँज रहा था और जिसे मैं सुनकर आयी हूँ, वही सुना रही हूँ—

> स्याम रूप में तेज अधर रस जलहिं मिलाऊँ।
> मुरलि अकास मिलाय पवन में प्राननि छाऊँ।।
> मुख मंडित गोधूलि अली टुक देख न पाऊँ।
> पृथ्वी अंग मिलाय तासु मैं प्रियतम ध्याऊँ।।

(पदका भाव यह है—मेरा शरीर पाँच तत्त्वोंका बना हुआ है। पृथ्वी, अप्, तेज, वायु और आकाश। इनके संयोगसे ही यह शरीर बना है। पर प्यारे श्यामसुन्दर तो इस शरीरके कारण बहुत दूर पड़ जाते हैं, इसलिये मैं उनकी शोभाको ठीक-ठीक निहार नहीं पाती। हाँ सखी ! सर्वथा यही बात है। यह शरीर बड़ा व्यवधान बन गया है। पर एक बात कर लूँ तो काम बन जाये। इस शरीरके पाँचों तत्त्वोंको अलग-अलग कर दूँ। अलग-अलग करके तेजतत्त्वको श्यामसुन्दरके रूपके तेजमें मिला दूँ; श्यामसुन्दरके अधरोंमें जो रस है, उसमें जलतत्त्वको मिला दूँ; मुरलीके भीतरी खोखले अंशके आकाशमें आकाशतत्त्वको मिला दूँ; श्यामसुन्दरके प्राणवायुमें शरीरके वायुतत्त्वको घुला-मिला दूँ। शेष रहा पृथ्वीतत्त्व। यदि भाग्यसे संध्याके समय श्यामसुन्दरका कभी दर्शन हो जाये तो उनके मुखारविन्दपर गोधूलि-कणका दर्शन पाऊँगी ही, उन्हीं रजकणोंमें अपने शरीरके पृथ्वीतत्त्वको मिला दूँ। फिर प्यारे श्यामसुन्दरको ठीकसे देख पाऊँगी, तभी उनका ध्यान ठीकसे हो सकेगा। तभी वे मेरे हृदयमें सदाके लिये आ बसेंगे।)

वंशीकी सुरीली तानने सबको प्रेममें बेसुध बना दिया। ललिता तो बावली-सी होकर दौड़ पड़ती हैं तथा श्यामसुन्दरके गलेसे चिपटकर मूर्च्छित हो जाती हैं। बड़ी निराली झाँकी है। सखियाँ चारों ओर प्रेममें झूम रही हैं। राधारानी श्यामसुन्दरका बायाँ कंधा दोनों हाथोंसे पकड़कर पत्थरकी मूर्ति-सी खड़ी हुई बैठी हैं। ललिता गलेमें बाँह डाले मूर्च्छित पड़ी हैं। श्यामसुन्दर स्वयं मन्द-मन्द मुस्कुराते हुए प्रेममें झूम रहे हैं। कुछ क्षणके बाद ललिताको चेत हो आता है; पर फिर भी आँखें बंद हैं। श्यामसुन्दर प्यारसे ललिताके मुखको सहलाने लगते हैं। पूरा चेत

हो जानेपर ललिता लजाती हुई वहींपर कुछ हटकर बैठ जाती हैं। सर्वत्र प्रेम, शान्ति एवं नीरवता छायी हुई है। नीरवताको भङ्ग करते हुए श्यामसुन्दर हँसकर कहते हैं—ललितारानी! मेरी वंशीका चमत्कार देख लो। अहा! मेरी वंशी कितनी सेवा करती है? मुझसे अलग होकर भी इसने मेरी सेवाका कैसा सुन्दर उपाय किया है? तुम-जैसी हठीली-गर्वीलीको भी बरबस मालाकी तरह मेरे गलेमें झूलना पड़ा। मेरी प्यारी वंशिके! तेरी जय हो।

श्यामसुन्दर फिर रुककर कहते हैं—क्यों, ललितारानी! मेरी वंशी छिपानेका दण्ड अभी तुमसे लेना शेष है।

रूपमञ्जरी बहुत पहले रानीके होठोंपर वंशी रखते ही वहाँ आकर खड़ी हो गयी थी। श्यामसुन्दर उसकी ओर तथा सुदेवीकी ओर देखकर कहते हैं—रूप! तुमने भले घर निमन्त्रण दिया है। याद रखना, अपनी यूथेश्वरी ललितारानीके साथ मिलकर चोरीमें सहायता करनेका दण्ड तुम्हें भी भोगना पड़ेगा। सुदेवी! तुम्हारी जानकारीमें तुम्हारे कुञ्जमें यह अन्याय हुआ है कि मेरी प्यारी वंशीको मुझसे अलग कर दिया गया और वह भी पूरा षड्यन्त्र रचकर! अतः तुम्हें भी संध्या होनेके पहले-पहले इसका दण्ड भोगना पड़ेगा। सावधान रहना, पहलेसे ही सूचना दे रहा हूँ।

श्यामसुन्दरकी अतिशय प्यारभरी बात सुनकर सखियाँ पुनः प्रेममें विभोर हो जाती हैं; पर कुछ सँभलकर सुदेवी कहती हैं—जो होगा, देख लूँगी; पर तुम्हीं बताओ, यह क्या कम है कि खोयी हुई वंशी मेरे ही कुञ्जमें तुम्हारे पास पुनः आ गयी है? इसलिये चलो, संगीत-महोत्सवमें इसे ले चलो। वहाँ कुछ इसके चमत्कारका प्रदर्शन करो।

श्यामसुन्दर सुदेवीकी बात सुनकर प्रसन्न हो जाते हैं तथा श्रीप्रिया एवं ललिता, दोनोंको अपने बायें-दायें लिये-लिये पाटल कुञ्जकी ओर संगीत-महोत्सवमें सम्मिलित होनेके लिये चल पड़ते हैं।

॥ श्रीहरिवंशचन्द्रो जयति ॥

पाद संलालन लीला

राजत निकुंज धाम ठकुरानी ।
कुसुम सेज पर पौढ़ी प्यारी राग सुनत मृदु बानी ॥
बैठी ललिता चरन पलोटत लाल दृष्टि ललचानी ।
पायँ परत सजनी के मोहन हित सौं हा हा खानी ॥
भई कृपाल लाल पर ललिता दे अग्या मुसुकानी ।
आओ मोहन चरन पलोटो जैसे कुँवरि न जानी ॥
अग्या दई सखी को प्यारी मुख ऊपर पट तानी ।
बीन बजाय गाय कछु तानन ज्यों उपजै सुख सानी ॥
गावन लगे रसिक मन मोहन तब जानी महरानी ।
उठ बैठी व्यास की स्वामिनी श्रीवृंदावन रानी ॥

श्रीरङ्गदेवीके कुञ्जमें श्रीराधारानी श्रीकृष्णकी भतीक्षामें हैं। निकुञ्ज केलेके पत्तोंका बना हुआ है। स्वाभाविक ही वहाँ केलेके वृक्ष सटे-सटे लगे हुए हैं। वे केलेके वृक्ष ही खंभेका काम कर रहे हैं। उनके कोमल-कोमल पत्ते इस प्रकार पिरो दिये गये हैं मानो केलेके पत्तोंका मन्दिर बनाया गया हो। केलेके पत्ते दीवालका काम कर रहे हैं तथा कोमल पत्तोंका ही अत्यन्त सुन्दर ढंगसे बीचमें गुम्बज बना हुआ है। उसके उत्तर-दक्षिणमें दो द्वार हैं, जो गुलाबके फूलोंसे सजाये हुए हैं। पूर्व-पश्चिमकी ओर एक-एक खिड़की है, उसे भी गुलाबके फूलोंसे सजा दिया गया है। भीतरसे निकुञ्जका व्यास दस गज है। बीचमें एक पलंग बिछा हुआ है। पलंगकी रचना बड़ी कलापूर्ण है। चन्दनके पाये तथा चन्दनकी पाटीसे पलंगके आकारका निर्माण करके उन्हें पतले और सुपुष्ट रेशमी धागोंसे एक-एक अँगुलका छिद्र रखकर बुन दिया गया है। छिद्रोंमें तुरंतके खिले हुए कमलके फूलोंको इस प्रकार पिरो दिया गया है मानो सुन्दर खिले हुए कमलोंका बिछौना बिछा हुआ हो। पलंगके पाये एवं पाटियोंको भी

कमलके फूलोंसे सजा दिया गया है; ऐसा लगता है मानो कमलके फूलोंका ही पलंग है। पलंगका सिर दक्षिणकी ओर है। सिरकी ओर कमलके फूलोंका ही एक तकिया है। उसी फूलोंकी शय्यापर राधारानी बायीं करवट लेटी हुई हैं। उनका सिर दक्षिणकी ओर है तथा पैर उत्तरकी ओर।

राधारानीके चरणोंके पास ललिता अपना चरण पलंगसे नीचे लटकाये बैठी हैं। ललिताकी गोदमें ही राधारानीके चरण हैं। वे चरणोंको धीरे-धीरे दबा रही हैं। ललिताका मुख ठीक पश्चिमकी ओर है। दो हाथ पश्चिमकी ओर हटकर पलंगके सिरहाने कमलके फूलोंका ही गद्दा बिछा हुआ है, जिसपर कुछ सखियाँ बैठी हैं। उसी गद्देपर मधुमती मञ्जरी अपने कंधेपर वीणाको टेके हुए बजानेकी मुद्रामें बैठी हुई है। निकुञ्जके पश्चिम एवं उत्तरकी ओर दीवालके सहारे एक छोटी चौकी है, जिसपर दो सोनेकी परातें रखी हुई हैं। एक परातमें पके हुए केले हैं तथा दूसरी परातमें केलेके पत्तेपर मोटी-मोटी फूलोंकी मालाएँ रखी हुई हैं। उसी चौकीपर जलसे भरी हुई सोनेकी बड़ी झारी एवं सोनेके अत्यन्त सुन्दर कुछ गिलास भी हैं। निकुञ्ज केलेकी भीनी-भीनी गन्धसे सुवासित हो रहा है। राधारानीके सिरके पास, पर पीठकी ओर विशाखा बैठी हुई हैं और वे उत्तरकी ओर मुख किये हुए पंखा झल रही हैं। वह सुन्दर पंखा खसका बना हुआ है और उसमें कमलकी पंखुड़ियोंको सुन्दर ढंगसे पिरो दिया गया है।

राधारानी कभी आँखें खोलती हैं, कभी बंद कर लेती हैं। जब खोलती हैं तो एक बार उत्तरकी ओर देख लेती हैं कि श्रीकृष्ण आ रहे हैं या नहीं। अब ललिता मधुमतीमञ्जरीको संकेत करती हैं। मधुमतीमञ्जरी अत्यन्त मधुर स्वरमें वीणाको बजाती हुई गाने लगती हैं---

> कोई दिलबर को डगर बताय दे रे।
> लोचन कंज कुटिल भृकुटि कर कानन कथा सुनाय दे रे॥
> जाके रंग रंग्यो सब तन मन ताकी झलक दिखाय दे रे।
> ललितकिसोरी मेरी वाको चित की साँट मिलाय दे रे॥

गीत सुनते-सुनते श्रीराधा कुछ व्याकुल-सी हो जाती हैं तथा पलंगपर उठकर बैठ जाती हैं। उनके चरण ललिताकी गोदमें ही रहते हैं। उत्तरकी ओर कुछ देरतक देखती हुई फिर लेट जाती हैं। विशाखा पंखा चित्राके हाथमें दे देती हैं। चित्रा सिरकी ओर पलंगके पास खड़ी होकर पंखा झलती हैं। विशाखा अपना बायाँ हाथ राधारानीके लिलारपर रखकर और दाहिने हाथमें सुन्दर रूमाल लेकर मोती-जैसे छोटे-छोटे श्रम-बिन्दुओंको पोंछती हैं, जो राधारानीके मुखपर प्रेमके आवेशके कारण निकल आये थे तथा बहुत धीरे-धीरे कहती हैं-- बस, अब आते ही होंगे।

श्रीराधा अपने बायें हाथसे विशाखाके दाहिने हाथकी हथेली पकड़ लेती हैं एवं गलेमें ही जूहीके फूलोंका जो गजरा था, उसमेंसे एक फूल निकालकर उसीसे विशाखाकी हथेलीपर 'कृष्ण-कृष्ण' लिखती हैं तथा फिर उसे अपने लिलारपर रखकर और दोनों हाथोंसे उसे दबाकर आँखें मूँद लेती हैं। हाथको दबाये हुए ही बायीं ओर करवट ले लेती हैं।

इसी समय निकुञ्जकी पूर्वी खिड़कीके पास श्यामसुन्दर चुपकेसे आकर खड़े हो जाते हैं। विशाखाकी दृष्टि श्रीकृष्णपर पड़ जाती है, पर श्रीकृष्ण अपने दोनों हाथोंको जोड़कर फिर दाहिने हाथकी तर्जनी अँगुलीसे अपना मुँह ढककर विशाखाको संकेत करते हैं कि चुप रहना, कुछ बोलना मत। विशाखा मुस्कुराती हैं, कुछ बोलती नहीं; पर ललिताको धीरेसे संकेत कर देती हैं। ललिता पीछेकी ओर मुँह करके खिड़कीकी ओर देखने लगती हैं तथा श्रीकृष्णको देख लेती हैं। श्रीकृष्ण ललिताको भी कुछ न बोलनेका संकेत करते हैं। संकेत समझकर ललिता भी चुप रह जाती हैं। खिड़कीके पास खड़े रहकर फिर वहींसे श्रीकृष्ण हाथोंसे ललिताके चरणोंमें पड़कर प्रार्थना करनेका भाव दिखाते हैं तथा सांकेतिक रूपमें कहते हैं—चुपकेसे तुम हट जाओ! मैं तुम्हारे स्थानपर बैठकर राधाके चरणोंको दबाने लग जाऊँ, तुमसे यह भीख माँग रहा हूँ।

ललिता पहले तो मुस्कुराती हुई दो-तीन बार सिर हिला करके अस्वीकार करती हैं, पर फिर श्रीकृष्णके बार-बार अत्यन्त प्रेमभरी प्रार्थना करनेपर संकेत करती हैं—अच्छी बात है, धीरज धरो, वहीं खड़े रहो।

इसी समय राधारानी आँखें बंद किये हुए ही मधुमतीमञ्जरीसे कहती

है—मधुमती ! श्यामसुन्दरकी शोभाका वर्णन कर।

राधारानी तो एक नीले रूमालसे अपना मुँह ढक लेती हैं और मधुमती गायनकी आज्ञा होते ही वीणाके तारोंको छेड़ती हुई गाने लगती है—

मोहन मुखारबिंद पर मनमथ कोटिक वारौं री माई।
जहँ जहँ मैन दृष्टि परत है तहँ तहँ रहत लुभाई॥
अलक तिलक कुंडल कपोल छबि इक रसना मो पै बरनि न जाई।
गोबिंद प्रभु की बानिक ऊपर बलि बलि रसिक चूड़ामनि राई॥

संगीत प्रारम्भ होते ही राधारानी समाधिस्थ-सी हो जाती हैं। ललिता राधारानीके चरणोंको पलंगपर धीरेसे रख देती हैं। फिर उठकर खिड़कीके पास आती हैं तथा श्रीकृष्णसे धीरेसे कहती हैं—जाओ ! चरण दबाओ; पर सावधान रहना। राधारानी जानने नहीं पावें कि मेरे स्थानपर तुम आ गये हो।

श्रीकृष्ण बड़े प्रेमसे ललिताका दाहिना हाथ पकड़कर कृतज्ञता प्रकट करते हैं। फिर धीरे-धीरे उत्तरी द्वारसे आकर राधारानीके चरणोंके पास धीरेसे बैठ जाते हैं तथा धीरेसे ही राधारानीके चरणोंको अपनी गोदमें रखकर दबाने लग जाते हैं। इधर मधुमतीमञ्जरी अत्यन्त सुन्दर स्वरमें श्रीकृष्णके मुखारविन्दको देखती हुई गा रही है। कुछ देरतक वह बार-बार इस पदको दुहराती रहती है तथा श्रीकृष्ण अत्यन्त प्रेमसे श्रीराधारानीके चरण दबाते रहते हैं।

अब पद समाप्त होने लगता है तो श्रीकृष्ण उसी स्वरमें 'राधा मुखारबिंदपर काम सत कोटिक वारौं री माई' आरम्भ करते हैं। श्रीकृष्ण ज्यों ही आरम्भ करते है कि राधारानी चौंककर आँखें खोल देती हैं। आँखें खोलते ही देखती हैं कि मेरे पैर श्रीकृष्णकी गोदमें हैं। यह देखते ही वे घबरायी-सी होकर चरणोंको समेटती हुई उठकर पलंगपर बैठ जाती हैं तथा श्रीकृष्णका कंधा पकड़कर हँसने लगती हैं। श्रीकृष्ण भी खिलखिलाकर हँसते हुए उसी फूलोंकी शय्यापर लेट जाते हैं। सखियोंमें आनन्दकी बाढ़ आ जाती है। श्रीराधारानी पलंगसे नीचे उतर पड़ती

है। वे उत्तर एवं पूर्वकी ओर अपना मुँह करके, पलंगपर हाथोंको टेक करके, श्रीकृष्णके मुँहके पास सरक करके और दाहिने हाथसे श्रीकृष्णकी ठोड़ी पकड़कर कुछ सकुचाये स्वरमें मुस्कुराकर कहती है—किस वेतनके लालचमें यह सेवा हुई है।

श्रीकृष्ण मुस्कुराते हुए उठकर बैठ जाते हैं तथा श्रीप्रियाके अञ्चलसे अपने मुखका पसीना पोंछते हुए कहते हैं—वेतनकी बात ललिता जानती है, उससे पूछ लेना।

श्रीकृष्ण यह कहकर दक्षिणकी ओर सिर करके भली प्रकारसे पलंगपर लेट जाते हैं। राधारानी उसी पलंगपर श्रीकृष्णके समीप ही अपने चरण लटकाकर बैठ जाती हैं। श्रीकृष्णके बायें हाथको अपने बायें हाथसे पकड़ लेती हैं तथा चित्राके हाथसे फूलोंसे बने हुए पंखेको अपने दाहिने हाथमें लेकर श्रीकृष्णके मुखपर झलने लगती हैं। सखियाँ सेवाके कार्यमें लग जाती हैं।

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

वेणु निनाद लीला

रे मन करु नित निज यह ध्यान।
सुंदर रूप गौर स्यामल छबि जो नहिं होत बखान॥
मुकुट सीस चंद्रिका बनी कनफूल सुकुंडल कान।
कटि काछिनी सारी पग नूपुर बिछिया अनवट पान।
कर कंकन चूरी दोउ भुज पै बाजू सोभा देत।
केसर खौर बिंदु सेंदुर की देखत मन हरि लेत॥
मुख पै अलक दोउ पै बेनी नागिनि सी लहरात।
चटकीले पट निपट मनोहर नील पीत फहरात॥
मधुर मधुर अधरन बंसी धुनि तैसी ही मुसकानि।
दोउ नैनन रस भीनी चितवनि परम दया की खानि॥
ऐसो अदभुत भेष बिलोकत चकित होत सब आय।
हरीचंद बिनु जुगुल कृपा यह लख्यौ कौन पै जाय॥

श्रीप्रिया-प्रियतम श्रीरङ्गदेवीके कुञ्जमें एक फव्वारेकी सीढ़ीपर पैर लटकाये हुए विराजमान हैं। फव्वारा लगभग आठ हाथ ऊँचा है। वह अत्यन्त चमकते हुए किसी तैजस् धातुका बना है। फव्वारेके ऊपरका हंस भी उसी तैजस् धातुका बना हुआ है। उस हंसके मुँहमें डण्टीसहित जो कमल है, उसमें डण्टीका भाग तो हरे पत्थरका बना हुआ है एवं फूल लाल पत्थरका। हंसके फैले हुए पंखमें महीन छिद्र हैं, जिसमें जल निकल-निकलकर कुण्डमें गिर रहा है। उस हंसको देखनेपर यही प्रतीत हो रहा है मानो सचमुच ही सजीव हंस डण्टीसहित कमल मुँहमें लेकर फव्वारेपर बैठकर स्नान कर रहा हो।

फव्वारेके चारों ओर निर्मल जलका एक कुण्ड है। कुण्ड गोलाकार है तथा फव्वारेसे लेकर सब ओर अन्तिम छोरतककी दूरी आठ-आठ गज है। कुण्डका छोर चारों ओरसे उजले रंगके अत्यन्त चमकते हुए

संगमरमर पत्थरसे बना हुआ है। पत्थर इतना चमकदार है कि खड़े होते ही उसपर दर्पणकी भाँति प्रतिबिम्ब पड़ने लगता है। कुण्डकी चारों दिशाओंमें जलमें उतरनेके लिये सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। जल गिरनेके कारण केवल तीन सीढ़ियाँ जलके ऊपर हैं, शेष जलके भीतर हैं। कुण्डके दक्षिणकी ओर जो सीढ़ियाँ हैं, वहीं श्रीप्रिया-प्रियतम कुण्डकी पहली सीढ़ीपर पैर लटकाये उत्तरकी ओर मुख किये विराजमान हैं।

इस सुन्दर कुण्डका जल अत्यन्त निर्मल है। सूर्यकी रश्मियोंमें वह चमचम कर रहा है। कुण्डके जलपर कुछ अन्तरसे कमलके चौड़े-चौड़े पत्ते फैले हुए हैं, जिनपर लाल, उजले एवं नीले रंगके कमल खिल रहे हैं। कमलके पुष्पोंपर गुन-गुन करते हुए भौंरे मँडरा रहे हैं। कुण्डके चारों ओर पीले रंगके चमकते हुए पत्थरसे बनी हुई गोलाकार पाँच हाथ चौड़ी गच है। गचके फिर चारों ओर दस हाथ हरी दूबसे पटी हुई भूमि है, जिसे देखकर ऐसा प्रतीत होता है मानो हरे रंगका मखमल बिछा दिया गया हो। फिर चारों ओरसे गोलाकार मेंहदीकी झाड़ियाँ लग रही हैं। झाड़ियोंकी चारों दिशाओंमें एक-एक अत्यन्त सुन्दर मेहराबदार द्वार है, जिससे होकर श्रीप्रिया-प्रियतम फव्वारेके पास आया करते हैं। प्रत्येक द्वारके दोनों किनारोंपर दो छोटे-छोटे अशोक-वृक्ष हैं तथा प्रत्येक दो द्वारोंके बीचमें अत्यन्त सुन्दर एक-एक बहुत बड़ा आम्र-वृक्ष है।
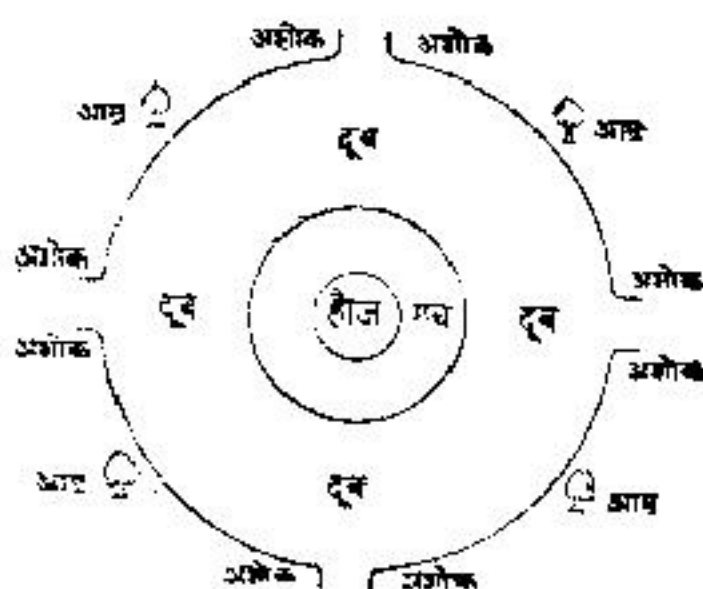
आम्र-वृक्षपर बैठी हुई कोयल 'कुहू-कुहू' रट रही है। चारों ओर आम्र-वृक्ष पीले-पीले बड़े-बड़े फलोंसे लदे हुए हैं, जिनमें कई फलोंपर बैठकर तोते छिद्र बना रहे हैं।

श्रीश्यामसुन्दरकी बायीं ओर श्रीराधा विराजमान हैं। श्रीप्रिया अपना दाहिना हाथ प्यारे श्यामसुन्दरके बायें कंधेपर रखे हुए हैं। दोनोंकी झाँकी सर्वथा अनुपम है। श्रीप्रियाके गोरे गातपर नीले रंगकी साड़ी शोभा पा रही है। प्यारे श्यामसुन्दर पीली धोती बाँधे हुए हैं एवं उनके दोनों कंधोंपरसे होती हुई पीली चादर सामनेकी ओर लटक रही है। चादरका एक छोर, जो दाहिने कंधेपरसे लटक रहा है, कुञ्जकी सीढ़ीपर पड़ा हुआ है। प्यारे श्यामसुन्दरके सिरपर फूलोंका बना हुआ मुकुट शोभा पा रहा है। मुकुटमें तीन प्रकारके फूल दिखलायी पड़ रहे हैं। उनमें जूही-फूलोंकी मात्रा अधिक है तथा बीच-बीचमें लाल एवं पीले रंगके छोटे-छोटे सुन्दर अन्य वन्य पुष्प पिरोये हुए हैं। मुकुटके बीचमें अत्यन्त सुन्दर ढंगसे छोटा-सा मयूर-पिच्छ खोंसा हुआ है। श्रीप्रियाके सिरपर भी फूलोंकी बनी हुई अत्यन्त सुन्दर चन्द्रिका है। चन्द्रिकामें जूहीकी लड़ियाँ अर्द्धचन्द्राकार रूपमें लटका दी गयी हैं, जो श्रीप्रियाके लिलारपर झूल रही हैं। श्रीश्यामसुन्दरके लिलारपर केसरकी खौर लगी हुई है एवं श्रीप्रियाके लिलारपर गोल सिंदूर-बिंदु शोभा पा रहा है। श्यामसुन्दरके दोनों कपोलोंपर अलकावलीकी दो लटें झूल रही हैं तथा श्रीप्रियाकी चन्द्रिकाके कुछ नीचे सँवारी हुई केशराशि किंचित् दीख रही है। श्रीप्रियाकी माँग (सिरके मध्य भाग) की दोनों ओर केशराशि लिलारके पास कुछ झुकाकर सँवारी गयी है। प्यारे श्यामसुन्दरकी अलकावली भी आज भ्रू-भागकी ओर कुछ झुकाकर ही सँवारी गयी है। इसीलिये चन्द्रिका एवं मुकुटके नीचेसे वे सँवारे हुए केश दीख पड़ रहे हैं।

श्रीश्यामसुन्दरके दोनों कानोंके नीचेके छिद्रमें चम्पाके फूल खोंसे हुए हैं तथा उन्हींसे सटाकर मल्लिका-पुष्पोंसे निर्मित अत्यन्त सुन्दर मकराकृत कुण्डल सुन्दर ढंगसे सजा दिये गये हैं। श्रीप्रियाके कानमें मल्लिका-पुष्पोंका बना हुआ कर्णफूल शोभा पा रहा है। श्रीश्यामसुन्दरके अत्यन्त सुन्दर नेत्र, कोयोंमें किंचित् तिरछे हुए शोभा पा रहे हैं। उन नेत्रोंसे असीम-अनन्त प्रेम, असीम-अनन्त करुणा, असीम-अनन्त आनन्दका

प्रवाह प्रवाहित हो रहा है। श्रीप्रियाकी आँखोंसे भी प्रेमका झरना झर रहा है।

यद्यपि श्रीप्रियाकी दृष्टि फव्वारेके कुण्डमें तैरती हुई हंसिनीकी ओर है, पर वे क्षण-क्षणमें प्यारे श्यामसुन्दरके मुखारविन्दकी ओर देख लेती हैं। प्रायः प्रियतम श्यामसुन्दरसे दृष्टि मिल जाती है और प्रियाके मुखारविन्दपर बार-बार लज्जाकी छाया उभर आती है। उस समय वे उस लज्जाको छिपानेके लिये अपने मुखारविन्दको हिलाकर पश्चिमकी ओर एक क्षणके लिये घुमा-सी लेती हैं; पर दूसरे ही क्षण श्रीश्यामसुन्दरकी शोभा निहारनेकी ललक अनन्तगुनी बढ़ जाती है और ग्रीवा बरबस उस ओर मुड़ पड़ती है। श्रीश्यामसुन्दरके हलके नीले रंगके तथा श्रीप्रियाके दप-दप करते हुए सुवर्ण रंगके सुन्दर कपोलोंपर एक ऐसी मधुर अरुणिमा दीख पड़ती है मानो किसी अनिर्वचनीय सुन्दर जातिके पाटल पुष्प कपोलोंके अन्तरालमें अभी-अभी विकसित हुए हैं एवं उसीकी अरुणिमा वहाँ चमचम कर रही है। श्रीश्यामसुन्दरके ताम्बूलरञ्जित अधरोंपर वंशी सुशोभित हो रही है एवं श्रीप्रियाके मुखारविन्दपर मन्द-मन्द मुसकान। श्रीप्रिया मानो मुस्कुरा-मुस्कुराकर वंशीसे संकेत कर रही हैं—वंशिके! प्यारे प्रियतम श्यामसुन्दरके होठोंपर बैठी हुई तू मुझे बहुत नचा चुकी है। अब सुन, प्यारे श्यामसुन्दरके सहित तू बंदी बना ली गयी है। देख, एक बार मेरे हृदयके अन्तरालमें देख! अब चारों ओरके कपाट बंद हैं। तू अभी मेरी इच्छासे ही बाहर आयी है, इच्छा करते ही मैं आँख बंद कर लूँगी और फिर तुझे मेरे हृदयमें ही आ जाना पड़ेगा।

श्रीश्यामसुन्दरकी ग्रीवाकी दोनों ओर तथा पीठपर अलकावलीके गुच्छे लटक रहे हैं। श्रीप्रियाकी नीली साड़ीके अन्तरालमें वेणी लहरा रही है। रह-रहकर श्रीप्रियाका अन्तर्हृदय प्रेमसे तरंगित होने लगता है, जिससे सिरका अञ्चल खिसककर पीठपर आ जाता है। उस समय वेणीके ऊपरका भाग किंचित् हिलता हुआ स्पष्ट दीखने लग जाता है। रानीके पीछे चित्रा खड़ी हैं। वे बार-बार अञ्चलको यथास्थान ठीक करती जा रही हैं। प्यारे श्यामसुन्दरके गलेमें जूही-पुष्पोंका बना हुआ मोटा गजरा लटक रहा है। गजरेके बीच-बीचमें हरी-हरी तुलसीकी पत्तियाँ पिरोयी हुई हैं। श्रीप्रियाके गलेमें भी जूही-पुष्पोंका ही गजरा है। श्रीश्यामसुन्दरका

वह गजरा तो पूर्णतः सीधा घुटनोंतक लटक रहा है, पर श्रीप्रियाका गजरा किंचित् तिरछा होकर श्यामसुन्दरकी जाँघके पास उनकी ओर मुड़ा हुआ लटक रहा है।

श्यामसुन्दरकी दोनों कलाइयोंमें अत्यन्त सुगन्धित छोटे-छोटे पीले रंगके पुष्पोंके ही बने हुए सुन्दर कङ्कण शोभा पा रहे हैं। श्रीप्रियाकी कलाईमें आगे-पीछे फूलोंके बने हुए दो आभूषण हैं। उन दोनों आभूषणोंके बीचमें किसी तैजस् धातुकी नीले रंगकी सुन्दर चूड़ियाँ हैं, जिनमें पुष्पोंकी लड़ियाँ इस प्रकार पिरो दी गयी हैं कि चूड़ियोंका नीला रंग बीच-बीचमें दीखता तो है, पर ऐसा प्रतीत होता है कि पीले रंगके फूलोंमें नीले रंगके फूल पिरोकर ही चूड़ियाँ बनायी गयी हैं। प्रिया-प्रियतमके कुहनीके पास बाँहके भागमें फूलोंके ही बने हुए अत्यन्त विचित्र आभूषण शोभा पा रहे हैं। श्यामसुन्दरकी कटिमें धोतीकी फेंट कसी हुई है तथा प्रियाकी नीली साड़ीका अञ्चल कंधेपरसे झूलता हुआ कटिके पास लटक रहा है। श्रीप्रिया उसे कटिमें अटका देनेके उद्देश्यसे कटिके पास बार-बार दबा देती हैं, पर वह रह-रहकर हिल जाता है तथा वहाँसे अञ्चलके छोरके हटते ही सिरपरसे भी वह खिसक जाता है। चित्रा उसे फिर सँभाल देती है, पर वह फिर खिसक जाता है। ऐसा होनेपर श्यामसुन्दर वंशीको होठोंसे हटाकर निर्मल विशुद्ध हँसी हँस देते हैं। चित्रा भी हँस देती है। तब श्रीप्रिया सरला बालिकाकी भाँति निर्मलतम मधुरतम स्वरमें कई बार पूछ बैठती हैं—री! हँसती क्यों है?

श्यामसुन्दरके पगका नूपुर भी चारों ओरसे पीले रंगके फूलोंसे इस प्रकार सजा दिया गया है मानो फूलोंके ही नूपुर हों। श्रीप्रियाकी बिछिया भी वैसे ही फूलोंसे सजी हुई है। इसके अतिरिक्त एड़ी एवं एड़ीके ऊपर गाँठके पास फूलोंकी लड़ियोंके कुछ ऐसे विचित्र आभूषण बनाये गये हैं कि बस कलात्मकताकी उपमा सर्वथा असम्भव है। श्रीप्रिया-प्रियतमके पीछे कुछ मञ्जरियाँ अत्यन्त सुन्दर आमोंको छीलकर उसके खण्ड एक बड़ी परातमें रख रही हैं तथा कुछ मञ्जरियाँ उन स्वर्णाभ खण्डोंको स्वर्ण-पात्रोंमें सजाती जा रही हैं।

श्रीप्रिया-प्रियतमके सामने कुण्डकी सीढ़ियोंपर ललिता एवं विशाखा कुण्डकी तीसरी सीढ़ीपर पैर टेके हुए बैठी हैं। ललिता-विशाखाकी दृष्टि

इन दोनोंकी ओर है, इसलिये वे आधी लेटी हुई अवस्थामें बैठी हैं। रङ्गदेवी सबसे नीचेवाली सीढ़ीपर बैठी हुई हैं तथा बायें हाथकी केहुनी ललिताके जंघोंपर टिकाये हुए एवं उसी हाथकी हथेलीपर अपने बायें कपोलको टेके हुए श्रीप्रिया-प्रियतमकी शोभा निहार रही हैं। श्यामसुन्दर रह-रहकर वंशीमें कुछ क्षणोंके लिये फूँक भर देते हैं तथा उतने क्षणके लिये एक सुरीली तान समस्त कुञ्जको निनादित कर देती है। वंशीसे स्वर निकलते ही कुण्डके जलमें बड़े-बड़े बुलबुले उठते हैं तथा स्वर बंद होते ही बुलबुले शान्त हो जाते हैं। ऐसा कई बार होते देखकर श्रीप्रिया सरला बालिकाकी तरह खिलखिलाकर हँस पड़ती हैं। सखियाँ भी हँस पड़ती हैं। श्रीप्रिया बड़े ही मधुर स्वरमें श्रीश्यामसुन्दरके कंधेको हिलाकर कहती हैं--बजा दो न !

श्यामसुन्दर मुस्कुराकर अत्यन्त प्यारभरे स्वरमें कहते हैं— तू कहे सो बजा दूँ।

श्रीप्रिया अत्यन्त प्यारभरी मुद्रामें अपने नयनोंकी पुतलियोंको कोयोंमें नचा देती हैं तथा प्यारे श्यामसुन्दरके बायें कंधेपर अपने दोनों हाथ रखकर बलपूर्वक दबा देती हैं। श्यामसुन्दर अतिशय प्यारभरी दृष्टिसे श्रीप्रियाकी ओर देखते हुए कहते हैं—ना प्रिये ! स्पष्ट बताये बिना मैं कैसे समझूँगा ? तू बता दे, मैं अभी-अभी बजा देता हूँ !

इस बार श्रीप्रिया प्यारे श्यामसुन्दरके कंधेको अत्यन्त प्यारसे धीरे-धीरे दबाकर उन्हें अपनी ओर झुका लेती हैं तथा बहुत धीरेसे कानमें कुछ कहकर शीघ्र ही अपना मुखारविन्द ललिताकी ओर करके निर्मल हँसी हँसने लग जाती हैं। श्यामसुन्दर कहते हैं—ठीक है, पर प्रिये ! इतनी छूट दे दे कि मैं जो गीत चाहूँ, वही गाऊँ।

श्रीप्रिया पहले तो कुछ सकुचा जाती हैं, पर फिर कुछ सावधान-सी होकर लज्जामिश्रित स्वरमें कहती हैं—अच्छी बात है, यही सही !

श्रीश्यामसुन्दरके मुखारविन्दपर प्रसन्नताकी धारा-सी बहने लग जाती है। बात यह हुई थी कि श्रीप्रिया-प्रियतमकी शोभा निहारते-निहारते रङ्गदेवी प्रेममें अधिकाधिक विभोर होती जा रही थीं। श्यामसुन्दर

बार-बार वंशीमें सुर भरते थे। सुर भरते ही कुण्डके जलमें बुलबुले उठने लगते थे। रङ्गदेवीकी दृष्टि एक बार बुलबुलेकी ओर गयी। रङ्गदेवीने सोचा- ओह! कुञ्जका अणु-अणु प्यारे श्यामसुन्दरके अनुरागमें नाच रहा है। ये जलकण भी प्यारे श्यामसुन्दरका स्पर्श चाह रहे हैं तो प्यारेसे कहूँ कि ये झुककर अपने चरण बढ़ा दें। पर ना, प्यारे श्यामसुन्दरको नहीं उठाऊँगी। तब क्या करूँ? अच्छा, ये जलकण ही उठकर प्यारेके पास जा पहुँचें।

रङ्गदेवी यह सोचती जा रही थी तथा अधिकाधिक प्रेममें विभोर होती जा रही थी। सखियोंका हृदय श्रीप्रियाके हृदयसे सर्वथा जुड़ा होता है। इसलिये श्रीप्रियाके हृदयमें रङ्गदेवीकी भावना प्रतिबिम्बित हो गयी। श्रीप्रियाने प्यारे श्यामसुन्दरको संकेत कर दिया—प्रियतम! वंशीमें ऐसा सुर भरो कि कुण्डका समस्त जल बढ़कर हम सबको सर्वथा डुबा दे।

श्रीप्रियाकी इच्छा ही श्यामसुन्दरकी इच्छा है एवं श्यामसुन्दरकी इच्छा ही श्रीप्रियाकी इच्छा है। यद्यपि श्रीप्रिया समझ जाती हैं कि प्यारे श्यामसुन्दर मेरे सम्बन्धमें ही गीत गायेंगे, पर मेरे प्रियतमको मेरा गुण गानेसे सुख मिलेगा, इसलिये अपने सामने ही अपना गुण गानेके लिये प्यारे श्यामसुन्दरको सम्मति दे देती हैं। अस्तु, श्रीप्रियाकी आज्ञा पाते ही श्यामसुन्दर फूँक भरने लगते हैं तथा अत्यन्त मधुरतम स्वरमें वंशीके छिद्रोंसे यह ध्वनि निकलने लग जाती है—

> माखन सो मन दूध सो जोबन है दधि ते अधिकै उर ईठी।
> जा छवि आगे छपाकर छाछ समेत सुधा बसुधा सब सीठी॥
> नैनन नेह चुवै कवि देव बुझावति बैन बियोग अँगीठी।
> ऐसी रसीली अहीरी अहै कहौ क्यों न लगै मन मोहनै मीठी॥

ध्वनिके आरम्भ होते ही कुण्डके जलमें बड़े-बड़े बुलबुले उठते हैं। फिर स्वर-लहरीके साथ कुण्डका जल बड़ी शीघ्रतासे बढ़ता है तथा तरंगित होने लगता है मानो स्वर-लहरीके साथ जल नाच रहा हो। जैसे ही वंशीसे यह ध्वनि निकली कि 'क्यों न लगै मन मोहनै मीठी', बस, कुण्डका जल अकस्मात् इतना अधिक एवं इतना ऊँचा बढ़ जाता है

कि एक क्षणके लिये मेंहदीके समस्त घेरेमें चारों ओर चार-चार हाथ ऊँचा जल बह जाता है। श्रीप्रिया-प्रियतम सखियोंके साथ एक क्षणके लिये उसमें डूब जाते हैं, फिर दूसरे ही क्षण जल कुण्डकी सीमामें जा पहुँचता है। श्रीप्रिया-प्रियतम एवं सखियोंके सब वस्त्र भीग जाते हैं एवं सभी आनन्दमें झूमने लग जाते हैं कुञ्जके विविध पक्षी यह दृश्य देखकर वृक्षोंकी डालियोंपरसे ही उच्च स्वरसे बोल उठते हैं—जय हो श्रीप्रिया-प्रियतमकी! जय हो! जय हो!!

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

झूलन लीला

झूलत नागरि नागर लाल।
मंद मंद सब सखी झुलावति गावत गीत रसाल ॥
फरहराति पट पीत नील के अंचल चंचल चाल।
मनहुँ परस्पर उमँगि ध्यान छबि प्रगट भई तिहिं काल ॥
सिलसिलाति अति प्रिया सीस ते लटकति बेनी नाल।
जनु पिय मुकुट बरहिं भ्रम बस तहँ ब्याली बिकट बिहाल ॥
मल्ली माल प्रिया की उरझी पिय तुलसी दल माल।
जनु सुरसरि रबि तनया मिलि कै सोभित स्रेनि मराल ॥
स्यामल गौर परस्पर प्रति छबि सोभा बिसद बिसाल।
निरखि गदाधर कुँवरि कुँवर को मन पर्यो रस जंजाल ॥

निकुञ्जकी हरी-हरी दूबको देखकर ऐसा प्रतीत होता है मानो हरे मखमलका गद्दा बिछाया हुआ है। उसीपर बहुत बड़ा अत्यन्त हरा-भरा कदम्बका पेड़ है। इसकी एक मोटी डाल उत्तरकी ओर फैली हुई है। उसीमें झूला डला हुआ है। झूलेको फूलोंसे इस प्रकार सजा दिया गया है कि केवल फूल-ही-फूल दिखायी पड़ रहे हैं। जिस डोरीके सहारे झूला कदम्बसे लटक रहा है, उस डोरीके चारों ओर श्वेत कमल गूँथ दिये जानेसे ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो कमलके फूलोंकी डोरीसे झूला लटकाया हुआ है। झूला हंसके आकारका है। उसे भी कमलसे इस प्रकार सजा दिया गया है मानो कमलके फूलोंका एक हंस है और वह कमलके फूलोंकी दो डोरियोंपर अपना पंख फैलाकर झूल रहा है। उसी कमलके फूलोंवाले हंसकी पीठपर (झूलेके बीचमें) एक हाथ ऊँचा, एक हाथ चौड़ा एवं दो हाथ लंबा उजले कमलके फूलोंका एक आसन है तथा उसमें सहारा देनेके लिये दोनों ओर हत्थे लगे हुए हैं। पीछे पीठकी ओर भी सहारा देनेके लिये करीब छः अंगुल चौड़ा एवं दो हाथ लंबा एक डंडा

लगा है। यह भी उजले कमलके फूलोंसे भली प्रकार गुँथा हुआ है। उसे जहाँसे भी देखा जाये, केवल खिले हुए कमलके फूल ही दिखलायी देते हैं।

इसीपर दक्षिणकी ओर श्रीकृष्ण एवं उत्तरकी ओर श्रीराधारानी बैठी हैं। राधारानीका दाहिना हाथ श्रीकृष्णके कंधेपर है एवं बायाँ हाथ आसनके हत्थेपर। श्रीकृष्ण दोनों हाथोंसे वंशी बजा रहे हैं। सखियोंका एक बहुत बड़ा झुण्ड झूलेके पूर्वकी ओर तथा एक पश्चिमकी ओर खड़ा है। सखियाँ आनन्दमें डूबी हुई हैं तथा अत्यन्त मधुर स्वरमें गाती हुई झूलेको धीरे-धीरे पूर्वसे पश्चिमकी ओरकी गतिसे हिला रही हैं। झूला झूलता हुआ जब पूर्वकी ओर आता है तो पूर्वकी ओरकी सखियाँ उसे स्पर्श करके थोड़ा पश्चिमकी ओर ठेल देती हैं तथा जब पश्चिमकी ओर आता है, तब पश्चिमकी ओरकी सखियाँ उसे स्पर्श करके पूर्वकी ओर ठेल देती हैं। पश्चिमकी ओरकी सखियोंको ऐसा प्रतीत हो रहा है कि झूलेका मुँह पश्चिमकी ओर है तथा राधारानी एवं श्रीकृष्ण पश्चिमकी ओर मुँह किये हुए बैठे हैं। पूर्वकी ओरकी सखियोंको ऐसा प्रतीत हो रहा है कि श्रीराधा एवं श्रीकृष्ण पूर्वकी ओर मुँह किये बैठे हैं।

झूलेकी गति तो पूर्व-पश्चिमकी है, पर उस समय जो पवन बह रहा है, इसकी गति उत्तरसे दक्षिणकी ओर होनेसे झूलेके पासकी वायुकी गति अनिश्चित हो गयी है। उसी वायुके झकोरेसे श्रीकृष्णके कंधेपर जो पीताम्बरकी चादर है, उसका एक छोर फर-फर करता हुआ उड़ रहा है एवं श्रीप्रियाका नीला अञ्चल भी फर-फर करता हुआ उड़ रहा है। श्रीकृष्णके दोनों हाथ वंशीके छिद्रपर लगे रहनेके कारण चादर निर्बाध उड़ रही है। श्रीप्रिया बार-बार अपने अञ्चलको बायें हाथसे सँभालती हैं, पर उनके सँभालनेपर भी वह फिर उड़ जाता है। जब सखियाँ झूलेको बहुत झटकेसे ठेलने लगती हैं, उस समय पीताम्बर एवं नीला अञ्चल, दोनों अत्यधिक फरफराने लगते हैं तथा उस समय ऐसा प्रतीत होता है मानो श्रीप्रियाके हृदयमें श्यामसुन्दरकी जो छवि निरन्तर रहती है तथा श्यामसुन्दरके हृदयमें श्रीप्रियाकी जो छवि सदा-सर्वदा रहती है, वे दोनों छवियाँ पीताम्बर एवं नीलाम्बर (नीले अञ्चल) के रूपमें प्रकट होकर श्रीकृष्ण एवं श्रीराधाके साथ झूला झूल रही हों। श्यामसुन्दरकी घुँघराली अलकावली वायुके झकोरोंसे हिल रही है। इसी समय वायुके वेगके कारण

श्रीप्रियाके सिरसे अञ्चल खिसककर पीठपर आ जाता है। श्रीप्रिया चाहती हैं कि अञ्चलको यथास्थान कर दूँ; पर झूलेका वेग बढ़ जानेके कारण वे गिरनेके भयसे श्यामसुन्दरके बायें कंधेको दोनों हाथोंसे पकड़ लेती हैं। झूलेकी गतिके साथ अब प्रियाजीकी वेणी भी स्पष्ट रूपसे झूलती हुई दीख रही है। उस चञ्चल वेणीको देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो काली नागिन श्रीप्रियाकी पीठपर लटकी हुई हो; पर वहीं पासमें श्यामसुन्दरके मोर-मुकुटको देखकर उसे वहाँ मयूरका भ्रम हो रहा हो और वह उसके डरसे व्याकुल होकर श्रीप्रियाकी पीठपर रेंग रही हो। श्यामसुन्दरके मुकुटका मोर-पंख भी वायुमें फर-फर कर रहा है। श्रीप्रियाके द्वारा बायाँ कंधा पकड़ लिये जानेके कारण वे बायीं ओर कुछ झुक-से गये हैं। श्रीश्यामसुन्दरके गलेमें तुलसीकी माला है तथा श्रीप्रियाके गलेमें चमेलीके फूलोंकी माला है। इस बार वायुके झोंकेसे उड़कर वे दोनों (तुलसी एवं चमेलीके फूलोंकी) मालाएँ आपसमें उलझ गयी हैं। अब झूलेकी गति और भी तीव्र हो गयी है। इसी समय उन उलझी हुई मालाओंपर श्रीप्रियाके गलेकी मोती-माला आकर उलझ जाती है। इन तीन मालाओंके उलझ जानेसे ऐसी शोभा हो रही है मानो चमेली-फूलकी मालारूपी गङ्गाजीमें तुलसी-मालारूपी यमुनाजी आकर मिली हों तथा मोतीकी माला मानो हंसोंकी पंक्ति हो।

इस प्रकार गोरी श्रीराधा एवं श्यामसुन्दरकी छवि हिंडोलेके झकोरेसे प्रतिक्षण नित्य नूतन होती जा रही है।

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

नौका विहार लीला

हंसके आकारकी उजली छः नावें श्रीराधाकुण्डके चमकते हुए जलपर तैर रही हैं। नावके बीचमें पीले रंगकी रेशमी गद्दीसे जड़ा हुआ एक सिंहासन है। वह सिंहासन ऐसा है कि बैठे-ही-बैठे इच्छानुसार पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण किसी भी दिशाकी ओर उसका मुँह किया जा सकता है। छः नावोंपर सखियाँ चढ़ी हुई हैं। श्रीराधा एवं श्रीकृष्ण भी चढ़े हुए हैं; पर प्रत्येक नावकी सखियोंको यही अनुभव हो रहा है कि मैं तो श्रीराधा एवं श्रीकृष्णकी नावपर ही चढ़ी हुई हूँ। नाव टेढ़ी-मेढ़ी घूमती हुई पूर्वकी ओर बह रही है। दो सखियाँ नावकी डाँड खे रही हैं।

नावके मुँहवाले सिरेके पास श्रीकृष्ण दक्षिणकी ओर मुँह किये हुए खड़े हैं। उनके पास ही श्रीप्रिया हाथमें सोनेका कटोरा लेकर दक्षिणकी ओर मुँह किये खड़ी हैं। राधाकुण्डके पूर्व एवं दक्षिणके कोनेसे कुछ हंस बड़े सुन्दर ढंगसे कलरव करते हुए जलमें तैरते हुए नावोंकी ओर बढ़ रहे हैं। आकाशमें मेघ छाये हुए हैं। रिमझिम-रिमझिम शब्द करती हुई कुछ वर्षा हो रही है। राधाकुण्डके जलपर पानीकी बूँदोंके गिरनेसे बुलबुले उठ रहे हैं। राधारानीके निकट रूपमञ्जरी हाथमें सोनेकी बड़ी झारी लटकाये खड़ी है। झारीमें दूध भरा हुआ है।

अब नावके पास हंस पहुँच जाते हैं। हंसोंके पास पहुँचते ही श्रीकृष्ण बैठ जाते हैं। उनके बैठते ही राधारानी भी बैठ जाती हैं। राधारानीके हाथमें जो कटोरा है, उसमें रूपमञ्जरी दूध भर देती है। राधारानी उसे श्रीकृष्णके हाथमें देकर बायें हाथसे श्रीकृष्णका कंधा पकड़ लेती हैं एवं दाहिने हाथको नीचे टेककर हंसोंकी ओर देखने लगती हैं। हंस आनन्दमें मग्न हुआ अपनी चोंचको श्रीकृष्णके कटोरेमें डालकर दूध पीता है। एक बार थोड़ा पीकर फिर उठाता है तथा

मधुर कलरव करके फिर पीने लगता है। इस प्रकार बार-बार थोड़ा-थोड़ा पीकर सिर उठाता है। राधारानी छोटी सरला बालिकाके समान हंसका दूध पीना देखकर बीच-बीचमें खिलखिलाकर हँस पड़ती हैं। हंसोंके बारी-बारीसे दूध पीनेके बाद जब हंसिनी पीनेके लिये आती है तो श्रीकृष्ण बायें हाथसे राधारानीके दाहिने कपोलको धीरेसे स्पर्श करके कहते हैं—अब तू पिला।

राधारानी कटोरेको हाथमें ले लेती हैं तथा हंसिनीको संकेत करके कहती हैं—हंसिनी! इधर आ। मैं तुम्हें प्यारे श्यामसुन्दरके अधरामृतका पान कराती हूँ

हंसिनीको ऐसा कहनेके बाद राधारानी पीछे मुड़कर विशाखाको कुछ संकेत करती हैं। विशाखा एक दूसरे कटोरेमें दूध भरकर राधारानीके हाथोंमें पकड़ा देती हैं। राधारानी पहलेवाला कटोरा नावपर रख देती हैं तथा दूसरे कटोरेको श्रीकृष्णके होठोंकी ओर बढ़ाती हुई कहती हैं—अब थोड़ा तुम्हें पीना पड़ेगा, नहीं तो मैं झूठी हो जाऊँगी। मैंने हंसिनीको तुम्हारे अधरामृत-पान करानेका निमन्त्रण दिया है।

श्रीकृष्ण कटोरेको पकड़कर थोड़ा पीनेके लिये जैसे ही मुंह बढ़ाते हैं कि वैसे ही मधुमङ्गल घाटपर आ पहुँचता है तथा पुकार करके कहता है — अरे कान्हूँ! ठहरना, ठहरना!

ठहरनेके लिये कहकर मधुमङ्गल पानीमें छपाकसे कूद पड़ता है। श्रीकृष्ण उसे लानेके लिये एक नावपरकी सखियोंको संकेत करते हैं; पर मधुमङ्गल तीव्र गतिसे तैरता हुआ चला आता है तथा श्रीकृष्णकी नावपर तुरंत चढ़कर हँसता हुआ कहता है—अरे, तुमने मुझे अच्छा ठगा था, पर मैं ठीक समयपर आ गया! दूधका कटोरा चल रहा है; पर सुन लो मेरी बात, दूध पीना मत। आज षष्ठी है। षष्ठी देवीकी पूजा माँ यशोदा करेंगी। उन्होंने कहा है कि श्रीकृष्णको आज पूजा होनेके पहले दूध नहीं पीना चाहिये।

श्रीकृष्ण कटोरा रखकर मन्द-मन्द मुस्कुराते हुए कहते हैं — राधे! अब तो कैसे पीऊँ?

विशाखा हाथमें एक रूमाल उठा लेती है। एक बड़ी परातमें चुँड़िया-मिठाई भरकर नावमें ही रखी थी। विशाखा उस मिठाईमेंसे थोड़ा-सा रूमालमें बाँधकर मधुमङ्गलके हाथमें पकड़ा देती है तथा कहती है — मधुमङ्गल! तू तो ब्राह्मणका लड़का है। शास्त्र तुमने पढ़े ही हैं। तू ही कोई उपाय बता कि जिससे श्रीकृष्ण दूध पी सकें; क्योंकि वे नहीं पीयेंगे तो हमारी सखी राधारानीकी बात झूठी हो जायेगी। राधाने हंसिनीको श्रीकृष्णके अधरामृत-प्रसाद पानेके लिये निमन्त्रित किया है।

मधुमङ्गल आँखें बंद करके कुछ क्षण सोचता है तथा फिर कहता है—एक उपाय तो है। स्त्रीके शरीरमें षष्ठी देवीका निवास है। इसलिये यदि राधा पहले पी ले तथा उसमेंसे फिर श्रीकृष्ण पीयें तो व्रतका नियम नहीं टूटेगा; क्योंकि वह दूध प्रसाद हो जायेगा।

मधुमङ्गलकी बात सुनकर श्रीकृष्ण कहते हैं—प्रिये! अब लो, यदि तुम्हें हंसिनीको दूध पिलानेकी इच्छा हो तो पहले तुम्हें पीना पड़ेगा। नहीं तो, मैं यदि पहले पीऊँगा तो यह मधुमङ्गल बड़ा पाजी है, मैयासे जाकर कह देगा और मैया अप्रसन्न होगी।

राधारानी मुस्कराती हुई विचारने लगती हैं कि मैं तो अच्छी फँस गयी। राधारानी सोच ही रही थीं कि वर्षा होने लग जाती है और वर्षाका जल दूधके कटोरेमें भी आकर गिरने लगता है। श्रीकृष्ण मुस्कराते हुए कहते हैं—देखो, अब देरी मत करो! यदि तुम्हें हंसिनीको दूध पिलाना हो तो स्वयं पी लो, फिर मैं भी पी लूँ। नहीं पिलाना हो तो नाव आगे बढ़ाऊँ।

हंसिनियोंकी मण्डली उसी समय सिर उठा-उठाकर बड़े सुन्दर ढंगसे इस प्रकारकी मुद्रा बनाती है मानो राधारानीसे प्रार्थना कर रही है—श्रीकृष्णप्रियतमे! हमें अपने दोनोंका अधरामृत पिलाकर ही नाव आगे बढ़ाना।

श्रीराधा कुछ सकुचायी-सी होकर अपना मुँह पश्चिमकी ओर करके कटोरेके दूधको अपने होठोंसे किंचित् छू देती हैं। छूते ही श्रीकृष्ण कटोरेको ले लेते हैं। वे दो-तीन घूँट पी जाते हैं तथा कहते हैं—बेचारे

हंस तो यों ही रह गये। इन्हें तो तुम्हारा प्रसाद मिला ही नहीं। एक कटोरा और प्रसाद बना दो तो फिर हंस भी पी लें।

केवल संकेतकी देर थी कि विमलामञ्जरीने एक और कटोरा भरकर राधाके होठोंसे लगा दिया। इस कटोरेसे भी श्रीकृष्ण एक-दो घूँट पी लेते हैं। अब एक कटोरेमें श्रीराधा हंसिनीको एवं दूसरे कटोरेमें श्रीकृष्ण हंसको दूध पिलाते हैं। हंस-हंसिनी आनन्दमें डूबकर पंख फुला-फुलाकर दूध पीते हैं।

इधर मधुमङ्गल विशाखाके दिये हुए बूँदियोंको थोड़ा चखता है तथा श्रीकृष्णसे कहता है—अरे कान्हूँ भइया! ऐसी बढ़िया बूँदिया है कि क्या बताऊँ? थोड़ा तुम भी खाओ।

बूँदिया खिलानेके लिये मधुमङ्गल श्रीकृष्णके मुँहके सामने रूमालको अपनी अञ्जलिमें भरकर रख देता है। श्रीकृष्ण दाहिने हाथमें कटोरा पकड़े हुए थे एवं बायें हाथसे हंसोंके सिरपर हाथ फेरते जा रहे थे। अतः उन्होंने कहा—तुम्हीं थोड़ा खिला दो।

मधुमङ्गल बायें हाथमें रूमालको झोलीके रूपमें बनाकर टाँग लेता है तथा दाहिने हाथसे बूँदिया निकालकर श्रीकृष्णके मुँहमें देता है। श्रीकृष्ण धीरे-धीरे पाँच-सात दाने खाते हैं। इधर वर्षा कभी अधिक और कभी धीमी होती ही रही है, जिससे श्रीकृष्णका पीताम्बर एवं श्रीराधारानी तथा सखियोंकी नीली साड़ी सर्वथा भीग गयी है। वर्षाके जलकी धारा ललाटपरसे बह-बहकर श्रीकृष्ण, श्रीराधा एवं सखियोंके कपोलोंपर आ रही है।

हंस जब दूध पी चुकते हैं, तब मधुमङ्गल रूमालवाले बूँदियोंको परातमें डाल देता है तथा विशाखासे कहता है—तू बड़ी धूर्त है। मुझे थोड़ेसे बूँदिये देकर ठगने आयी है। मैं ठगानेका नहीं! अभी-अभी तेरे कुञ्जमें जाकर देखता हूँ कि आज कौन-कौनसे नये फल लगे हैं। तू चाहती है कि मैं इन बूँदियोंमें भूलकर तुम्हारे कुञ्जमें जाना भूल जाऊँ। क्यों यही बात है न?

सखियाँ हँसती हैं। मधुमङ्गल धड़ामसे पानीमें कूदकर तैरने लगता

है। तैरते हुए उत्तर-पूर्व दिशामें विशाखाके कुञ्जकी ओर बढ़ने लगता है तथा श्रीकृष्णकी नाव पूर्वकी ओर चलने लगती है। नावका मुँह पूर्वकी ओर होते ही बत्तक-पक्षियोंका एक झुण्ड 'कों-कों' करता हुआ बहुत शीघ्रतासे नावकी ओर बढ़ता है। श्रीकृष्ण खड़े होकर पूर्वकी ओर मुख करके उन्हीं पक्षियोंको देखने लग जाते हैं। श्रीराधा भी उनकी दाहिनी ओर खड़ी होकर पक्षियोंको देखती हैं। नाव कुछ ही आगे बढ़ी थी कि बत्तक-पक्षियोंका झुण्ड वहाँ आ जाता है। श्रीकृष्ण नावके मुखको उत्तरकी ओर करनेका संकेत करते हैं। दाहिनी ओरवाली सखी डाँडको दबाकर नावको उधर ही घुमा देती है। श्रीकृष्ण एवं श्रीराधा बड़े प्यारसे बत्तक-पक्षियोंको छू-छूकर उनका स्वागत करते हैं। लवङ्गमञ्जरी बूँदियोंवाली परातको पीछेसे लाकर राधा एवं श्रीकृष्णके बीच रख देती है। श्रीराधा श्रीकृष्णके हाथमें अपनी अञ्जलियोंसे भर-भरकर बूँदिया देती हैं। श्रीकृष्ण अपनी अञ्जलिको आगे बढ़ाते हैं तथा बत्तक उनकी अञ्जलिमें चोंच डालकर बूँदिये खाते हैं। एक बत्तक उछलकर नावपर चढ़ जाता है। राधारानी हँसती हुई, पर कुछ डरी-सी होकर श्रीकृष्णके पीछे जाकर उनका कंधा पकड़ लेती है। बत्तक बड़े प्यारकी मुद्रा बनाकर अपना सिर कभी नीचे करता है, कभी ऊपर उठाता है तथा बीच-बीचमें बोलता जाता है। श्रीकृष्ण हँसते हुए अपना सिर दाहिनी ओर घुमाते हैं। फिर ऊपर उठाकर राधासे मुस्कुराते हुए कहते हैं—मैं समझ रहा हूँ कि तू बत्तकसे डर गयी है। क्यों, मैं ठीक कह रहा हूँ न?

राधारानी लजायी-सी होकर कहती हैं—नहीं, डरूँगी क्यों? देखो, मैं अभी इस बत्तकको खिलाती हूँ।

राधारानी अपने दाहिने हाथकी अञ्जलिमें बूँदिये भरकर बत्तकको खिलाने लगती हैं। नावपर जो बत्तक था, वह खाने लगता है। उसे खाते देखकर पाँच-सात बत्तक एक साथ ही नावपर चढ़ जाते हैं तथा राधारानीके हाथोंमें चोंच डालकर बूँदिया खाना चाहते हैं। राधारानी बूँदियोंको नावपर गिरा देती हैं तथा तुरंत उठकर श्रीकृष्णका कंधा पकड़कर हँसने लगती हैं

श्रीकृष्ण खिलखिलाकर हँस पड़ते हैं तथा कहते हैं—मैंने कहा

था न कि तुझे डर लगता है; पर तू अपना डर छिपानेके लिये साहस करके गयी थी। कहो, भाग क्यों आयी ?

राधारानी मुस्कुराती हुई खड़ी रह जाती हैं। फिर बैठकर श्रीकृष्णके कानोंमें कुछ कहती हैं। श्रीकृष्ण 'ठीक है' कहकर बत्तकको खिलाने लग जाते हैं।

ललिता उसी समय पीछेसे आकर श्रीकृष्णके पीताम्बरके एक छोरको खींचकर उसे पहले निचोड़ती हैं; क्योंकि वह वर्षाके कारण पूर्णतः भीग गया था। उसे निचोड़कर उसमें थोड़े बूँदिये बाँध देती हैं। शेष बूँदियोंको कमलके पत्तोंके दोनोंमें भर-भरकर श्रीकृष्णके हाथमें देती जाती हैं। वहीं चार-पाँच सखियाँ नीचेसे कमलके पत्तोंको तोड़-तोड़कर और दोने बना-बनाकर ललिताको देती जा रही हैं। श्रीकृष्ण बूँदियोंसे भरे दोनोंको पानीमें छोड़ते जाते हैं। वे दोनोंको जैसे ही पानीपर छोड़ते हैं कि बड़ी-बड़ी मछलियाँ उन्हें उलट देती हैं तथा बूँदिये बिखरकर पानीमें गिर पड़ते हैं और मछलियाँ इन्हें खाती हैं। इस प्रकार हंस, बत्तक एवं मछलियोंको खिलानेके बाद श्रीकृष्ण उठकर खड़े हो जाते हैं तथा नावको फिर पूर्वकी ओर घुमानेका संकेत करते हैं।

अब अत्यधिक वर्षा होने लगती है। पानीकी बड़ी-बड़ी बूँदें नावपर एवं राधाकुण्डके जलपर गिरने लगती हैं। आकाशमें और भी घने मेघ छा जाते हैं तथा ऐसा ढंग हो जाता है कि लगातार अब कुछ देरतक वर्षा होगी। अतः श्रीकृष्ण, श्रीराधा एवं सखियोंमें इस बातका विचार होने लगता है कि नावसे उतरकर कुञ्जमें चलें या इसी वर्षामें नाव चलानेकी होड़ लगाकर खेलें। श्रीराधा श्यामसुन्दरसे कहती हैं—लक्षण ऐसे हैं कि वर्षा तो बहुत अधिक होगी और देरतक होगी, इसलिये कुञ्जमें चले चलें।

तभी ललिता कहती हैं—श्यामसुन्दर आज खेलते तो मैं देखती कि तुम हारते हो या मैं हारती हूँ।

श्यामसुन्दर खुलकर हँसते हुए कहते हैं—ठीक। चल, चल। आज

मैं तेरे फंदेमें आनेका नहीं । तू चाहती है कि कलवाले दाँवको सस्ते-सस्ते चुका दूँ; पर यह होनेका नहीं ।

ललिता मुस्कुराती है; नावकी डाँडपर स्वयं बैठकर खेने लग जाती है तथा कहती है—नहीं जो, मैं ऐसी-वैसी नहीं हूँ कि तुम्हें धोखा देकर दाँव चुका दूँ । मैं तो चाहती हूँ कि कुछ देर नाव चलाकर देख लो । आज पानीमें मैं तुम्हें हराकर दिखाऊँ ।

श्रीकृष्ण—तो कलका दाँव इसमें नहीं गिना जायेगा ।

ललिता—नहीं, सर्वथा नहीं ।

श्रीकृष्ण—तब क्या हानि है ? चल, देख ।

फिर श्रीकृष्ण खायी डाँडको पकड़ लेते हैं । ललिता डाँड चलाना छोड़कर दूसरी-दूसरी नावोंपर जो सखियाँ हैं, उन्हें कुछ संकेत करती हैं । संकेत पाते ही सब नावें तुरंत घूमकर पूर्वकी ओर मुँह करके एक पंक्तिमें खड़ी हो जाती हैं । खेल आरम्भ होनेका संकेत देनेके लिये तथा खेलमें हार-जीतका निर्णय करनेके लिये श्रीकृष्णके द्वारा रूपमञ्जरी चुनी जाती है और खेल प्रारम्भ हो जाता है ।

॥ श्रीजयतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

दीपावली लीला

अपने भवनकी अटारीकी सबसे ऊपरकी छतपर श्रीराधारानी आकाशदीपकी रेशमी डोरीको अपने हाथमें पकड़े हुए दक्षिणकी ओर मुख किये खड़ी हैं। आज दीपावली है, इसलिये समस्त नन्द-व्रजमें संध्याके समय विशेष चहल-पहल है। प्रत्येक छतकी अटारीपर व्रज-सुन्दरियोंकी टोली खड़ी है। राधारानी भी आकाशदीप प्रज्वलित करने जा रही हैं। वे यद्यपि डोरी पकड़े हुए दक्षिणकी ओर मुख किये खड़ी हैं, पर कुछ ही क्षणके अन्तरसे अपने पीछेकी ओर बार-बार दृष्टि डालती हुई नन्दबाबाकी गोशालाकी ओर देखने लग जाती हैं। आज अभीतक समय हो जानेपर भी श्यामसुन्दर गोशालामें गाय दुहने नहीं आये हैं, अतः रानी बड़ी उत्सुकतासे उधर ही बार-बार श्यामसुन्दरके आनेकी बाट देख रही हैं।

छतपर चारों ओर घेरा लगा हुआ है। पश्चिमी ओरके घेरेसे बँधे हुए मणि-जटित स्तम्भपर आकाशदीप लटक रहा है। उसे नीचे उतारनेके लिये नीले रेशमकी डोरी उस दीपदानीसे (जिसके ऊपर आकाशदीप रखा रहता है, उससे) जोड़कर लटका दी गयी है। रानी उसी डोरीके सहारे धीरे-धीरे उस दीपदानीको नीचे उतार रही हैं। दीपदानी एक विचित्र प्रकारके शीशेकी बनी हुई है, जिसमेंसे भीतरके दीपकका प्रकाश अनन्तगुना होकर प्रकाशित होता है। दीपदानीके ऊपर नीले रंगका पत्थर जड़ा हुआ है। रानी सोनेके दीपमें घी भरकर उसमें कपासकी बत्ती भिगोती हैं। ललिताके हाथमें धूपबत्ती-जैसी कोई बहुत मोटी सुगन्धित वर्तिका है, जो धीमी-धीमी जल रही है तथा धूएँके समान उसमेंसे पीले रंगकी अग्निशिखा प्रकट हो रही है। उस शिखासे अत्यन्त विलक्षण सुगन्धि निकल रही है, जिससे सारी छत सुवासित हो गयी है। रानी उस अग्निशिखासे घी-भरे प्रदीपको सटा देती हैं। प्रदीप जल जाता है। रानी उसे हाथमें लेकर उसी दीपदानीमें रख देती हैं। रूपमञ्जरीके हाथमें जलकी झारी है, उससे रानी हाथ धोती हैं। गुणमञ्जरीके हाथमें फूलोंसे भरी थाली है, उसमेंसे चार-पाँच

सुन्दर गुलाबके फूलोंको लेकर रानी उस दीपके चारों ओर रख देती हैं। रानी यह कर भी रही हैं तथा बार-बार नन्दबाबाकी गोशालाकी ओर देख भी लेती हैं। अभीतक श्यामसुन्दर गोशालामें नहीं आये हैं।

प्रदीप तैयार हो जानेपर रानी उस दीपककी परिक्रमा करती हैं तथा मन-ही-मन कहती हैं—आकाशके अधिष्ठातृ देवता ! मेरे मनकी दशा देखकर मेरा अपराध क्षमा कर दें। देव ! मैं दीपक भी ठीकसे नहीं जला सकी हूँ। क्या करूँ, सर्वथा असमर्थ हो गयी हूँ। मैं चाहती हूँ कि दीपकी बत्ती ठीकसे बनाकर आपको दीप-दान करती, दीप-दान करके प्रियतम श्यामसुन्दरके मङ्गलकी भीख माँगती, पर ऐसा कर नहीं पाती। दीपक हाथमें लेती हूँ, पर वहाँ उस दीपकके स्थानपर मुझे श्यामसुन्दर दीखने लग जाते हैं। कपासकी बत्ती हाथमें लेती हूँ, हाथपर रखते ही हाथोंमें श्यामसुन्दरकी छवि दीखने लग जाती है। दीपदानीपर दृष्टि डालती हूँ, पर मुझे दीपदानी नहीं दीखती, वहाँ श्यामसुन्दर दीखते हैं। डोरीको पकड़कर मैं खींचना चाहती हूँ, उस डोरीमें ही मेरे प्रियतम मुझे हँसते हुए दीखने लग जाते हैं। मैं सोचती हूँ कि ललिताको पुकारूँ और पुकारकर कहूँ कि बहिन ! मेरी ओरसे तू पूजा कर दे; पर ललिताके स्थानपर श्यामसुन्दरको पुकारने लग जाती हूँ। कहना कुछ चाहिये, कह कुछ जाती हूँ। इसीलिये हे देव ! आप रुष्ट न हों। मेरी इस विधिहीन पूजासे ही आप प्रसन्न हो जायँ और एक भीख दें। देव ! श्यामसुन्दरकी दासी यह राधा आपसे भीख माँगती है कि मेरे प्रियतम श्यामसुन्दर अनन्त कालतक सुखी रहें।

प्रार्थना करते-करते रानी भावाविष्ट हो जाती हैं तथा आकाशमें एवं अपने चारों ओर—पूर्व-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण—सर्वत्र उन्हें श्यामसुन्दर दीखने लग जाते हैं। हाथमें डोरीको पकड़े हुए पार्थिव पुत्तलिकाकी भाँति वे खड़ी रह जाती हैं। ललिता स्थिति समझ जाती हैं तथा डोरीको उनके हाथसे छुड़ाकर चित्राके हाथमें दे देती हैं। पासमें ही घेरेसे सटा हुआ जो एक मखमली आसन है, उसपर वे रानीको बैठा देती हैं।

कुछ देर बाद रानीको बाह्य ज्ञान होता है तथा वे पुनः उसी गोशालाकी ओर देखने लग जाती हैं। इस समय कुन्दवल्ली छतपर आती है। उसे अचानक आयी देखकर रानीको आश्चर्य होता है। कुन्दवल्ली रानीके

कंधोंको पकड़कर प्यारसे उसके सिरको चूमकर कहती है—चल, तुझे मैयाने अभी-अभी शीघ्र बुलाया है।

रानीके मुखारविन्दपर उत्कण्ठा एवं आनन्दके चिह्न प्रकट हो जाते हैं। फिर अत्यन्त धीमे स्वरमें किंचित् भयमिश्रित मुद्रासे वे पूछती हैं—आज्ञा मिल गयी है?

कुन्दवल्ली हँसकर कहती है—हाँ-हाँ, सब विधि-विधान पूरा करके ही आयी हूँ।

यह सुनते ही रानीकी प्रसन्नताकी सीमा नहीं रहती। वे बड़ी शीघ्रतासे छतकी सीढ़ियोंसे उतरती हैं तथा उतरकर भवनके पश्चिमी उपवनमें आ पहुँचती हैं। रानीके पीछे कुन्दवल्ली, ललिता आदि दौड़ती-सी चल रही हैं। रूपमञ्जरी एक नीले रंगकी चादर लेनेके लिये पीछे लौट पड़ती है तथा शीघ्र ही चादर लेकर दौड़ती हुई पुनः राधारानीके पास पहुँच जाती है। रानी उत्कण्ठावश इतनी शीघ्रतासे चल रही हैं कि इतनी देरमें ही वे उपवनके द्वारको पार करके मुख्य मार्गपर आ गयी हैं। इसी समय रूपमञ्जरी पीछेसे आकर उनपर चादर डाल देती है। चादरको लपेटती हुई रानी नन्द-भवनकी ओर शीघ्रतासे बढ़ने लगती हैं।

यद्यपि मणियोंके अत्यधिक प्रकाशसे समस्त मार्गपर दिनका-सा उजाला हो रहा है, फिर भी दीपावलीका दिन होनेके कारण सोनेके प्रदीप स्थान-स्थानपर जलाये गये हैं। नन्द-भवनके मुख्य द्वारपर गोप-गोपियोंकी भीड़-सी लग रही है। आज श्यामसुन्दर स्वयं दीपक जला-जलाकर मार्ग एवं भवनको सजा रहे हैं। श्यामसुन्दरकी विलक्षण शोभा है। उनकी अलकावली अत्यन्त सुन्दर ढंगसे सँवार दी गयी है तथा उनके केशके गुच्छ पीछे ग्रीवापर लटक रहे हैं। वे अत्यन्त सुन्दर फूलोंका बना हुआ मुकुट, जिसके आगे एक मोरपंख लगा है, सिरपर बाँधे हुए हैं। पीली चादर दोनों कंधोंपरसे होती हुई सामनेकी ओर लटक रही है। वे रेशमी लाल किनारीवाली पीली धोती पहने हुए हैं और उसका एक छोर कमरमें कसी हुई फेंटसे निकलकर आगे लटक रहा है। श्यामसुन्दरकी बायीं ओर मधुमङ्गल हाथमें घीसे भरी झारी लेकर

घूमता हुआ चल रहा है। सुबलने बहुतसे दीपकोंसे भरी सोनेकी परात उठा रखी है। श्रीदाम कपासकी बत्तियोंका पुलिंदा लिये हुए श्यामसुन्दरके पीछे-पीछे चल रहा है। उधर मैया एक बार भवनके भीतर जाती हैं, दूसरे ही क्षण बाहर आकर घबरायी-सी उधर देखने लग जाती हैं, जिधर श्यामसुन्दर दीपक जलाते हुए घूम रहे हैं और बार-बार चिल्लाकर कहती हैं—अरे ओ मधुमङ्गल! अरे सुबल!! देखना भला, कहीं श्यामसुन्दरका हाथ न जल जाये।

मैया कभी धनिष्ठासे कहती है—धनिष्ठे! जाओ! उनसे (व्रजेश्वर नन्दसे) कह दे कि वे गोशालासे तुरंत आ जायँ। श्यामसुन्दरके पीछे-पीछे चलकर उसे सँभालें, कहीं वह हाथ नहीं जला ले।

कभी श्यामसुन्दरके पास दौड़कर चली जाती हैं तथा कहती हैं—मेरे लाल! अब नहीं। अब बहुत दीपक तुमने जला दिये हैं, अब रहने दे।

श्यामसुन्दर बड़े प्रेमसे कहते हैं—ना मैया! मेरा हाथ नहीं जलेगा। देख, अबतक आठ सौसे अधिक दीपक जला चुका हूँ। एक बार भी तो हाथ नहीं जला।

मैया फिर भी मधुमङ्गलको सावधान करती हुई कुछ दूर हटकर भवनके द्वारके पास आकर उधर ही देखने लग जाती हैं। जहाँ श्यामसुन्दर आँखोंसे ओझल हुए, तभी मैया चिल्लाती हुई कहने लग जाती हैं कि अब बस, अब और नहीं जलाने दूँगी एवं उसके पास दौड़ने लग जाती हैं।

इसी समय राधारानी नन्द-भवनके द्वारपर आ पहुँचती हैं। राधारानीको देखते ही मैया आनन्दमें डूबने लग जाती हैं। वे रानीके पास दौड़ जाती हैं। रानी पैरोंपर गिरकर प्रणाम करना चाहती हैं, पर मैया उसके पहले ही उन्हें हृदयसे चिपका लेती हैं। उसके सिरको सूँघती हैं, चूमती हैं। फिर मैया यशोदा बड़ी प्रफुल्लताकी मुद्रामें कहती हैं—कुन्दवल्ली! जा, बहिन रोहिणीसे कह दे, मेरी लाडिली राधा आ गयी है। बस, अब तो एक क्षणमें ही सब हो जायेगा। हाँ, हाँ, रोहिणी बहिन ऊपर रसोईघरमें है। जाकर कह दे।

श्यामसुन्दर दीपक जला रहे थे। उसी समय उनके कानोंमें 'राधा आ गयी है'—ये शब्द पड़ते हैं। 'राधा' सुनते ही श्यामसुन्दरके हाथसे दीपक गिर जाता है। वे उस स्थानसे दौड़ते हुए वहाँ ही आ जाते हैं, जहाँ मैया रानीको लेकर खड़ी हैं। श्यामसुन्दर एवं रानी एक-दूसरेको देखते ही प्रेममें अधीर होने लगते हैं।

श्यामसुन्दरको आया देखकर मैया रानीके पाससे चलकर श्यामसुन्दरके पास आ जाती हैं तथा अञ्चलसे श्यामसुन्दरका मुख पोंछने लगती हैं। श्यामसुन्दर कहते हैं—ना मैया! अब दीपक नहीं जलाऊँगा। तेरी बात मैंने नहीं सुनी। अभी एक दीपक हाथसे गिर गया। मैं बच गया, नहीं तो सचमुच हाथ जल जाता।

मैया श्यामसुन्दरको हृदयसे लगाकर प्यार करने लगती हैं। फिर कहती हैं—मधुमङ्गल भैया! इसे लेकर तुरंत चला जा। तुम एवं सुबल श्यामसुन्दरके कपड़े बदला करके ऊपर पूजा-गृहमें इसे शीघ्र ले आओ! देर मत करना भला! महर्षि शाण्डिल्य आने ही वाले हैं।

मैया श्यामसुन्दरके सिरको पुनः सूँघती हैं तथा कहती हैं—जा मेरे लाल! तुरंत कपड़े बदल करके ऊपर आ जा!

श्यामसुन्दर मैयाके भुजपाशसे निकलकर रानीकी ओर देखते हुए उत्तरकी ओर धीरे-धीरे बढ़ते हैं। मैया रानीका हाथ पकड़ लेती हैं एवं कहती हैं--मेरी लाडिली बेटी! ऊपर चल, मैं तुझे सब समझा दूँ।

रानी मैयाके साथ ऊपर पाकशालामें जा पहुँचती हैं तथा छिपी दृष्टिसे उधर देखने लगती हैं, जिधर श्यामसुन्दर गये हैं। रसोईघरमें मैया रोहिणी बैठी हुई परातमें मिहीदानोंके लड्डू बाँध रही हैं। रानी उनके चरणोंमें जाकर प्रणाम करती हैं। क्या बनाना है और क्या-क्या बन चुका है, यह सब मैया रानीको समझाती हैं और कहती हैं कि शेष सब बातें बहिन रोहिणी बता देंगी। इतना बतला करके मैया श्यामसुन्दरको लानेके लिये नीचे दौड़ जाती हैं।

रानी एवं रानीकी सभी सखियाँ-मञ्जरियाँ अत्यधिक तत्परतासे पाक-कार्यमें लग जाती हैं। कुछ ही देरमें आश्चर्यजनक रीतिसे सब कुछ बन

जाता है। परातमें भर-भरकर भाँति-भाँतिकी मिठाइयाँ नन्दरानीकी दासियाँ एवं राधारानीकी मञ्जरियाँ लाकर सामनेके पूजागृहमें रखती चली जाती हैं। पूजागृहके दक्षिणकी ओरका स्थान मिठाईकी परातोंसे भर जाता है। पूजागृहके बीचमें अत्यन्त सुन्दर-सुकोमल आसन चारों ओरसे बिछाये हुए हैं। ठीक मध्यभागमें छोटी सोनेकी चौकी सजाकर रखी हुई है। चौकीपर एक हाथ ऊँचा और आधा हाथ चौड़ा मणिजटित सिंहासन रखा है, जिसपर अत्यन्त सुन्दर किसी तैजस् धातुकी बनी हुई श्रीलक्ष्मीनारायणजीकी प्रतिमा विराज रही है। चौकीके नीचे अर्घ्य आदि पूजाके उपकरण रखे हुए हैं। कुछ दूरपर हवन-वेदी शोभा पा रही है। आचार्य महर्षि शाण्डिल्यके बैठनेके लिये पासमें ही सुन्दर गद्दी सुशोभित हो रही है। उनके शिष्योंके बैठनेके लिये भी सुन्दर-सुन्दर आसन लगे हुए हैं।

इसी समय महर्षि शाण्डिल्य अपने शिष्योंसहित पधारते हैं। उनके पधारते ही सभी विनयपूर्वक किनारे हट-हटकर खड़े हो जाते हैं। मैया यशोदा इसी समय वहाँ आ जाती हैं। वे दूरसे ही महर्षिके चरणोंमें प्रणाम करती हैं। महर्षि आशीर्वाद देते हैं। सुन्दर पगड़ी बाँधे नन्दबाबा भी वहीं आ पहुँचते हैं। वे महर्षिके चरणोंमें साष्टाङ्ग दण्डवत् प्रणाम करते हैं। महर्षि उन्हें आशीर्वाद देते हैं। मैया यशोदा कहती हैं—कुन्द ! जा, कृष्णको शीघ्र बुला ला। मेरा नाम लेकर बुला ला।

मैया यह कह ही रही थी कि श्यामसुन्दर आ जाते हैं। आगे-आगे मधुमङ्गल है, बीचमें श्यामसुन्दर, उनके पीछे सुबल एवं अन्यान्य सखा। मैया दौड़कर श्यामसुन्दरको हृदयसे चिपटा लेती हैं। फिर बड़े प्यारसे हाथ पकड़कर महर्षिके सामने ले आती हैं। श्यामसुन्दर महर्षि शाण्डिल्यके चरणोंमें साष्टाङ्ग दण्डवत् प्रणाम करते हैं। महर्षिकी आँखोंमें आँसू भर आते हैं। वे अतिशय शीघ्रतासे श्यामसुन्दरको उठाकर हृदयसे लगा लेते हैं। मधुमङ्गल आदि सखा भी महर्षिको प्रणाम करते हैं। महर्षि उन्हें भी उठा-उठाकर हृदयसे लगाते हैं। श्यामसुन्दर अतिशय प्यारसे महर्षिके साथ आये हुए पाँच शिष्योंसे गले मिलते हैं। वे ब्राह्मण-कुमार आनन्दमें पागल-से हो जाते हैं। फिर

श्यामसुन्दर एक तिरछी चितवन रसोईघरकी ओर डालते हैं। अपनी प्रियतमा राधारानीके साथ दृष्टि मिलते ही श्यामसुन्दरका सारा शरीर काँप जाता है। यही दशा रानीकी भी रसोईघरमें होती है। श्यामसुन्दरकी यह दशा देखकर नन्दबाबा एवं मैया कुछ घबरा-सी जाती हैं, परन्तु फिर श्यामसुन्दरको हँसते देखकर सभी निश्चिन्त हो जाते हैं।

स्वस्तिवाचनपूर्वक श्रीलक्ष्मीनारायणजीकी चौंसठ उपचारोंसे विधिवत् पूजा होती है। पूजक नन्दबाबा हैं, पर श्यामसुन्दर उनके पासमें बैठे हुए नन्दबाबाके हाथमें पूजाकी सामग्री पकड़ाते जा रहे हैं। बड़े ही सुन्दर ढंगसे पूजा होती है। रानी सखियोंके बीचमें बैठी हुई अपने प्रियतमकी शोभा एकटक निहारती रहती हैं। पूजा समाप्त होते ही वहाँ देवर्षि नारद अत्यन्त मधुर स्वरमें वीणापर गाते हुए आते हैं—

अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम्।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥ १ ॥
वचनं मधुरं चरितं मधुरं वसनं मधुरं वलितं मधुरम्।
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥ २ ॥
वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ।
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥ ३ ॥
गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम्।
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥ ४ ॥
करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं रमणं मधुरम्।
वमितं मधुरं शमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥ ५ ॥
गुञ्जा मधुरा माला मधुरा यमुना मधुरा वीची मधुरा।
सलिलं मधुरं कमलं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥ ६ ॥
गोपी मधुरा लीला मधुरा युक्तं मधुरं मुक्तं मधुरम्।
दृष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥ ७ ॥
गोपा मधुरा गावो मधुरा यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा।
दलितं मधुरं फलितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥ ८ ॥

देवर्षिको श्यामसुन्दर तथा नन्दबाबा आदि सभी साष्टाङ्ग प्रणाम करते हैं। देवर्षि श्यामसुन्दरको गले लगाते हैं, फिर महर्षि शाण्डिल्यसे गले मिलते हैं। नन्दबाबा अतिशय सत्कारपूर्वक महर्षि शाण्डिल्यको

दक्षिणा देते हैं। महर्षिके शिष्य दक्षिणा सँभालते हैं। फिर महर्षि श्यामसुन्दरकी ओर कुछ देरतक एकटक देखकर प्रस्थान करते हैं। देवर्षि नारद भी दर्शन करके प्रस्थान करते हैं।

अब नन्द-उपनन्दकी पंक्तियोंके बीचमें श्यामसुन्दर सखाओंके साथ भोजन करने बैठते हैं। राधारानीकी सखियाँ, नन्दरानीकी दासियाँ एवं स्वयं नन्दरानी परोसनेका कार्य कर रही हैं। भीतर बैठी हुई रानी भोज्य सामग्रियोंको सजा-सजाकर परातमें भर देती हैं। सखियाँ परातको बाहर ले जाकर परोसती हैं। बड़े ही आनन्द-समारोहके साथ भोजन समाप्त हो जाता है। भोजन समाप्त होनेपर नन्दबाबा श्यामसुन्दर एवं दाऊजीका हाथ पकड़े हुए राजसभामें स्वजनोंसे मिलने चले जाते हैं। मैया राधारानीको खिलानेके लिये परातमें बहुत-सी मिठाइयाँ स्वयं भरकर लाती हैं तथा बड़े प्यारसे रानीके मुखमें देना चाहती हैं। रानी संकोच कर रही हैं। ललिता कहती हैं—मैया! हमलोग खा लेंगी। आप निश्चिन्त रहें।

ललिताकी बात सुनकर मैया पुनः ललितासे कहती हैं—देखना भला, तुमलोग यदि कोई भी बिना खाये जाओगी तो मैं बहुत रुष्ट होऊँगी।

इसके बाद मैया तुरंत ही श्यामसुन्दरको देखनेके लिये राजसभाकी ओर दौड़ पड़ती हैं। उनके चले जानेपर सखियाँ, उस परातको उठा लाती हैं, जिसमें श्यामसुन्दरने भोजन किया था। उन सबने बड़ी चतुराईसे पंक्ति उठते ही उस परातको उठाकर छिपा दिया था। उसी परातकी मिठाईमें वे मैयाके दिये हुए परातकी मिठाई सजा-सजाकर रख देती हैं। रानी सखियोंसहित श्यामसुन्दरके अधरामृतका प्रसाद लेती हैं। प्रसाद लेना समाप्त करके, हाथ-मुँह धोकर और श्यामसुन्दरके पीकमिश्रित पानके बीड़ेको मुखमें लेकर वे सब घर वापस लौटनेवाली ही थीं कि मैया यशोदा उसी समय आ जाती हैं। रानीको जानेके लिये प्रस्तुत देखकर वे धनिष्ठाको कुछ संकेत करती हैं। धनिष्ठा संकेत समझ जाती है और हीरेकी, बनी हुई अत्यन्त सुन्दर अँगूठी लाकर मैयाके हाथमें पकड़ा देती है। मैया उसे रानीकी अँगुलीमें पहना देती हैं एवं कहती हैं—बेटी! मेरा यह आशीर्वाद अस्वीकार मत करना। देख, इसे मैंने कृष्णके लिये बनवायी थी, पर

कुछ ढीली होनेके कारण वह निकाल-निकालकर फेंक देता है। आज प्रातःकाल तेरी अँगुलियोंमें वैसी अँगूठी देखकर मैंने सोचा कि विधाताने यह अँगूठी तेरे लिये ही बनवायी है, इसलिये मैंने पहना दी मेरी लाडिली बेटी! माँके इस आशीर्वादको तू ग्रहण कर ले।

रानी सिर झुका लेती हैं तथा मैयाके चरणोंमें गिरकर प्रणाम करती हैं। मैया फिर रानीको हृदयसे लगा लेती हैं। मैया यशोदाकी आँखोंमें आँसू भर आते हैं। वे रानीकी ठोड़ीको पकड़कर चूमने लग जाती हैं तथा कहती हैं—मेरी लाडिली! तुझे देखकर प्रायः मुझे भ्रम हो जाता है कि कृष्ण कहीं सुबलकी ही साड़ी पहनाकर खेल तो नहीं कर रहा है? फिर पास आनेपर तुम्हारे गोरे रंगको देखकर पहचान पाती हूँ। ओह! विधाताने तुम दोनोंके मुखको कैसा एक-सा ही बनाया है?

नन्दरानीकी बात सुनकर राधारानी सकुचा जाती हैं। मैया रानीको पकड़े हुए मुख्य द्वारतक आती हैं। द्वारके पास जाकर ललिता कुछ रुक-सी जाती हैं। उसी समय मधुमङ्गल वहाँ आ पहुँचता है एवं ललितासे कहता है—री! आज चलकर देख, मैंने राजसभामें कैसी दीपावली सजायी है। तुझे तो सौ-सौ जन्ममें भी वैसा सजाना नहीं आयेगा।

मधुमङ्गलकी बात सुनकर सभी हँस पड़ती हैं। इसपर मधुमङ्गल कहता है—हँसती है? अच्छा। चल, चलकर देख ले, फिर समझ जायेगी कि यह झूठ कह रहा है या सच।

ललिता हँसकर कहती है—तेरे जैसे बंदरकी सजायी हुई दीपावली भला अच्छी क्यों न होगी?

मधुमङ्गल हँसकर कहता है—देख, तू विश्वास नहीं करती। सचमुच कान्हूँ और हम दोनोंने मिलकर ऐसी दीपावली सजायी है कि देखते ही बन पड़ता है।

मधुमङ्गलकी बात सुनकर ललिता राधारानीकी ओर अँगुलीसे संकेत करती हुई कहती है—इसे देर हो जायेगी, नहीं तो मैं देख आती।

मधुमङ्गल कहता है— जब इतनी देर हुई तो थोड़ी और सही। इसे भी साथ ले चल, यह भी देख लेगी।

रानीके हृदयमें तो आन्तरिक इच्छा है कि चलकर देख आऊँ, पर बाहरसे ऐसी मुद्रा बनाती हैं मानो बहुत देर हो गयी है, अतः घर वापस लौट चलना चाहिये; किन्तु मधुमङ्गलका आग्रह देखकर मैया कहती है—बेटी! इस मधुमङ्गलको भी मैं बहुत अधिक प्यार करती हूँ। यह दिन-रात मेरे कृष्णकी सँभाल रखता है। मैं तेरा आभार मानूँगी, यदि तू इसकी सजायी हुई दीपावलीको जाकर थोड़ी देर देख लेगी। इसका चित्त प्रसन्न हो जायेगा।

मैयाके ऐसा कहते ही सखी-मण्डलीके सहित रानी राजसभाकी ओर चल पड़ती हैं। वहाँ पहुँचकर रानी एक खम्भेकी आड़से देखने लगती हैं। रानीकी दृष्टि सीधे श्यामसुन्दरपर जाकर टिक जाती है। मधुमङ्गल पासमें ही खड़ा है। वह उच्च स्वरमें बोलता है—वहाँ देख, बाबाकी गद्दीके पासकी सजावट देख।

मधुमङ्गलका उच्च स्वर श्यामसुन्दरके कानोंमें पड़ता है। वे इधर देखने लग जाते हैं। दृष्टि फेरते ही राधारानीसे आँखें मिल जाती हैं। पत्थरकी मूर्तिकी तरह कुछ क्षणके लिये दोनोंकी दृष्टि स्थिर हो जाती है। फिर दोनों सँभल जाते हैं एवं मुस्कुराने लगते हैं।

रानी कुछ देर इधर-उधर देखकर फिर सखियोंके साथ घरकी ओर चल पड़ती हैं। मैया चाहती हैं कि कुछ दूरतक मैं पहुँचानेके लिये चलूँ, पर रानी हाथ जोड़कर रोक देती हैं।

मैया लौट आती हैं। रानी मुख्य मार्गसे चलती हुई फिर यमुना तटके पथसे अपने घरपर चली जाती हैं तथा आकर बिछौनेपर धमसे गिर पड़ती हैं। ललिता रानीके सिरको गोदमें लेकर पंखा झलने लगती है।

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

योगिनी लीला

(स्थान है—बरसानेका सरोवर। समय है—सायंकाल। संध्या होनेमें दो घंटेकी देर है। संध्याकालीन सूर्यकी किरणें सरोवरके जलपर पड़ रही हैं। सरोवरका जल झलमल-झलमल कर रहा है। मणिमय सुन्दर घाटपर गोपियाँ अपने कलशोंमें जल भर रही हैं। कुछ जल भरकर लौट रही हैं और कुछ जल भरनेके लिये आ रही हैं। वृषभानुनन्दिनी श्रीराधा अपने पार्श्वमें सोनेका कलसा दबाये मन्द-मन्द गतिसे आ रही है। दाहिनी ओर श्रीललिता और बायीं ओर श्रीविशाखा हैं। दोनों ही श्रीराधाकी भाँति अपने-अपने पार्श्वमें सोनेका कलसा लिये हुए हैं। श्रीराधाके पीछे और भी सखियाँ कलसा लिये हुए हैं। श्रीराधा चलती हैं, फिर रुक जाती हैं, फिर चलती हैं, इस प्रकार रुकती-चलती हुई घाटपर आकर खड़ी हो जाती हैं। घाटसे कुछ दूर हटकर पश्चिमकी ओर कुछ भीड़ लग रही है। कुछ ग्वाल-बाल एवं सिरपर कलसे रखे हुई कुछ गोपियाँ गोलाकार खड़ी हैं। श्रीराधाकी दृष्टि उस ओर जाती है।)

राधा— (कौतूहलभरे स्वरमें) **ललिते! देखकर आ, यह कैसी भीड़ है?**

(ललिता जाती है, कुछ देर वहाँ ठहरकर फिर दौड़कर वापस आती है। समूचा शरीर पसीनेसे लथपथ हो जाता है।)

ललिता—क्या बताऊँ राधे? राधे! तू चल, अरे! क्या बताऊँ?

राधा—क्यों, क्या बात है?

ललिता—राधे! क्या बताऊँ? (कलेजेपर हाथ रखकर) **एक ऐसी सुन्दर योगिनी आयी है, इतनी सुन्दर कि बस, देखते ही रह जाओ। ऐसा मन करता है⋯ ⋯ ⋯**

राधा—(कुछ अनमनी-सी होकर) तो ?

ललिता—(राधाका हाथ पकड़कर) तनिक चल तो सही। कलसे फेर भर लेंगे।

(श्रीललिता राधाका हाथ पकड़े भीड़के पास आती हैं। भीड़की गोपियाँ श्रीवृषभानु राजाकी लाडिलीको खड़ी देखकर सामनेसे हटकर उन्हें आगे स्थान दे देती हैं। श्रीराधा-ललिता आदि अब भीड़के बीचमें आ जाती हैं और देखती हैं कि सरोवरके घाटकी नीचेसे ऊपरकी सीढ़ीपर बैठी हुई एक योगिनी अत्यन्त मधुर स्वरमें गा रही है। तानपूरेके स्वरमें स्वर मिलाकर अचेत-सी होकर गा रही है। योगिनीकी आँखें मुँदी हुई हैं। ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो योगिनी समाधिस्थ होने जा रही है। योगिनी साँवली है। आयु चौदह वर्षकी है, ललाटपर विभूति रमा रखी है, पर विभूतिके अन्तरालसे अनोखा लावण्य, अनुपम सौन्दर्य झर रहा है।)

योगिनी—(तानपूरेपर गाते हुए)

पिया तोहि नैनन ही में राखूँ।

तेरे एक रोम की छवि पर अगत वार सब नाखूँ॥

(श्रीराधा काठकी पुतली-सी खड़ी रहकर पद सुनती हैं।)

योगिनी—(तानपूरेपर बार-बार दोहराते हुए)

नैनन ही में राखूँ, पिया तोहि नैनन ही में राखूँ।

(मानो पुनः चेतनता हो आयी हो, ऐसी मुद्रा धारण करके श्रीराधा भीड़से बाहर निकल आती हैं तथा कुछ दूरपर घाटपर लगी हुई मेंहदीकी झाड़ियोंसे सटकर बैठ जाती हैं; पर दृष्टि योगिनीकी ओर लगी है। ललिता-विशाखा आदि भी वहीं आकर बैठ जाती हैं।)

राधा—(भराये हुए स्वरमें) ललिते! यह योगिनी होकर ऐसा भजन क्यों गाती है?

ललिता—कैसा भजन?

राधा—(कुछ खीझी-सी होकर) अरे! क्या सुन नहीं रही है?

ललिता—(कुछ मुस्कुराकर) अब समझी।

राधा—तो बता ! क्यों गाती है ? सचमुच ललिते ! तू ही देख। इतना रूप, ऐसा सौन्दर्य, उसपर ऐसा भजन ! योग कैसे निभेगा ?

योगिनी—(अत्यन्त मधुर स्वरमें आलाप भरती हुई)
पिया तोहि नैनन ही में राखूँ।

(श्रीराधा फिर अन्यमनस्क-सी होकर एक बार ललिताकी ओर देखती हैं।)

ललिता—(कुछ हँसती हुई) तू तो भोली है। अरे ! इसे निर्गुण भजन कहते हैं। वैरागी साधु गाया करते हैं।

योगिनी—(उच्च स्वरसे गाते हुए।)
भई सकल अंग साँवल मैं, हाँ···आ···आ···आ···

(श्रीराधाके मुखपर पसीनेके बिंदु झलकने लगते हैं। सारा शरीर काँप जाता है। ललिता उन्हें पकड़ लेती हैं।)

ललिता—(आँचलसे श्रीराधाके मुखको पोंछती हुई अत्यन्त प्रेमभरे स्वरमें) बावली सखी ! इस योगिनीका साँवला तुम्हारा श्यामसुन्दर नहीं है। योगिनी 'पिया', 'साँवल' कह-कहकर 'पिया', 'साँवल' के गीत गा-गाकर अपने ब्रह्मकी ज्योतिका ध्यान करती है। समझी ?

(श्रीराधा चुपचाप भजन सुनती हैं। थोड़ी देर बाद योगिनीका भजन समाप्त हो जाता है। तानपूरा धीरेसे कंधेपर रखकर आँखें मूँदे हुए इस प्रकारसे बैठ जाती है मानो समाधिस्थ हो गयी हो।)

राधा—ललिते ! पता नहीं क्यों, योगिनी मुझे बड़ी प्यारी लग रही है। इसकी ओर मेरा मन बरबस खिंचता चला जा रहा है। तू पूछ तो सही कि यह कहाँ रहती है ?

ललिता—(हँसकर) क्यों, योगिनी बनेगी क्या ?

राधा—ललिते ! तू विनोद करती है और मेरा मन ··· ···

ललिता—(अत्यन्त प्यारसे) रुष्ट मत होओ, अभी पता लगाती हूँ।

(ललिता योगिनीके पास जाती है तथा हाथ जोड़कर घुटने टेककर योगिनीके चरणोंमें प्रणाम करती है। योगिनीकी आँखें खुल जाती हैं तथा 'अलख-अलख' कहकर योगिनी गम्भीर साँस लेती है।)

ललिता—(बड़ी विनयसे) योगिनी मैया! कहाँ रहती हो?

योगिनी—अलख! अलख!! तू जानकर क्या करेगी?

ललिता—मेरी एक सखी है, उसकी तुम्हारे ऊपर बड़ी भक्ति हो गयी है, इसलिये वह जानना चाहती है।

योगिनी—उसको आवश्यकता होगी तो अपने-आप पूछ लेगी। हूँ!

ललिता—उसे लज्जा लगती है, इसलिये मुझे भेजा है।

योगिनी—अलख! अलख!! मैं कहाँ आ फँसी?

(योगिनी आँखें मूँद लेती है। ललिता कुछ देरतक प्रतीक्षा करती है, पर आँखें नहीं खोलनेपर श्रीराधाके पास चली जाती है। श्रीराधा एकटक योगिनीको देखती है।)

राधा—अच्छा, देख! मैं पता लगाती हूँ।

(श्रीराधा योगिनीके पास जाती हैं। अब भीड़ कम हो जानेसे श्रीराधाकी सखियाँ एवं दो-तीन अन्य गोपियाँ बच रहती हैं।)

राधा—(कुछ क्रोधभरे एवं उपेक्षाभरे स्वरमें) री योगिनी! तू कहाँसे आयी है? आँखोंमें भरा है राग और स्वाँग पहन लिया है वैराग्यका! योग निभनेका नहीं है।

(योगिनी आँखें खोलकर देखने लग जाती है।)

राधा—हुँ, आयु है थोड़ी, मन है कच्चा, और उसपर तूने पाया है यह अनुपम रूप, फिर ऐसा स्वाँग क्यों लिया?

(योगिनी 'अलख-अलख' कहने लगती है।)

राधा—सच कहती हूँ, तुम्हारी आँखें कहती हैं कि तुम्हारे मनमें कुछ चाह है। भोगकी चाह और वेष वैराग्य का! क्या कहना है?

(योगिनी 'अलख-अलख' उच्च स्वरसे पुकार उठती है।)

राधा—(उपेक्षाके स्वरमें) योगिनी! अभी कुछ भी बिगड़ा नहीं है। चल मेरे साथ राजभवनमें और सच बता दे कि तू क्या चाहती है।

(योगिनी 'अलख-अलख' कहती हुई ठट्ठा मारकर हँस पड़ती है। उधर चित्रा धीरेसे राधाको पकड़कर कुछ दूर ठेल देती है।)

चित्रा—(राधाके कानके पास मुँह ले जाकर उसे और बोलनेके लिये मना करके, फिर योगिनीसे) योगिनी मैया! मेरी यह सखी बड़ी चञ्चल है, पर हृदयकी बड़ी सरल है! बुरा मत मानना मैया!

योगिनी—(हँसती हुई) अलख! अलख!! हूँ, वृषभानु राजाकी लाडिली है! भला, मनमें अभिमान क्यों न रहे! राजपुत्री है, इसीलिये योगिनीकी परीक्षा लेती है, योगिनीसे विनोद करती है, योगिनीको भोगका लालच देती है, हूँ ····।

(श्रीराधा हँसती हुई योगिनीके पास फिर चली जाती हैं और पासमें बैठकर अत्यन्त प्रेमसे उसके एक हाथको पकड़ लेती हैं। योगिनी एक बार काँप जाती है।)

राधा—(हँसकर) योगिनी! तू रुष्ट हो गयी क्या?

योगिनी—अलख! अलख!! योगिनी भी कहीं रुष्ट होती है?

राधा—(साहसभरे स्वरमें) योगिनी! सचमुच तू मुझे बड़ी प्यारी लग रही है, इसलिये विनोद कर बैठी।

योगिनी—(हँसकर) अलख! अलख!! विनोद करनेसे तुझे सुख मिला, फिर और क्या चाहिये?

राधा—(उत्साहभरे स्वरमें) तू मेरी एक प्रार्थना स्वीकार करेगी?

योगिनी—बोलो!

राधा—(आशाभरे स्वरमें) तू मेरे साथ मेरे राजभवनमें चल।

(योगिनी ठट्ठा मारकर हँस पड़ती है।)

राधा—क्यों, हँसी क्यों?

योगिनी—अलख! अलख!! तू हँसनेकी बात करे तो मैं हँसूँ नहीं?

राधा—क्यों, मेरे राजभवन चलनेमें क्या कोई पाप है?

योगिनी—(अत्यधिक हँसती हुई) अलख! अलख!! भला तू ठहरी राजपुत्री और मैं हूँ योगिनी, मेरा-तेरा क्या सम्बन्ध? हा···हा···हा···।

राधा—(उदास-सी होकर) देख, साँझ हो चली है, तू कहीं भी तो रात बितायेगी ही?

योगिनी—रात तो बिताऊँगी ही, पर वनमें! राजभवनमें क्यों जाऊँ?

(ललिता योगिनीके पास जाकर बैठ जाती है।)

ललिता—योगिनी मैया ! मैंने सुना है कि भगवान् भक्तोंकी चाह रखते हैं। तुम योगिनी हो, भगवान्में मिल चुकी हो, फिर तुम्हें भी तो मेरी सखीकी प्रार्थना सुननी ही चाहिये।

योगिनी—अलख ! अलख !! तुमलोग भोली हो। देखो, मैं योगिनी हूँ। मुझे आसन स्थिर करना है, मनका संयम करना है, इसीलिये वन-फल खाकर प्राण धारण करना है। मैंने संसार छोड़ दिया है और और तुम कहती हो कि राजभवनमें चलो। भला ! ऐसी भी प्रार्थना मानी जाती है ?

राधा—योगिनी ! क्यों झूठ-मूठ बातें बनाती है ? अच्छा, सच बता, क्या कभी तू राजभवनमें नहीं ठहरी है ?

योगिनी—(कुछ गम्भीर होकर) ठहरी क्यों नहीं हूँ, बहुत बार ठहरी हूँ।

राधा—तो कुछ दिन मेरे यहाँ भी ठहरनेमें तेरा क्या बिगड़ जायेगा ?

योगिनी—अलख ! अलख !! क्या बताऊँ ?

राधा—(प्रेमसे हाथको फिर पकड़कर) हाँ-हाँ, निःसंकोच बता दे, क्यों नहीं चलना चाहती ?

योगिनी—अलख ! अलख !! कहाँ आकर फँस गयी ?

राधा—योगिनी ! मेरा हृदय तुम्हें देखकर उमड़ा आ रहा है। तुम्हें मेरी शपथ, चलनेमें जो अड़चन हो, वह बता दे, मैं दूर कर दूँगी।

योगिनी—अलख ! अलख !!

राधा—तुम्हें बताना पड़ेगा, आज बिना बताये मैं तुमको छोड़नेवाली नहीं हूँ।

योगिनी—(हँसकर धीरे-धीरे गुनगुनाती हुई)

> भोजन भूखा हौं नहीं मन न भावना और ।
> प्रीति सहित आदर जहाँ हम तिहिं तिहि ठौर ॥

राधा—(आशाभरे स्वरमें) तो एक बार चल वहाँ। अनादर हो तो लौट आना।

योगिनी—अलख! अलख!! कहाँ आकर फँस गयी?

राधा—(ललिताको आँखोंके संकेतद्वारा योगिनीकी बाँह पकड़नेके लिये कहकर) बस, अब तो नहीं छोड़ूँगी। आज रात-रातके लिये तो तुम्हें ले ही जाऊँगी।

(ललिता योगिनीकी बाँह पकड़ लेती हैं। योगिनी ऐसी मुद्रा बनाती है मानो वह बहुत असमञ्जसमें पड़ गयी हो; किंतु तुरंत हाथ छुड़ा कर कहने लगती है।)

योगिनी—देखो, तुम लोग समझती नहीं। इस प्रकार हमारी साधना चौपट करोगी क्या?

राधा—चल, चल! साधनाकी बातें बनाती हो? साधनाकी आड़में बहकाना चाहती हो? मैं तेरी सब बातें समझ रही हूँ।

योगिनी—देखो, वृषभानुलाडिली! आज नहीं, कल। वचन देती हूँ, कल आऊँगी।

राधा—मैं तो छोड़नेकी नहीं। पता नहीं, तू भाग जायेगी तो! कलका क्या भरोसा?

योगिनी—वचन देकर नहीं भागूँगी।

(श्रीराधा उदास-सी हो जाती हैं। निराशाभरे स्वरमें ललिताके कानमें कुछ कहकर बैठ जाती हैं।)

ललिता—योगिनी मैया! तुम्हारा हृदय इतना कठोर क्यों है? भगवान्‌को पानेके बाद भी क्या साधना करनी पड़ती है? क्यों हमलोगोंकी वञ्चना करती हो?

योगिनी—(कुछ लजायी-सी होकर) देखो, तुमलोग अभी बच्ची हो। सब बातें समझ ही नहीं सकती।

राधा—(उदास-सी होकर) समझती नहीं, ठीक, पर यह ठीक जानती हूँ कि इस समय तुम केवल बड़ी-बड़ी बातें बना रही हो।

योगिनी—(श्रीराधाको प्रसन्न करनेकी मुद्रामें) वृषभानुलाडिली ! देखो, खीझो मत ! हम योगिनियोंको लोक-संग्रह देखना पड़ता है। थोड़ी देरके लिये मान लो, मेरा कुछ नहीं बिगड़ेगा; पर यदि मेरी देखा-देखी और भी अल्प आयुवाली योगिनियाँ राजभवनोंमें जाकर तुम्हारी-जैसी हठीलियोंकी सेवा स्वीकार करने लग जायँ, तब तो अनर्थ हो जाये न ? क्यों, तुम्हीं सोचो !

(श्रीराधा कुछ नहीं बोलतीं ।)

योगिनी—क्यों, रुष्ट हो गयी क्या ?

राधा—योगिनी ! रुष्ट होनेकी बात नहीं है। तुम्हें मैंने आज पहले-पहल देखा है, पर मेरा मन बरबस तुम्हारी ओर खिंच गया है ; तुम्हें घर ले चलनेकी बड़ी लालसा होती है, इसीसे कहती हूँ।

(योगिनी ऐसी मुद्रा बनाती है मानो विचारमें पड़ गयी हो।)

ललिता—योगिनी मैया ! मेरी प्रार्थना मान लो। सच कहती हूँ, मेरी सखी-जैसी सरल हृदयकी दासीकी सेवा तुम्हें जीवनमें न मिली होगी, न मिलेगी।

योगिनी—अलख ! अलख !! चलो। क्या करें ? तुमलोगों-जैसी ना-समझोंको प्रसन्न करना ही पड़ेगा।

(श्रीराधा आनन्दमें भरकर योगिनीका कंधा पकड़कर ले चलती हैं। मुख्य द्वारसे न जाकर अपने उद्यानके द्वारसे अपने शयनागारमें पहुँचती हैं। वहाँ अत्यन्त आदरसे योगिनीको अपने सोनेके पलंगपर बैठाती हैं, बैठाकर इस प्रकार देखने लगती हैं मानो योगिनीके रूपको पी जाना चाहती हों।)

राधा—योगिनी ! आजतक मैं जानती थी, जगत्‌में एक ही सुन्दर है; पर ठीक वैसी सुन्दरता तुमने कहाँसे पा ली ! योगिनी ! एक बात......

(योगिनी आँखें मूँद लेती है।)

राधा—(ललितासे धीरे-धीरे) ललिते ! योगिनीका अतिथि-सत्कार कैसे होता है, यह तो मैं नहीं जानती। अब क्या होगा ?

विशाखा— (धीरेसे) कोई चिन्ता नहीं । मैं जानती हूँ । उस दिन नारद बाबा आये थे । कीर्ति मैयाने जैसे-जैसे किया था, वह सब मैंने देखा था, वैसे ही कर दूँगी । अरे ! वे योगी थे, यह योगिनी है । बात तो एक ही है ।

(श्रीराधा प्रसन्न हो जाती हैं और विशाखाके कानमें कुछ कहती हैं ।)

विशाखा—(धीरेसे) मैं जैसे-जैसे कहूँ, वैसे-वैसे करती चली जा ।

(विशाखा बहुत ही सुन्दर सोनेकी परात लाती हैं । ललिता अपने एक हाथमें सुन्दर वस्त्र लेकर खड़ी हो जाती हैं । चित्रा स्वर्ण-कलश लेकर जल देनेकी मुद्रामें खड़ी होती हैं ।)

विशाखा—योगिनी मैया ! चरण धोनेकी आज्ञा देकर हमलोगोंको कृतार्थ करो !

(योगिनी 'अलख-अलख' कहती हुई चरणोंको परातमें रख देती है ।)

विशाखा— (श्रीराधासे धीरे-धीरे) तू यह कह कि आज हमलोग कृतार्थ हो गयीं ।

राधा—योगिनी ! आज हमलोग कृतार्थ हो गयीं ।

योगिनी—अलख ! अलख !!

(चरण धोये जाते हैं । वस्त्रसे पोंछकर श्रीराधा अकस्मात् कुछ काँप-सी जाती हैं और आश्चर्यभरी दृष्टिसे चरणोंके तलवेकी ओर देखने लगती हैं । इतनेमें चित्रा सोनेके गिलासमें शर्बत लाकर श्रीराधाके हाथमें पकड़ा देती हैं । विशाखाके संकेतके अनुसार श्रीराधा शर्बतके गिलासको योगिनीके होठोंसे लगाना चाहती हैं ।)

योगिनी— (कुछ लजायी हुई-सी) वृषभानुलाडिली ! कष्ट न होओ तो एक बात कहूँ ।

राधा—कहो !

योगिनी—बड़ा संकोच होता है, पर कहे बिना काम भी नहीं चलता।

राधा—बता, संकोच क्या है ?

योगिनी—तुमलोगोंने सुना होगा, जिस प्रकारका अन्न खाया जाता है, वैसी बुद्धि बनती है। यहाँतक कि भोजन परोसनेवालेके मनमें जो विचार होता है, उसके परमाणुका भी प्रभाव पड़ता है।

राधा—तो ?

योगिनी—(बहुत ही संकोचकी मुद्रा बनाकर) रुष्ट मत होना। तू तो किसी पुरुषका ध्यान कर रही है।

(श्रीराधा गिलास योगिनीके होठोंसे हटाकर ललिताके हाथमें दे देती हैं और कुछ लजायी-सी होकर खड़ी रह जाती हैं।)

योगिनी—(हँसने लगती है) हाः ''' हाः ''' हाः ''''''' हाः '' हाः '' अरे ! हमें डर नहीं है। लाओ, लाओ, मैं तो आग हूँ। मेरेमें तो सब भस्म हो जायेगा। मैं तो तुमसे विनोद कर बैठी। बुरा मत मानना।

(श्रीराधा उत्साहपूर्ण होकर गिलास पुनः ललिताके हाथसे लेकर योगिनीके होठोंसे लगाती हैं।)

राधा—(धीरेसे ललिताके कानमें) ललिते ! यह तो मनकी बात जानती है।

ललिता—(कुछ दोहभरी दृष्टिसे योगिनीकी ओर देखकर) योगिनी मैया ! हमलोगोंको योगकी कुछ बात सुनाओगी ?

योगिनी—अलख ! अलख !! मैं भूल गयी, मुझसे भूल हो गयी। तुमलोगोंने समझा होगा, योगिनी मनकी बात जानती है। ओह ! क्या करूँ ? '''''' अलख ! अलख !!

ललिता—मैया ! हमलोग तो आपकी दासी हैं। दासियोंपर तो दया होनी ही चाहिये। दासीके सामने अपनेको छिपाना उचित नहीं।

योगिनी—(गम्भीर होकर) छिपानेकी बात नहीं, पर तुमलोग मुझे रातभर तंग करोगी जो ?

राधा—(ललिताके कानमें) तू कह दे कि सर्वथा साधारण-सी बात है, जो हमलोग पूछेंगी। तंग नहीं करेंगी।

ललिता—मैया! हमलोगोंने तंग करनेके लिये थोड़े ही बुलाया है। तुम्हींने जो कुछ कहा, उसीके सम्बन्धमें कुछ पूछना चाहती हैं।

योगिनी—पूछो!

(श्रीराधा ललिताके कानमें कुछ देरतक कुछ कहती हैं।)

ललिता—मैया! तुमने अभी कहा कि मेरी सखी किसी पुरुषका ध्यान कर रही है। क्या तुम योगसे देखकर उसका रूप-रंग बता सकती हो?

योगिनी—अलख! अलख!! ये बातें तो बहुत साधारण हैं। ऐसी बातें तो मनचाहे जितनी पूछ सकती हो। अरे, मैंने सोचा था, तुमलोग सम्भवतः ......।

ललिता—(उत्साहसे) नहीं! नहीं!! हमलोग केवल बस, अपनी सखीके प्रियतमकी बात ही पूछेंगी और कुछ नहीं।

(योगिनी थोड़ी देरतक आँखें मूँदकर बैठी रहती है। फिर हँस पड़ती है।)

ललिता—हँसी क्यों?

योगिनी—तुम्हारी सखीके प्रियतमका रूप-रंग वर्णन करनेके लिये ध्यान करके देखा तो बरबस हँस पड़ी।

ललिता—(उतावलीभरे स्वरमें) क्यों, क्या है? वह इस समय क्या कर रहा है?

योगिनी—(आँखें मूँदी रखकर) ओह! तुम्हारी सखी इतनी भोली और वह इतना धूर्त! क्या कहना है? अच्छी जोड़ी मिली है।

ललिता—(बड़ी उत्कण्ठासे) क्यों-क्यों, क्या बात है?

योगिनी—(हँसती हुई, आँखें मूँदी रखकर ही) कुछ मत पूछो! बाहरसे उसके रंग-ढंगको देखकर लोग तो समझेंगे, संसारसे विरक्त है।

(कुछ ठहरकर) धूर्तकी ऐसी धूर्तता! महान् आश्चर्य!! मन इतना रंगीला और बाहर ऐसा विराग! क्या कहना?

(श्रीराधा-ललिता सभी चकित होकर योगिनीकी ओर देखती हैं।)

ललिता—(अतिशय उत्कण्ठित होकर) मैया! कुछ बताओ तो सही!

योगिनी—(हँसकर) अरे! क्या बताऊँ? बाहर तो ऐसा बना है मानो जगत्से सर्वथा विरागी है और भीतर-ही-भीतर तुम्हारी सखीका ध्यान करते हुए एक पद गुनगुना रहा है। (कुछ ठहरकर) उस रंगीले रसिककी बलिहारी। अच्छा, मेरा तानपूरा ला दे। मैं उसका वही पद सर्वथा उसीके स्वरमें गाकर तुमलोगोंको सुना देती हूँ। देख! मेरे योगका प्रभाव।

(ललिता तानपूरा योगिनीके हाथमें पकड़ा देती हैं।)

योगिनी गाने लगती है—

तुव मुख चंद चकोर मेरे नयना।
अति आरत अनुरागी लंपट भूल गई गति पलहुँ लगे ना॥
अरबरात मिलिबे को निसि दिन मिलेइ रहत मनु कबहुँ मिले ना।
भगवतरसिक रसिक की बातें रसिक बिना कोउ समुझि सके ना॥

(गाते-गाते योगिनी चेतना-शून्य होकर गिर पड़ती है। श्रीराधा घबरा जाती हैं। ललिता गुलाबपाश लेकर योगिनीके मुखपर छींटा देने लगती हैं। इसी अस्त-व्यस्ततामें योगिनीके वस्त्र हट जाते हैं तथा कटिमें छिपायी हुई मुरली दीखने लग जाती है। ललिता हँस पड़ती हैं। श्रीराधा लजाकर कुछ अलग खड़ी हो जाती हैं। इतनेमें योगिनी उठ बैठती है। ललिता जोरसे हँसने लगती हैं, पर योगिनी लजायी हुई कुछ नहीं बोलती।)

ललिता—(हँसकर) यह योगिनी बड़ी विचित्र है, जो पुरुषके रूपमें बदल जाये। ऐसी योगिनीके दर्शन बड़े भाग्यसे हुए। हाः ...... हाः ...... हाः ...... हाः ...... !

(विशाखा योगिनीकी साड़ी खींच लेती है। साड़ी खींचते ही योगिनीके स्थानपर श्रीश्यामसुन्दर दीखने लग जाते हैं। तोड़-मरोड़कर छिपाया हुआ मुकुट नीचे गिर पड़ता है। चित्रा उठाकर उसे अपने सिरसे लगाकर उनके सिरपर बाँध देती है। श्रीराधा उनके चरणोंको पकड़कर हँसती हुई बैठ जाती हैं तथा निर्निमेष दृष्टिसे देखती रह जाती हैं। इतनेमें ललिता भोजनका थाल लाती है। आसन बिछाया जाता है। सखियाँ श्यामसुन्दरको भोजन कराती हैं। श्रीराधा अपने हाथोंसे परोसती हैं तथा ललिता योगिनी बने हुए श्यामसुन्दरके तानपूरेको कंधेपर रखकर भोजनका पद गाती है।)

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

❀ विशेष ज्ञातव्य ❀

श्रीप्रिया-प्रियतमकी जो नित्य लीला है, वह चलती ही रहती है। उसका दर्शन कोई विरले ही संत करते हैं। यह लीला एक क्षणके लिये भी नहीं रुकती; दिव्य वृन्दावनधाममें निरन्तर चलती ही रहती है। यहाँतक कि श्रीकृष्ण जब मथुरा एवं द्वारकाकी लीला करने चले जाते हैं, तब भी यह लीला चलती ही रहती है। वृन्दावनमें श्रीकृष्णकी कैशोर्य-लीलामें कभी विराम नहीं होता।

बहुत देरतक कहने-सुननेके बाद श्रीगोपियोंने इसी लीलाको उद्धवको दिखलाया था और यह कहा था—'उद्धव! यह देखो, श्रीश्यामसुन्दर एक क्षणके लिये भी यहाँसे बाहर नहीं गये हैं।'

फिर उद्धवने देखा था कि ठीक उसी प्रकार श्यामसुन्दर प्रतिदिन गायें चराने चले जाते हैं और प्रतिदिन आते हैं तथा प्रतिदिन श्रीगोपियोंके साथ उसी प्रकार लीला चलती ही रहती है। लीलाका यह रहस्य इतना विलक्षण है कि उसमें प्रवेश होनेके बाद ही पता चल सकता है कि उसमें क्या-क्या होता है। अधिकारी-भेदसे लीला प्रकट होती है। जैसे फिल्ममें आदिसे अन्ततककी लीला सजायी होती है, वैसे ही भगवान्‌के रूपमें अनादि कालसे जितनी लीलाएँ हुई हैं, हो रही हैं एवं अनन्त कालतक जितनी होंगी, वे सब-की-सब सजाकर रखी हुई हैं। उस रहस्यको समझानेके लिये कोई दृष्टान्त नहीं है। सच्ची बात तो यह है कि श्रीकृष्णके द्वारा समझाया जाये बिना उसे समझना असम्भव है।

卐 卐 卐 卐 卐

।। विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ।।

मधुपर्क

मधुपर्क षोडशोपचार-पूजनका एक आवश्यक अङ्ग है। भगवदर्चनामें मधुपर्क अर्पित किया जाता है। मधु-दधि-घृतादि वस्तुओंके सम्मिश्रणसे निर्मित होनेके बाद भी मधुपर्कका माधुर्य और प्रभाव इन सभी वस्तुओंसे कुछ विशिष्ट प्रकारका होता है। ऐसा ही उत्कृष्टतर माधुर्य और महत्तर प्रभाव है इस पद-संकलनका और इसी हेतुसे पदोंका यह संकलन 'मधुपर्क' नामसे अभिहित है।

ये सम्पूर्ण पद व्रजभाषाके विभिन्न भक्त-कवियोंके हैं। व्रजभाषाका पद-साहित्य बहुत श्रेष्ठ तथा बड़ा विशाल है। भक्त-कवियोंने अपनी सहज सुन्दर भावाभिव्यक्तियोंसे इसे अत्यधिक समृद्ध बनाया है। ये पद व्रजभाषाके भिन्न-भिन्न भक्त-कवियोंद्वारा रचित होनेके बाद भी संकलन-शैलीकी विशिष्टताके कारण इस संग्रहका माधुर्य और प्रभाव कुछ विशेष प्रकारका है।

जिन संतके द्वारा इस पुस्तकमें प्रकाशित लीलाएँ लिपिबद्ध हुई हैं, उन्हीं संतके द्वारा व्रजभाषाके विशाल पद-साहित्यमेंसे इन पचपन पदोंको संचयित करनेका एवं उनको एक क्रमबद्ध शृङ्खलामें संकलित करनेका कार्य सम्पन्न हुआ है। अपने वस्तु-गुणके कारण यह संकलन सभीके लिये परम उपादेय बन गया है। पदोंका संकलन इस रीतिसे किया गया है कि इस शृङ्खलामें श्रीराधामाधवकी अष्टयाम-लीला स्वतः अनुस्यूत हो गयी है। उन संतके कथनानुसार ये सिद्ध पद भावोन्मेषमें सहयोग देंगे तथा इनके माध्यमसे भाव-राज्यका प्रवेश-पथ उद्भासित हो उठेगा।

स्वजनोंके आग्रहसे श्रीराधामाधवकी रसमयी लीलाओंके साथ-साथ इन पचपन पदोंको भी प्रकाशित किया जा रहा है। अर्थ-बोधकी सुगमताके लिये पदोंके साथ उनका भावार्थ भी प्रस्तुत है। अल्पमति और अल्पगतिके कारण भावार्थमें यदि पदोंका मर्म व्यक्त नहीं हो पाया हो तो विनम्र क्षमा-याचना है। यह मधुपर्क मधुरकी साधना और सिद्धिमें सहायक बने, यही आन्तरिक भावना है।

[१]

जय राधा जय सब सुख साधा जय जय कमलनयन बस करनी।
जय स्यामा जय सब सुख धामा जय जय मनमोहन मन हरनी।।
जय गोरी जय नित्य किसोरी जय जय भागनि भरी सुभामिनि।
जय नागरि जय सुजस उजागरि जय जय श्रीहरिप्रिया जय स्वामिनि।।

कमलनयन श्रीकृष्णको वशमें करनेवाली और सब सुखोंको प्रस्तुत करनेवाली श्रीराधाकी जय हो! मनमोहन श्रीकृष्णके मनको हरनेवाली एवं सब सुखोंकी अधिष्ठात्री श्रीराधाकी जय हो! गौरवर्णा, नित्यकिशोरी परम सौभाग्यशालिनी एवं नारीरत्नरूपा श्रीराधिकाकी जय हो! श्रीहरिप्रियाजी कहते हैं कि जिनकी सुन्दर कीर्तिसे सभी दिशाएँ दीप्तिमान् हो रही हैं, उन हमारी स्वामिनी श्रीराधिका नागरीकी जय हो!

[२]

प्रात समय नव कुंज द्वार ह्वै ललिता ललित बजाई बीना।
पौढ़े सुनत स्याम श्रीस्यामा दंपति चतुर नवीन नवीना।।
अति अनुराग सुहाग भरे दोउ कोक कला जो प्रवीन प्रवीना।
चतुर्भुजदास निरखि दंपति सुख तन मन धन न्योछावर कीना।।

प्रातःकाल नवकुंजके द्वारपर श्रीललिताजी सुन्दर वीणा बजाने लगीं। नवकिशोरी श्रीराधा एवं नवकिशोर श्रीकृष्ण बड़े चतुर हैं। ये युगलमूर्ति

श्रीश्यामा-श्याम भीतर लेटे-लेटे ललिताजीके यन्त्र-वादनको सुन रहे हैं। दोनों श्रोता अत्यन्त प्रेम एवं सौभाग्यके आगार हैं। वे प्रेम-कलाओंमें एक-से-एक बढ़कर पण्डित हैं। स्वामी चतुर्भुजदासजीने श्रीप्रिया-प्रियतमका यह सुख देखकर अपने तन-मन-धन—तीनोंको उनपर न्योछावर कर दिया।

[३]

परी बलि कौन अनोखी बान।
ज्यों ज्यों भोर होत है त्यों त्यों पौढ़त हौ पट तानि॥
आरस तजहु अरुनई उदई गई निसा रति मानि।
श्रीहरिप्रिया प्रान धन जीवन सकल सुखन की खानि॥

हे सखि और हे प्राणप्यारे! तुम्हारी बलैया लेती हूँ। तुमलोगोंका यह कैसा अद्भुत स्वभाव हो गया है कि जैसे-जैसे प्रातःकाल होता है, वैसे-वैसे तुमलोग चादर तानकर सोने लगते हो। अरे! आलस्यका परित्याग करो। सूर्यका अरुण प्रकाश उदयाचलपर झलकने लगा है और जिस निशामें प्रेममिलनका आनन्द मनाया था, वह रात्रि भी व्यतीत हो गयी है। श्रीहरिप्रियाजी कहते हैं, तुम दोनों ही मेरे समस्त सुखोंकी खान हो, मेरे प्राणस्वरूप हो, धनस्वरूप हो और जीवनस्वरूप हो।

[४]

मंगल आरति हरख उतारी।
मंगल कुंज महल बृंदाबन मंगल मूरति प्रीतम प्यारी॥
मंगल गान तान धुनि छाई बीन मृदंग बजै सुखकारी।
मंगल सखी समाज मनोहर मंगल धूप महक मतवारी॥
मंगलमय नित उत्सव मंगल मोद विनोद प्रमोद अपारी।
सरसमाधुरी निस दिन मंगल जिन छबि मंगल निज उर धारी॥

वृन्दावनके मङ्गलमय कुञ्जभवनमें श्रीप्रिया-प्रियतमकी मङ्गलमूर्ति विराजमान है। सखियाँ हर्षित होकर उनकी मङ्गल आरती उतार रही हैं। उनके मङ्गल गीतोंकी तान और ध्वनि चारों ओर व्याप्त हो रही है

और वीणा एवं मृदङ्ग आदि वाद्य आनन्ददायक स्वरमें बज रहे हैं। सखियोंका मनोहर समूह भी मङ्गलमय ही है और धूपकी मादक सुगन्धिमें भी मङ्गल ही भरा हुआ है। वहाँपर होनेवाले नित्यके मङ्गलमय उत्सव भी कल्याण करनेवाले हैं। हर्ष, आनन्द तथा उल्लासकी तो कोई सीमा ही नहीं है श्रीसरसमाधुरीजी कहते हैं, जिन्होंने इस मङ्गलमय छबिकोर्ं अपने हृदयमें धारण कर लिया है, उनके लिये अहर्निश मङ्गल-ही-मङ्गल है।

[५]

कुंज द्वार ललना अरु लालन ठाड़े दे गलबाँही री।
मूँद मूँद खोलत चख चंचल अंचल की सुधि नाहीं री॥
झुकि झुकि जात परस्पर दोऊ आलस अंगन माहीं री।
मुख अंबुज मकरंद प्रकासित ज्यों ज्यों वे जमुहाहीं री॥
बिथुरे बार कपोलन ऊपर स्रम कन मुख झलकाहीं री।
सरसमाधुरी स्रवत सुधा रस अलि पीवत न अघाहीं री॥

कुंजके द्वारपर लाडिली और लाल गलबाँहीं दिये हुए खड़े हैं। वे अपनी चञ्चल आँखोंको बार-बार बंद करते और फिर खोलते हैं। वे ऐसे बेसुध-से हो रहे हैं कि अञ्चल और उपरैना कहाँ जा रहा है, इसकी भी सुधि उन्हें नहीं है। दोनों एक-दूसरेके अङ्गोंपर झुक-झुक पड़ते हैं और एक दिव्य आलस्यसे उनके अङ्ग-प्रत्यङ्ग शिथिल हुए जा रहे हैं। जब-जब वे जँभाई लेते हैं, तब सुवासके फैलनेसे ऐसा प्रतीत होता है मानो उनके मुखरूपी कमलका मकरन्द झर रहा हो। उनके कपोलोंके ऊपर अलकावली छुट रही है तथा मुखमण्डलपर पसीनेकी बूँदें चमक रही हैं। श्रीसरसमाधुरीजी कहते हैं कि (उनके मुख-कमलकी) इस शोभासे ऐसा अमृत-रस प्रवाहित हो रहा है कि जिसका पान करते हुए अलियाँ (सखियाँ एवं भ्रमरियाँ) कभी तृप्त ही नहीं होतीं।

[६]

झूमक सारी हो तन गोरें।
जगमग रह्यो जराव को टीको छबि की उठत झकोरें॥

रतन जटित के तरल तरौना मानो होत प्रात रवि भोरें।
दुलरी कंठ निरखि नकबेसर पिय दृग भये हैं चकोरें॥
मंद मंद पग धरत धरनि पै हँसत लसत चित चोरें।
स्यामदास प्रभु रस बस कर लीने चपल नयन की कोरें॥

श्रीराधा अपने गोरे शरीरपर छोटे-छोटे झूमकोंकी किनारीदार साड़ी धारण किये हुए हैं। उनके जगमगाते हुए जड़ाऊ टीकेसे तो मानो सौन्दर्यकी लहरें उठ रही हैं। रत्नजटित चञ्चल कर्णफूलकी छवि ऐसी लगती है मानो प्रातःकालीन सूर्य प्रकट हुए हों। कण्ठका दुलड़ा हार और नाककी बेसरको देखकर प्रियतम श्रीकृष्णकी आँखें चकोर-सी बन गयी हैं। वे पृथ्वीपर धीरे-धीरे पद रखते हुए मन्द गतिसे चल रही हैं; उस समय उनकी सस्मित शोभा चित्तको चुरा लेती है। प्रेमी भक्त श्यामदास कहते हैं कि मेरे प्रभु श्रीकृष्णचन्द्रको श्रीराधाकिशोरीने अपने चञ्चल नेत्रोंके कटाक्षसे प्रेमाभिभूत कर लिया है।

[७]

लटकत आवत कुंज भवन ते।
ढुरि ढुरि परत राधिका ऊपर जाग्रत सिथिल गवन ते॥
चौंक परत कबहूँ मारग बिच चलत सुगंध पवन ते।
भर उसाँस राधा बियोग भय सकुचे दिवस रवन ते॥
आलस मिस न्यारे न होत हैं नेकहूँ प्यारी तन ते।
रसिक टरौ जिन दसा स्याम की कबहूँ मेरे मन ते॥

श्रीप्रिया-प्रियतम झूमते हुए कुंज-भवनसे आ रहे हैं। वे श्रीप्रियाजीके ऊपर ढुलक-ढुलक पड़ रहे हैं। मन्द गतिसे चल रहे हैं और इस चलनेसे ही वे जाग-जाग पड़ते हैं। सुरभित समीर प्रवाहित हो रहा है। कभी मार्गमें उसका झोंका लगता है तो वे चौंक पड़ते हैं। सूर्यके उदय होनेसे वे श्रीराधिकाके वियोगकी आशङ्का करते हुए उसाँसें भर रहे हैं और म्लान-से हो रहे हैं। आलस्यके मिससे प्रियतम श्रीकृष्ण प्यारीजीके अङ्गोंसे किंचित् भी पृथक् नहीं हो रहे हैं। रसिकरायजी यह कामना करते हैं कि श्यामसुन्दरकी यह प्रेम-दशा मेरे मानसपटलपर सदा अङ्कित रहे; कभी भी अन्तर्हित न हो!

[८]

जयति श्रीराधिके सकल सुख साधिके
तरुनि मनि नित्य नव तन किसोरी ।
कृष्ण तन नील घन रूप की चातकी
कृष्ण मुख हिम किरन की चकोरी ॥
कृष्ण मन भृंग बिस्राम हित पद्मिनी
कृष्ण दृग मृगज बंधन सुडोरी ।
कृष्ण अनुराग मकरंद की मधुकरी
कृष्ण गुन गान रस सिंधु वोरी ॥
परम अदभुत अलौकिक तेरी गति लखि
मनसि साँवरे रंग अंग गोरी ।
और आचरज मैं कहुँ न देख्यो सुन्यो
चतुर चौंसठ कला तदपि भोरी ॥
बिमुख पर चित्त ते चित्त जाको सदा
करत निज नाह की चित्त चोरी ।
प्रकृत यह गदाधर कहत कैसे बने
अमित महिमा इतै बुद्धि थोरी ॥

सम्पूर्ण सुखोंको प्रस्तुत करनेवाली युवतीगणमें रत्नरूपा एवं नित्य नवीन कैशोर्यसे युक्त अङ्गोंवाली श्रीराधाकी जय हो! वे श्रीकृष्णचन्द्रके श्याम कलेवररूपी मेघावलीके लिये चातकीरूपा हैं और श्रीकृष्णके मुखचन्द्रके प्रति वैसे ही आसक्त हैं, जैसे चन्द्रमाके प्रति चकोरी। श्रीकृष्णके मनरूपी भ्रमरको भी इन राधारूपी पद्मिनीके ऊपर स्थित होनेपर ही विश्राम मिलता है। वे मानो (रेशमकी) ऐसी सुन्दर डोरी हैं, जो श्रीकृष्णके नयनरूपी मृगोंको बाँध लेती हैं। वे श्रीकृष्ण-प्रेमरूपी मकरन्दका भ्रमरीकी भाँति पान करती रहती हैं और श्रीकृष्णके गुणोंके कीर्तनसे जो रस प्रवाहित होता है, उसके समुद्रमें सदा डूबी रहती हैं। इनकी यह परम अद्भुत और अलौकिक लीला देखो (तो) सही—शरीरका

रंग तो गौर है, पर भीतर मनमें भरा हुआ है श्याम रंग। और ऐसा आश्चर्य तो मैंने न कहीं देखा और न कहीं सुना है कि चौंसठ कलाओंमें निपुण होते हुए भी वे नितान्त भोळी ही हैं। जिनका चित्त कभी दूसरोंकी ओर आकृष्ट नहीं होता, ऐसी श्रीराधिका अपने स्वामी श्रीकृष्णके चित्तका सदैव हरण किये रहती हैं। उधर उनकी महिमा तो अपार है और इधर मेरी बुद्धि अत्यन्त अल्प है। गदाधरजी कहते हैं कि फिर भला इनके स्वरूपका वास्तविक वर्णन कैसे हो सकता है ?

[६]

नवल ब्रजराज को लाल ठाढ़ो सखी
ललित संकेत बट निकट सोहे ।
देख री देख अनिमेष या वेष को
मुकुट की लटक त्रिभुवन जु मोहे ॥
स्वेद कन झलक कछु झुकी सी रहत पलक
प्रेम की ललक रस रास कीये ।
धन्य बड़भाग वृषभान नृपनंदिनी
राधिका अंस पर बाहु दीये ॥
मनि जटित भूमि पर नव लता रही झूमि
कुंज छबि पुंज बरनी न जाई ।
नंद नंदन चरन परस हित जान यह
मुनिन के मनन मिल पाँत लाई ॥
परम अद्भुत रूप सकल सुख भूप यह
मदन मोहन बिना कछु न भावे ।
धन्य हरिभक्त जिनकी कृपा तें सदा
कृष्ण गुन गदाधर भिस्र गावे ॥

सखि ! नवकिशोर नन्दनन्दन श्रीकृष्ण संकेतवटके समीप खड़े हुए कैसे सुन्दर लग रहे हैं ! अरी ! इस वेषको तो बस, अपलक नेत्रोंसे देखा ही करें। मुकुट ऐसी रीतिसे किंचित् तिरछा झुका हुआ है कि इसे

देखकर तीनों लोक मोहित हो रहे हैं। प्रेमके प्रबल आवेगमें भरकर उन्होंने रास-विलास किया है। इसीसे उनके शरीरपर पसीनेकी बूँदें झलक रही हैं और पलकें कुछ झुकी पड़ रही हैं। वृषभानुनृपकी लाड़िली श्रीराधिकाके बड़े भाग्य हैं, जिनके कंधोंपर ये अपनी भुजा रखे हुए हैं। मणिजटित पृथ्वीपर नवीन लताएँ झूम रही हैं। परम मनोहर कुञ्जोंकी शोभा-राशिका तो वर्णन हो नहीं सकता। ये लताराजि और कुञ्ज-समुदाय तो वास्तवमें मुनि-जनोंके मनोंके साकार रूप हैं, जिन्होंने श्रीकृष्णके चरण-स्पर्शको ही परम वरेण्य मानकर यह रूप धारण कर लिया है। इस अत्यन्त अद्भुत रूपका दर्शन समस्त सुखोंका शिरोभूषण है। अब मदन-मोहनके बिना कुछ भी प्रिय नहीं लगता। हरि-भक्त-गण धन्य हैं; क्योंकि उन्हींकी कृपासे गदाधर मिश्र सर्वदा भगवान् श्रीकृष्णका गुण-गान करता रहता है।

[१०]

सुमिरौ नट नागर वर सुंदर गोपाल लाल।
सब दुख मिटि जैहें वे चितत लोचन बिसाल॥
अलकन की झलकन लखि पलकन गति भूल जात
भ्रू बिलास मंद हास रदन छदन अति रसाल।
निंदत रबि कुंडल छबि गंड मुकुर झलमलात
पिच्छ गुच्छ कृतऽवतंस इंदु बिमल बिंदु भाल॥
अंग अंग जित अनंग माधुरी तरंग रंग
बिमद मद गयंद होत देखत लटकीलि चाल।
हसन लसन पीत बसन चारु हार वर सिंगार
तुलसि रचित कुसुम खचित पीन उर नवीन माल॥
ब्रज नरेस बंस दीप बृंदावन बर महीप
बृषभान मान पात्र सहज दीन जन दयाल।
रसिक भूप रूप रास गुन निधान जान राय
गदाधर प्रभु जुवती जन मुनि मन मानस मराल॥

नटवर-नागर सुन्दर श्रीगोपाललालका स्मरण करो। उनके उन बड़े-बड़े नेत्रोंका स्मरण करते ही सब दुःखोंका नाश हो जायेगा। उनकी अलकावलीकी शोभा, भौंहोंकी भङ्गिमा, मन्द मुस्कान और अत्यन्त रसभरे अधरोंकी मधुरिमा देखते समय पलकोंका पड़ना बंद हो जाता है। दर्पणके समान उनके गण्डस्थलमें झलमल करते हुए प्रतिबिम्बित कुण्डलोंकी छवि सूर्यकी प्रभाको भी तिरस्कृत कर दे रही है। उनके सिरपर मोरपंखकी कलँगी लगी है और ललाटपर विमल चन्द्रकी भाँति तिलक-बिंदु है। कामदेवको भी जीतनेवाले उनके अङ्ग-प्रत्यङ्गकी शोभा-माधुरी अपनी तरंगोंसे सम्पूर्ण दिशाओंको रञ्जित कर रही है। उनकी लटकीली चालसे मत्त गजराजका भी अभिमान चूर्ण हो जाता है। वे पीताम्बर धारण किये हुए हैं। उनका मुखमण्डल हँसीसे परिदीप्त है। वे सुन्दर हारका उत्तम शृङ्गार धारण किये हुए हैं। अपने भरे हुए वक्षःस्थलपर तुलसीकी नवीन माला धारण किये हुए हैं, जिसमें बीच-बीचमें पुष्प गुम्फित हैं। वे व्रजराजके वंश-दीप हैं। वृन्दावनके तो अधिपति ही हैं। श्रीवृषभानु उन्हें अत्यन्त आदर देते हैं तथा वे दीनोंके प्रति स्वाभाविक ही दयासे परिपूर्ण हैं। वे रसिकोंके राजा हैं, रूपोंके भण्डार हैं, गुणोंके आकर हैं और चतुर जनोंमें अग्रगण्य हैं। गदाधरजी कहते हैं कि मेरे प्रभु श्रीकृष्णचन्द्र व्रज-युवतियों एवं मुनि-जनोंके मन-रूपी मानसरोवरमें राजहंसके समान नित्य विहार करते हैं।

[११]

आज इन दोउन पै बलि जैये।
रोम रोम सों छबि बरसत है निरखत नैन सिरैये॥
रूप रास मृदु हास ललित मुख उपमा देत लजैये।
नारायण या गौर स्याम को हिये निकुंज बसैये॥

आज इन दोनोंपर न्योछावर हो जाना चाहिये। इनके रोम-रोमसे सुषमाकी वर्षा हो रही है, इन्हें देख-देखकर आँखोंको शीतल कर लो। मधुर मुस्कानसे सुशोभित रूपके निधान मुख-मण्डलकी उपमा किस वस्तुसे दूँ, उपमा देनेमें संकोच हो रहा है। वैसी कोई वस्तु है जो नहीं। नारायण स्वामीजी कहते हैं कि इस गौर-श्याम-मूर्तिको तो बस, हृदय-रूपी निकुञ्जमें ही बसा लेना चाहिये।

[१२]

आज सिंगार निरखि स्यामा को नीको बन्यो स्याम मन भावत ।
यह छबि तिनहिं दिखायो चाहत कर गहि कें नख चंद दिखावत ।।
मुख जोरे प्रतिबिंब बिराजत निरख निरख मन में मुसकावत ।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधर श्रीराधा अरस परस दोउ रीझि रिझावत ।।

आज श्रीराधिकाके शृङ्गारका दर्शन तो करो । अहा ! कितना सुन्दर बना है ! श्रीकृष्णचन्द्रके मनके अत्यन्त अनुकूल हुआ है । श्रीकृष्णचन्द्र वह शोभा स्वयं श्रीराधाकिशोरीको भी दिखा देना चाहते हैं एवं इसी उद्देश्यसे उनका हाथ पकड़कर उनके ही पद-नख-चन्द्रोंकी ओर उनकी दृष्टि ले जाते हैं, जिससे मुख-मण्डल उज्ज्वल नखोंमें प्रतिबिम्बित हो जाये और किशोरी अपना रूप देख लें। उनके नखोंमें दोनोंके सटे हुए मुखारविन्दकी शोभा प्रतिबिम्बित हो रही है, जिसे देख-देखकर दोनों मुस्कुरा रहे हैं। चतुर्भुजदासजी कहते हैं कि मेरे प्रभु श्रीकृष्ण एवं राधाजी दोनों परस्पर स्पर्श कर-करके एक-दूसरेपर मोहित हो रहे हैं।

[१३]

सारी सँवारी है सोनजुही अरु जूही की तापै लगाई किनारी ।
पंकज के दल को लहँगा अँगिया गुलबाँस की सोभित न्यारी ।।
चमेली को हार हमेल गुलाब को मौर की बेंदी दे भाल सँवारी ।
आज विचित्र सँवारी के देखिए कैसी सिंगारी है प्यारे ने प्यारी ।।

देखो ! प्यारे श्रीकृष्णने अद्भुत ढंगसे सजाकर प्रियाजीका आज कैसा शृङ्गार किया है ! सोनजुही पुष्पोंकी साड़ी सजायी है, जिसमें जूहीकी किनारी लगी हुई है। कमलपुष्पदलोंसे लहँगा बनाया है और गुलबाँसकी कञ्चुकी (चोली) अपनी निराली ही छटा दिखा रही है। चमेलीके पुष्पोंका हार बनाया है और गुलाबका हमेल है तथा ललाटपर मौलसिरीके फूलकी बेंदी शोभा दे रही है।

[१८]

सोनजुही की बनी पगिया ह चमेली को गुच्छ रह्यौ झुकि न्यारो ।
द्वै दल फूल कदंब के कुंडल सेवती जामाहु घूम घुमारो ॥
नौ तुलसी पटुका घनस्याम गुलाब हजार चमेली को न्यारो ।
फूलन आज बिचित्र बन्यौ देखो कैसो सिंगारचो है प्यारी ने प्यारो ॥

और इधर देखो ! राधा प्यारीने अद्भुत पुष्प-रचनाके द्वारा प्यारे श्रीकृष्णचन्द्रका कैसा शृङ्गार किया है। सोनजुही पुष्पोंकी तो पाग बनी हुई है, जिसमें चमेलीका एक गुच्छा निराली अदासे लटक रहा है। कदम्ब पुष्पके दो गुच्छोंने कुण्डलका स्थान ले लिया और सेवतीके फूलोंका खूब घेरदार जामा है। नीलसुन्दरकी विविध रंगवाली चादरकी छवि और भी निराली है, जिसमें नाना वर्णोंके नव तुलसीदल, विभिन्न प्रकारके गुलाब, गेंदा और चमेलीके पुष्पोंका उपयोग किया गया है।

[१९]

आजु राधिका भोरहीं जसुमति घर आई ।
महरि मुदित हँसि यों कह्यो मथि भाँन दुहाई ॥
आयसु लै ठाढ़ी भई कर नेति सुहाई ।
रीतो माट बिलोवई चित जहाँ कन्हाई ॥
उनके मन की का कहौं ज्यों दृष्टि लगाई ।
लैया नोई बृषभ सों गैया बिसराई ॥
नैननि में जसुमति लखी दुहुँ की चतुराई ।
सूरदास दंपति दसा कापै कहि जाई ॥

आज श्रीराधाजी प्रातः काल ही मैया यशोदाके घर आयीं। महरीने प्रसन्न मनसे हँसकर इस प्रकार कहा कि लाड़िली! तुम्हें वृषभानुकी दुहाई है, तनिक दही मथ दे। (मैयाकी) आज्ञाको सिरपर धारण करके श्रीराधा (मथानीको लेकर) खड़ी हो गयीं। मथानीको घुमानेवाली रस्सी उनके हाथमें शोभा दे रही थी, किन्तु रीते मटकेमें ही वे उसे घुमाने

लगीं। मन तो उनका जहाँ श्रीकृष्ण थे, वहाँपर अटका हुआ था। उधर श्रीकृष्णके चित्तकी दशाका भी क्या वर्णन करूँ! जब उन्होंने श्रीलाड़िलीजीकी ओर देखा तो दूध दुहनेके लिये नोईसे बैलके पैर बाँध दिये। गायको भूल गये। श्रीयशोदाने आँखों-ही-आँखोंमें दोनोंकी परस्पर दर्शनकी यह भोली चतुरता देख ली। सूरदासजी कहते हैं कि श्रीराधाकृष्णकी प्रेम-विभोर-दशाका कौन वर्णन कर सकता है?

[१६]

महरि कह्यो री लाडिली किन मथन सिखायौ।
कहँ मथनी कहँ माट है चित कहाँ लगायौ॥
अपने घर यौं ही मथै करि प्रगट दिखायौ।
कै मेरे घर आई कै तैं सब बिसरायौ॥
मथन नहीं मोहि आवई तुम सौंह दिवायौ।
तिहि कारन मैं आइ कै तुव बोल रखायौ॥
नंद घरनि तब मथि दह्यो इहि भाँति बतायौ।
सूर निरखि मुख स्याम को तहँ ध्यान लगायौ॥

श्रीयशोदाजी कहने लगीं कि अरी लाड़िली! तुझे किसने मथना सिखाया है? मथानी तो कहीं है, मटका कहीं और तुम्हारा चित्त कहीं अन्यत्र लग रहा है। आज तूने स्पष्ट दिखा दिया कि तू अपने घरपर कैसे मथा करती है। अथवा मेरे ही घर आकर तू सब कुछ भूल गयी है! तब किशोरी बोली—मुझे मथना आता नहीं। तुमने शपथ दिला दी, इसी कारण (मटकेके पास) आकर मैंने केवल तुम्हारी बात रखी है। सूरदासजी कहते हैं कि नन्दरानीने तब दही मथकर, 'इस प्रकार बिलोया जाता है'—यह बताया; किन्तु राधाजी श्रीकृष्णका मुख देखते हुए उधर ही ध्यान लगाये रहीं।

१७]

प्रगटी प्रीति न रही छपाई।
परी दृष्टि बृषभानु सुता की दोउ अरुझे निरवारि न जाई॥

बछरा छोरि खरिक कौं दीन्हो आपु कान्ह तन सुधि बिसराई ।
गोवत बृषभ निकसि गैया गई हँसत सखा का दुहत कन्हाई ॥
चारों नैन भए इक ठाहर मनहीं मन दुहुँ रुचि उपजाई ।
सूरदास स्वामी रतिनागर नागरि देखि गई नगराई ॥

श्रीराधा और श्रीकृष्णकी प्रीति प्रकट हो गयी, अब वह गुप्त नहीं रही। वृषभानुनन्दिनीकी दृष्टि पड़ते ही दोनोंका मन इस प्रकार उलझ गया कि वे अलग करनेमें असमर्थ हो रहे हैं। श्रीकृष्णने खरिकमें बँधे हुए बछड़ेको तो खोल दिया, किन्तु उन्हें अपने शरीरकी सुधि ही नहीं रही। दूध दुहनेके लिये बैलके पैरोंमें रस्सी बाँध रहे हैं और उधर गायें बाहर निकल गयीं। सखा हँस रहे हैं और कह रहे हैं कि कन्हैया! तू किसे दुह रहा है? आँखोंके चार होते ही दोनोंके मनोंमें तीव्र आकर्षण उत्पन्न हो गया। सूरदासजी कहते हैं कि मेरे स्वामी श्रीकृष्ण हैं तो प्रीति-रीतिमें बड़े चतुर, परन्तु नागरी राधिकाको देखकर उनकी सारी चतुराई समाप्त हो गयी।

[१८]

या घर प्यारी आवति रहियौ ।
महरि हमारी बात चलावत मिलन हमारी कहियौ ॥
एक दिवस मैं गई जमुन तट तहँ उन देखी आई ।
मोकौं देखि बहुत सुख पायौ मिलि अंकम लपटाई ॥
यह सुनि कै चलि कुँवरि राधिका मोकों भई अबार ।
सूरदास प्रभु मन हरि लीन्हों मोहन नंद कुमार ॥

श्रीयशोदाजी राधिकासे कहती हैं कि प्यारी बेटी! तुम इस घरमें सदा आया करना। तुम्हारी माँ क्या कभी हमारी चर्चा चलाती हैं? उनसे हमारे प्रेम-मिलनका निवेदन कर देना। एक दिन मैं यमुना-तटपर गयी थी। वहाँ उन्होंने मुझे देखा। मुझे देखकर वे बहुत आनन्दित हुईं और मुझे हृदयसे लगा लिया। यह सुनकर, 'अब मुझे देर हो गयी है'—यों कहती हुई किशोरी राधिका चल पड़ीं।

सूरदासजी कहते हैं कि मेरे स्वामी नन्दनन्दन श्रीकृष्ण स्वयं मनमोहन हैं, उनका भी मन राधाने हर लिया।

[१६]

हरि सों धेनु दुहावत प्यारी।
करत मनोरथ पूरन मन बृषभानु महर की बारी ॥
दूध धार मुख पर छबि लागति सो उपमा अति भारी।
मानो चंद कलंकहि धोवत जहँ तहँ बूँद सुधा री ॥
हाव भाव रस मगन भए दोउ छबि निरखत ललिता री।
गो दोहन सुख करत सूर प्रभु तीनिहुँ भुवन कहा री ॥

राजा वृषभानुकी पुत्री प्यारी राधिका प्यारे श्रीकृष्णसे गाय दुहा रही हैं। वे भी उनकी इच्छा पूरी कर रहे हैं। दूध दुहते समय दुग्ध-धाराकी फुहारें उड़-उड़कर उनके मुखचन्द्रपर पड़ रही हैं। उसकी उपमा भी गौरवमयी बन गयी है। ऐसा लग रहा है मानो चन्द्रमा अपने कलंकको धो रहा हो और इसीसे यत्र-तत्र सुधाकी बूँदें दिखलायी दे रही हैं। दोनों ही एक दूसरेके हाव-भावके रस-सिन्धुमें निमग्न हो रहे हैं और ललिताजी यह शोभा देख रही हैं। सूरदासके स्वामी गायें दुहते समय जिस सुखकी सृष्टि कर रहे हैं, वह तीनों लोकोंमें भी कहाँ प्राप्य है ?

[२०]

धेनु दुहत अति ही रति बाढ़ी।
एक धार दोहनि पहुँचावत, एक धार जहँ प्यारी ठाढ़ी ॥
मोहन कर तें धार चलति परि मोहनि मुख अति ही छबि गाढ़ी।
मनु जलधर जलधार वृष्टि लघु पुनि पुनि प्रेम चंद पर बाढ़ी ॥
सखी संग की निरखति यह छबि भइ व्याकुल मन्मथ की डाढ़ी।
सूरदास प्रभु के रस बस सब भवन काज तें भई उचाढ़ी ॥

गायके दुहते समय ही प्रेम वेगसे बढ़ा ! ऐसी कलासे श्रीकृष्ण गाय दुहने लगे कि एक धार तो दोहनीके बीचमें जाती थी और दूसरी धार जहाँ प्रियाजी खड़ी थीं, वहाँ पहुँचती थी। श्रीकृष्णके हाथोंसे चलकर मनमोहिनी राधिकाके मुखपर पड़ती हुई धारकी शोभा बड़ी ही सुन्दर प्रतीत होती थी मानो वर्धनशील प्रेमके कारण घनश्यामरूपी श्याम-घनसे जलधाराकी फुहारें बार-बार चन्द्रमापर पड़ रही हों। साथकी सखियाँ इस शोभाको देख-देखकर स्नेहाकुल हो उठीं। उनका हृदय प्रेमसे संतप्त हो उठा। सब-की-सब सूरदासजीके स्वामी श्रीकृष्णके प्रेमके वशीभूत हो गयीं और उनका मन घरके काम-काजसे उचट गया।

[२१]

सिर दोहनी चली लै प्यारी।
फिरि चितवत हरि हँसे निरखि मुख मोहन मोहनि डारी ॥
व्याकुल भई गई सखियन लौं ब्रज कौं गये कन्हाई।
और अहिर सब कहाँ तुम्हारे हरि सौं धेनु दुहाई ॥
यह सुनि कै चक्रित भइ प्यारी धरनि परी मुरझाई।
सूरदास सब सखियन उर भरि लीन्ही कुँवरि उठाई ॥

श्रीकृष्णसे दूध दुहाकर श्रीकृष्ण-प्यारी राधा दोहनीको सिरपर रखकर चलीं। घूमकर वे फिर देखने लगीं। श्रीकृष्ण भी उनका मुख देखकर विहँस दिये और इस प्रकार मदनमोहनने उनपर अपनी मोहनी डाल दी। राधा स्नेह-विह्वल हो उठीं, पर जाना तो था ही। वे अपने सखियोंमें चली गयीं और श्रीकृष्ण व्रजकी ओर बढ़े। सखियोंने श्रीराधाकी व्याकुलता देखकर और उसका कारण भाँपकर उनसे पूछा कि तुम्हारे और सब ग्वाले कहाँ गये, जो तुमने श्रीकृष्णसे गाय दुहाई ? यह सुनकर श्रीराधासे कोई उत्तर तो देते नहीं बना। वे चकरा गयीं और मूर्च्छित-सी होकर पृथ्वीपर गिर पड़ीं। सूरदास कहते हैं कि सब सखियोंने किशोरी राधाको उठाकर हृदयसे लगा लिया।

[२२]

खेलन के मिस कुँवरि राधिका नंद महर कें आई हो ।
सकुच सहित मधुरे करि बोली घर हैं कुँवर कन्हाई हो ॥
सुनत स्याम कोकिल सम बानी निकसे अति अतुराई हो ।
माता सो कछु करत कलह हे रिस डारी बिसराई हो ॥
मैया री तू इनको चीन्हति बारंबार बताई हो ।
जमुना तीर काल्हि मैं भूल्यो बाँह पकरि लै आई हो ॥
आवत इहाँ तोहि सकुचति है मैं दै सौंह बुलाई हो ।
सूर स्याम ऐसे गुन आगर नागरि बहुत रिझाई हो ॥

खेलनेके मिससे किशोरी राधिका नन्दरानीके घर आयीं। बड़े संकोचसे मधुर स्वरमें पूछा कि कुँवर कन्हैया घरमें है क्या? कोकिलके समान उनकी मीठी वाणी सुनकर श्यामसुन्दर अत्यन्त शीघ्रतासे बाहर निकल आये। वे मातासे कुछ झगड़ रहे थे, पर अब अपने क्रोधको भुला दिया और कहने लगे कि माँ! तू इन्हें पहचानती है क्या? मैंने कई बार तुझे इनके विषयमें बताया है। मैं कल यमुना-किनारे राह भूल गया था तो ये बाँह पकड़कर मुझे ले आयीं। यहाँ आते हुए तेरा संकोच कर रही थीं तो मैंने शपथ देकर बुलाया है। सूरदासजी कहते हैं कि श्यामसुन्दर ऐसे गुण-निधान हैं कि उन्होंने राधाको अत्यधिक रिझा लिया।

[२३]

जसुमति राधा कुँवरि सँवारति ।
बड़े बार सीमंत सीस के प्रेम सहित निरुवारति ॥
माँग पारि बेनी जु सँवारति गूँथी सुंदर भाँति ।
गोरें भाल बिंदु बंदन मनु इंदु प्रात रवि काँति ॥
सारी चीर नई फरिया लै अपने हाथ बनाई ।
अंचल सौं मुख पोंछि अंग सब आपुहि लै पहिराई ॥

तिल चाँवरि बतासे मेवा दियो कुँवरि की गोद ।
सूर स्याम राधा तनु चितवत, जसुमति मन तन मोद ॥

यशोदा मैया राधाकिशोरीका शृङ्गार कर रही हैं। वे शीशके बड़े-बड़े बालोंको प्रेमसे सुलझा रही हैं तथा मध्य भागमें माँग काढ लेनेके बाद सुन्दर ढंगसे गूँथती हुई वेणीकी रचना कर रही हैं। गोरे ललाटपर रोलीका तिलक-बिंदु ऐसा लगता है मानो चन्द्रमापर अरुणोदयकालीन सूर्यकी शोभा छा रही हो। अपने अञ्चलसे मुख और सारे अङ्गोंको पोंछकर लहरियादार ओढनी और अपने हाथोंसे बनाया हुआ नया लहँगा स्वयं ही धारण कराया। फिर तिल, चावल, बतासे और मेवोंसे कुँवरिकी गोद भरी। सूरदास कहते हैं कि एक बार श्यामसुन्दरकी ओर और दूसरी बार राधाकी ओर निहारती हुई यशोदाजी शरीर और मन दोनोंसे प्रसन्न हो रही हैं, यह देखकर कि जोड़ी अत्यन्त सुन्दर है।

[२८]

मैं हरि की मुरली बन पाई ।
सुन जसुमति सँग छाँड आपनो कुँवर जगाय देन हौं आई ॥
सुन पिय बचन बिहँसि उठ बैठे अंतरजामी कुँवर कन्हाई ।
मुरली संग हुती मेरी पहुँची दे राधे बृषभान दुहाई ॥
मैं निहार नीची नहिं देखी चलो संग दऊँ ठौर बताई ।
बाढ़ी प्रीति मदन मोहन सों घर बैठे जसुमति बौराई ॥
पायो परम भावती जी को दोऊ पढ़े एक चतुराई ।
परमानंददास तिन बूझो जिन यह केलि जनम भर गाई ॥

श्रीवृषभानुनन्दिनी नन्दभवनमें आयीं और बोलीं—हे यशोदा मैया सुनो! मुझे श्रीकृष्णकी वंशी वनमें पड़ी हुई मिली है। मैं अपनी सहेलियोंका साथ छोड़कर उसे देने आयी हूँ। अपने लालको जगा दो! फिर तो मनकी बात जाननेवाले नन्दलाल उसकी बात सुनकर बिहँसते हुए उठ बैठे और बोले—अरी राधे! मुरलीके साथ मेरी

पहुँची भी थी। तुझे वृषभानुकी दुहाई है, उसे भी दे दे। श्रीराधाकिशोरीने कहा — मैंने नीचे ध्यानसे देखा नहीं, तुम साथ चलो तो वह स्थान तुम्हें दिखा दूँ, जहाँ मुरली मिली थी। श्रीकृष्णसे उनकी प्रीति प्रगाढ़ हो गयी थी, इसलिये दोनोंने घर बैठे ही यशोदाजीको झाँसा दे दिया। इसके पश्चात् श्रीकृष्णचन्द्र नन्द-भवनके बाहर चले आये। प्रियतम श्रीकृष्णको पा करके किशोरीको अपने अभीष्टकी प्राप्ति हो गयी। मनचाही बात बना लेनेकी कुशलताको देख करके यही कहना पड़ता है कि दोनोंने यह अद्भुत चतुरायी एकही गुरुसे पढ़ी है। परमानन्ददासजी कहते हैं कि इसका रहस्य उनसे जाकर पूछो, जिन्होंने इस लीलाको जीवन भर गाया है।

[२५]

बनी राधा गिरधर की जोरी।
मनहुँ परस्पर कोटि मदन रति की सुंदरता चोरी॥
नौतन स्याम नंद नंदन बृषभानु सुता नव गोरी।
मनहुँ परस्पर बदन चंद को पीवत तृषित चकोरी॥
कुंभनदास प्रभु रसिक लाल बहु बिधि रसिकिनी निहोरी।
मनहिं परस्पर बढ्यो रंग अति उपजी प्रीति न थोरी॥

श्रीराधा-कृष्णकी जोड़ी सुन्दर बनी है। उनका सौन्दर्य देखकर ऐसा प्रतीत होता है मानो इन्होंने करोड़ों कामदेव और रतिकी सुन्दरता चुरा ली हो। नन्दनन्दन श्रीकृष्णके श्याम शरीरकी शोभा नित्य नूतन है ही और वृषभानुजा श्रीराधाके गोरे अङ्गोंकी छटा भी नित्य नयी ही दिखती है। वे एक-दूसरेके मुखचन्द्रको आमुग्ध नयनोंसे परस्पर ऐसे देख रहे हैं मानो प्यासी चकोरी चन्द्र-छविको पी रही हो। कुम्भनदासजी कहते हैं मेरे जीवन सर्वस्व रसिक लालने रसकी एकमात्र आश्रयभूता किशोरीसे प्रेमदान करनेके लिये विविध भाँतिसे प्रार्थना की। इसके फलस्वरूप उन दोनोंके मनोंमें पारस्परिक प्रीतिका उद्भव प्रचुर रूपमें होनेसे प्रगाढ़ आनन्द अधिकाधिक लहराने लगा।

[२६]

सघन कुंज की छाँह मनोहर सुमन सेज बैठे पिय प्यारी ।
अरस परस अंसनि भुज दीने नंद नंदन वृषभानु दुलारी ॥
नख सिख अंग सिंगार सुहावत इहि छबि सम नाहिन उपमा री ।
रस बस करत प्रेम की बतियाँ हँसि हँसि देत परस्पर तारी ॥
सनमुख सकल सहचरी ठाढ़ी बिहरत श्री राधा गिरिधारी ।
गोबिंददास निरखि दंपति सुख तन मन धन कीनो बलिहारी ॥

सघन कुञ्जकी अत्यन्त मनोहर छायामें कुसुम-शय्यापर प्यारी वृषभानुनन्दिनी श्रीराधा तथा प्रियतम नन्दनन्दन श्रीकृष्ण बैठे हैं। दोनों परस्पर स्पर्श करते हुए एक-दूसरेके कंधोंपर भुजाएँ रखे हुए हैं। श्रीअङ्गोंमें नखसे शिखतक शृङ्गार सुशोभित हो रहा है। इस छविकी कोई उपमा नहीं है। रसके वशीभूत होकर वे प्रेमालाप कर रहे हैं और हँस-हँसकर एक-दूसरेके हाथपर ताली बजा रहे हैं। श्रीराधा-कृष्ण विहारकर रहे हैं और सामने सब सखियाँ खड़ी हैं। गोविन्ददासने इन युगल विहारिणी-विहारीका यह आनन्दविहार देखकर अपना तन-मन-धन, इन दोनोंको उनपर न्यौछावर कर दिया।

[२७]

बैठे हरि राधा संग कुंज भवन अपने रंग
कर मुरली अधर धरे सारंग मुख गाई ।
मोहन अति ही सुजान परम चतुर गुन निधान,
जान बूझि एक तान चूक कै बजाई ॥
प्यारी जब गह्यो बीन सकल कला गुन प्रवीन
अति नवीन रूप सहित तान वह सुनाई ।
बल्लभ गिरिधरन लाल रीझि दई अंक माल,
कहत भलें भलें लाल सुंदर सुखदाई ॥

श्रीराधा और श्रीकृष्ण अपने आनन्दमें निमग्न कुञ्जभवनमें बैठे हैं। श्रीकृष्णने अपने हाथोंकी मुरलीको अधरोंपर रखकर और अपने श्रीमुखसे फूँक भरकर सारंग रागकी एक तान छेड़ी। गोपी-मोहन श्रीकृष्ण बड़े ही सयाने एवं अत्यन्त चतुर हैं और (संगीतकलामें) गुणोंके भण्डार हैं; इसपर भी उन्होंने जान-बूझकर एक तान अशुद्ध रूपमें बजायी। तब प्यारीजीने वीणा लेकर उसी तानको अत्यन्त नये ढंगसे सही रूपमें बजाया। वे सभी कलाओं और गुणोंकी पण्डिता जो ठहरीं! (प्यारे श्रीकृष्ण तो यही चाहते थे कि प्यारी श्रीराधा बजायें और इसीलिये मुरली बजानेमें उन्होंने जान-बूझकर चूक की थी!) वल्लभजी कहते हैं कि श्रीराधाकी प्रशंसा करनेके मिससे सुखकी वर्षा करनेवाले गिरधारी प्यारे श्यामसुन्दरने रीझकर उनको हृदयसे लगा लिया और वे 'सुन्दर'-'सुन्दर' कह-कह करके उसकी सराहना करने लगे।

[२८]

इक टक रही नारि निहार।
कुंज बन श्री स्याम स्यामा बैठि करत बिहार॥
नैन सैन कटाच्छ सौं मिलि करत रंग बिलास।
नाहिं सोभा पार पावत बचन मुख मृदु हास॥
तरुनि श्री बृषभानु तनया तरुन नंद कुमार।
सूर मो क्यों बरनि आवै रूप रस सुख सार॥

कुञ्जभवनमें श्रीराधा और श्रीकृष्ण बैठे हुए विहार कर रहे हैं और गोपसुन्दरियाँ अपलक दृष्टिसे उन्हें निहार रही हैं। वे आँखोंकी तिरछी चितवनसे संकेत करते हुए परस्पर विचित्र लीला-विलास कर रहे हैं। उनके मुखकी मधुर वचनावली और मधु हासकी शोभाका कोई पार नहीं है। श्रीराधाकी किशोर अवस्था है और श्रीकृष्ण भी किशोर हैं। सूरदास कहते हैं कि मेरे द्वारा तो उस रूप, रस एवं सुखकी चरम सीमाका वर्णन हो ही कैसे सकता है!

[२९]

देखन देत न बैरिन पलकें ।
निरखत बदन लाल गिरधर को बीच परत मानो बज्र की सलकें ॥
बन तें आवत बेनु बजावत गोरज मंडित राजत अलकें ।
माथे मुकुट स्रवन मनि कुंडल ललित कपोलन झाँई झलकें ॥
ऐसे मुख देखन कौं सजनी कहा कियो यह पूत कमल कें ।
नंददास सब जड़न की यह गति मीन मरत भाएँ नहि जल कें ॥

गोपी कहती हैं कि श्रीकृष्णकी शोभाको बैरिन पलकें एकटक नहीं देखने दे रही हैं। गिरिधरलालके श्रीमुखको देखते समय बीचमें वे इस प्रकार आ जाती हैं मानो वज्रकी सलाकें हों। श्रीकृष्ण वनसे वंशी बजाते हुए आ रहे हैं। गायोंके पैरसे उड़ी हुई धूलमें सनी उनकी अलकोंकी शोभा निराली है। उनके सिरपर मुकुट है, कानोंमें मणियोंका कुण्डल है और उनकी परछाईं सुन्दर कपोलोंमें प्रतिबिम्बित हो रही है। हे सखि! जलज-पुत्र ब्रह्माने ऐसे सुन्दर मुखके दर्शनके लिये यह क्या विघ्न उपस्थित कर दिया है? नन्ददासजी कहते हैं, सभी जड़ वस्तुओंकी यही दशा है। मछली बेचारी भी तो जलके लिये प्राण देती है, किन्तु जलको उसकी चिन्ता थोड़े ही होती है। (इसीलिये बहिनों! जलजसे उत्पन्न ब्रह्माको भी हमारा ध्यान थोड़े ही है।)

[३०]

तेरी भौंह की मरोरन तें ललित त्रिभंगी भये
अंजन दै चितयो भए जु स्याम बाम ।
तेरी मुसकान देख दामिनी सी कौंध जात
दीन ह्वै जाचत प्यारी लेत राधे आधो नाम ॥
ज्यों ज्यों नचायो चाही तैसे हरि नाचत बलि
अब तो मया कीजै चलिये निकुंज धाम ।
नंददास प्रभु बोलो तो बुलाय लाऊँ
उनको तो कलप बीते तेरी घरी जाम ॥

हे श्रीराधे! तुम्हारी भ्रू-भङ्गिमासे ही श्रीकृष्णका सुन्दर त्रिभङ्गी रूप बन गया है और हे सुन्दरि! जो तुमने अपनी आँखोंमें अञ्जन लगाकर श्रीकृष्णकी ओर देखा, इसीसे वे श्याम हो गये हैं। तुम्हारे स्मितको देखकर उनके हृदय-पटलपर मानो बिजली-सी चमक जाती है। हे प्यारी! श्रीकृष्ण दीन बनकर अस्फुट रूपसे तुम्हारा 'राधा-राधा' नाम ले रहे हैं और तुमसे प्रेमकी भीख माँगते हैं। श्रीकृष्णको तुम जैसे-जैसे नचाना चाहती हो, वे वैसे-वैसे ही नाचते हैं। मैं तुम्हारी बलिहारी जाती हूँ। अब तो कृपा करके निकुञ्जभवनमें पधारिये। नन्ददासजी कहते हैं कि यदि तुम आज्ञा दो तो प्रभु श्रीकृष्णको बुला लाऊँ; क्योंकि तुम्हारा एक घड़ी-प्रहरका समय उनके लिये कल्पके समान बीत रहा है।

[३२१]

जैसें तेरे नूपुर न बाजहीं
　　प्यारी! पग हौले हौले धर।
जागत ब्रज को लोग नाहीं सुनायबे जोग
　　हा हा री हठीली नेंक मेरौ कह्यौ कर॥
जौ लौं बन बीथिन माँहि सघन कुंज की परछाँहि
　　तो लौं मुख ढांप चल कुंवर रसिक बर।
नंददास प्रभु प्यारी छिनहूँ न होय न्यारी
　　सरद उज्यारी जामें जैहें कहूँ रर॥

हे प्यारी सखि! धीरे-धीरे चरण रख, जिससे तेरे नूपुर बजें नहीं। व्रजके लोग अभी जग रहे हैं। उन्हें अपने नूपुरोंका शब्द सुनाना उचित नहीं है। अरी हठीली! थोड़ी मेरी बात मान ले। मैं हा-हा खाती हूँ। सघन कुञ्जोंकी छायासे युक्त वन-वीथियाँ जबतक नहीं आ जातीं, तबतक तू मुखको ढककर रसिकशिरोमणि नन्दकिशोरके पास चल। नन्ददासजी कहते हैं—प्यारी श्रीराधे! प्रभुसे क्षणभरके लिये विलग न रह। आज शरद् ऋतुकी उजियाली रात है, उस चाँदनीमें तुम्हारा गोरा शरीर इस प्रकार मिल जायेगा कि किसीको तुम्हारा पता ही नहीं चलेगा।

[३२]

चलो क्यों न देखें री खरे दोउ कुंजन की परछाँही ।
एक भुजा गहि डार कदंब की दूजी भुजा गलबाँही ।।
छबि सों छबीली लपट लटक रहि कनक बेलि तमाल अरुझाई ।
हरिदास के स्वामी स्यामा कुंज बिहारी रंगे हैं प्रेम रंग माँही ।।

श्रीराधा और श्रीकृष्ण दोनों कुञ्जकी छायामें खड़े हैं। अरी ! वहाँ चलकर यह शोभा क्यों न देखी जाये ! वे अपनी एक भुजासे तो कदम्बकी डाळ पकड़े हुए हैं और दूसरीको एक-दूसरेके गलेमें डाले हुए हैं। सुन्दरी राधाकी उनके अङ्गोंसे लिपटकर झूलनेकी-सी छवि अत्यन्त मनोहारिणी है। ऐसा लगता है मानो सोनेकी लता तमाल वृक्षके साथ उलझी हुई है। श्रीहरिदासजीके स्वामिनी-स्वामी किशोरी श्रीराधा और कुञ्जबिहारी श्रीकृष्ण दोनों प्रेमके रंगमें रँगे हुए हैं।

[३३]

राधिका आज आनंद में डोलै ।
सांवरे चंद गोबिंद के रस भरी दूसरी कोकिला मधुर स्वर बोलै ।।
पहिर तन नील पट कनक हारावली हाथ लै आरसी रूप को तोलै ।
कहत श्रीभट्ट ब्रजनारि नागरि बनी कृष्ण के सील की ग्रंथिका खोलै ।।

आज श्रीराधिका आनन्दमें मग्न होकर विचरण कर रही हैं। श्यामसुन्दर श्रीकृष्णचन्द्रके रूपमें डूबी हुई ऐसे मीठे शब्दोंका उच्चारण कर रही हैं मानो कोई कोकिला मधुर स्वरमें बोल रही हो। नीली साड़ी पहनकर तथा हृदयपर स्वर्णमाला धारणकर वे अपने हाथोंमें दर्पण लिये हुए अपने सौन्दर्यको देख-देखकर मन-ही-मन उसका मूल्याङ्कन कर रही हैं। श्रीभट्टजी कहते हैं कि चतुरा ब्रजाङ्गना श्रीराधाकी शोभा क्या ही सुन्दर बन पड़ी है और वे अपनी प्रसन्नतासे श्रीकृष्णके शीलकी गाँठको खोल रही हैं (अर्थात् उनका मन अपने हाथमें नहीं रह जाता)।

[२४]

कदम बन बीथिन करत बिहार ।
अति रस भरे मदन मोहन पिय तोर्यो प्रिया उर हार ।।
कनक भूमि बिथुरे गज मोती कुंज कुटी के द्वार ।
गोबिंद प्रभु हस्त करि पोवत श्रीब्रजराज कुमार ।।

कदम्ब-वनकी वीथियोंमें श्रीराधा और श्रीकृष्ण विहार कर रहे हैं। कामदेवको भी मोहित करनेवाले श्यामसुन्दरने अत्यन्त रसमें भरकर प्रियाजीके हृदयका हार तोड़ दिया। कुञ्ज-कुटीके द्वारकी स्वर्णभूमिपर गजमुक्ताके दाने बिखर गये। गोविन्ददासके स्वामी श्यामसुन्दर नन्दनन्दन श्रीकृष्ण अपने श्रीकरोंसे उस मालाको पिरो रहे हैं।

[२५]

पासा खेलत हैं पिय प्यारी ।
पहिलो दाव पर्यो स्याम को पीत पिछोरी हारी ।।
स्याम कहे कछु तुमहु लगावो तब नकबेसर डारी ।
कल बल छल करि जीत्यो चाहत लाल गोबरधनधारी ।।
अब की बेर पिय मुरली लगावौ तो खेलो या बारी ।
भूषन सबै लगाय विट्ठल प्रभु हारे कुंज बिहारी ।।

श्रीप्रिया और श्रीप्रियतम पासा खेल रहे हैं। पहला दाँव श्रीराधाजीका पड़ा और श्रीकृष्ण अपना पीताम्बर हार गये। तब श्रीश्यामसुन्दरने श्रीप्रियाजीसे भी कुछ दाँवपर रखनेको कहा और उन्होंने अपनी नाकका बेसर लगाया। गोवर्धनको धारण करनेवाले प्रियतम श्रीकृष्ण चतुराई, बल अथवा छलसे किसी भी प्रकारसे जीतना चाहते हैं। किशोरीजीने कहा कि हे प्यारे! इस बार अपनी मुरली दाँवपर लगाओ, तब खेलनेका साहस करो। श्रीविट्ठलजी कहते हैं कि मेरे सर्वस्व श्रीकुञ्जविहारी एक-एक करके अपने सभी आभूषण हार गये।

[३६]

आज तेरी फबी अधिक छबि नागरी ।
माँग मोतिन छटा बदन पै कच लटा
नील पट घन घटा रूप गुन आगरी ॥
नयन कज्जल अनी कबरी लज्जित फनी
तिलक रेखा बनी अचल सौभाग री ।
नासिका सुक चंचु अधर बंधुक सम
बीजु दाड़िम दसन चिबुक पै दाग री ॥
बलय कंकन चूरि मुद्रिका अति हरि
बेसरि लटकि रही काम गुन आगरी ।
ताटंक मनि जटित किंकिनी कटि तटित
पीत मुक्ता दाम कुच कंचुकी लाग री ॥
मूक मंजीर ध्वनि चरन नख चंद्रमा
परम सौरभ बढ़त मृदुल अनुराग री ।
कहै कृष्णदास गिरिधरन बस किये
करत जब मधुर स्वर ललित वर राग री ॥

अरी निपुणे राधिके ! आज तेरी शोभा अत्यधिक भली लग रही है । माँग मोतियोंसे दमक रही है, मुखमण्डलपर अलकावली झुर रही है और तुम रूप एवं गुणकी निधान हो । तेरे शरीरपर मेघमालाके समान नीला वस्त्र शोभा पा रहा है । तेरी आँखोंमें बाणकी नोककी भाँति काजलकी पतली रेखा है । लहरदार वेणीसे नागिन भी लज्जित हो रही है और मस्तकपर लगा हुआ तिलक मानो सौभाग्यकी अचल लीक-सा दिखलायी दे रहा है । नासिका शुककी चोंचकी भाँति सुन्दर है, अधर दुपहरियाके पुष्पके समान लाल है, दाँत अनारके दानोंकी भाँति हैं एवं चिबुकपर काला दाग है । हाथोंमें अत्यन्त सुन्दर वलय, कङ्कण, चूड़ियाँ और अँगूठियाँ हैं और नाकमें रसिकलाओंकी निधि-स्वरूपा बेसर लटक रही है । कानोंमें मणिजटित कर्णफूल और श्रोणीपर बजनेवाली करधनी

सुशोभित है। वक्षःस्थलपर तू जो कञ्चुकी धारण किये हुए है, उसमें पोत और मोतीकी मालाएँ टँकी हुई हैं। नूपुरकी ध्वनि इतनी मन्द है कि वे मूक-से हो जाते हैं। चरण-नख चन्द्रमाकी भाँति चमक रहे हैं और शरीरसे अत्यधिक सुगन्ध निःसृत हो रही है। इस रूपके दर्शनसे हृदयका मृदुल स्नेह बढ़ने लगता है। कृष्णदासजी कहते हैं कि अत्यन्त सुन्दर एवं श्रेष्ठ रागमें मधुर स्वरसे जब तू गाती है तो तू गिरिधारी लालजीको वशमें कर लेती है।

[२७]

भाग्यवान बृषभानु सुता सी को तिय त्रिभुवन माहीं ।
जाके पति त्रिभुवन मन मोहन दिये रहत गल बाँहीं ॥
ह्वै अधीन सँग ही सँग डोलत जहाँ कुँवरि चलि जाहीं ।
रसिक लख्यौ जो सुख बृंदाबन सो त्रिभुवन में नाहीं ॥

त्रिभुवनका मन मोहित करनेवाले श्रीकृष्ण जिनके पति हैं और गलबाँही डाले रहते हैं, उन श्रीवृषभानुनन्दिनीके समान भाग्यवान् को इस त्रिलोकीमें दूसरी कौन है? जहाँ-जहाँ किशोरी जाती हैं, उनके अधीन हुए प्यारे भी वहाँ-वहाँ उनके साथ-साथ घूमते रहते हैं। रसिकदासजीने वृन्दावनमें जो सुख देखा, वह तीनों भुवनोंमें भी अप्राप्य है।

[२८]

राधा मोहन करत बियारी ।
एक कर थार सँवारे सुंदरि एक बैष एक रूप उजयारी ॥
मधु मेवा पकवान मिठाई दंपति अति रुचिकारी ।
सूरदास को जूठन दीनी अति प्रसन्न ललिता री ॥

श्रीराधाकृष्ण ब्यालू (रात्रिका भोजन) कर रहे हैं। कई एक सुन्दरियाँ अपने हाथोंसे थाली सजानेमें लगी हैं। वे एक ही अवस्थाकी हैं और उनका एक-सा ही दीप्तियुक्त रूप है। श्रीप्रिया-प्रियतम दोनोंको अत्यन्त स्वादिष्ट लगनेवाली वस्तुएँ—जैसे मधु, मेवा, पकवान और मिठाई आदि थालमें सजी हुई हैं। ललिताजीने अत्यन्त प्रसन्न होकर सूरदासको जूठन-प्रसाद प्रदान किया।

[३९]

अँचवन करत लाड़िली लाल ।
कंचन झारी गहत परसपर श्रीराधा गोपाल ॥
जल मुख लेतहि हँसत हँसावत देखत सखिन के जाल ।
राधा माधव केलि करत भए श्रीभट परम बिहाल ॥

किशोरी राधा और श्रीकृष्ण भोजनके पश्चात् आचमन कर रहे हैं। एक दूसरेको आचमन करानेके लिये वे अपने-अपने हाथोंमें सोनेका जलपात्र लेते हैं। मुखमें जल लेते ही एक दूसरेको स्वयं हँस-हँसकर हँसानेकी चेष्टा करते हैं। झुण्ड-को-झुण्ड सखियाँ इस मधुर लीलाको देख रही हैं। श्रीराधामाधवको इस प्रकार क्रीड़ा-रत देखते-देखते श्रीभट्टजी अत्यन्त विह्वल हो गये।

[४०]

बीरी सरस सखी रुचि दीनी ।
लई प्रीति कर प्रीतम प्यारी अधरन लाली लसी नवीनी ॥
मृदु मुसकात बात हँसि बोलत सुनत सहेली रस में भीनी ।
सरस माधुरी सयन करन की जुगल लाल मन इच्छा कीनी ॥

सखीने रसभरे पानके बीड़ेको अत्यन्त प्रेमसे निवेदित किया। श्रीप्रिया-प्रियतमने उसे प्रीतिपूर्वक हाथोंमें लेकर आरोग लिया और उनके अधरोंपर एक नयी लालिमा छा गयी। वे मन्द स्मितके साथ हँस-हँस करके बात कर रहे हैं, जिसे सुनकर सखियाँ रसमें डूब जाती हैं। सरसमाधुरीजी कहते हैं कि फिर दम्पतिके मनमें शयन करनेकी इच्छा उत्पन्न हो गयी।

[४१]

प्यारी पियहि सिखावति बीना ।
तान बंधान कल्यान मनोहर इत मन देहु प्रवीना ॥

लेत सँभारि सँभारि सुघर बर नागरि कहत फबी ना ।
बिट्ठल विपुल बिनोद बिहारी को जानत भेद कबी ना ॥

प्रियाजी श्रीकृष्णको वीणावादन सिखा रही हैं। वे कहती हैं कि इस 'कल्याण' रागका स्वर-संधान अत्यन्त मनोहर है। हे प्रवीण श्यामसुन्दर ! इस ओर अपना ध्यान केन्द्रित करो। अत्यन्त चतुर श्रीकृष्ण सँभल-सँभलकर बजा रहे हैं, किन्तु नागरी राधिकाजी कहती हैं कि ठीक जमा नहीं। श्रीविट्ठलविपुलजी कहते हैं कि श्रीकृष्णके इस विनोदके रहस्यको बड़े-बड़े ज्ञानी भी नहीं समझते।

[४२]

आज गुपाल रास रस खेलत पुलिन कलतरु तीर री सजनी ।
सरद बिमल नभ चंद बिराजत रोचक त्रिबिध समीर री सजनी ॥
चंपक बकुल मालती मुकुलित मत्त मुदित पिक कीर री सजनी ।
लेत सुधंग राग रागिनि को ब्रज जुवतिन की भीर री सजनी ॥
मघवा मुदित निसान बजायौ ब्रत छांड्यौ मुनि धीर री सजनी ।
हित हरिवंश मगन मन स्यामा हरत मदन धन पीर री सजनी ॥

हे सखि ! आज यमुनाके पुलिनवर्ती कल्पवृक्षोंके समीप गोपाल श्रीश्यामसुन्दर रासकी रसमयी क्रीड़ामें निमग्न हैं। शरद्के स्वच्छ आकाशमें चन्द्रमा सुशोभित है तथा हृदयको आह्लादित करनेवाला शीतल, मन्द एवं सुगन्धित पवन चल रहा है। चम्पा, मौलश्री और मालती आदिके पुष्प खिले हुए हैं। कोकिल एवं शुक आनन्दमें डूबे हुए मतवाले हो रहे हैं। वहाँ यूथ-की-यूथ व्रजबालाएँ शुद्ध स्वरूपमें राग-रागिनियोंका आलाप ले रही हैं। आकाशमें इन्द्रने भी आनन्दित होकर नगाड़े बजाये। इस महान् उत्सवसे आकर्षित होकर धैर्यवान् मुनियोंने भी अपने संयम-नियमादिकको बहा दिया। श्रीहितहरिवंशजी कहते हैं कि उल्लासमें भरकर श्रीराधा प्रियतम श्रीश्यामसुन्दरकी अत्यन्त प्रीति-जनित गम्भीर व्याकुलताको प्रशमित कर रही हैं।

[८३]

रास मंडल रच्यो रसिक हरि राधिका
तरनिजा तीर बानीर कुंजे ।
फूले जहाँ नीप नव बकुल कुल मालती
माधुरी मृदुल अलि पुंज गुंजे ॥
सुमन के गुच्छ अलि सुच्छ चल बात बल
तरु मनो चहुँ दिसि चँवर करहीं ।
करत रव सारि सुक पिक सु नाना बिहँग
नचत केकि अधिक मनहि हरहीं ॥
त्रिगुन जहाँ पवन को गवन नित ही रहत
बहत स्यामल तरनि चल तरंगा ।
बिबिध फूले कमल कोक कलहंस कुल
करत कल कुणित अरु जल बिहंगा ॥
हेम मंडल रचित खचित नाना रतन
मनहुँ भू करन कुंडल बिराजे ।
बंस बीनादि मुहचंग मिरदंग बर
सबन मिलि मधुर धुनि एक बाजे ॥
नचत रस मगन बृषभानुजा गिरिधरन
बदन छबि देखि सुधि जात रति मदन की ।
मुकुट की थरहरनि पीत पट फरहरनि
तत्त थेई थेई करनि हरनि सब कदन की ॥
दसनि दमकनि हँसनि लसनि अँग अँग की
अधर बर अरुन लखि उपमा को है ।
दृग जलज चलनि ढिग कुटिल अलकनि भुलनि
मनहुँ अलि कुलन की पाँति सोहै ॥

लाग अरु डाट पुनि उरप उरमेइ तिरप
　　　　एक एक गति लेत भारी ।
करत मिलि गान अति तान बंधान सौं
　　　　परस्पर रीझि कहैं वार्यो वारी ॥
चारु उर हार बर रतन कुंडल ललित
　　　　हीर बर बीर स्रवननि सुहाई ।
नील पट पीत तन गौर स्यामल मनौ
　　　　परस्पर घन अरु दामिनि दुराई ॥
सखी चहुँ दिसि बनी कनक चंपक तनी
　　　　चंद बदनी इक एक तें आगरी ।
नचत मंडल किए चित्त दुहु तन दिए
　　　　भूलि गई सकल आप अपनी सुधि नागरी ॥
रमत इहि भाँति नित रसिक सिरमौर दोऊ
　　　　संग ललितादि लिए सुघरि सुंदरि अली ।
मनसि बृंदावन बसहुँ जीवन धना
　　　　ब्रजराज सून वृषभानुजू की लली ॥

यमुनाके किनारे वेत्र-कुञ्जमें रसिकशिरोमणि श्रीश्यामसुन्दर एवं श्रीराधाने रास-मण्डलकी रचना की है। वहाँपर कदम्ब, मौलश्री एवं मालतीके नये-नये असंख्य पुष्प खिल रहे हैं। उनके माधुर्यसे आकृष्ट होकर भौंरोंके समूह मृदुल गुञ्जार कर रहे हैं। फूलोंके गुच्छोंको स्पर्श करता हुआ अत्यन्त निर्मल पवन चल रहा है। उसके प्रभावसे हिलते हुए हरे-हरे वृक्ष ऐसे लग रहे हैं मानो चारों ओरसे चँवर डुला रहे हैं। मैना, तोता, कोयल तथा और भी अनेक सुन्दर-सुन्दर पक्षी कलरव कर रहे हैं। नृत्य करते हुए मोर चित्तको और भी अधिक खींच लेते हैं। शीतल, मन्द एवं सुगन्धित समीरका वहाँ सदा ही संचार होता रहता है। उसकी गतिसे तरंगें चञ्चल हो उठती हैं और ऐसी चञ्चल तरंगोंसे युक्त श्यामलवर्णा यमुनाजी बहती रहती हैं। यमुनाजीमें विविध प्रकारके कमल (जैसे उत्पल, कुशेशय, इन्दीवर इत्यादि) खिले हुए हैं तथा

चक्रवाक, कलहंसोंका समूह एवं अन्य जातिके जल-पक्षी भी मधुर स्वर कर रहे हैं। रासकी गोलकार स्वर्ण-वेदी नाना रत्नोंसे जड़ी हुई है। वह ऐसी लगती है मानो पृथ्वीका कर्ण-कुण्डल हो। बाँसुरी एवं वीणादिक तार-यन्त्र, मुहचंग और अच्छे-अच्छे मृदंग—ये सभी मिलकर एक स्वरमें मधुर ध्वनि उत्पन्न कर रहे हैं। रसमें मग्न होकर राधा-माधव नाच रहे हैं। उनके मुखकी शोभा देखकर रति और काम भी बेसुध हो जाते हैं। मुकुटके थरहरानेसे, पीतपटके फरहरानेसे तथा ताता-थेइके उच्चारणसे जो झाँकी उभरी, वह सारे क्लेशोंका निवारण करनेवाली है। दाँतोंकी चमक, मन्द हास्य, प्रत्येक अङ्गकी शोभा तथा मनोहर अधरोंकी अरुणिमा—इन सबके दर्शनकी तुलनामें और क्या है? कमलदल-से सुन्दर एवं चपल नेत्रोंके समीप ही कुञ्चित केशकी लटें ऐसी झूल रही हैं मानो भ्रमरोंकी पंक्तियाँ सुशोभित हों। स्नेह-पूरित प्रतिस्पर्धासे वे उरप-तिरप आदि एक-एक गति-विशेषको बड़े ही सुन्दर ढंगसे प्रदर्शित करते हैं। वे संधानयुक्त तान लेते हुए परस्पर मिलकर अत्यन्त सुन्दर गा रहे हैं और एक-दूसरेपर मुग्ध होकर 'बलिहारी जाऊँ' कह रहे हैं। सुन्दर वक्षःस्थलपर रत्नोंका मनोहर हार है और हे सखि! कानोंमें श्रेष्ठ हीरेके बड़े ही सुन्दर कुण्डल सुशोभित हो रहे हैं। श्रीराधिकाके गोरे अङ्गोंपर नीला परिधान एवं श्रीकृष्णके श्याम शरीरपर पीताम्बर ऐसे लग रहे हैं मानो एक ओर बादलने बिजलीको अपनी गोदमें छिपा लिया है और दूसरी ओर विद्युच्छटाने वारिदमालाको आक्रोडित कर लिया है। उन्हें चारों ओरसे सोने एवं चम्पाके फूल-जैसे वर्णवाली चन्द्रमुखी सखियाँ घेरे हुए हैं। वे सब शोभामें एक-से-एक बढ़कर हैं। वे परम प्रवीण सखियाँ गोलाकार मण्डल बनाकर नाच रही हैं। उनका चित्त राधामाधवमें ऐसा लीन है कि सब अपनी-अपनी सुधि खो बैठी हैं। ललितादिक सखियोंको साथ लेकर रसिकोंके शिरोभूषण ये दोनों इस प्रकार नित्य ही विहार किया करते हैं। ये सभी सखियाँ चतुर तथा सुन्दर हैं। वृन्दावनदेवजी कहते हैं कि हे मेरे जीवनधन व्रजराज लाडिले एवं वृषभानु लाडिली! तुम दोनों मेरे हृदय-कमलमें निवास करो।

[८८]

राधिका सम नागरी नवीन को प्रवीन सखी,
रूप गुन सुहाग भाग आगरी न नारि।

बरुन नागलोक भूमि देवलोक की कुमारि,
प्यारी जू के रोम ऊपर डारो सब वारि ॥
आनंद कंद नंद नंदन जाके रस रंग रच्यो,
अंग बर सुधंग नाचति मानतु अति हारि ।
ताके बल गरब भरे रसिक व्यास से न डरे,
लोक बेद कर्म धर्म छाँड़ि मुकुति चारि ॥

सखि ! श्रीराधिकाके समान चतुर नववयस्का एवं निपुणा कौन है ? किसी भी ललनाको उन जैसा रूप, गुण, प्रियतमका प्यार एवं सौभाग्य नहीं प्राप्त है। प्यारी राधिकाके एक रोम पर ही वरुण लोक, नागलोक, मर्त्यलोक तथा देवलोककी समस्त कुमारियोंको न्यौछावर किया जा सकता है। आनन्दकन्द नन्दनन्दन श्रीकृष्ण प्रियतमा राधाके रस-रंगमें इतने निमग्न हैं कि अपनी प्रियाको रस प्रदान करनेके लिये उन्होंने रास-रंगका आयोजन किया। (रास-मण्डलपर) श्रीप्रियाजी इतना सुन्दर नृत्य कर रही हैं कि अङ्ग-अङ्गकी निपुणताको देख-देख करके प्रियतम अत्यन्त विस्मित-विथकित हो रहे हैं। उन्हीके बलपर गर्वित रहकर व्यास जैसे रसिक किसीसे भी नहीं डरते। उन्होंने लोक एवं वेद, धर्म एवं कर्म तथा चारों प्रकारकी मुक्तियोंको तिलाञ्जलि दे दी है।

[७५]

बेसर कौन की अति नीकी ।
होड परी प्रीतम अरु प्यारी अपने अपने जी की ॥
न्याव पर्यो ललिता के आगे कौन सरस को फीकी ।
नंददास बिलग जिन मानो कछु एक सरस लली की ॥

प्रियतम श्रीकृष्ण एवं प्यारी श्रीराधिका, दोनोंने अपने-अपने मनकी बात कहकर परस्परमें यह होड़ बदी कि किसके नाककी बेसर अधिक सुन्दर है। न्यायपूर्वक सच्ची बात कहनेका कार्य श्रीललिताजीके आगे रखा गया, वे ही निर्णय करें कि कौन सुन्दर है और कौन साधारण। नन्ददासजी कहते हैं कि ललिताजीने बड़े संकोचसे यह

उत्तर दिया कि यदि बुरा न मानो तो मेरी समझके अनुसार लाड़िलीकी बेसर कुछ अधिक मनोहारिणी है।

[८६]

तुव मुख कमल नैन अलि मेरे ।
पलक न लगत पलक बिन देखे अरबरात अति फिरत न फेरे ॥
पान करत मकरंद रूप रस भूलि नहीं फिर इत उत हेरे ।
भगवतरसिक भए मतवारे घूमत रहत छके मद तेरे ॥

हे राधारानी ! तुम्हारा मुख कमलके सदृश है और मेरे नेत्र भौंरेके समान। बिना दर्शन किये एक क्षणके लिये भी मेरी पलकें लगती नहीं। मेरे नयन दर्शनके लिये अति अकुलाये रहते हैं और हटानेपर भी वहाँसे हटते नहीं। रूप-सुधा-रूपी मकरन्द-रसका पान करते समय वे ऐसे तल्लीन हो जाते हैं कि भूलकर भी इधर-उधर नहीं देखते। भगवतरसिकजी कहते हैं कि ये पागल-से हो गये हैं और तुम्हारे प्रेमका कुछ ऐसा नशा इनपर चढ़ गया है कि निरन्तर घूमते ही रहते हैं।

[८७]

तुव मुख चंद चकोर ए नैना ।
अति आरत अनुरागी लंपट भूलि गई गति पलहुँ लगे ना ॥
अरबरात मिलिबे को निसि दिन मिलेइ रहत मानो कबहुँ मिलै ना ।
भगवतरसिक रसिक की बातैं रसिक बिना कोउ समुभि सकै ना ॥

हे राधारानी ! तुम्हारा मुख चन्द्रमाके समान है और मेरे ये नयन चकोर-सदृश इतने अनुरक्त एवं आसक्त हैं कि बिना देखे अत्यन्त व्याकुल हो जाते हैं। इनकी सुधि-बुधि खो गयी है। पलकें तो एक क्षणके लिये भी नहीं पड़ती। मिलनेके लिये ये रात-दिन व्याकुल रहते हैं और मिले रहनेपर भी इन्हें ऐसा लगता है मानो कभी मिले ही नहीं। भगवतरसिकजी कहते हैं कि रसिककी बातोंको बिना रसिकके दूसरा कोई समझ नहीं सकता।

[४८]

राधा प्यारी तुमहिं लगत हौं मैं कैसो ।
बूझन को अभिलाष रहत मन सकुच लगत मन ही मन ऐसो ।।
भोरो री गिनत चतुर कै भामिनि अपने ही बदन बखानौ सो।
वृंदाबन हित रूप पै बलि जाऊं तुम जो मिलि मेरौ भाग सो ऐसो ।।

हे राधा प्यारी ! मैं तुम्हें कैसा लगता हूँ ? मनमें यह बात पूछनेकी इच्छा रहती है, पर मन-ही-मन बहुत संकोच लगता था। मैं भोला हूँ या चतुर, हे सुन्दरि ! इसका वर्णन अपने ही मुखसे करो। हितवृन्दावनदासजी कहते हैं कि श्यामसुन्दरने फिर निवेदन किया कि मैं तुम्हारे रूपपर न्यौछावर हूँ। तुम जो मुझे मिली हो, यह मेरा कुछ अनोखा सौभाग्य है।

[४९]

प्रीतम तुम मेरे दृगन बसत हो ।
कहा भोरे ह्वै कैं पूछत हौ कै चतुराई करि जु हँसत हौ ।।
लीजिए परखि सरूप आपनौ पुतरिन मैं प्यारे तुमहि लसत हौ ।
वृंदाबन हित रूप बलि गई कुंज लडावत हिय हुलसत हौ ।।

राधाजी उत्तर देती हैं कि हे प्रियतम ! तुम तो मेरी आँखोंमें बसते हो। क्या भोले बनकर वास्तवमें ऐसा प्रश्न कर रहे हो अथवा चतुराईसे विनोद कर रहे हो ? तुम अपने रूपकी परीक्षा कर लो। मेरी पुतलियोंमें प्यारे ! तुम्हीं सुशोभित हो रहे हो। हितवृन्दावनदासजी कहते हैं कि राधाजीने फिर कहा कि मैं भी तुम्हारे रूपपर न्यौछावर हूँ। कुञ्जमें तुम जब लाड लडाते हो, तब हृदय उल्लाससे भर जाता है।

[५०]

आज बने सखि नंद कुमार ।
बाम भाग वृषभान नंदिनी ललितादिक गावैं सिंह द्वार ।।

कंचन थार लिये जु कमल कर मुक्ताफल फूलन के हार।
रोरी को सिर तिलक बिराजत करत आरती हरष अपार॥
यह जोरी अबिचल बृंदावन देत असीस सकल ब्रजनार।
कुंज महल में राजत दोऊ परमानंद दास बलिहार॥

हे सखि ! आज नन्दनन्दनकी निराली ही शोभा है। बायीं ओर श्रीराधारानी विराज रही हैं और ललितादिक सखियाँ मुख्य द्वारपर खड़ी गा रही हैं। वे अपने कमल-से हाथोंपर सोनेकी थालियोंमें मोतीके हार एवं फूलोंकी मालाएँ लिये हुए हैं। (वहाँसे वे कुञ्ज-भवनमें चली आती हैं।) श्रीराधा-माधवके भालपर रोलीका तिलक सुशोभित हो रहा है और सखियाँ आनन्दमें भरकर आरती कर रही हैं। समस्त ब्रजबालाएँ यही आशिष दे रही हैं कि वृन्दावनमें यह जोड़ी नित्य निवास करे। इस प्रकार दोनों कुञ्ज-भवनमें विराजमान हैं, दासपरमानन्द उनपर न्यौछावर हैं।

[५५]

खंजन नैन रूप रस माते।
अतिसय चारु चपल अनियारे पल पिंजरा न समाते॥
उड़ उड़ जात निकट स्रवनन के उलटि फिरत ताटंक फँदाते।
सूरदास अंजन गुन अटके नातर अब उड़ जाते॥

खञ्जनके समान चपल श्रीराधाके नयन प्रियतमकी रूप-मधुरीका पानकरके मतवाले हो रहे हैं। वे अत्यन्त सुन्दर, चञ्चल और नुकीले नेत्र पलक-रूपी पिंजरेमें बंद नहीं रह पा रहे हैं। वे उड़-उड़ करके अर्थात् लपक-लपक करके कानोंके पास जाते हैं; परन्तु आगे कर्णफूल रूपी फंदेको पा करके लौट आते हैं, बढ़ नहीं पाते। सूरदासजी कहते हैं कि मेरा तो यह अनुमान है कि ये अञ्जन रूपी डोरीसे बँधे हुए हैं, नहीं तो कभीके उड़कर प्रियतमके पास पहुँच जाते।

[५२]

अब पौढ़न को समय भयो।
इत ढुर गई द्रुमन की छैयाँ उत ढुरि चंद गयो॥
पौढ़ि रहे दोउ सुखद सेज पर बाढ़त रंग नयो।
रसिक बिहारि बिहारिनि पौढ़े यह सुख दृगन लयो॥

अब रात्रिमें शयन करनेका समय हो गया। इधर वृक्षोंकी छाया ढल गयी है और उधर चन्द्रमा भी अस्ताचलकी ओर चले गये हैं। सुखदायिनी शय्यापर दोनों लेटे हुए हैं। प्रतिक्षण अभिनव आनन्दकी अभिवृद्धि हो रही है। कवि 'रसिक' कहते हैं कि लीलाविहारी श्रीकृष्ण और विहारनिमग्ना राधा, दोनों ही शय्यापर पौढ़े हुए हैं। इस झाँकीके दर्शनका सुख आँखोंको प्राप्त हुआ। (कहु कैसा अनुपम सौभाग्य है!)

[५३]

बिहारिनि अलकलड़ैती हो अलकलड़े सुकुमार।
अलकलड़े मोहन मंदिर में अलकलड़ोई बिहार॥
अलकलड़ी उरभनि दोउन की अलकलड़ोई प्यार।
अलकलड़ी हरिप्रिया निहारति अलकलड़ो सुखसार॥

जिस प्रकार विहारनिमग्ना श्रीराधा सबकी स्नेहास्पदा हैं, उसी प्रकार अत्यन्त कोमल अङ्गोंवाले श्रीकृष्ण भी सबके स्नेह-भाजन हैं। मनोहर एवं स्नेह-सदन केलि-मन्दिरमें उनका विहार भी बड़ा ही स्नेह-सिक्त है। उनका परस्पर लिपटना भी स्नेहपूर्ण है और उनका प्यार तो दुलारभरा है ही। स्नेहसने श्रीहरिप्रियाजी लाड-चावभरे उस केलि-सुख-सारको निहारते रहते हैं।

[५४]

चाँपत चरन मोहन लाल।
पलका पौढ़ी कुँवरि राधे सुंदरी नव बाल॥

कबहुँ कर गहि नयन मिलवत कबहुँ छुवावत भाल ।
नंददास प्रभु छबि निहारत प्रीति के प्रतिपाल ॥

नवयौवना एवं सौन्दर्यमण्डिता राधाकिशोरी पर्यङ्कपर पौढ़ी हुई हैं। मदनमोहन उनके पद सहला रहे हैं। उनके चरणोंको पकड़कर कभी वे उन्हें अपनी आँखोंपर रखते हैं और कभी उन्हें मस्तकपर धारण करते हैं। नन्ददासके स्वामी एवं प्रेमका निर्वाह करनेमें कुशल श्रीकृष्ण अपनी प्यारीके रूप-दर्शनका सुख लूट रहे हैं।

[५५]

धनि धनि लाडिली के चरन ।
अति ही मृदुल सुगंध सीतल कमल के से बरन ॥
नख चंद चारु अनूप राजत जोत जगमग करन ।
कुणित नूपुर कुंज बिहरत परम कौतुक करन ॥
नंद सुत मन मोद कारी सुरत सागर तरन ।
दास परमानंद छिन छिन स्याम ताकी सरन ॥

प्यारी श्रीराधाके चरण परम धन्य हैं। वे अत्यन्त कोमल हैं। उनमें सुन्दर सुवास है। वे शीतल हैं। उनका वर्ण कमलके समान है। नखरूपी चन्द्रमाओंका सौन्दर्य अनुपम है। उनमेंसे जगमग करती हुई एक ज्योति निकल रही है। कुञ्जोंमें जिस समय वे विहार करती हैं, उनके नूपुर बज उठते हैं। ये चरण बड़े ही क्रीड़ाप्रिय हैं। वे श्रीकृष्णके मनको आनन्द देनेवाले हैं तथा उन्हें प्रेमरूपी विशाल सागरके अन्तिम छोरतक पहुँचा देनेके लिये नौकाके समान हैं। परमानन्ददासजी कहते हैं कि श्यामसुन्दर उन्हींकी शरणमें रहते हैं।